Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१०५

अप्रकाशित-राग

प्रथमभाग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अप्रकाशित राग

(प्रथम भाग)

★

लेखक

ज० दे० पत्की, बी० ए०

प्रकाशक

संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अप्रकाशित राग

(प्रथम भाग)

लेखक

ज० दे० पत्की, बी० ए०

©

प्रकाशक

संगीत कार्यालय, हाथरस

पंचम संस्करण

मार्च १९६५

मूल्य

२)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

APRAKASHIT RAG
Part I

Written by :
J. D. Patki B. A.

Publisher :
L. N. Garg
SANGEET KARYALAYA,
HATHRAS. (India)

March. 1965.

Price Rs. 2/-

Printed at :
SANGEET PRESS,
HATHRAS. (India)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

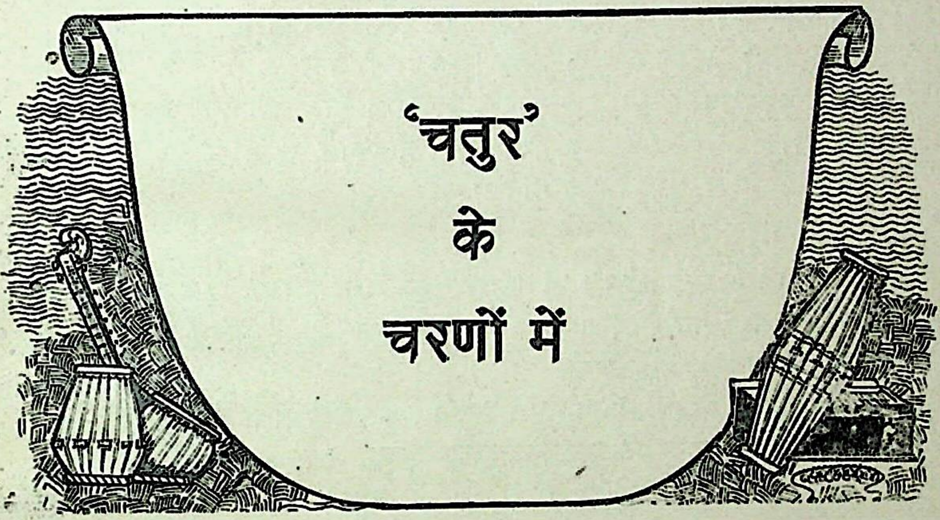

'चतुर'
के
चरणों में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग परिचय

राग	गीत संख्या	पृष्ठ	राग	गीत संख्या	पृष्ठ
१ मारुबिहाग	६	६	१२ गौरांजनी	४	५७
२ वैजयंती	४	१६	१३ दीपक	३	६२
३ श्यामकल्याण	१	२१	१४ मालिन	३	६६
४ रसचन्द्र	४	२२	१५ भटियार	३	७०
५ नन्द	४	२७	१६ धन्यधैवत	३	७५
६ लाजवन्ती	४	३३	१७ जोग	३	७६
७ चन्द्रिका	३	३८	१८ आभोगी (कानड़ा)	२	८४
८ रसरञ्जनी	१	४३	१९ रेवती (कानड़ा)	३	८७
९ भवानी	३	४४	२० शिवरंजनी	५	९२
१० नागस्वरावली	२	४६	२१ शोभावरी	४	९७
११ रेवा	४	५२	२२ चन्द्रकौंस	४	१०२

कुल गीत संख्या=७३

चिह्न-परिचय

(१) स़=मन्द्र षड्ज। सां=तार षड्ज। सा=मध्य षड्ज।

(२) मं=तीव्र मध्यम। म=शुद्ध मध्यम। निधगरे=कोमल स्वर। निधगरे=शुद्ध स्वर।

(३) धप, निधप, निधपम, धनिसांनिधपमऽ एक मात्रा के स्वर।

(४) ग (ऊपर म)=गांधार को मध्यम का कण। ग ऽ ऽ (ऊपर म म)=गंधार का मध्यम तक आंदोलन। (प)=कंप (धपमप)। सांऽप अथवा सांऽऽप=सां से पंचम तक मींड। प ऽऽ (ऊपर ग)=पंचम को ग की ओर खींचना।

(५) सा ऽ अथवा सा-एक मात्रा का ठहराव। *=लुप्त मात्रा।

(६) × सम, ० ख़ाली, । ताली।

ताल-परिचय

[१] त्रिताल [२] झपताल (विलंबित और मध्य में) [३] एकताल (विलंबित तथा जलद) [४] चौताल [५] तिलवाड़ा [६] झूमरा [७] सुरफाक्ता [८] तीव्रा [९] चन्द्रक्रीड़ा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग्रन्थ परिचय

प्रथमं शारदां वन्दे चतुरं तदनन्तरम्।
दिगंबरसुतं चैव स्वर–शास्त्रकलाप्तये॥

"अप्रकाशित राग" के इन ३ परिचय के क्रमिक पुस्तकमाला में ऐसे ६८ रागों का शास्त्राधार, तुलनात्मक परिचय, बढ़त पद्धति का स्वरविस्तार, रागवाचक आरोहावरोह तथा सुगम स्वरलिपि सहित प्रचलित और अप्रचलित तालों में लगभग २०७ नाद मधुर, लालित्यपूर्ण गीत दिये हैं, जो महफिल में अक्सर गाये जाते हैं किन्तु ग्रन्थ रूप में अभी तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुए! उस्ताद फैयाज़खां, गुरुवर्य विनायकबोवा पटवर्धन, पं० ओंकारनाथ जी, स्व० रामकृष्ण-बुआ वझे, श्री सवाई गन्धर्व, श्री नारायणराव व्यास, श्रीमती रोशन-आरा बेगम, श्रीमती गांधारी हंगल, उस्ताद निसार हुसेनखां साहब, श्री रातांजन्कर साहब, पं० रविशंकर, उस्ताद विलायतखां इत्यादि संगीत के सितारों द्वारा नये-नये ढङ्ग के राग प्रचार में आये हैं। प्रस्तुत पुस्तकों में इन जैसे रागों का ही संग्रह है।

प्रथम संस्कृत, हिन्दी, मराठी में श्लोकबद्ध लक्षण देकर बाद में उनका शास्त्रीय परिचय दिया है। शास्त्रीय परिचय देते समय समप्रकृतिक रागों की तुलनात्मक चर्चा भी की है, इससे पाठक इन रागों से अपना राग कहां और कैसे बचायें, यह ठीक समझ सकेंगे। राग का विवरण ठाठ पद्धत्यनुसार दिया है, किन्तु जहां अनिवार्य है वहां रागांग पद्धति का भी उपयोग किया है। राग का आरोहावरोह भी इस प्रकार दिया है कि जिससे राग का सम्पूर्ण चलन, अङ्ग, प्रत्यंग तथा राग का वैशिष्ट्य पाठक तुरन्त समझ जांय। गीतों का चुनाव करते समय भी शब्दलालित्य, समयानुकूलता, रसपरिपोषण, तालदृष्ट्या विभिन्नता तथा गीत के भाव पर विशेष ध्यान दिया गया है।

हर एक राग में एक-एक लक्षणगीत देकर स्वर, शब्द और शास्त्र का मिलान करने का प्रयत्न किया है। अन्त में कुछ मिश्र राग भी दिये हैं, जैसे—सागर, पटबहार, आसाकली आदि।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रिताल, झपताल, एकताल, आडाचौताल, चौताल, रूपक, अद्धा, तीव्रा, सुरफाक्ता आदि प्रचलित तथा मीनाक्षी, प्रभाकर, गजझंपा, झूमरा इत्यादि अप्रचलित तालों में भी छोटे-बड़े खयाल में गीत दिए हैं। अर्थात् विस्तार-भय से अप्रचलित तालों की संख्या प्रचलित तालों से कम प्रमाण में ही है। प्रायः गम्भीर तथा सन्धिप्रकाश रागों के ही विलम्बित भिन्न-भिन्न विलम्बित तालों में दिए हैं, क्योंकि हमारे मत से हलके तथा चंचल शृंगारिक रागों में विलम्बितों की रक्तिहानि होती है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में इस प्रकार की स्वरलिपियाँ दी हैं, जो किसी भी शैली के अभ्यासी को समझने में कठिन न हों। इस प्रकार की स्वरलिपि की विशेषता यह भी है कि इससे मुद्रण में अधिक सुविधा रहती है।

हो सकता है कि प्रस्तुत राग 'अप्रकाशित' होने के कारण उनमें मतान्तर हों, जैसे कि आज भी पूर्ण परिचित अनेक रागों में काफी मतभेद हैं। अतः पाठक एक बात जरूर ध्यान में रखें कि लेखक को जिस स्वरूप में प्रस्तुत राग मिले, उसी स्वरूप में वे पाठकों के सामने रखे गए हैं। अतः यही आशा है कि भिन्न मतावलम्बी जिस राग को उपयोगी समझेंगे, उससे लाभ उठाएँगे।

—लेखक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अप्रकाशित राग

(प्रथम भाग)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मारुबिहाग

(संस्कृत) मगौ रिसौ निसौ मश्च मुख्यांगे मुक्तमध्यमः ।
गांशे 'मारुविहागे' तु द्वि-मे चावरिरोहणम् ॥

(हिन्दी) मध्यम दो तीवर सभी चढ़त न रिध सुर लाग ।
गनि वादी सम्वादि तें सोहत 'मारु-बिहाग' ॥

(मराठी) मारु-बिहागीं शोभत द्वय मध्यम सर्व शुद्ध इतर स्वर ।
गनि सम्वादन सुमधुर, रजनीचा शोभला प्रथम प्रहर ॥

मारुविहाग एक अभिनव संशोधन है। यह कल्याण ठाठ से निकला है, किन्तु बिहाग अंग से गाया जाता है। अतएव इसके आरोह में ऋषभ, धैवत वर्ज्य हैं। अवरोह सरल तथा सम्पूर्ण है। तीव्र मध्यम आरोह अवरोह में सरल लिया जाता है, इससे शुद्ध बिहाग इस राग से बिलकुल अलग रहता है। शुद्ध मध्यम भी क्वचित् निसामSS इस प्रकार मुक्त रूप में लिया जाता है। इससे इस राग का वैचित्र्य कुछ और ही बढ़ता है। क्वचित् प, मं, म, ग इस प्रकार लगातार दो मध्यम भी अवरोह में दिखाए जाते हैं। किंवदन्ती है कि बम्बई के प्रसिद्ध स्वर्गीय उस्ताद अल्लादियाखाँ साहब ने इस राग की रचना की। मारवा अथवा मारु राग से इसका कुछ सम्बन्ध नहीं।

मं म रे

मारु तो बिलावल मेलज राग है। मं, ग, रे, सा स्वरमाला मारु-बिहाग में बहुत ही आकर्षक है। वादी गांधार, सम्वादी निषाद, समय सायंकाल। जाति औडव-सम्पूर्ण। राग का मुख्यांगः—मंग, मंग मंगरेसा, निसामSS।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आरोहावरोहः—प़नि़साग, मंप, निसां। निरेंनिधऽप, मंग, मंग, मं,
म ग रे
ग, रे, सा, नि़सामऽऽ।

स्वरविस्तारः—सा, नि़सा, प़नि़, प़नि़प़नि़, प़नि़, सा। प़नि़, प़नि़, धप़नि़, रेसानि़, मंगरेसानि़, प़नि़प़नि़सा। नि़रेनि़ध़, प़, ध़प़, ग़मंप़नि़, प़नि़सा। नि़साग, मंग, मंग, मं, ग, रे, सा, नि़साग, प़नि़साग, मंग, मं, ग, रे, सा, प़नि़सामंग, रे, सा। नि़साम, ग, नि़सानि़म, ग, मंग, मंग, रे, सा। नि़सागमं पगमंपऽऽ, (प)ऽमंग, मंग(प)ऽमंग, गमप गमं धपऽमंग, गमंपनिधपऽमंग, गमंपनिधप, मंनिधप, निधप, मंग, (प)ऽमंम ग, मंग, मंग, मं, ग, रे, सा; रेसानि़सा म, ग। गमंपनि, मंपनि, निधपमंगरेसानि़, सागमंपनिऽ, गमंपनिऽ, पनिपनिऽपनिऽसांऽऽ। निसां गं, मंगं, मंगं, मंगंरें, सां, पनिसांमं, गं, मंगंरेंसां। निरें, निध, प, मं, म, ग, गनि, ध, प, मं, म, ग। प, मं, म, ग, मंग, मंग, मं, ग, रेसा, नि़सामऽऽ।

१—मारु-विहाग—चौताल

गुरु दयाल आयो शरण, बार-बार परत दास।
तुमरे शुभ कमल चरण ॥ ध्रु० ॥
दीजे स्वर ज्ञान पूर्ण। सुध कर सुर कंठ बरन।
तुमरो 'चतुर' करूँ सुमिरन ॥

×		०		२		०		३		४	
										ग	रे
प़	नि़	सा	म	—	ग	गमं	पमं	ग	मंग	रे	सा
गु	रु	द	या	ऽ	ल	आऽ	ऽऽ	यो	शऽ	र	ण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि़ –	सा ^ग^रे	– रे	सा रे	सा सा	ग ग
बा ऽ	र बा	ऽ र	प र	त दा	ऽ स

स्म ग	साग मंप	गमं प	मंप निध	पमं गरे	मंग रेसा
तु म	रे– ––	शुऽ भ	कऽ मऽ	लऽ चऽ	रऽ णऽ

प –	सां –	सां सां	सां –	रें सां	– सां
दी ऽ	जे ऽ	स्व र	ज्ञा ऽ	न पू	ऽ र्ण

सां गं	गं मंगं	रें सां	रें रें	रें गंरें	सां निसां
सु ध	क रऽ	सु र	कं ऽ	ठ ऽब	र नऽ

नि रें	नि ध	प मं	गमं पमं	ग मंग	रे सा
तु म	रो च	तु र	कऽ रूँऽ	सु मिऽ	र न

२—मारु-बिहाग—ख्याल-एकताल

बनरा मोरा आयो सखि प्यारा ॥ ध्रु० ॥
छैल छबीला ब्याहन आया, सोहे मोतीलरा माला ॥

३	४	×	०
^ग^साग गमंगरे	सा –सागमंपगमं	प– ––	–गमंपनि धप–
बन राऽऽऽ	ऽ ऽऽऽऽऽमोऽ	राऽ ऽऽ	ऽआऽऽऽ योऽऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२		०		३		४	
(प)-,	मंम	ग-	मंग	रे-	सा-	--मं	पसां-सां
ऽ	सखि	ऽ	प्याऽ	ऽ	राऽ	ऽऽछै	ऽलऽछ

×		०		२		०	
रेंसां	-	सां-	--	सां-	निरें	गंमं	गंरें
बीऽ	ऽ	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ब्या	हुन	आऽ

३		४		×		०	
सां-	-	निरें	(सां)	-	-	निरें	निध
याऽ	ऽ	सोऽ	हे	ऽ	ऽ	म।ऽ	तील

२		०		३		४		×
(प)	-	मंम	ग-	मंग	रे-	सा--सा	गसागमंपगमं	प-
राऽ	ऽ	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लाऽऽब	नराऽऽऽमेऽ	राऽ

३—मारुबिहाग—झपताल

रानी राधिका करत, मोहन सों बात,
मधुबन में चल कान्ह, आई मधुर-मधु-रात ॥ध्रु०॥
खेलन को होरि सब आईं ब्रिज-नारी,
भरि रंग पिचकारी। करि रंग की बरसात ॥

०		३			×		२		
ग सा	ग	सासाग	मंप	गमं	प	-	ग मंग	रे रे	सा
रा	नी	ऽराऽ	ऽऽ	धिऽ	का	ऽ	कुऽ	र	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प़	नि़	सा	रे	रे	रे	–	मग	रे	सा
मो	ऽ	ह	ऽ	न	सों	ऽ	बाऽ	ऽ	त
ग नि़	सा	सा	म	ग	प	गर्म	प	–	प
म	धु	ब	न	में	च	लऽ	का	ऽ	न्ह
नि	रें	ध	नि	प	म	ग	र्मग	रे	सा
आ	ई	म	धु	र	म	धु	राऽ	ऽ	त
ग	र्म	प	नि	नि	नि सां	–	रें	सां	सां
खे	ऽ	ल	ऽ	न	को	ऽ	हो	ऽ	रि
प	नि	सां	रें	रें	र्मंगं	र्मंगं	मंगं	रें	सां
स	ब	आ	ऽ	ई	ब्रिऽ	जऽ	नाऽ	ऽ	रि
नि	सां	सां	मं	गं	पं	र्मं	गं	रें	सां
भ	रि	रं	ऽ	ग	पि	च	का	ऽ	रि
नि	रें	नि	ध	प	र्म	ग	गर्मग	रे	सा
क	रि	रं	ग	कि	व	र	साऽऽ	ऽ	त

४. मारुविहाग—त्रिताल

सखि, बीन बजावे मोहन, रस की भरी गावे तान ॥ध्रु०॥
कुंडल की हलचलन मधुर। जियरा लुभावे मन माने न ॥

			मंग
३	×	२	० सऽ

			ग रे
गरे सा नि् सा	म – – ग	गमं पमं गमं पमं	ग रे सा सा
खिऽ बी न ब	जा ऽ ऽ ऽ	वेऽ ऽ मऽ नऽ	मो ह न र

			मं
ग साग मप गमं	प – – –	निरें गरें सांनि धप	पमं गरे सा प
स कीऽ ऽ भऽ	री ऽ ऽ ऽ	गाऽ ऽ वेऽ ऽ	ताऽ ऽ न कुं

– सां – सां	सां – – सां	सां सां गं मं	मंगं रें सां नि
ऽ ड ऽ ल	की ऽ ऽ ह	ल च ल न	मऽ धु र जि

			ग रे
रें नि – ध	प – पध पमं	ग मं गमं पमं	ग रे सा
य रा ऽ लु	भा ऽ वेऽ ऽ	म न माऽ ऽ	ने ऽ न

५—मारु-बिहाग--अद्धा

नैना बसी छबि तोरी प्यारी–
रटना लगी गिरधारी मुरारी ॥धृ०॥
जबसे गए मोरी सुध हुँ न लीन्ही,
बिसरत नाहीं नाहीं घरी -री ॥

			सा
३	×	२	० नैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग साग मंप गमं	प – – धप	मं पमं ग मंग	ग रे – सा रे
ऽ नाँऽ ऽ बऽ	सी ऽ ऽ छुऽ	बि तोऽ ऽ रीऽ	प्या ऽ री र
सा रेसा नि़ सा	म ग मं प	निध सांनि ऽ रेंसां	निध पमं गरे प
ट नाऽ ऽ ल	गी ऽ गि रि	धाऽ रीऽ ऽ मुऽ	राऽ ऽऽ रीऽ ज
प सां नि रें	सां – सां सां	सां गं गं मं	गं रें सां नि
ब से ऽ ग	ए ऽ मो री	सु ध हुँ न	ली ऽ न्ही बि
रें नि – ध	ध प प धप	मं पमं – मंग	गरे रे सा सा
स र ऽ त	ना ऽ हीं नाऽ	ऽ हींऽ ऽ घऽ	रीऽ री ऽ नै

६– मारु-बिहाग (लक्षणगीत) त्रिताल

गांवो चतुरवा मारु-बिहाग ।
मेच–कल्याणी मेल बनावत ॥
उभय मध्यमों सोहत राग ॥ध्रु०॥
बरज करत रिध आरोहन में ॥
समय शाम को गनि सम्वादत ।
मुक्त मध्य कर; सम मधुर लाग ॥

२	०	३	×
निरें गरें सांनि धप	मंग रेसा नि़सा प़	नि़ सा ऽ म	ग – – ग
गाऽ ऽऽ वोऽ चऽ	तऽ रऽ वाऽ मा	ऽ रु ऽ बि	हा ऽ ऽ ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं प प प	नि रें नि ध	प – मं ग	मंग मंग रे सा
मे ऽ च क	ल्या.ऽ णी ऽ	मे ऽ ल ब	नाऽ ऽऽ व त
प़ नि़ सा म	– ग मं प	निरें गरें सांनि धप	मंग रेसा नि़ सा
उ भ य म	ऽ ध्य मों ऽ	सोऽ ऽऽ हुऽ तऽ	राऽ ऽऽ ऽ ग
ग मं प ग	मं प ग मं	प – नि –	सां सां सां –
ब र ज क	र त रि ध	आ ऽ रो ऽ	ह न मों ऽ
नि सां गं मं	मं गं रें सां	मं ग मं ग	मं ग रे सा
स म य शा	ऽ म को ऽ	ग नि स म	वा ऽ द त
प़ नि़ सा म	– ग मं प	निरें गरें सांनि धप	मंग रेसा नि़ सा
मु ऽक्त म	ऽ ध्य क र	सऽ मऽ मऽ धुऽ	रऽ लाऽ ऽ ग

वैजयंती

(संस्कृत) आरोहे गध–वर्जा चेदवरोहे तथा पुनः।
परि संवादि–वादिभ्यां वैजयंतीति रक्तिदा ॥
जाता कल्याणिका मेलाज्जात्यासावौड्वामता।
निशी प्रथमयामे तु गीयते गायकोत्तमैः ॥

(कल्पपुष्पम्)

(हिन्दी) कल्याणी सुर जानिये, गध सुर वर्जित होइ।
'परि' वादी संवादितें, वैजयंति कहि सोइ ॥

(रागबोधिनी)

(मराठी) 'वैजयंति' अति सुंन्दर वर्ज्य करी धग स्वरांस ही नित्य।
कल्याणी मेल खुले सायं समयासि रजवी चित्त ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस राग की उत्पत्ति कल्याण ठाठ से होती है अर्थात् इसमें मध्यम तीव्र तथा बाकी स्वर शुद्ध हैं। शास्त्रीय मत से गांधार और धैवत बिल्कुल वर्ज्य हैं। तथापि गुणी गायक धैवत स्वर मींड रूप से तथा अवरोह में स्पर्श रूप से लेते हैं। इसके पूर्वाङ्ग में 'श्याम कल्याण' का तथा उत्तराङ्ग में 'बिहाग' का भास होता है। किन्तु इन दोनों ही रागों में मध्यम का प्रयोग है। वैजयंती में शुद्ध मध्यम बिल्कुल नहीं। निषाद एक मधुर विश्रांति-स्थान है। वादी पंचम, संवादी ऋषभ।

जाति औडव, समय सायंकाल। 'परे' संगति अत्यंत मधुर। मुख्याङ्ग
ध म॑
रेम॑पसांऽ नि ऽऽ प, म॑ऽरे नि़ ऽ सा।। वैजयंती से श्यामकल्याण की विभिन्नता स्पष्ट दिखाने के लिये यहाँ दोनों के ही गीत दिये हैं।

ध
आरोहावरोहः—नि़ ऽ सा, रे, म॑, प नि ऽऽ सां निऽ प, मऽरे,
म॑
नि़ऽसा।

म॑ म॑
स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़सा। नि़सारे, नि़, प़नि़, प़नि़प़सानि़,
रे रे
रेम॑प़नि़, नि़, नि़सा। नि़सारे, नि़ नि़सा, नि़सारे नि़, प़नि़, प़नि़सा—
म॑
रेसानि़, म॑रेसानि़, प़नि़, प़नि़ऽसा। नि़सारेम॑, नि़ऽसारेम॑, प़नि़सारेम॑, रेम॑पम॑, रेम॑रेपम॑, निपम॑, रेम॑पम॑रे, म॑रे, म॑रे, म॑रेनि़ऽऽसा। नि़सारेम॑ऽपऽ,
ध ध
रेम॑परेम॑प, रेम॑पनिऽम॑प, प़निसारे म॑पनिऽ म॑प, रेम॑प, रेम॑पम॑रे, म॑रे
रे
नि़ऽऽसा। नि़सारेम॑पनिऽऽ, नि़ऽ, नि़ऽऽ, रे म॑पनिऽ, पनिसांरें सांनिऽ, म॑रेंसांनिऽ, प़नि़सानि़प़म॑, नि़सारेसानि़, रेम॑पम॑रे, पनिसांनिप, पनिसां—
प प रें
रेंसांनि, पनि, निऽऽ, निऽऽ, निऽसांऽऽ। निसांरेम॑पम॑रेंऽनिऽऽ सांऽ,
ध ध रे
नि़ऽम॑प, रेम॑पसांनिऽऽम॑प, रेम॑पनिऽम॑प, रेम॑पम॑रे, म॑ रे नि़ऽऽसा; नि़सा-रेम॑ऽप ऽ ऽ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१—वैजयंती—ख्याल—एकताल

तू करीम करतार, कर मेहर की नजर नंदके छैल ॥ ध्रु० ॥
शरण तिहारी आयो, नित तेरी ही आस धरूँ,
रख लीजे मेरो शरम ।

३		४		×		०		२	
							म॑		
रेम॑	म॑प	-प	-निसां-	नि	-	नि	-प	-	रेम॑
तूऽ	करी	ऽम	ऽकरऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽर	ऽ	कर

०		३		४		×	
पसां	नि-	नि-	--	प-	म॑म॑	प-	--
मेहृ	रऽ	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	नज	रऽ	ऽऽ

०		२		०		३ ४
	म॑			म॑		
प-	-रे	सा,	रे	नि़	सा	
नंऽ	ऽद	के	छै	ऽ	ल	तू करी ऽ मऽ

३		४		×		०	
पप	सांसां	निप	निनि	सां	-	सां	निनि
शर	णति	हाऽ	रीऽ	आ	ऽ	यो	नित

२		०		३		४	
		ध					
निसांरेंसां	नि	प	-	निप	पसां	नि	-
ते---	री	ही	ऽ	आऽ	सध	रूँ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०	
			मं				
निसां	रेंमं	मं	रें	सांनि	प	मंरे	निसा
रख	लीऽ	जे	ऽ	मेऽ	री	शर	ऽम

२—वैजयंती—त्रिताल.

सुन सुन बतियाँ मोरे ब्रिज के बसैया,
आज प्राण-पिया मैं तो लेऊँगी बलैयाँ,
जाओ न परघर कृष्ण कन्हैया ॥
मेरी अँखियन के भूषन तुम हरि।
कैसे कटेंगी तुम बिन सगरी रतियाँ ॥

														नि	सा
३				×				२				०		सु	न
												मं			
रे	मं	प	सां	नि	–	मं	प	सां	नि	मं	प	रे	सा	नि	सा
सु	न	ब	ति	याँ	ऽ	मो	रे	ब्रि	ज	के	ब	सै	या	आ	ज
												ध			
नि	सा	रे	मं	प	मं	प	प	रे	मं	प	नि	प	मंरे	सा	नि
प्रा	ऽ	ण	पि	या	ऽ	मैं	तो	ले	ऊँ	गि	ब	लै	ऽऽ	या	ऽ
–	रे	नि	सा	रे	मं	प	नि	रें	नि	–	सां	नि	प	प	प
ऽ	जा	ओ	न	प	र	घ	र	कृ	ष्ण	ऽ	क	न्है	या	मे	री
प	प	नि	धनि	सां	–	सां	–	सां	सां	नि	रें	सां	सां	–	रें
अँ	खि	य	नऽ	के	ऽ	भू	ऽ	ष	न	तु	म	ह	रि	ऽ	कै
मं	पं	मं	रें	नि	सां	नि	प	मं	रे	सा	रे	नि	सा		
से	क	टें	गी	तु	म	बि	न	स	ग	री	र	ति	याँ		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३–वैजयंती—एकताल

फागुन आयो एरि माई री; खेलुंगी पिया से आज होरी।
कंचन की भरूँ पिचकारी ॥ धृ० ॥
ग्वाल–बाल सब आवत। श्यामसुन्दर आये ठुमकत।
अबिर मलत, जिया में हँसत, सँग सोहत ब्रिज की नारी ॥

×		०		२		०		३		४	
रे	म॑	प	नि	ध म॑	प	म॑	रे	सा	रे	नि॒	सा
फा	ऽ	गु	नऽ	आ	यो	ए	ऽ	रि	मा	ई	रि
म॑	रे	म॑	म॑	प	प	पनि	धनि	प	प	म॑	प
खे	लुं	गि	पि	या	से	आऽ	ऽऽ	ज	हो	ऽ	रि
रे	म॑	प	निध	म॑	प	म॑	रे	सा	रे	नि॒	सा
कं	ऽ	च	नऽ	की	ऽ	भ	रूँ	पि	च	का	रि
प	–	म॑	प	रे	म॑	प	नि	नि	सां	सां	सां
ग्वा	ऽ	ल	वा	ऽ	ल	स	ब	आ	ऽ	व	त
नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	सां	नि	प	म॑	प
श्या	ऽ	म	सुं	द	र	आ	ये	ठु	म	क	त
नि	सां	रें	मं॑	पं	मं॑	मं॑	रें	सां	रें	नि	सां
अ	बि	र	म	ल	त	जि	या	में	हँ	स	त
नि	सां	नि	–	ध म॑	प	म॑	रे	सा	रे	नि॒	सा
सँ	ग	सो	ऽ	ह	त	ब्रि	ज	कि	ना	ऽ	रि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४–वैजयंती–त्रिताल—लक्षणगीत

वैजयंति के सुर मधुर सखि । कल्याण को करत नित मेल ॥
बरज कर धग, सुध हंरत तन की ॥ धृ० ॥
सखि शाम को गावे घनश्याम, अरु दिखावत नित छबि 'श्याम' की ॥

३	×	२	०
			नि़ बै
सा रेम॑ प म॑	(प) – – –	सां नि म॑ प	म॑ रे सा नि़
ज यंऽ ऽ ति	के ऽ ऽ ऽ	सु र म धु	र स खि क
सा नि़सा रे सा	नि़ – प़ प़	नि़ सा रे म॑	रे सा नि़ सा
ऽ ल्या ऽ ण	को ऽ ऽ क	र त नि त	मे ऽ ल ब
नि़ सा रे म॑	प म॑ प प	पनि सांरें सां नि	पम॑ रेसा नि़सा प
र ज क़ र	ध ग सु ध	हुऽ रऽ त त	नऽ कीऽ ऽऽ स
प सां – सां	सां – सां –	सां – सां रें	सां निप सां
खि श्या ऽ म	को ऽ गा ऽ	वे ऽ घ न	श्या ऽ म अ
		म॑	म॑
रें मं पं मं	रें रें सां सां	सां नि प रे	नि सा –
रु दि खा ऽ	व त नि त	छ बि श्या ऽ	म की ऽ

५ श्यामकल्याण—एकताल

श्याम मोहन आए अजहूँ न । उन्हीं सँग लाग रह्यो मन ।
कैसे करूँ परत कल न ।।धृ०।।
जबसे गए सुध न लीन्ह, तरफत हूँ रैन-दिन ।
सखि,पाऊँ दरस कैसे । बाट तकत हूँ छिन-छिन ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०		३		४	
रे	मं	प	नि	मं	प	म	रे	सा	रे	(म)नि़	सा
श्या	ऽ	म	मो	ह	न	आ	ये	अ	ज	हूँ	न
मं	मं	प	मं	प	–	मं	प	ध	–	मं	प
उ	न्हीं	सँ	ग	ला	ऽ	ग	र	ह्यो	ऽ	म	न
रे	मं	प	नि	मं	प	ग	म	रे	रे	नि़	सा
कै	ऽ	से	क	रूँ	ऽ	प	र	त	क	ल	न
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
ज	ब	से	ग	ये	ऽ	सु	ध	न	ली	ऽ	न्ह
ध	ध	सां	ध	सां	रें	सां	सां	ध	–	प	प
त	र	फ	त	हूँ	ऽ	रै	ऽ	ना	ऽ	दि	न
मं	प	ध	सां	ध	प	मं	प	ध	प	मं	प
स	खि	पा	ऽ	ऊँ	ऽ	द	र	स	कै	ऽ	से
रे	मं	प	नि	(ध)मं	प	ग	म	रे	रे	नि़	सा
बा	ऽ	ट	त	क	त	हूँ	ऽ	छि	न	छि	न

रसचंद्र—

(संस्कृत) रागे तु रसचंद्रे च मद्वयं न हि पंचमः।
निषादो वर्ज्यते यत्र तीव्राश्च रिगधस्वराः॥

(हिन्दी) 'ललिता' के जब रिखब को शुद्ध रूप में गाइ।
पंचम निखद हि वर्ज्य कर तब रसचंद्र कहाइ॥

(मराठी) द्वय मध्यमांत नटला पंचम विन शुद्ध ऋषभि रस चंद्र।
संचारत त्रय सप्तकिं तार, तसा मध्य आणि ही मांद्र॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग रसचंद्र एक आधुनिक संशोधित विचित्र प्रकार है। इसमें दोनों मध्यम लगातार-ललितांग पद्धति से आते हैं। किन्तु इसमें शुद्ध ऋषभ होने से यह ललित राग से बिलकुल अलग रहता है। निषाद और पंचम इसमें वर्ज्य तथा बाकी स्वर शुद्ध हैं। इसके आरोह में ऋषभ दुर्बल है। अवरोह में 'मगमरेऽसा' अथवा 'गमरेऽसा' अथवा 'मरेऽसा' इस तरह गांधार वर्ज्य करके या वक्र रूप से लिया जाता है। यह स्वर-संगति पूर्वाङ्ग में थोड़ा बिलावल का भास करती है। साऽरेसा, सारेग, सारेसाग, मग, मगमरे, मरे, सा; ये सब बिलावल के ही टुकड़े हैं। मंधमंसांऽधमंऽम; गऽमंमधमंमऽ; इन स्वरसमुच्चय को बारम्बार लेने से यह राग अधिकाधिक स्पष्ट होता है। इस राग में प्रमुख स्वर शुद्ध मध्यम है। गांधार एक महत्व का विश्रांति-स्थान है। राग का चलन बहुत ही मींड प्रधान है। वादी मध्यम संवादी षड्ज। समय प्रभात। राग का मुख्याङ्ग—मंधमंसांऽधमंम, गऽ मंमधमंम, गमरेऽऽसा।

आरोहावरोहः—सा, रेसा, गमरेऽसा, गऽममंम, धमंम, मंधमंसां, रेंसां, गंमंरेंसां, सांधऽमंम, गऽममंधमंम, गमरेऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, रेसा, गमरेऽसा। सारेसाऽ, गऽ, सारेसाग, ममंमग, ममंमंग, मंमग, मरेऽसाऽ। सारेसा, ग, सारेसाग, साग, सागऽऽमऽऽ, सामऽऽ, गऽममंधमंम, गधमंम, धमंम, धंम, ग, ममंमग, मरेऽसा; गऽममंधमंमऽऽ। रेसा, गमरेसा, गऽममंम, गमरेऽसा, गऽममं-धमंमऽ गमरेऽसा, ग, मधमंसांऽध, मंम, ग, ममंधमंम, गमरेऽसा, गऽमं-मधमंमऽ। साग, सारेग, सारेसाग, धसाग, सागमग, सागममंमग, धमंमग, मधमंसांऽधमंमग ममंधमंमग, मंमग, मग, मग, मरेऽसा, गऽममंधमंमऽऽ। गऽमधमंसां, मंधसां, गऽमंधमंसां, सा, सागऽमधमंसां, धसा, ग, ममंमगऽमधमंसां, रेंसां, गंमंरेंसां, गंऽमंमंधंमंमं, गंमंरेंसां, रेंसां, सांऽधमंमग; ममंधमंमग, धमंमग, मग, मग, मगमरेऽसा; गऽममं-धमंमऽऽ। साध, मंमग, मंधमंसा, रेसा, गमरेसाऽ, गऽममंधमंऽमऽऽ।

२४—रसचंद्र-ख्याल-एकताल

बलि बलि जाऊँ, गाऊँ शंकर हर हर नाम सुरस ॥धृ०॥
बलिहारी करूँ तन मन धन उन्हीं पर, नीलकण्ठ पदपंकज रज धरूँ सिर॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४		×		०		२		०	
गम	रेसा	ग	–	म	–	मम	म	–मधसांग	सां
बलि	बलि	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	गाऽ	ऊँ	ऽशंऽऽऽ	क

३		४		×		०		२	
			सां						
रेंसां	–	धसांरेंसां	ध	सांध	मं	म	–	गम	मंम
रऽ	ऽ	हऽऽऽ	र	हुर	ह	र	ऽ	नाऽ	ऽऽ

०		३		
ग	गम	रे	सा	बलि बलि जा
म	सुर	स	ऽ	

४		×		०		२		०	
मंध	सांध	सां	–	सांरें	सां	सांध	सां	रें	सां
बलि	हाऽ	री	ऽ	करू	त	नऽ	म	न	ऽ

३		४		×		०		२	
गंमं	रेंसां	सांधसां	सां	धसां	रेंसां	–सां	सांध	सांध	मंम
धन	उन्हीं	पऽऽ	र	नीऽ	लकं	ऽठ	पद	पंऽ	कज

०		३		४
गमममं	गम	रे	सा	बलि बलि जा
रऽजऽ	धरु	सि	र	

२—रसचन्द्र—त्रिताल

बालमवा जागो हरि ।

शुभ प्रात की मङ्गल आई घरी ॥ध्रु०॥

कीर मुरवा कोकिल कुहु बोले ।

अरुण चूमत भूव नलिनी न्यारी ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

			ग
३	×	२	० बा
– म – मं	ध – मं –	म – ग म	रे रे सा सा
ऽ ल ऽ म	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जा ऽ	गो हृ रि शु
ध़ म़ ध़ म़	सा – सा –	ग 'ग ग म	रे रे सा म
भ्र प्रा ऽ त	की ऽ मं ऽ	ग ल ग्रा ऽ	ई घ री, की
ग म ध मं	सां – सां –	सां ध सां रें	सांध मं म ग
ऽ र मु र	वा ऽ को ऽ	कि ल कु हु	बोऽ ऽ ले ग्र
गं मं रें सां	सां रें सां सां	सां ध मं म	गम रे सा
रु ण चू ऽ	म त न व	न लि नी ऽ	न्या ऽ री

३–रसचन्द्र—त्रिताल

नैना चलावे किसन मुरारी,
रोकत टोकत नित ही हमसे।
पनघटवा ठाड़ो माई री ॥ध्रु०॥
कारि करूँ सखि कैसे घर जाऊँ,
छीन लई मोरी माथे की गगरी ॥

			मंम
			नैऽ
३	×	२	०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धसां	र्म	ध	र्म	म	–	म	–	ग	म	र्म	गम	रे	–	सा	–
ऽ	ना	ऽ	च	ला	ऽ	वे	ऽ	कि	स	न	मुऽ	रा	ऽ	री	ऽ
ग	–	म	र्म	ध	र्म	म	म	र्म	ध	र्म	सां	ध	र्म	म	–
रो	ऽ	क	त	टो	ऽ	क	त	नि	त	ही	ऽ	ह	म	से	ऽ
ग	म	ध	र्म	ध	–	सां	सां	धसां	रेंसां	ध	र्म	म	रे	सा	म
प	न	घ	ट	वा	ऽ	ठा	डो	माऽ	ऽऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	री	का
र्म	ध	सां	ध	सां	–	सां	सां	ध	सां	रें	सां	र्म	मध	सां	–
ऽ	री	ऽ	क	रू	ऽ	स	खि	कै	से	घ	र	जा	ऽऽ	ऊँ	ऽ
गं	मं	रें	सां	ध	सां	ध	र्म	म	–	ग	म	म रे		रे	सा
छी	ऽ	न	ल	ई	ऽ	मो	री	मा	ऽ	थे	की	ग		ग	री

४-रसचन्द्र—झपताल (लक्षणगीत)

रसचन्द्र मधुराग नित सोहत ललितांग ।
द्वय मध्यम लाग ॥ध्रु०॥
निप बरज नित करत ।
म स जुगल सम्वादत ॥
शुभ प्रात के समय,
नित गात धन भाग ॥

×		२			०		३		
ध़	सा	ग	र्म	म	ध	र्म	गम	रे,	सा
र	स	च	ऽ	न्द्र	म	धु	राऽ	ऽ	ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	सा	ग	म	मं	ग	मं	ध	म	म
नि	त	सो	ह	त	ल	लि	तां	ऽ	ग
मं	ध	मं	सां	ध	मं	म	रे	-	सा
द्व	य	म	ऽ	ध्य	म	ऽ	ला	ऽ	ग
ग	ग	मं	ध	मं	सां	सां	सां	रें	सां
नि	प	व	र	ज	नि	त	क	र	त
ध	सां	गंमं	रें	सां	ध	सां	ध	मं	म
म	स	जुऽ	ग	ल	स	म	बा	द	त
गं	मं	मं	मं	रें	सां	-	सां	ध	सां
शु	भ	प्रा	ऽ	त	के	ऽ	स	म	य
मं	ध	मं	सां	ध	मं	म	रे	-	सा
नि	त	गा	ऽ	त	ध	न	भा	ऽ	ग

नन्द—

(संस्कृत) द्विमस्तीव्रेतरः सांश ग्रारोहे नास्ति रीस्वरः ।
प संवादी ग वक्रश्च नन्दस्तु रात्रि–गोचरः ॥

(हिन्दी) दो मध्यम तीवर सब हि षड्ज सुवादी जान ।
पंचम सुर संवादि है, नन्द राग पहिचान ॥

(मराठी) नन्द राग नित घेई विमलस्वरीं उभय मध्यमा रुचिर ।
स-प नृपमंत्री शोभति, रजनी समयांत मुग्ध करि चतुर ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नन्द अथवा आनन्दकल्याण में दो मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। हमीर, बिहाग, कामोद, गौड़सारंग आदि रागों का इसमें मधुर मिश्रण है। इसके आरोह में ऋषभ वर्ज्य है। शुद्ध मध्यम आरोहावरोह में सरल रूप में लिया जाता है। तीव्र मध्यम पंचम के साथ अवरोह में आता है। अवरोह में म॑प, गमधपरेऽऽसा अथवा गमपरेऽसा इस प्रकार 'प रे' संगति बारंबार दिखाई जाती है। बाद में सागऽमऽऽ इस प्रकार शुद्ध मध्यम मुक्त रूप से लिया जाता है। वादी सा, तथा संवादी पंचम है, शुद्ध मध्यम एक महत्त्व का विश्रान्ति-स्थान है। मुख्यांग—गम धप रेऽसा, गऽ मऽ। समय रात्रि का दूसरा प्रहर। जाति वक्र सम्पूर्ण।

आरोहावरोहः—सा, ग, मऽ, प गमपधनिऽप, पधम॑प सांऽ। सां नि, ध, प, म॑प, म॑प धप, गमप रेऽऽसा; गऽऽमऽऽ।

स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़सा। नि़साग, गऽमऽऽ सागऽऽम, गमपऽऽ, गमधप रेऽसा, गऽऽमऽऽ। सा, सागऽऽमऽऽ, मगपऽऽ, मगपऽऽ, गमपधनिऽ धप, धऽपम॑, (प)ऽमग, गमधपऽ, गमपरेऽसा, गऽऽमऽऽ। गमपधनिऽधप, धऽपम॑, (प)ऽमग, सागमपधनिऽ प, सागमपऽधम॑पधनिऽपऽ, गमपरेऽसा, गऽऽमऽऽ। पधम॑पसांऽ, ऽसा, सागमप, पधम॑पसांऽ, गंसां, गंमंपंरेंऽसां, सां, नि, निधप, निरें, निध, प; गमपध धनिधनिऽधप, पधपधऽपम॑, म॑पम॑पऽमग, गमंध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म म
प रे, सा, गऽ, मऽ ।

१-नन्द—त्रिताल

पायलिया मोरी बाजे झनन,
कैसे आऊँ मैं सखि, पिया के दरसन ॥धृ०॥
जागे मोरी अब सास-ननदिया,
और जागत मोरि सबहि सहेलिया ।
पिया के दरस बिन न आवत चैन ॥

३				×				२				०			नि पा
सां	ध	–	मं	(प)	–	प	प	म ग	म	गम	धप	म रे	रे	सा	सा
ऽ	य	ऽ	लि	या	ऽ	मो	री	बा	ऽ	जेऽ	ऽऽ	झ	न	न	कै
सा	ग	–	ग	म	–	प	ध	ध नि	ध नि	ध	प	ध	मं	प	प
से	जा	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	स	खि	पि	या	के	द	र	स	न	जा
–	सां	–	सां	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	सां	सां	रें	सां	गं
ऽ	गे	ऽ	मो	री	ऽ	अ	ब	सा	ऽ	स	न	न	दि	या	औ
मं	पं	मं रें	–	सां	सां	रें	सां	ध ग	म	ध	प	म रे	रे	सा	–
ऽ	र	जा	ऽ	ग	त	मो	रि	स	ब	हि	स	हे	लि	या	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा सा ग ग	म॑ म प ध	धनि धनि ध प	ध म॑ प
पि या के द	र स बि न	नाऽ ऽऽ व त	चै ऽ न

२-नन्द—त्रिताल

मधुर बजावे मुरली ।
स्वर-माधुरी सखि अलबेली ।।धु०।।
बन बन ढूंढ़त ब्रिजनारी ।
ये री न पायो बनमाली ।।

			ध
३	×	२	० म
म	म		
प रे – सा	ग – – रे	ग ग प म॑	ध प म॑ ग
धु र ऽ ब	जा ऽ ऽ ऽ	वे ऽ मु र	ली ऽ ऽ स्व
म प – ध	धनि धनि ध प	ध ध प म॑	(१) – म॑ प
र मा ऽ धु	रीऽ ऽऽ स खि	अ ल बे ऽ	ली ऽ ऽ ब
प सां – सां	रें सां – –	सां सां सां रें	सां नि धप गं
न ब ऽ न	ढूं ऽ ऽ ऽ	ढ़ त ब्रि ज	ना ऽ रीऽ ये
			म
रें सां नि रें	सां नि ध प	ग म ध प	रे – – सा
ऽ री ऽ न	पा ऽ यो ऽ	री ऽ ब न	मा ऽ ऽ ली

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३-नन्द—एकताल

मान मोरि बिनती मान,
श्याम तोरी मैं तो शरन,
जाने दे जमुना तीर मोहन ॥ध्रु०॥
ब्रिज जुवती आवत जावत,
देख श्याम सबहि कहत ।
कान्हा मानजा अब जाने दे,
सुनूंगी बन्सी सगरी रैन ॥

×		०		२		०		३		४	
सां	–	रेंसां	नि	–	धप	प	ध	नि	धप	मंप	गम
मा	ऽ	नऽ	मो	ऽ	रिऽ	बि	न	ति	माऽ	ऽऽ	नऽ
(म)ग	म	प	ध	नि	धप	(म)ग	म	धप	(म)रे	रे	सा
श्या	ऽ	म	तो	ऽ	रीऽ	मैं	ऽ	तोऽ	श	रऽ	नऽ
सा	सा	ग	म	प	ध	(प)नि	–	धप	प	पध	मंप
जा	ने	दे	ज	मु	ना	ती	ऽ	रऽ	मो	हऽ	नऽ
प	प	सां	सां	सां	–	सां	रें	गंरें	सां	सां	सां
ब्रि	ज	जु	व	ती	ऽ	आ	व	तऽ	जा	व	त
सांगं	रेंगं	रेंसां	सांरें	सांरें	सांनि	नि	नि	नि	सांनि	ध	प
देऽ	ऽऽ	खऽ	श्या	ऽऽ	मऽ	स	ब	हि	कऽ	ह	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

									म		
सांरें	सांरें	नि	सां	सां	सां	ग	म	ःप	ग	म	म
काऽ	न्हाऽ	ऽ	मा	न	जा	अ	ब	तो	जा	ने	दे

म									म		
सा	ग	म	पध	निध	प	ग	म	धप	रे	-	सा
सु	नु	गि	बंऽ	ऽऽ	सि	स	ग	रिऽ	रै	ऽ	न

४-नंद—झपताल—लक्षणगीत

आनन्द दे नंद, द्वय मध्य को मानत नित चतुर गुणिवृन्द ॥ धृ० ॥
पस जुगुल समवाद, सखी री बरसावत ।
मध रजनि को शांत मधुर-सुर-सौगंध ॥

०		३			×		२		
		म			सा				
(प)	-	रे	-	सा	ग	-	म	-	म
आ	ऽ	नं	ऽ	द	दे	ऽ	नं	ऽ	द
म						ध		नि	
ग	म	प	-	ध	नि	प	ध	मं	प
द्व	य	म	ऽ	ध्य	को	ऽ	मा	न	त
							म		
सा	ग	मप	निध	मंप	गम	धप	रे	-	सा
नि	त	चऽ	तुऽ	रऽ	गुऽ	निऽ	वृं	ऽ	द
प	प	सां	सां	सां	सां	रें	सां	-	सां
प	स	जु	गु	ल	स	म	वा	ऽ	द

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रेंगं	रेंगं	सांनि	सांरें	सांरें	-नि	सांनि	ध	-	प
सऽ	खिऽ	रिऽ	बऽ	रऽ	ऽसा	ऽऽ	व	ऽ	त
म	म	म	म	म	म	-	म	प	प
म	धु	र	ज	नि	को	ऽ	शां	ऽ	त
धनि	धनि	धप	पध	पध	पमग	मप	मरे	ऽ	सा
मऽ	धुऽ	रऽ	स्वऽ	रऽ	ऽऽसौ	ऽऽ	गं	ऽ	ध

लाजवन्ती

(संस्कृत) निसौ गरी, मगौ पधौ मपौ सपौ धमौ परी ।
लज्जावती तु सम्पूर्णा गीयते विमलस्वरैः ।।

(हिन्दी) संपूरन सुर धरत है, समय सोहि मधरात ।
लजवन्ती अति मधुर है, सुध स्वर, पस संवाद ।।

लाजवन्ती एक सम्पूर्ण जाति का मधुर वक्र स्वरूप है । इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में निसा, गरे, मग, इस प्रकार के उठाव से गौड का आभास हुआ करता है; किन्तु आगे पऽधमपसां इस प्रकार की स्वरमाला आते ही गौडसारङ्ग नष्ट होजाता है। अवरोह में सांऽऽप धऽम, पऽग, इस प्रकार वक्र स्वर-रचना से तिलककामोद, खंबावती की छाया

म

दिखाई देती है, परन्तु अन्त में गमप रेऽसा इस प्रकार का वक्र अवरोह इन रागों को अलग कर देता है। क्वचित् तानबाजी में रेगमप या मपनिसां तथा अवरोह में सांनिधपऽमऽ इस प्रकार की सरल रचना करके गौडमल्हार का तिरोभाव किया जाता है। किन्तु आगे गऽमप रेऽसा अथवा सांऽप, धऽम, पऽग, मपरेऽसा इस प्रकार की लाजवंती की राग-वाचक स्वरमाला आते ही गौडमल्हार लुप्त हो जाता है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरे का उठाव पधमपसां अथवा मपसां इस प्रकार से किया जाता है। वादी पञ्चम, संवादी षड्ज, समय रात का दूसरा प्रहर, मुख्याङ्ग:—

ऩिसा, गरे, मग, पऽधमपसांऽप, धऽम, पऽग, मपरेऽसा।

आरोहावरोह—ऩिसा, गरे, गम, पऽधमपसां। सांऽऽप, धऽम, पग मपरेऽसा।

स्वरविस्तार—सा, ऩिसा, प़ऩि, प़ऩिसा, साप़, प़ऽध़म़प़सा।

ऩिसारे, प़ऩिसारेसाप़, प़ध़म़प़सा, ऩिसारे, गरे, ऩिसागरे, साप़, गरे,

ऩिसागरे, प़ऩिसागरे, गरेमगपरे,ऽसा। ऩिसाग, प़ऩिसाग, रेग, रेसाऽग, रेग, साप, ध़म़प़सा, ऩिसाग, गरेमग, साऽगरेमग, ऩिसागरेमग, रेरेसा, गरेमग, परेऽसा। सा, रेगम, ऩिसा, गरे, मग, म, सागरेम, साम, म, मग, रेगम, पम, रेगमपम, गपम, पम, पग, रेगमपम, पग, साम, म, मग, रेगमपम, गपम, गमपरेऽसा,। सा, रेगमप, गरे, मग, प, ऩिसाग-रेमग, प, प़ऩिसा, गरेसा, गरे, मगप, रेसाऽगरेऽमगऽप, (प) मग, रेग-मपम, (प) मग, रेगमपग, धपम, पग, रेगमपगऽमपगऽगमपरेसा। सा, गरे, मग, पऽधमप, सां, सांऽपऽम, मपनिसां, पनिसां, रेंसां, गरें, मंगं, पंरेंऽसां, रेंऽगंमंपंरेंऽसां पनिसांरें सां, सांनिधपम, सांप, धम, पग, मपग, रेग, परेऽसा, साप़, धप़, प़ध़, म़प़, सा, गम, परेऽसा।

१-लाजवंती, ख्याल—तिलवाड़ा

बलमा न जावो परदेस, मानो मोरी सैंयाँ ॥धृ-॥
गरजत कारे घन, उपजावे कोयल कूकहूक ॥

२				×			
				रे			
*	*	---ग	रेसारेऩिसासा	गं	म	--मग	प
*	*	ऽऽऽब	लमाऽऽऽन	जा	वो	ऽऽपर	दे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२				०			
—पे	पधमपसां----	- प	ध	म	प	ग	रे---रेगमप
ऽस	माऽऽऽऽऽऽऽ	ऽ ऽ	नो	ऽ	मो	ऽ	रीऽऽऽऽऽऽऽ

३				×			
रे	सा	० ---प	पधपमप	सां	रेंसां	सांसां	रें--गंमंपं--
सैं	याँ	ऽऽऽग	रजऽऽत	का	रेऽ	घन	उऽऽपऽऽऽऽ

२				०			
		प		प	म		
रें	सां	सां	प	धम	पग	रे	रेऽऽपमपऽऽ
जा	वे	को	ऽ	यऽ	लऽ	कू	कऽऽऽऽऽऽऽ

३			
रे	सा	---ग	रेसारेनि़सासा
हू	क	ऽऽऽब	लमाऽऽऽन जावो

२—लाजवंती-त्रिताल

सुघर-सुघर सब आये गुनिजन। गुन की रीत गुनी ही जानत, क्या जाने हमको जो निरगुन॥ धृ०॥ जो-जो गुन की रीत को समझत, उनके ही हम गुन के कारन॥

०				३				×				२			
सां	नि़	ध	प	मग	रे	ग	प	म	-	रेग	मप	रे	रे	सा	सा
सु	घ	र	सु	घऽ	र	स	ब	आ	ऽ	येऽ	ऽऽ	गु	नि	ज	न
नि़	सा	ग	रे	म	ग	प	प	पनि	सांरें	सां	नि	ध	प	म	म
गु	न	की	ऽ	री	ऽ	त	गु	नीऽ	ऽऽ	ही	ऽ	जा	ऽ	न	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पध	मप	सां	प	ध	म	प	ग	रे	-	गम	प	रे	रे	सा	सा
क्या	ऽऽ	जा	ऽ	ने	ऽ	ह	म	को	ऽ	जोऽ	ऽ	नि	र	गु	न
प	ध	म	प	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	सां
जो	ऽ	जो	ऽ	गु	न	की	ऽ	री	ऽ	त	को	स	म	झ	त
गं	रें	मं	गं	पं	रें	सां	सां	सां	सां	प	ध	गम	प	रे	सा
उ	न	के	ऽ	ही	ऽ	ह	म	गु	न	के	ऽ	काऽ	ऽ	र	न

३-लाजवंती—एकताल

तिलक लगाऊँ नंद के नंद, तुम्हरे कारण अमलकन्द।
तन-मन वारूँ हरि-मुकुन्द।।ध्रु०।। अधर मुरली सीस फूल,
मधुर हलत कानन कुण्डल। हँसत जिया में मन्द-मन्द।।

×		०		२		०		३		४	
सां	सां	प	ध	प	म	ग	म	प	(ग)रे	-	सा
ति	ल	क	ल	गा	ऊँ	नं	द	के	नं	ऽ	द
नि़	सा	ग	रे	म	ग	सां	नि	ध	प	म	म
तु	म्ह	रे	का	र	ण	अ	म	ल	क	ऽ	न्द
प	ध	म	प	सां	प	ध	म	प	(म)रे	-	सा
त	न	म	न	वा	रूँ	ह	रि	मु	कुं	ऽ	द
म	प	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां	रें	सां	सां
अ	ध	र	मु	र	ली	सी	ऽ	स	फू	ऽ	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	ध	ध	ध	सां	सां	सां	रें	सां	नि	धप	म
म	धु	र	हु	ल	त	का	न	न	कुं	डऽ	ल
सां	प	ध	म	प	ग	ग	म	प	रे	–	सा
हँ	स	त	जि	या	में	मं	ऽ	द	मं	ऽ	द

४—लाजवंती—झपताल—लक्षणगीत

सखि मधुर लाजवंती मध्य रात के समय,
मोरे मन भावे अति ॥धृ०॥
सब शुद्ध सुर जान, निखद को अबमान।
सुर मध्य करे अंश, सहचार को आदि ॥

×		२			०		३		
सां	प	ध	म	गरे	रे	रेगमप	रे	–	सा
स	खि	म	धु	रऽ	ला	जऽऽऽऽ	वं	ऽ	ती
नि़	सा़	ग	–	ग	म	–	प	म	म
म	ध	रा	ऽ	त	के	ऽ	स	म	य
पधमप	सां	प	ध	म	प	ग	रेगमप	रे	सा
मोऽऽऽ	ऽ	रे	म	न	भा	ऽ	वेऽऽऽ	अ	ति
म	प	सां	–	सां	सां	रें	सां	–	सां
स	ब	शु	ऽ	द्ध	स्व	र	जा	ऽ	न
रें	गं	मं	रें	गंमंपं–	गं	गंमंपं	रें	–	सां
नि	ख	द	को	ऽऽऽऽ	अ	बऽऽ	मा	ऽ	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	म	म	–	म	म		ग	म	प	प
सु	र	म	ऽ	ध्य	क		रे	ग्रं	ऽ	श

म	प	सां	–	प	रे	रेगमप–	रे	–	सा
स	ह	चा	ऽ	र	क	रेऽऽऽऽ	ग्रा	ऽ	दि

चंद्रिका–

(संस्कृत) निसौ धपौ मरी, निसौ नित्यं गांवार-वर्जिता ।
मांशिका षाडवा शुद्धा गेया रात्र्यां च चंद्रिका ।।

(हिन्दी) धग बरजे आरोहि में निग बरजे अवरोहि ।
वेलावलि के मेल में राग चंद्रिका सोहि ।।

(मराठी) राग चंद्रिका घेई मध्य निशा समयिं शुद्ध स्वर माला ।
सम संवादति वर्ज्य न स्वर गांधारास, मधुर बहु गमला ।।

"राग चंद्रिका" यह एक बिलावल मेल का औडव राग है। इस राग में गांधार वर्ज्य तथा अन्य सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में धैवत तथा अवरोह में निषाद दुर्बल है। नि़सा, रे, मप, नि सां, इन स्वरों में सारंग, सांऽधपमरे, रेमपधपमरे, मपधपमरे, इनसे दुर्गा, मरेऽनि़सा, (म) इन स्वरों से श्यामकल्याण और पनिसां, निसां, धप, इन स्वरों से पटदीप की छाया व्यक्त होती है। वादी पंचम, संवादी षड्ज, समय मध्यरात्रि। वर्षा ऋतु में समय का बंधन नहीं। मुख्यांगः—मप निसां, धप, मपधप, म रे, नि़, सा।

आरोहावरोहः—नि़सा, रे, मप, नि, सां। निसांधप, मपध, प, (म) मऽरेनि़ऽऽसा।

म म

स्वरविस्तारः—सा, नि़सा, रे, प़नि़सा, नि़सारे, प़नि़सा, मरे, मरे, मरे, नि़सा। प़नि़प़सा, नि़रे नि़सा ध़ऽप़, म़प़नि़सा, ध़, प़, म़प़नि़सा,

ध़ ध़ म

ध़प़, नि़साध़प़, म़प़नि़ऽ, नि़ऽ नि़सा। नि़सारे, प़नि़सारे, मरे, मरे,

म म म

नि़ऽसा। नि़सारे, नि़सा, मऽरे। प़नि़सामऽरे, मऽरे, नि़ऽसा। नि़सारेमप, रेमपऽरे मप, रेमपं, नि़ऽसारेमप, नि़साध़प़, म़प़नि़सा, रेमप, मपधप, साऽरेमप, मपमधप, मधपमरे, मरे, नि़सा। नि़सारेमपधऽमपधऽमध-ऽनि़ऽसारेमपध, ध, रेसामरेपमध, धध, निध, मपनिध, रेमपधमपध,

म

मपनिध, मपधपमरे, मरे, नि़सा। नि़सारेमपनि, मपनि, नि़, सारेमपनि

ध ध

प़नि़प़सानि़साध़प़, मपनि, निऽ, निऽ, निसांऽऽऽ। निसांमरें, मरेंनिसां,

म म

निसांरें, निसांधप, मपनिसां, धप, मपधप, मपधपमरे, मरे, नि़ऽसा।

१—चंद्रिका—झपताल

सखि चतुर नंदलाल। घनश्याम गोपाल, गिरिधारि, ब्रजबाल
चित हरत मुखकमल मन मगन भई भूल ॥ध्रु०॥ जब से सुनी मुरली
चित-चोर सुध लीन्हि पनघटवा ठाड़ो कान्हा। मन भ्रमत गोकुल॥

×		२			०		३		
प	म	ध	प	म	रे	सा	म नि़	सा	सा
स	खि	च	तु	र	नं	द	ला	ऽ	ल
सा	नि़	सा	-	रे	नि़	सा	ध़	म़	प़
घ	न	श्या	ऽ	म	गो	ऽ	पा	ऽ	ल
म़	प़	नि़	-	ध़	नि़	नि़	नि़ सा	-	सा
गि	रि	धा	ऽ	रि़	ब्र	ज	बा	ऽ	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म प	म	प	म	म	प	प	ध	म	प
चि	त	ह	र	त	मु	ख	क	म	ल
नि	सां	ध	म	प	ध	प	म	रे	सा
म	न	म	ग	न	भ	ई	भू	ऽ	ल
म	प	सां	–	सां	सां	–	सां	रें	सां
ज	ब	से	ऽ	सु	नी	ऽ	मु	र	ली
मं रें	मं	रें	–	सां	नि	सां	रें	म नि	सां
चि	त	चो	ऽ	र	सु	ध	ली	ऽ	न्ही
नि	सां	रें	नि	सां	नि	सां	ध	म	प
प	न	घ	ट	वा	ठा	डो	का	ऽ	न्हा
नि	सां	ध	म	प	ध	प	म	रे	निसा
ब	न	भ्र	म	त	गो	ऽ	कु	ऽ	लऽ

२–चंद्रिका–एकताल

बादरिया सावन की,
भुकत भुकत भुकत आई ।
जलधर गरजत तड़पत,
चमचम बिजली चमकी ॥ध्रु०॥
साजन घर अजहुँ न आये,
जियरा मोरा तरसाये ॥
का करूँ न माने मन,
सुध न रही अब बाकी ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०		३		४	
सां	–	ध	प	म	–	मप	धप	म	रे	नि़	सा
बा	ऽ	द	रि	या	ऽ	साऽ	ऽऽ	व	न	की	ऽ
			म								
सा	रे	सा	प	म	म	म	प	ध	म	प	प
झु	क	त	झु	क	त	झु	क	त	आ	ऽ	ई
म	प	नि	सां	रें	रें	नि	सां	ध	म	प	प
ज	ल	ध	र	ग	र	ज	त	त	ड़	प	त
मप	निसां	ध	म	प	प	मप	धप	म	रे	नि़	सा
चऽ	मऽ	च	म	बि	ज	लीऽ	ऽऽ	च	म	की	ऽ
		नि								मं	
म	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां
सा	ऽ	ज	न	घ	र	अ	ज	हुँ	न	आ	ये
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	रें	नि	सां	–
जि	य	रा	ऽ	मो	रा	त	र	सा	ऽ	ये	ऽ
सां											
म	–	म	प	–	प	पनि	सांरें	सां	ध	प	म
का	ऽ	क	रू	ऽ	न	माऽ	ऽ	ने	ऽ	म	न
नि़	सां	ध	प	म	प	मप	धप	म	रे	नि़	सा
सु	ध	ऽ	न	र	ही	अऽ	बऽ	बा	ऽ	की	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४-चन्द्रिका—त्रिताल (लक्षणगीत)

चंद्रिका आज गावो सखि,
कहत चतुर-गुणि भेद बिलावल।
बरज करत सब सुर गंधार को ॥धृ०॥
बिन धैवत कर रे आरोहन,
कर निषाद सुर बिन अवरोहन।
समझ वादि पंचम सुर नीको ॥

०				३				×				२			
नि	सां	ध	प	म	प	ध	म	प	–	–	–	मध	पभ	रेसा	निसा
चं	ऽ	द्रि	का	ऽ	आ	ऽ	ज	गा	ऽ	ऽ	ऽ	वोऽ	ऽऽ	सऽ	खिऽ
सा	नि॒	सा	रे	सा	ध॒	म॒	प॒	नि॒	–	सा	रे	सा	नि॒	सा	सा
क	ह	त	च	तु	र	गु	णि	भे	ऽ	द	बि	ला	ऽ	व	ल
रे	म	रे	म	प	ध	म	प	नि	सां	रें	सां	ध	प	म	प
ब	र	ज	क	र	त	स	ब	सु	र	गं	धा	ऽ	र	को	ऽ
म	प	सां	–	सां	सां	नि	सां	रें	मं	रें	सां	रें	नि	सां	सां
बि	न	धै	ऽ	व	त	क	र	रे	ऽ	आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न
नि	सां	रें	सां	–	ध	म	प	नि	सां	ध	प	ध	म	प	प
क	र	नि	षा	ऽ	द	सु	र	बि	न	अ	व	रो	ऽ	ह	न
रे	म	रे	म	प	ध	म	प	नि	सां	रें	सां	ध	प	म	प
स	म	झ	वा	ऽ	दि	पं	ऽ	च	म	सु	र	नी	ऽ	को	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रसरञ्जनी—

(संस्कृत) शुद्धमेलसमुत्पन्ना गपहीनैवसम्मता ।
मध्यमः सम्मतो वादी निशिगेया रसरंजनी ।।

यह राग बिलावल ठाठ से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार तथा पंचम वर्ज्य हैं। अर्थात् जाति औडव है। पूर्वाङ्ग में 'रेम' संगति से दुर्गा की छाया दिखाई देती है, किन्तु पंचम का अभाव तथा शुद्ध निषाद का प्रावल्य इस राग को दुर्गा से अलग रखता है। तार-षड्ज एक प्रमुख विश्रांति-स्थान है। वादी मध्यम, संवादी षड्ज, समय मध्यरात्रि।

मुख्याङ्गः—म ध नि सां ऽ, नि ध, म, रे, सा।

आरोहावरोहः—सा, रे, म, धऽऽ, निसां। सांऽनि, धऽम, धऽमरेऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, निसा, धनिसा, मधनिसा, रेसा, मऽरेसा, मधनिसा, धनिसारेसा, निध, धनिसारेसाऽनिध, सा, निध, निध, मध-निसा। सा, रेसा, मऽरेसा, साम, निसाम, धनिसाम, मधनिसा, म, निसाम, धम, रेम, रेमधम, मधम, धम, रे, सा। निसा, निसारेमध, मध, मधनिध, मधमनिध, निध, मधनिसां, निध, मधनिसांरेंसांध, रेंसांनिध, सांनिध, निध, निधम, धऽमरेऽऽसा मधनिसा। मधनिसां, धनिसां, सां, रेंसां, मं, रेंसां, सांरेंसांनिध, मधनिसांनिध, सांऽनिधऽम, मनिम, धऽम, धऽमरे, सा, मधनिसा, रेसा, मधनिसांऽ।

३—रसरञ्जनी—त्रिताल

बलमा, न जावी घर सौतन के।
बार-बार तोरी बिनति करत हूं,
मानो मोरी नंद-जसुमति के ।।ध्रु०।।
रैन अँधेरी, चमके बिजुरी।
डरपावत जिया, छतिया धरके ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म

३	×	२	० ब
ध धनि सांरें सांनि	ध – म –	धनि सांनि ध म	रे रे सा –
ल माऽ ऽ नऽ	जा ऽ वो ऽ	घऽ रऽ सौ ऽ	त न के ऽ
ध़ – म़ ध़	नि़ सा सा सा	ध़ नि़ सा रे	म रेसा नि़ ध़
बा ऽ र बा	ऽ र तो री	बि न ति क	र तऽ हूँ ऽ
सा – सा म	– म ध म	धनि सांरें सांनि धनि	सांरें सांनि ध म
मा ऽ नो मो	ऽ रि नं द	जऽ सुऽ मऽ तिऽ	केऽ ऽऽ ऽ रै
ध मध निसां धनि	सां – सां सां	ध नि सां रें	सां नि ध –
ऽ नऽ ऽऽ अंऽ	धे ऽ री ऽ	च म के ऽ	बि जु री ऽ
नि सां मं रें	सां रें सां सां	धनि सांरें सांनि धनि	सांरें सांनि ध
ड र पा ऽ	व ति जि या	छुऽ तिऽ याऽ ऽऽ	धऽ रऽ के

भवानी–

(संस्कृत) भवानी रागिणी प्रोक्ता निशिगेया च मांशिका।
शुद्धमेल " समुत्पन्ना वर्जिता गपनिस्वरैः॥

(हिन्दी) जबहि बिलावल मेल में पंचम गनि नहिं लाग।
मस वादी समवादि तें कहत भवानी राग॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"भवानी" चतुस्वरी जाति की रागिनी है। इसमें गांधार, पंचम तथा निषाद वर्ज्य हैं। अन्य स्वर शुद्ध। सा रे, म, ध इन चार ही स्वरों में यह राग गाया जाता है। स्वर-साम्य के कारण भवानी राग दुर्गा से बहुत कुछ मिलता जुलता है। मानों पंचम वर्ज्य दुर्गा ही है। किन्तु धैवत का प्राधान्य इस राग में कुछ और ही वैचित्र्य लाता है। पूज्य पटवर्धनजी कृत 'राग-विज्ञान' के पांचवें भाग में पृष्ठ २२ पर राग भवानी का निर्देश है। वादी मध्यम, संवादी षड्ज, समय मध्यरात्रि। राग का मुख्याङ्गः—सा, धऽऽ, मधसां, धऽम, रेऽऽ।

आरोहावरोहः—सा, रे, म, ध, सां। सां, धऽम, मधसां, धऽम, धऽम, रेऽऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, रे, रे, रे, ध़, सा। सा, रे, रे, ध़सा रे, ध़सा-ध़रे, सारेमरे, सारे, मऽरे, मऽरे, मऽरे, ध़सा। ध़सारेम, सारेम, रेसाम, धम, रेसाधऽम, ध़सा, धऽम, रेमधऽम, मधऽम, रेमधऽध, साधऽम धऽम, रेमध, मरे, ध़सा। सा रेमध, मध, ऽसारेमध, धध, धसांध, रेंध, रेंध, धरेंध, धसांरेंसांध, सांऽधऽमऽरे, रे, रे, धसा। सारेमध, मध मधसां, धसां, धसांमंऽरेंसां, मंऽऽरें, मंऽऽरें, धसां, मधसांऽधऽम रेंऽधऽम, धऽम धऽमरे, सा, म़ध़, म़ध़सा।

१-भवानी—झपताल

नीके घुंगरिया सोहंत। चले चाल ठुमकंत।
मधुबन्सी धरे अधर। मृग नयन ब्रिजनाथ ॥ध्रु०॥
पट पीत कटि कसत। सिर सोहत मोर मुकुट।
रवि-कोट-सम वदन। रति-लाज लजवत ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		२			०		३		
								सा ध	सा
								नी	के
ध	-	ध	धसांरेंसां	ध	म	रे	सा,	ध	सा
घूं	ऽ	गं	रीऽऽऽ	या	सो	ह	त,	च	ले
रे	-	सा	ध़सारेसा	सा	ध़	ध़	म़	म़	ध़
चा	ऽ	ल	ठुऽऽऽ	म	क	ऽ	त	म	धु
सा	-	सा	सा	सा	म	रे	म,	ध	म
बं	ऽ	सो	ध	रे	अ	ध	र	मृ	ग
ध	सां	रें	सां	ध	म	रे	सा	म	ध
न	य	न	ब्रि	ज	ना	ऽ	थ	प	ट
सां	-	सां	सां	सां	सां	ध	सां,	ध	सां
पी	ऽ	त	क	टि	क	स	त,	सि	र
रें	रें	सां	सां	रें	सां	ध	म	सां	सां
सो	ह	त	मो	र	मु	कु	ट	र	वि
मं	रें	सां	सां	सां	रें	ध	सां,	ध	सां
को	ऽ	टि	स	म	व	द	न,	र	ति
ध	-	म	ध	म	रे	-	सा	सा ध	सा
रा	ऽ	ज	ल	ज	व	ऽ	त	नी	के

२-भवानी—त्रिताल

झूम-झूम आये सखि री, बादल ।
बरसावत बरन-बरन के बूँद-बूँद,
अति श्यामल अरु सीतल ।।ध्रु०।।
चमक-चमक चमके सखि, बिजुरी,
डरपावे जिया, रैन अँधेरी ।
मंद-मंद लहरावत सुमधुर पवन सजल ।।

×	२	०	३
			ध सा
			झू म
म - - म	ध म धसां रेंसां	सां ध म म	रे सा ध सा
झू ऽ ऽ म	आ ऽ येऽ ऽऽ	स खि रि बा	द ल ब र
रे - सा सा	म म रे सा	रे रे सा -	रे म रे म
सा ऽ व त	ब र न ब	र न के ऽ	बूँ ऽ द बूँ
- म ध ध	धसां रेंसां ध म	धसां रेंसां ध म	रे सा
ऽ द अ ति	श्याऽ ऽऽ म ल	अऽ रुऽ सी ऽ	त ल
		ध म म म	ध ध सां ध
		च म क च	म क च म
सां - सां सां	म ध सां -,	सां सां ध -	सां - रें रें
के ऽ स खि	बि जु री ऽ,	ड र पा ऽ	वे ऽ जि या
सां रें सां सां	ध - म -,	मं - सां रें	- सां ध सां
रैं ऽ न अँ	धे ऽ री ऽ,	मं ऽ द मं	ऽ द ल ह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३—भवानी-एकताल (लक्षणगीत)

मधुर रागिनी भवानी,
मेल सोहत सुध स्वर में,
बरजत नित पञ्चम, गनि ।।ध्रु०।।
प्रथम करत स्वर वादी,
मध्य सोहत समवादी
समय रजनी मानत गुनी ।।

×		०		२		०		३		४	
सां	सां	ध	म	–	म	ध	म	रे	सा	ध़	सा
म	धु	र	रा	ऽ	गि	नी	ऽ	भ	वा	ऽ	नि
			ध								
ध़	सा	ध	म	म	म	म	म	म	ध	म	–
मे	ऽ	ल	सो	ह	त	सु	ध	स्व	र	में	ऽ
म	म	ध	ध	सां	सां	धसां	रेंसां	ध	म	रे	सा
व	र	ज	त	नि	त	पंऽ	ऽऽ	च	म	ग	नि
म	म	म	ध	ध	ध	सां	ध	सां	ध	सां	–
प्र	थ	म	क	र	त	स्व	र	वा	ऽ	दी	ऽ
सां	ध	सां	सां	रें	रें	सां	रें	सां	ध	म	–
म	ऽ	ध्य	सो	हं	त	स	म	वा	ऽ	दी	ऽ
मं	सां	रें	सां	ध	सां	सां	ध	म	रेसा	ध़	सा
स	म	य	र	ज	नि	मा	ऽ	न	तऽ	गु	नि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नागस्वरावली

(संस्कृत) कांभोजी मेलके चापि जाता नागस्वरावली ।
आरोहेऽप्यवरोहे च निरिवर्ज्यं तथौडवम् ॥
षड्जांशा मध्यमांशा च गीतासौ लक्ष्यपंडितैः ।
गानं तस्याः समादिष्टम् रात्र्यां यामे द्वितीयके ॥

(अभिनवरागमंजर्याम्)

(मराठी) नागस्वरि नित घेई शुद्ध स्वर; निखद ऋषभ वर्ज्य करी ।
मस संवादन शोभत, रजनीच्या शोभली दुजा प्रहरीं ॥

'नागस्वरावली' 'नागस्वरी' अथवा 'नागेश्वरी' खमाज मेलोत्पन्न दाक्षिणात्य राग है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। ऋषभ, निषाद सम्पूर्णत्वेन वर्ज्य हैं। अर्थात् जाति औडव। वादी मध्यम, संवादी षडज। आरोह में पंचम दुर्बल है। अवरोह में पग मींड़ भटियार का भास उत्पन्न करती है। यह राग मांड राग से बहुत कुछ मिलता है। किन्तु मांड से बहुत ही गम्भीर तथा रंजक है। समय मध्यरात्रि।

मुख्यांगः—मधसांऽ धपमऽ पगऽ मगऽसा ।

आरोहावरोहः—साग, मप, धसां । सांऽधपम, पग, मगऽसा, धसा, गसाऽमगऽपमऽऽ ।

स्वरविस्तारः—सा, गऽऽसा, धसा, गऽऽसामगऽऽसा । धसाग, साध, साग, मग, साध, गम, सागम, धसा, म, पऽगऽ, पग, मग, पऽग, मगऽसा, धसाग, गम, साध, सागऽम, धसाम, साम, पमऽऽ, धपमऽ

मपधपमऽमधपमऽ, धपम, पऽगऽमगऽसा, गसाऽमगऽपमऽऽ, सागमध, गमध, गममध, धपम, पगम, सा, गमध, मप, धसां, मधसांऽ, गंऽसां, पगंऽमंगंऽसांऽ, सांऽधपम, मधसांधपम, धपमऽपम; पगऽऽ, मगऽऽसा, धसा, ऽगसाऽमगऽपमऽऽ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१—नागस्वरी—त्रिताल

एरी अब गुंद लावो री,
मालनियाँ ये रितु आई री।
फूलन की फूली फुलवारी ॥
बरन बरन की कलियाँ ।
खिलियाँ बेलरियाँ प्यारी प्यारी ॥

०				३				×				२			
गम	पध	सां	धप	मग	सा	ग	प	म	–	–	–	ग	–	सा	–
एऽ	ऽऽ	ऽ	रीऽ	अऽ	ब	गुं	द	ला	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	री	ऽ
ध़	सा	म	म	प	ग	म	–	म	ध	ध	सां	ध	प	म	–
मा	ऽ	ल	नि	याँ	ऽ	ये	ऽ	रि	तु	आ	ऽ	ई	ऽ	री	ऽ
म	ध	सां	ध	सां	–	सां	–	ध	–	ध	सां	धसां	धप	मग	सा
फू	ऽ	ल	ऩ	की	ऽ	फू	ऽ	लो	ऽ	फु	ल	वाऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽ
म	म	म	म	ध	ध	सां	ध	सां	सां	सां	–	सां	ध	सां	–
ब	र	न	ब	र	न	की	ऽ	क	लि	याँ	ऽ	खि	लि	याँ	ऽ
ध	सां	गं	मं	गं	–	सां	–	ध	–	ध	सां	धसां	धप	मग	सा
बे	ऽ	ल	रि	याँ	ऽ	प्या	ऽ	री	ऽ	प्या	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

२—नागस्वरी–झपताल

नागस्वराली, गाओ सखी री,
हरिकांभुजी मेल स्वर साध अ-नि-री ॥ध्रु०॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुर मध्य कर वादि,
सम्वादी कर आदि ।
सोहत मध रजनी,
बड़ भागिनी री ॥

×		२			०		३		
ध़	सा	म	–	म	प	ग	म	–	म
ना	ऽ	ग	ऽ	स्व	रा	ऽ	ली	ऽ	ऽ
म	ध	ध	–	सां	धसां	धप	गप मग		सा
गा	ऽ	ओ	ऽ	स	खीऽ	ऽऽ	ऽऽ ऽऽ		री
ग	म	ध	–	म	सां	–	सां	–	सां
ह	रि	काँ	ऽ	भु	जी	ऽ	मे	ऽ	ल
ध	ध̇	ध	–	सां	धसां	धप	म	ग	सा
स्व	र	सा	ऽ	ध	अऽ	निऽ	री	ऽ	ऽ
म	म	ध	–	म	ध	ध	सां	–	सां
सु	र	म	ऽ	ध्य	क	र	वा	ऽ	दि
ध	सां	गं	–	सां	ध	सां	ध	सां	सां
स	म	वा	ऽ	दि	क	र	आ	ऽ	दि
ध	सां	गं	–	सां	गं	मं	मं	गं	सां
सो	ऽ	ह	ऽ	त	म	ध	र	ज	नि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	ध	ध	-	सां	धसां	धप	गप	मग	सा
ब	ड़	भा	ऽ	गि	नीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री

रेवा—

(संस्कृत) पूर्वी-मेल-समुत्पन्ना ख्याता रेवा गुणिप्रिया ।
आरोहे चावरोहेऽपि मनिहीनैव संमता ॥

(श्रीमल्लक्ष्य संगीते)

(हिन्दी) कोमल धैवत रिखब हैं मध्यम निखद न लाइ ।
गध वादी समवादितें रेवा राग कहाइ ॥

'रेवा' 'रेवगुप्ति अथवा रेवागुप्ति' एक अप्रसिद्ध किन्तु अत्यन्त रंजक राग है। यह पूर्वी ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इसमें मध्यम और निषाद बिल्कुल वर्ज्य हैं। जाति औडव। यह राग पूर्वाङ्ग प्रबल होने से विभास से बिल्कुल अलग है। रेग, सारे, ग, पग, पधग, गध, रेग, परे, ग, रेसा, रेपगऽऽ इस प्रकार पुनः पुनः शुद्ध गांधार पर न्यास करने से सायंगेयत्व स्पष्ट होता है और इसी में रेवा का वैशिष्ट्य है। धैवत पर अधिक नहीं ठहरना चाहिये अन्यथा विभास की छाया रेवा को बिगाड़ देगी। वादी गांधार, संवादी धैवत, समय शाम का। राग का मुख्य अंगः—पग, पधपग, रेग, रेसा, गरेगऽ।

आरोहावरोहः—सा रे, ग, प, ध, सां। सां, ध, प, ग, पगरेसाऽ गरेगऽऽ।

स्वरविस्तारः—सा, ^ग^रे, ^ग^रे, सा, धसा, ^ग^रे, ^ग^रे, सा। ^ग^रे, ^ग^रेसा, रेग, सा^रे गऽऽ, रेगरेगऽऽ, रेसारेग, धग, रेग, सारेग, पग, पगरेसाऽ।

सारेगरेग, पगं, रेग, रेपगऽ, सारेपगऽ, धसारेग, पग, परेगऽसाग, साग-

रे रे रे

रेपरेगऽ, पग, पगरेसा, सारेग ऽ, ग, ऽ, ग ऽ, गरेसा, रेगऽ। सारेगप, रेग-

सा

पऽ, रेगरेप, रेरेसा, रेसाऽगरेऽपऽ, धऽसारेगपऽ, पऽऽधसारेगऽपऽ,रेगपऽ, गपऽ, गपधपऽ, गपधपगऽ, धऽगपग, पधपग, पधगऽ, धऽरे पगऽधगपग, पग, पगरेसा, सारेगरेसाऽ रेगरेगऽ । सारेगपधगपधऽ, साऽऽरेगपधऽ, धऽ सारेगपधऽ, पगधऽसारेगपध, गपधऽ, पधऽ, पगपधपसांऽऽ, गपधप

सांऽऽऽ । सांरेंगं ऽऽरेंऽधऽधसांऽऽ, रेंगं, सांरेंगंऽ सांरेंसांगंऽ गंगं, ऽ रेसाऽग रेऽपगऽधपऽरेंसांऽगं ऽऽ सारे गरेसा, रेगपगरे, गपधपग,पधसांधप,धसां-

रेंसांरें, सांरेंगंरेंगंऽ, पंगं, पग, पंगंरेंसांऽऽ । सांरेंगंपं, रेंगंपं, गंपं, गप,

गप, गप, गंपं, पंगं, पंगंरेंसां, धसां, रेंगंरेंसां, गंरेंसां, रेंसां, धसांऽधपगऽ

धरेंऽसांधपगऽगंरेंसांधपग, पधगऽ धगऽ, पगऽ, धऽरेपगऽ परेगऽ रेगपग, पगरेसा, पगरेसाऽपऽऽऽ ।

१—रेवा—झपताल

चिरियाँ चुहुँ चुहत, परि साँझ अजहूँ न घर आये मेरे मोहन ।।धृ०।।
घर बछरू वन गैया, बाट तकत जसुमैया ।
ग्वालन सों पूछत, कहाँ गयो मेरो लाल ?

×		२			०		३		
ग	रे	ग	–	प	ग	–	पग	रे	सा
चि	रि	याँ	ऽ	चु	हूँ	ऽ	चुऽ	ह	त
सा	रे	ग	रे	ग	ग	प	ग	रे	ग
प	रि	सां	ऽ	झ	अ	ज	हूं	ऽ	ना
ग	प	ध	प	ग	ग	प	ग	रे	सा
घ	र	आ	ऽ	ये	मे	रे	मो	ह	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	ग	प	ध़	पध़	सां	रें़	गं	रें़	सां		
घ	र	ब	छ	रूँऽ	ब	न	गैं	ऽ	या		

सां	रें़	गं	रें़	गं	गं	रें़	सां	रें़	सां
बा	ट	त	क	त	ज	सु	मैं	ऽ	या
सां	–	ध़	प	प	ध़	प	ग	रे़	ग
ग्वा	ऽ	ल	न	सों	पू	ऽ	छ	ऽ	त
पध़	सांध़	प	रे़	ग	ध़	प	ग	रे़	सा
कऽ	हाँऽ	ग	यो	ऽ	मे	रो	ला	ऽ	ल

२–रेवा–त्रिताल

कहो सखी पाऊँ कैसे पिया के दरस,
मोहे परत कल न घरि पल छिन-छिन ॥धृ०॥
इक तो डर मोहे सास–ननद को,
दूजे भइलवा बैरिन रात ॥

														रे़	ग
×।				२				०				३		क	हो
रे़	ग	–	प	ग	रे़	सा	रे़	ग	प	ग	रे़	ग	ग	सा	रे़
स	खी	ऽ	पा	ऽ	ऊँ	कै	से	पि	या	के	द	र	स	मो	हे
ग	रे़	ग	ग	प	प	ध़	प	ध़	सां	ध़	प	ग	रे़	रे़	ग
प	र	त	क	ल	न	घ	रि	प	ल	छि	न	छि	न	क	हो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	प	ग	ग	प	प	ध	पध	सां	–	सां	रें	गं	रें	सां	–,
इ	क	तो	ऽ	ड	र	मो	हेऽ	सा	ऽ	स	न	न	द	को	ऽ,

सां	–	रें	गं	रें	रें	सां	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा
दू	ऽ	जे	भ	इ	ल	वा	ऽ	बै	रि	न	रा	ऽ	त

३—रेवा-त्रिताल-तराना

तनु तनन देरे दीं तन देरेना,
ना दिर दिर दीं तनन दीं तन देरेना ॥ध्रु०॥
दिर दिर तान्न तन तदियारे ताद्रे दानि,
दीं तो दीं तो तदारे देरेना ॥

०				३				×				२			
प	ग	–	प	ग	रे	सा	रे	ग	–	ग	प	ग	रे	ग	–
त	नु	ऽ	त	न	न	दे	रे	दीं	ऽ	त	न	दे	रे	ना	ऽ
प	प	ध	सां	सां	ध	प	प	प	–	ग	प	ग	रे	ग	–
ना	दिर	दिर	दीं	ऽ	त	न	न	दीं	ऽ	त	न	दे	रे	ना	ऽ
ग	प	ग	प	–	प	ध	प	सां	सां	सां	रें	गं	रें	सां	सां
दिर	दिर	दिर	ता	ऽ	न्न	त	न	त	दि	या	रे	ता	द्रे	दा	नि
सां	रें	गं	रें	सां	ध	प	–	प	ग	–	प	ग	रे	ग	–
दीं	ऽ	तीं	ऽ	दीं	ऽ	तों	ऽ	त	दा	ऽ	रे	दे	रे	ना	ऽ

४—रेवा-लक्षणगीत-एकताल

मधुर राग रेवा अति, पूरवी को मेल करत ।
औडव यह म नि वरजत, सांझ समय मन भावत ॥ध्रु०॥
वादी गान्धार करत, धैवत संवादि सोहत ।
सांऽ धप गऽ गप गरेगऽ, रुचिर, मान पग संगत ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०		३		४		×		०		२	
ग	प	ग	रे॒	सा	रे॒	ग	–	प	रे॒	ग	ग
म	धु	र	रा	ऽ	ग	रे	ऽ	वा	ऽ	अ	ति
प	–	प	ध॒	प	–	ग	–	प	ग	रे॒	सा
पू	ऽ	र	वी	को	ऽ	मे	ऽ	ल	क	र	त
सा	रे॒	ग	रे॒	ग	ग	प	प	ग	प	रे॒	ग
औ	ऽ	ड	व	य	हृ	म	नि	ब	र	ज	त
प	प	सां	ध॒	प	प	ग	प	ग	रे॒	सा	सा
सां	ऽ	झ	स	म	य	म	न	भा	ऽ	व	त
ग	–	ग	–	प	ध॒	सां	–	सां	रें॒	गंरें॒	सां
वा	ऽ	दी	ऽ	गं	ऽ	धा	ऽ	र	क	रऽ	त
सां	रें॒	गं	रें॒	सां	सां	गं	पं	गं	रें॒	सां	सां
धै	ऽ	व	त	स	म	वा	ऽ	दि	सो	ह	त
सां	–	ध	प	ग	–	ग	प	ग	रे॒	ग	–
सां	ऽ	ध	प	ग	ऽ	ग	प	ग	रे	ग	ऽ
ग	प	ग	रे॒	सा	रे॒	प	ग	रे॒	ग॒	रे॒	सा
रु	चि	र	गा	ऽ	न	प	ग	सं	ऽ	ग	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गौरांजनी–

(संस्कृत) पूर्वी मेल समुत्पन्ना ज्ञेया गौरांजनी प्रिया ।
अरिधा रोहणे पांशा सायंगेया च या बुधैः ।।

(हिन्दी) पूर्वी के आरोह में जब रिध सुर बरजोइ ।
पस वादी संवादितें गौरांजनी संजोइ ।।

(मराठी) गौरांजनि नित शोभे पूर्वी थाटांत, रोहणीं अ-रि-धा ।
पंचम षड्ज सुवादति, शास्त्रनिहित शोभला समय संध्या ।।

यह मधुर राग पूर्वी ठाठ से उत्पन्न हुआ है । यह संपूर्णतः मुलतानी ढंग से गाया जाता है, यही इसकी विशेषता है । इसमें ऋषभ, धैवत कोमल तथा मध्यम तीव्र है । आरोह में ऋषभ, धैवत बिलकुल वर्ज्य, अवरोह सम्पूर्ण है । जाति औडव–सम्पूर्ण । आरोह में, 'नि़सामंग ऽ;' नि़साऽमंगऽपमंऽधुप;' 'मंपगमंपनि ऽऽ' और अवरोह में सांनिधुप ऽ मंग, मंग, मंग, रे़सा; इन स्वरसङ्गतियों से मुलतानी का ही भास होता है । किन्तु मुलतानी का गांधार कोमल और गौरांजनी का गांधार शुद्ध है, यह तथ्य हमें भूलना नहीं चाहिये । अवरोह में पग सङ्गति के बजाय गऽमंग, ग मंग इन स्वरों की गौरांजनी में बारबार 'आवृत्ति' होती है । 'पूरिया–धनाश्री' तथा 'बसंत' से यह राग बिलकुल अलग है । पूरियाधनाश्री की 'मंरे़ग,' नि़रे़सा,' नि़धुनि़ और बसंत की 'मंधुरें़सां;' मंधुमंग, साम ऽऽ आदि रागनिर्देशक स्वरसंगति इस राग में बिलकुल नहीं । कोई गायक 'जेतश्री' राग की 'रें़निधुप' और 'मंधुमंग' इन स्वरसंगतियों को गौरांजनी में भी दिखाते हैं, तथापि वादी-संवादी भेद तथा 'सागपऽ' इस सङ्गति का अभाव तथा अन्तरे का मंपगमंपनि इस तरह से मुलतानी ढंग का उठाव गौरांजनी को जेतश्री से अलग रखता है । वादी पंचम, संवादी षड्ज, समय शाम का ।

मुख्याङ्ग—नि़सा, मंग, पमं, धुप, मंगं, मंगरे़ सा ।

आरोहावरोहः—नि़सा, मंग, मं, पनिऽऽसां । सां, नि,धुप, मंगऽ मंगऽ, मंगरे़सा, नि़सामंगऽ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरविस्तारः—नि़सा, (सा) नि़, प़नि़, प़नि़प़नि़, ग़म॑प़नि़, म॑प़ग़म॑-प़नि़, प़नि़ऽऽसा। नि़सारे॒सानि़, म॑गरे॒सानि़, गरे॒सानि़, नि़ध॒ऽप़ऽ, ग़म॑प़-नि़ऽ, म॑प़ग़म॑प़नि़, प़नि़ऽऽसा। नि़साग, नि़साम॑ग, प़नि़साम॑ग, गम॑पऽ गम॑ऽग, पगम॑ऽग, गम॑पऽगम॑ग, म॑पगम॑ऽग, म॑ग, म॑गरे॒सा। नि़सागम॑पऽ,

नि़ऽऽ सागम॑प, प़, प़नि़सागम॑प, गम॑प, म॑प, म॑पध॒पऽ, गसाम॑गऽपम॑ध॒प; निध॒प, गम॑पनिऽ ध॒प, गम॑पनिसांनिध॒प, म॑गम॑ग, म॑गरे॒सा। नि़सागम॑-पनि, ध॒पम॑ग रे॒सानि़, सागम॑पनिऽ, म॑गपम॑ध॒पनि, म॑पगम॑पनि, गम॑पनि,

म॑पनि, पनिऽपनि ऽ गम॑पनिऽऽसांऽऽ। निसांम॑ंगंरे॒ंसां, निसांगंम॑ंपंऽ, गंम॑ंऽगं, म॑ंगंरे॒ंसां सां, नि, ध॒ऽप, गम॑पनिसांनिध॒प, गम॑पसांनिध॒प, म॑प ध॒प, गम॑ऽऽग, म॑गरे॒सा। नि़साम॑गपऽऽ॥

१—गौरांजनी—ख्याल—तिलवाड़ा

कैसी बजावे, आज कान्ह मधु रागिनी ॥ध्रु०॥
नहीं री बसंत, पूरवी नहीं,
नहीं री परज, धनासरी मुलतानी ॥

३				×			
*	*	---सा	गसागम॑पगम॑	प	--	गम॑प-	--
*	*	ऽऽऽकै	ऽसीऽऽऽबऽ	जाऽ	ऽऽ	वेऽऽऽ	ऽऽ

२				०			
-गम॑पसां	निध॒प-	(प)	गम॑-	ग-	-	म॑म॑	गऽ
ऽआऽऽऽ	ऽऽजऽ	ऽ	काऽऽ	न्हाऽ	ऽ	मधु	राऽ

३				×
म॑ग	रे॒-	सा--सा	गसागम॑पगम॑	प
ऽगि	नीऽ	ऽऽऽकै	ऽसीऽऽऽबऽ	जा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

		×			
---ग	मंपनिनि	सां–	–सां	सांगं	मंगं
ऽऽऽन	हिंरीऽब	संऽ	ऽत	नहिं	पूर

२				०			
रेंसां	रेंनि	ध–	मंध	पंपं	मं–	गग	मंग
बीऽ	नहिं	रीऽ	पर	जध	नाऽ	सरि	मुल

३				×
रे–	निसा–	---सा	गसागमंपगमं	प
ताऽ	नीऽ	ऽऽऽकै	ऽसीऽऽऽबऽ	जाऽ

२–गौरांजनी–त्रिताल

फूल रही बेलरिया सजनी !
पवन सुगंधित बहत चहुँ ओर।
गाओ–बजाओ सखि, गौरांजनि ॥धृ०॥
भाँति–भाँति के फूल फुलत हैं।
चंपा, चमेली अरु फुलरानी ॥

३				×				२				०			
नि	सा	मं	ग	प	मं	ध	प	सां	नि	ध	प	मं	ग	रे	सा
फू	ऽ	ल	र	ही	ऽ	वे	ऽ	ल	रि	या	ऽ	स	ज	नी	ऽ
नि	सा	मं	ग	मं	ग	रे	सा	प	प	ग	मं	ग	रे	सां	सा
प	वं	न	सु	गं	ऽ	धि	तं	व	ह	तं	च	हुँ	ओ	ऽ	र
नि	सा	मं	ग	प	नि	सां	गं	रें	सां	नि	ध	प	मं	गरे	सा
गा	ऽ	ओ	ब	जा	ऽ	ओ	ऽ	स	खि	गौ	ऽ	रां	ऽ	जंऽ	नि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	मं	प	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	मं	गं	मं	गं	रें	सां
भाँ	ऽ	ति	भाँ	ऽ	ति	के	ऽ	फू	ऽ	ल	फु	ल	त	हैं	ऽ
मं	गं	रें	सां	नि	धु	प	मं	मं	ग	मं	ग	मं	ग	रे	सा
चं	ऽ	पा	च	मे	ऽ	लि	ऽ	अ	रु	फु	ल	रा	ऽ	नी	ऽ

३—गौरांजनी—त्रिताल

हमसे करो ना तुम रार कन्हैया ।
फूलि साँस अब बस कर बतियाँ ॥
हूं तो चली रि तीर जमुना पर ।
छीन लई मोरी सीस गगरिया ॥

०				३				×				२			
मंप	धुप	मं	प	मं	ग	रे	सा	ग	–	मं	ग	प	मं	धु	प
हुऽ	मऽ	से	क	रो	ना	तु	म	रा	ऽ	र	क	न्है	ऽ	या	ऽ
ग	मं	प	नि	सां	नि	धु	प	सां	नि	धु	प	मं	ग	रे	सा
फू	ऽ	लि	सां	ऽ	स	अ	व	ब	स	क	र	ब	ति	याँ	ऽ
मं	प	ग	मं	प	नि	सां	सां	नि	सां	गं	रें	सां	नि	धु	प
हूं	ऽ	तो	ऽ	च	ली	ऽ	रि	ती	र	ज	मु	ना	ऽ	प	र
नि	सां	गं	रें	सां	नि	धु	प	प	–	धु	प	मं	ग	रे	सा
छीं	ऽ	न	ल	ई	ऽ	मो	रि	सी	ऽ	स	ग	ग	रि	या	ऽ

४—गौरांजनी—(लक्षणगीत) सुरफाग

गाओ सब सुजान, पूरबि मेल मधुर गौरांजनि रागिनी
औडव संपूरन ॥ध्रु०॥ रि–ध–बिन आरोहन प–स–
स्वर संवादन साँझ प्रहर सोहत–नित हरखत तन-मन ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		३		०	
प	–	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा	नि़	सा
गा	ऽ	वो	ऽ	स	ब	सु	जा	ऽ	न
नि़	सा	म॑	ग	प	–	म	ध॒	प	प
पू	ऽ	र	बि	मे	ऽ	ल	म	धु	र
ग	म॑	प	नि	सां	नि	ध॒	प	म॑	ग
गौ	ऽ	रां	ऽ	ज	नि	रा	ऽ	ग	नि
सां	नि	ध॒	प	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा
औ	ऽ	ड	व	सं	ऽ	पू	ऽ	र	न
प	प	ग	म॑	प	नि	सां	–	सां	सां
रि	ध	वि	न	आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न
नि	सां	म॑ं	गं	म॑ं	गं	म॑ं	गं	रें॒	सां
ग	नि	स्व	र	सं	ऽ	वा	ऽ	द	न
म॑ं	गं	रें॒	सां	नि	ध॒	नि	ध॒	प	प
सां	ऽ	ऋ	स	म	य	सो	ऽ	ह	त
सां	नि	ध॒	प	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा
नि	श	ह	र	ख	त	त	न	म	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दीपक—

(संस्कृत) पूर्वी मेल समुत्पन्ना दीपको गुणि-संमतः।
आरोहणे रिवर्ज्यं स्यादवरोहे निर्वाजितम् ॥

(श्री मल्लक्ष्यसंगीते)

(हिन्दी) चढत जहाँ सुर रिखब नहिं उतरत नहीं निखाद।
भयो पूरवी ठाठ में दीपक सप सम्वाद ॥

(राग-चन्द्रिकासार)

(मराठी) पूर्वी-मेल-ज दीपक आरोहणिं घेई मां कधीं ऋषभा।
वर्जित निखदां अवरोहणिं सप सम्वाद देतसे शोभा ॥

इस राग में जितने मतभेद हैं, शायद दूसरे किसी भी राग में उतने न हों। यहाँ तो पूर्वी मेलज प्रकार दिया है। अर्थात् ऋषभ, धैवत कोमल, मध्यम तीव्र। आरोह में ऋषभ वर्ज्य तथा अवरोह में निषाद वर्ज्य है। अवरोह में 'सांऽप' यही इसका वैशिष्ट्य है। सा, रे रे सा, साप इस प्रकार श्री अंग दिखाया जाता है। वादी स्वर षड्ज, संवादी पञ्चम। समय शाम का।

मुख्यांगः—सांऽऽ, प, ग, पग, रेसा।

आरोहावरोहः—निरेसा, निसाऽगप, मंधप, गऽमंधपसांऽ। सांऽऽप, मंधमंग, गपगऽरेसा।

स्वरविस्तारः—सा, निरेसा, निरेसाऽगरेसा, निसाऽगरेसा, निसाग, धधग, मंपनिसाग, गऽऽ, पगरेसा, निसाग, रेसा। निसा, रे, रे, सा; सा, रेरेसा, पऽपऽमंप, मंपधप, मंग, मंधमंग, धध, मंधमंग,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मंग, मंग, पगरेसा, निसागरेसा। सा, निसा, रेरेसा, गमंप, धप, मंग, मंपधमंप, मंग, पऽगऽरेसा। गगमंधपसांऽऽग, मंधपसां, रेंसां, निरेंसां, निसांगं, मंगं, मंगंरेंसां, सांऽप, मंग, पधप, पधपसांऽऽप मंग, मंग, मंग, पऽगरेसा, निसागरेसापऽ।

१—दीपक—एकताल (ख्याल)

सावन की सखि, साँझ
आई री आई ॥ध्रु०॥
रोम रोम हुलसे सुनत ही
चिरियन की चौंचहाट॥

३		४		×		०	
निसा	गग	मंग	मंध	पऽ	धप	सां-	धप-
साऽ	वन	कीऽ	सखि	साँऽ	झऽ	आऽ	ईऽऽ

२		०	
मंध	पऽ	पग	रेसा
ऽऽ	रीऽ	आऽ	ईऽ

३		४		×		०	
ग-	मंमं	धध	मंध	पसां	--	निरें	सां-
रोऽ	मरो	ऽम	हुल	सेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

२		०		३		४	
मंगं	रेंसां	सां-	--	सांसां	प-	--	मंध
सुन	तही	ऽऽ	ऽऽ	चिरि	यऽ	ऽऽ	ऽन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०	
प-	--	गर्म-	ग-	गप	ग-	पग	रेसा
कीऽ	ऽऽ	चौंऽऽ	चऽ	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽट

२–दीपक–त्रिताल

साँझ भई सखि आये न कन्हैया ।
झूठी सखी उनकी रस बतियाँ ॥धृ०॥
बाँध लीन्हो मन सजन सलोने,
सुलझत नहिं उलझन मोरि दैया ॥

३				×				२				०			
नि़ सा	ग	र्म	प	सां	–	ध॒ प	प	र्म	ध॒	र्म	ग	प	ग	रे॒	सा
सां	ऽ	झ	भ	ई	ऽ	स	खि	आ	ये	न	क	न्है	ऽ	या	ऽ
र्म	प	ध॒	ध॒	प	–	ध॒	प	र्म	ध॒	र्म	ग	र्म	ग	रे॒	सा
झू	ऽ	ठी	स	खी	ऽ	उ	न	की	ऽ	र	स	ब	ति	याँ	ऽ
र्म	ग	र्म	ध॒	प	सां	सां	सां	नि	रें॒	सां	सां	र्मं	गं	रें॒	सां
बां	ऽ	ध	लि	न्हो	ऽ	म	न	स	ज	न	स	लो	ऽ	ने	ऽ
सां	सां	ध॒ प	प	र्म	ध॒	प	प	र्म	ध॒	र्म	ग	र्म	ग	रे॒	सा
सु	ल	झ	त	न	हिं	उ	ल	झ	न	मो	रि	दैं	ऽ	या	ऽ

३–दीपक–चौताल–लक्षणगीत

राग मधुर शास्त्र-सुमत, दीपक को गुणि गावत ॥
रिधबिन नित आरोहत, अवरोहण नि बरजत ॥धृ०॥
पूरबि के सुर साधत, सुर वादी प्रथम करत ॥
निरेसा ऽ धप प ऽ मधपप, समय अस्त मधुर सोहत ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०		३		४	
सां	–	प	प	ग	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
रा	ऽ	ग	म	धु	र	शा	ऽ	स्व	सु	म	त
सा	रे	सा	सा	प	–	प	प	प	ध	प	प
दी	ऽ	प	क	को	ऽ	गु	नि	गा	ऽ	व	त
प	प	ग	प	ध	प	मं	ध	प	नि	सां	सां
रि	ध	बि	न	नि	त	आ	ऽ	रो	ऽ	ह	त
सां	सां	प	–	ग	प	ग	–	रे	रे	सा	सा
अ	व	रो	ऽ	ह	ण	नी	ऽ	ब	र	ज	त
प	–	मं	ध	प	–	सां	सां	नि	रें	सां	सां
पू	ऽ	रे	वि	के	ऽ	सु	र	सा	ऽ	ध	त
सां	सां	नि	रें	सां	–	गं	मं	गं	रें	सां	सां
सु	र	बा	ऽ	दी	ऽ	प्र	थ	म	क	र	त
नि	रें	सां	–	ध	प	प	–	मं	ध	प	प
नि	रे	सा	ऽ	ध	प	प	ऽ	म	ध	प	प
सां	सां	प	प	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
स	म	य	अ	ऽ	स्त	म	धु	र	सो	ह	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मालिन

(संस्कृत) पनी वसौ निपौ गपौ गरीसः स्वर-मंडिता ।
गांशिका गीयते सायं मारूमेले च मालिनी ॥

(हिन्दी) मारू के जव मेल में मध्यम नहीं लगाइ ।
गनि वादी समवादि तें मधुर मालिनी भाइ ॥

(मराठी) मृदु री शुद्ध इतर स्वर, मध्यम जेथें न शोभला लवही ।
राग मालिनी समजा, सायं समयासि गायका गाई ॥

राग मालिन अथवा मालिनी मारवा मेलोत्पन्न राग है । इसीको कोई 'अरुण शंकरा' कहते हैं । इसमें मध्यम पूर्णतः वर्ज्य, ऋषभ कोमल और अन्य स्वर शुद्ध हैं । आरोह में ऋषभ वर्ज्य है । धैवत स्वर

ध
क्वचित्, 'पनिधसांनिप' 'सांनिऽऽपऽऽ' इस पद्धति से वक्र रूप से अथवा मींड़ में आता है । आरोह अवरोह में वह प्रायः वर्ज्य भी किया जाता है । निषाद एक अत्यंत मधुर विश्रांति-स्थान है । इससे इस राग में शंकरा का भास होता है । किन्तु कोमल ऋषभ आते ही शंकरा नष्ट होता है । सांप संगति अत्यन्त मधुर है । गपगरेसा इस स्वर संगति से जेतश्री का भास होता है, किन्तु जेतश्री का धैवत कोमल है । वादी ग

ध
संवादी नि, समय शाम का । मुख्यांगः—पनिधसांऽनिऽप, गपग, रेसा ।

ध
आरोहावरोहः—नि़सापग, पनिधसां । सां,निऽपऽ, गपंग, रेसा ।

ग ग ग ध़
स्वरविस्तारः—नि़सा, रे, रे, रे, सा । नि़सारेसानि़ सारेसानि़, प़नि़, प़नि़ध़सानि़, नि़ध़प़ऽनि़, प़नि़, प़नि़सा । नि़साग, नि़सानि़ग, रेसानि़, सागग, पग पगरेसा । नि़सागप, सागप, पगरेसाऽप,

ध
गप, सागऽप, गपनिऽपऽग, गपधपग, पग, पगरेसा । नि़सागपनि,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सागपनि, गपनि, धपगपनि, पनिधसांनि, धपगरे़सानि़ऽ सागपनि,

ध ध
निऽ, नि, निसां। निसांगं, ग, गपनिसांगं, पनिसांगं, निसांगं, पंगं,

ध ध ध
पग, पंगंरेंसां। सांनिऽप, गपनिधसां निऽप, गपसांऽनिप, गपनिऽप,

ध
धपगपनिऽनि़ऽसागपनिऽगपनिऽऽप, गनिप, निपग, पग, पगरे़सा,

नि़सापऽऽ।

१—मालिन-झूमरा-(ख्याल)

जाने न दूँगी पिया मोरे।
काहे सजनवा जाय बिदेसवा रे॥ध्रु०॥
मन में बसी तोरी सुरतिया।
साथ रहूँगी जीभर-भर तोरे॥

३				×		
सागसा	गपग	पधपऽ,प	ऽनिधसां	नि-	--	निध
जाऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽऽ,ऽ	ऽनेऽन	दूँऽ	ऽऽ	ऽऽ
२				०		
प-	--	गपधपग-	--	पग	रे़-	सा-
गीऽ	ऽऽ	पिऽऽऽयाऽ	ऽऽ	मोऽ	ऽऽ	रेऽ
३				×		
नि़सारे़सानि़-	नि़ध़	प़-	--	प़नि़ध़सा	नि़-	--
काऽऽऽहेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	सुऽजऽ	नऽ	ऽऽ
२				०		
सा-	साग	--	गपधपग	पग	रे़-	सा-
वाऽ	जाऽ	ऽऽ	यऽऽऽबि	देस	वाऽ	रेऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

		×		
---ग	पसां-सां	सां-	--	--
ऽऽऽम	नमेंऽब	सीऽ	ऽऽ	ऽऽ

२				०		
निसांगं-	--	गं--पं	गंरेंसां-	--	--	निसांरेंसांनि-
तोऽऽऽ	ऽऽ	रीऽऽसु	रतियाऽ	ऽऽ	ऽऽ	साऽऽऽथऽ

३				×		
--	नि-निध	प	--	गपसांनि	-प	--
ऽऽ	रऽहुँऽ	गी	ऽऽ	जीऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

२				०		
गपधपग-	--	प-	ग-	पग	रे	सा
भऽऽऽरऽ	ऽऽ	भऽ	रऽ	तोऽ	ऽ	रे

२—मालिन—त्रिताल

निकसी चाँदनी बाँकी ।
रितु बसंत की साँझ आई सखि ॥ध्रु०॥
रहस रहस चमके सखि डोले ।
आस मनमें अब पिया के मिलन की ॥

०				३				×				२			
ग	प्र	ग	रे	सा	नि	-	सा	प	-	-	-	प	ग	प	-
नि	क	सी	ऽ	ऽ	चाँ	ऽ	द	नी	ऽ	ऽ	ऽ	बाँ	ऽ	की	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग प सां नि	- प ग प	(प)ग - ग प	ग रे सा -
रि तु ब सं	ऽ त की ऽ	साँ ऽ झ आ	ऽ ई स खि
प ग ग ग	प प नि धनि	सां - सां सां	नि प सां -
रं ह स र	ह स च मऽ	के ऽ स खि	डो ऽ ले ऽ
गं - गं पं	गं रें सां सां	निप ग ग प	ग रे सा -
आ ऽ स म	न में अ ब	पिऽ या के मि	ल न की ऽ

३—मालिन-झपताल (लक्षणगीत)

गुनि कहत मालिनी, मारुव-
समाख्यात मधुर अति रागिनी ॥ध्रु०॥
गांधार कर वादी, निखद कर समवादि ।
वर्ज्य कर मध्यम को, सखि री बड़ि भागिनी ॥

×	२	०	३
सां नि	सा ग प	रे ग	रे सा सा
गु नि	क ह त	मा ऽ	लि नी ऽ
प -	प प प	प -	ध ग प
मा ऽ	रु व स	मा ऽ	ख्या ऽ त
ग प	सां नि (ध)प	ग प	ग रे सा
म धु	र अ ति	रा ऽ	गि नी ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	प	सां	–	सां	सां		सां	सां	सां	सां
गं	ऽ	धा	ऽ	र	क		र	वा	ऽ	दि
नि	सां	गं	पं	पं	गं		पं	गं	रें	सां
नि	ख	द	क	र	स		म	वा	ऽ	दि
नि	सां	गं	रें	सां	नि		सां	नि	ध	प
व	ऽ	ज्यं	क	र	म		ऽ	ध्य	म	को
सां	नि	प	ग	प	ग		प	ग	रे	सा
स	खि	रि	ब	ड़ि	भा		ऽ	गि	नी	ऽ

भटियार–

(संस्कृत) सधौ पमौ मपौ गश्च मधौ सरी निधौ च पः ।
मपौ गरी तथा सश्च भटियारस्तु मांशकः ।।

(अभिनवरागमंजर्याम्)

(हिन्दी) भर्तृहरी भटियार है मध्यम दोउ लगाय ।
मस वादी संवादि तें कोमल ऋषभ सुहाय ।।

राग भट्टियारी, भटियाली, भट्टिहारी, भट्टियार अथवा भटियार मिश्र मिश्र–मेल का अजीब नमूना है। अपने नाम से ही इसका चलन बिल्कुल वैचित्र्यपूर्ण तथा अत्यन्त प्रभावशाली है। इसमें ऋषभ कोमल, मध्यम दोनों और अन्य स्वर शुद्ध हैं। जाति सम्पूर्ण। चलन आरोहावरोह में अत्यन्त वक्र है। तीव्र मध्यम 'मंधसां'

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस प्रकार आरोह में मारवा अंग से दिखाया जाता है। शुद्ध मध्यम प्रायः अवरोह में ही लिया जाता है। अतः कोई इसका मेल मारवा तो कोई सूर्यकान्त मानते हैं। पग; मधऽऽप; साधऽधऽधपम; रें निधप म; सांधऽनिपऽधमऽ आदि स्वर संगतियाँ इसमें अत्यन्त आवश्यक हैं। "सांनिधपम' अथवा 'सांधऽनिपऽधमऽ' इस प्रकार के अवरोह से मांड राग की छाया दिखाई देती है किन्तु आगे पग रेसा इस प्रकार का कोमल ऋषभ युक्त अवरोह मांड को हटा देता है। प्रातः समय में इस राग का मुक्त मध्यम बहुत ही आकर्षक हुआ करता है। किंवदन्ती है कि राजा भर्तृहरि ने इसकी रचना की। वादी मध्यम, संवादी षड्ज। समय उत्तर रात्रि। :(खमाज मेल की भटियाली इस पुस्तक के दूसरे

सा नि न

भाग में दी है।) मुख्यांग:—साधऽ, ध, ध, प, मऽऽ पऽग, मं, ध, सां। रें, नि, ध, प, म, धऽम, प, ग, रेसा। सा, धऽधऽप, मऽऽ।

आरोहावरोह:—सा, ग, म, पऽग, मधऽऽप मंधसां। रेंऽनि, धपम, पग, रेसा।

सा नि नि नि नि

स्वरविस्तार:—सा, ध, ध, ध, प, म; ध ध, प म; पग, रेसा;साम,

नि नि नि

मपग, धसांनिधपम, मपग, पग, पग, रे, सा, साध, ध, ध, ध, पमऽऽ। सा, सारेग, म, साग, म, साम, मपम, मपगऽमपम, पगऽपम, गपम, धपम, निधपम, धपम, प,ग, मंधसां, निधपम, धमम, पग, रेसा;

नि नि

सा, ध, ध, ध प, म। सागऽम, पम, मधऽप, धम, पम, निधपम,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सांनिधपम, रेंऽनिधपम, निधपम, धपम, निप, धम, पग, रेसा, साध, नि ध, नि ध, प, मऽ। मंधसां, निरेंसां, नि, रेंगंरेंसां, मंगंरेंसां, मंधसां, रें, निधपम, मधऽऽपऽ, धपम, पग, पग, पगरेसा; सा, नि ध, नि ध, ध, पमऽऽ।

१—भटियार-एकताल-(ख्याल)

हो गिनत रही मैं तो तारे ॥ध्रु०॥
बिरहिन मैं तो फिरत हूँ बावरी।
आये सजन ना घर ॥

४		×		०		२	
सा साध,ध	निनि धध-प	म-	--	प-	ग-	ध मंध	सां-
होऽऽ,गि	नतऽर	हीऽ	ऽऽ	मैंऽ	ऽऽ	तोऽ	ऽऽ

०		३	
धनिधपधप	म-	पग	रेसा
ताऽऽऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रेऽ

४		×		०		२	
मंध	नि सांसां	रेंसां-	सां-	सां-	--	निरें	गं-
बिर	हन	मैंऽ	ऽऽ	तोऽ	ऽऽ	फिर	तऽ

०		३		४		×	
रें-	सां-	निध	प-	म-	--	मंध	सां-
हूँऽ	ऽऽ	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वऽ	रीऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०		२		०		३	
म–	ध–	प–	धप	म–	पग	रे–	सा–
आऽ	ऽऽ	येऽ	सज	नऽ	नाऽ	घऽ	रऽ

२–भट्टियार—त्रिताल

बन बन बोले मुरवा ।
पपिहरा बोले झिंगरवा ॥
कोयलिया मोरी पियु पियु रटत ।
भये सब मगन घर के जियरवा ॥ध्रु०॥

															सा
३				×				२				०			ब
ध	ध	प	प	म	–	–	–	प	ग	प	ग	रे	–	सा	सा
न	ब	ऽ	न	बो	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	मु	र	वा	ऽ	ऽ	प
म	म	म	म	प	ग	मं	ध	रें	–	निध	सांनि	ध	प	म	मं
पि	ह	रा	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	बो	ऽ	लेऽ	झिंऽ	ग	र	वा	को
ध	मं	–	ध	सां	–	रें	सां	नि	रें	गं	रें	नि	ध	प	नि
ऽ	य	ऽ	लि	या	ऽ	मो	रि	पि	यु	पि	यु	र	ट	त	भ
ध	प	नि	ध	प	म	म,	ध	म,	प	ग,	प	ग	रे		सा
ये	ऽ	स	ब	म	ग	न,	घ	र,	के	ऽ,	जि	य	र		वा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३—भटियार-झपताल-लक्षणगीत

भटियार कहे चतुर मारु मेलज राग।
द्वय मध्य को लेत, सध लाग अति रुचिर ॥ध्रु०॥
कर मध्य को वादि, सुर प्रथम समवादि।
सांसां निधध धध निपप मध धपम स्वर मधुर ॥

×		२			०		३		
नि̣	सा	नि	नि						
सा	ध	ध	ध	प	म	म	म	प	ग
भ	टि	या	ऽ	र	क	हे	च	तु	र
मं	ध	सां	सां	सां	रें॒	नि	ध	प	म
मा	ऽ	रु	मे	ऽ	ल	ज	रा	ऽ	ग
सां	सां	नि	ध	ध	ध	–	ध	नि	प
द्व	य	म	ऽ	ध्य	को	ऽ	ले	ऽ	त
सा	ध	ध	प	म	प	ग	रे॒	रे॒	सा
स	ध	ला	ऽ	ग	अ	ति	रु	चि	र
मं	ध	सां	–	सां	सां	–	रें॒	रें॒	सां
क	र	म	ऽ	ध्य	को	ऽ	वा	ऽ	दि
नि	रें॒	गं	गं	रें॒	सां	सां	नि	ध	ध
सु	र	प्र	थ	म	स	म	वा	ऽ	दि
सां	सां	नि	ध	ध	ध	ध	नि	प	प
सा	सा	नि	ध	ध	ध	ध	नि	प	प

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	ध	ध	॑प	म	प	ग	रे	रे	सा	
म	ध	ध	प	म	स्व	र	म	धु	र	

धन्यधैवत—

(संस्कृत) निषादमध्यमावत्र मारूमेले विर्वाजितौ ।
धैवतांशो भवेद्रुचिरः प्रभाते धन्यधैवतः ।।

(हिन्दी) कोमल री, सुध धग कर, मध्यम नहीं निखाद ।
धरि–वादन धनधैवत, रंग बढावत प्रात ।।

(मराठी) धन्त–धैवतीं शोभत कोमल री अन्य सर्व स्वर शुद्ध ।
निषाद मध्यम वर्ज्यंत प्रातः समयास धैवतीं वाद ।।

यह राग जेत राग का प्रातर्गेय जवाब है । इसमें ऋषभ कोमल, मध्यम, निषाद वर्ज्य तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं । शुद्ध धैवत वादी होनें से इसके उत्तरांग में देसकार का भास होता है; किन्तु ऋषभ कोमल होने से देसकार से भिन्नता पाता है । वादी धैवत, संवादी कोमल ऋषभ, ठाठ मारवा । समय प्रातःकाल । मुख्यांग—साऽसांधऽप, गपधसांपं, ग, प रे, रे, सा; ।

आरोहावरोहः—साऽ गऽ पऽऽ, गपधऽऽसांप, गपसांध, सांऽ । सांधऽऽसांप, गपधऽसांप, गपधप, रे रे सा ।

सा सा सा ध़ सा सा सा सा
स्वरविस्तारः—सा ध़ ध़ ध़ सा । सा ध़ प़, गप़ध़ऽ प़, गप़ध़ऽ गप़-
ग ग
ध़सा । रे, रे सा, ध़रे सा, रेसाध़, ध़गरेसा । साऽ रेग, ध़साऽ रे, रेसाऽ रेग, ध़साऽ रे, रेसाऽ रेग, रेसा, सारेग, रेग, ध़सारेग, रेग, पग,
ग सा
रेपग, पग, पगरेसा । सारेगप, रेगप, रेरेसा, पऽऽ, गप, ध़सारेगप, ध़ध़प़, गप, गपधपग, साधपग, पधग, धग, रेग, पधपग, परे, गपरे,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परेरेसा । सारे गपसांध, गपसांध, धपगरेसासांधऽ, गपसांध गपसांधऽ
ध
सांऽऽऽ । रेंरेंसां, सांगं, रेंसांगं, रेंगंरेंसां, धऽसांरें, गंरेंसां, रें गं, धगंरेंसां,
रेंगंपंऽगं पंगंरेंसां, रेंसां धऽ सांप, गपधऽसांप, गपधपगरे, परेपगपरे परे,
ग सा सा
रे, रेसा । सांधऽप, गप धऽप, गपध, गपधऽसा ।

१–धन्यधैवत–एकताल–ख्याल

रैन की जागी मैं तो न आये कन्हैया ॥ध्रु०॥
कासे कहूं अपने जिया की बिथा,
पल न लागति मोरी अँखियाँ ॥

३		४		×		०	
गप	गरे	सा–	–साधप	सांध	––	सांप	गपधपप–
रैऽ	ऽन	कीऽ	ऽजाऽगि	मैंऽ	ऽऽ	तोऽ	नाऽऽयेऽ

२		०	
–	पग	रे	सा
ऽ	कन्है	याऽ	ऽ

३		४		×		०	
ग–	पप	प	सांध	सां	–	पध	सां
काऽ	सेक	हूं	अप	ने	ऽ	जिया	की

२		०		३		४	
प	गप	सांध	सांप–	धसां	रेंरें	सां	रेंरें
ऽ	बिऽ	ऽ	थाऽ	पल	नऽ	ला	गति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०	
धसां–	धसां	सांपऽ	–	गप	धप	रे	सा
माऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽ	अखि	ऽऽ	यांऽ	ऽ

२–धन्यधैवत–त्रिताल

आई बहार सखि फूलन की नव-पल्लव नव कुसुम सुमंडित।
बनबन शोभा ऋतु बसंत की ॥धृ०॥
सघन घनी अमराई सोहत। लहर लहर भ्रमरी लहरावत।
उमंग न्यारि न्यारि सखि कलियन की ॥

३				×				२				०			
ध	प	ध	सां	सां	–	–	प	ग	प	गप	धप	ग	रे	सा	–
आ	ऽ	ई	ब	हा	ऽ	ऽ	र	स	खि	फूऽ	ऽऽ	ल	न	की	ऽ
सा	सा	ध	–	ध	सां	ध	प	ध	प	ध	सां	ध	प	ध	ध
न	व	प	ऽ	ल्ल	व	न	व	कु	सु	म	सु	मं	ऽ	डि	त
ध	प	ध	सां	ध	–	प	–	ग	प	गप	धप	ग	रे	सा	–
ब	न	ब	न	शो	ऽ	भा	ऽ	ऋ	तु	बऽ	संऽ	ऽ	त	की	ऽ
ग	प	धं	प	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	–	रें	रें	सां	सां
स	घ	न	घ	नी	ऽ	अ	म	रा	ऽ	ई	ऽ	सो	ऽ	ह	त
सां	ध	–	सां	रें	रें	सां	सां	ध	प	ध	सां	ध	प	ध	धं
ल	ह	र	ल	ह	र	भ्र	म	री	ऽ	ल	ह	रा	ऽ	व	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा ध ध प	ध सां प प	ग प गप धप	ग रे सा -
उ मं ग न्या	ऽ रि न्या री	स खि कुऽ लिऽ	य न की ऽ

३—धन्यधैवत-तीव्रा (लक्षणगीत)

राग सुमधुर धन्य-धैवत, रूप औडव चित्त मोहन ।
प्रथम दिन में समय सोहत ॥ध्रु०॥
मारु के जब मेल में नित, निखद मध्यम वर्ज्य मानत ॥
सासासा गरेसासा, साऽपधपधध, वादि धैवत को दिखावत ॥

×	२	×	२
सा ध ध	ध सां ध प	गप धप -प	ग रे सा सा
रा ऽ ग	सु म धु र	धऽ ऽऽ न्य	धै ऽ व त
सा - सा	ग - ग ग	ग - प	ग रे सा सा
रू ऽ प	औ ऽ ड व	चि ऽ त्त	मो ऽ ह त
सा सा सा	ध ध ध -	ध रें सां	ध प ध ध
प्र थ म	दि न में ऽ	स म य	सो ऽ ह त
ग - ग	प प ध प	सां - सां	रें रें सां सां
मा ऽ रु	के ऽ ज ब	मे ऽ ल	में ऽ नि त
ध ध ध	सां सां रें सां	सां रें सां	ध सां प प
नि ख द	म ऽ ध्य म	व ऽ र्ज्य	मा ऽ न त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	सां	सां	गं	<u>रें</u>	सां	सां	सां	–	प	ध	प	ध	ध
सा	सा	सा	ग	रे	सा	सा	सा	ऽ	प	ध	प	ध	ध
प	–	प	ध	सां	ध	प	ग	–	प	ग	<u>रे</u>	सा	सा
धा	ऽ	दि	धै	ऽ	व	त	को	ऽ	दि	खा	ऽ	व	त

जोग—

(संस्कृत) औडवो राग जोगश्चारिधस्तयंत्र गो च द्वे ।
निषादः कोमलयंत्र पांशश्चापराण्हगः ॥

(हिन्दी) काफी के जव मेल में रिध सुरका नहिं लाग ।
द्वय गंधार निषाद तें जोग जगायो राग ॥

'जोग' राग काफी मेलोत्पन्न एक नवीन मधुर संशोधन है। बदायूँ के उ० निसार हुसेनखाँ साहब ने इसे प्रचलित किया। इसमें दो गांधार, निषाद कोमल, धैवत-ऋषभ वर्जित तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। अर्थात् जाति औडव है। शुद्ध गांधार आरोह में तथा कोमल गांधार अवरोह में लिया जाता है। नि़, नि़ सा ग, ग म, प <u>ग</u> इन स्वरों से हंसकंकणी तथा पीलू का भास होता है। किन्तु आगे म प <u>ग</u> ऽ सा इस प्रकार ऋषभ वर्जित मींड़ से हंसकंकणी की छाया लुप्त होती है। हंसकंकणी के अवरोह में ऋषभ-धैवत स्पष्ट रूप में हैं; किन्तु जोग में ये स्वर बिलकुल ही वर्जित हैं। अतः हंसकंकणी से जोग बिलकुल अलग है। आरोह में प सां नि सां इन स्वरों में भीमपलासी की छाया तथा अवरोह में नि प म ग, प नि प म ग, इन स्वरों में तिलंग का तिरोभाव है। इससे राग का रंग अधिकाधिक बढ़ता है। अवरोह में गांधार को षड्ज का तथा पंचम को निषाद का कण लगाने से राग में कुछ और

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ही वैचित्र्य आता है। जैसे—सागुसा। म ज्ञिप गुऽ।

सां नि सा सा
मुख्यांगः—गमपज्ञिऽसां, ज्ञिपमग, म, पगुऽऽसा, नि़, नि़सागऽऽऽ।

सां नि
आरोहावरोहः—नि़साग, मप, ज्ञिऽसां। सांज्ञिपमऽऽ, गऽमपगुऽऽ

सा सा
मपगुऽऽसा। नि़, नि़सागऽऽ।

सा सा सा सा प
स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़, नि़सा; प़नि़, प़नि़सा। प़नि़सा

नि़ऽप़, प़नि़ऽप़, नि़, म़प़नि़, प़नि़, प़नि़सा। प़नि़साग, गनि़, नि़साग,

प सा नि नि
नि़ग, नि़प़नि़साग, प़नि़साग, मगु, मपगु, पगुऽसा। नि़नि़सागऽ, गम,

सा सा सा
सागऽम, मनि़ऽनि़ऽनि़ऽसाऽग, गम, सागऽम, पगुऽसाऽ, गम, मऽगम

नि
पगु, मगऽमपगु, पगु, पगुऽसा। नि़सागमप, सागमप, प़, प़नि़सागमप,

नि
गमपगमप, सापे, पगुऽऽ, गमपगुऽऽ, पज्ञिपगुऽऽ, मगुऽऽ, मगुऽऽसा।

सा सां
नि़सागमपसांज्ञिऽऽऽ, नि़ऽऽऽज्ञिऽऽऽ, गमपज्ञि, मपज्ञि, पज्ञिसां, पज्ञि,

सां
पज्ञिसांगं, ज्ञिसांगं, मंगुंऽऽसां, सांगंमंगं, पज्ञिसां, मंगं, गंमंपंगुंऽऽसां।

प नि
ज्ञिसांऽज्ञिऽऽपमग, गमपज्ञिसांज्ञिपमग, पज्ञिपमग, मपमग, पऽगुऽऽ,

नि
मपगुऽऽ, मज्ञिपगुऽऽसा। प़नि़प़, म़प़नि़, प़नि़, प़नि़, प़नि़, सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१–जोग–ख्याल, झपताल (विलम्बित पद्धति का)

सजन ना घर आये, भई सांझ,
जियरा ना धरे धीर ॥ध्रु०॥
बिंद्राबन में चरावत गैया,
का ग्वालन सों करत रार ?

०	३			×		२		
–गम	ऩिपग–	सा	–ऩिसा	ग	मप	–	सागमपगमप–	–
ऽसज	नऽनाऽ	ऽ	ऽघर	आ	ऽये	ऽ	भऽऽऽऽऽऽऽ	ऽ

प ऩिप	मग	–मप	म सासागमपगमऩिप	प ग	–	ग	सा	सा ऩि
ईऽ	ऽऽ	ऽजिय	रा ऽनाऽऽऽऽऽऽऽ	ध	ऽ	रे	ऽ	धी

ऩि सा	–,गम	न ना घर आ……।
र	ऽ,सज	

गम	प	सां ऩि	–पऩि	सां	–	ऩिसांगं–	–	मं
बिंऽ	ऽ	द्रा	ऽबन	में	ऽ	चराऽऽ	ऽ	व

गंमंपंमं–	गं	सांगंमंपंगंमंपं	गं	–सां	ऩिप	मग	गम	ऩिपग	–सा
तऽऽऽऽ	गै	याऽऽऽऽऽऽ	का	ग्वा	लन	सोंऽ	कर	तऽरा	ऽऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	ऽगम	त्रिपग़-	
र	ऽसज	नऽनाऽ	घर आ........।

२—जोग-त्रिताल

मोहन की अखियाँ अलसानी,
उरझानी सखि अति सकुचानी।
दरस-परस पिया लपटानी ॥ध्रु०॥
खिली चाँदनी नैन उघारे,
कमल पंखड़ी के ढंग भरे।
रंग-भरी रस-बरसानी ॥

३				×				२				०			
सां	-	त्रि	प	म	-	ग	ग	म	-	ग	म	सा	ग़	सा	-
मो	ऽ	ह	न	की	ऽ	अ	खि	याँ	ऽ	अ	ल	सा	ऽ	नी	ऽ
सा त्रि़	सा	ग	-	म	-	म	म	प	त्रि	प	म	ग	म	ग	-
उ	र	झा	ऽ	नी	ऽ	स	खि	अ	ति	स	कु	चा	ऽ	नी	ऽ
ग	म	प	त्रि	सां	सां	त्रि	सां	मप	त्रिप	ग	म	ग़	सा ग़	-	सा
द	र	स	प	र	स	पि	या	लऽ	पऽ	टा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	प	सां त्रि़	सां	सां	सां	त्रि	सां	-	सां	सां	त्रि	सां	सां	-
खि	ली	ऽ	चाँ	ऽ	द	नी	ऽ	नै	ऽ	न	उ	घा	ऽ	रे	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प त्रि (सां) त्रि सां	– सां सां –	सां – त्रि –	प म ग –
क म ल पं	ऽ ख ड़ी ऽ	के ऽ ढं ऽ	ग भ रे ऽ

गं म प त्रि	सां गं मं गुं	सां त्रि प म	सा गु ऽ सा
रं ऽ ग भ	री ऽ र स	ब र सा ऽ	नी ऽ ऽ ऽ

३—जोग (लक्षणगीत) त्रिताल

श्याम सुनाओ मधुर रागिनी,
जोग राग की सुरत सुहावनी ॥ध्रु०॥
स-प संवाद अ-ध-र द्विग सोहत ।
अन्त प्रहर दिन सोहत मृदु नी ॥

०	३	×	२
ग – म त्रिप	(सा) गु – सा –	त्रि सा ग ग	म प म ग
श्या ऽ म सुऽ	ना ऽ वो ऽ	म धु र रा	ऽ गि नी ऽ
ग म प त्रि	सां सां त्रि प	म ग म त्रिप	ग म गु सा
जो ऽ ग रा	ऽ ग की ऽ	सु र त सुऽ	हा ऽ व नी
ग म प त्रि	सां – सां त्रि	सां सां गं मं	गुं – सां सां
स प सं ऽ	वा ऽ द अ	ध र द्वि ग	सो ऽ ह त
सां – त्रि त्रि	प म ग म	ग – म त्रिप	ग म गु सा
अ ऽ न्त प्र	ह र दि न	सो ऽ ह तऽ	मृ दु नी ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोगी—

(संस्कृत) आभोगी राग इत्युक्तः सन्यासं सांशकग्रहम् ।
आरोहेऽप्यवरोहे च पनिवर्जं तथौडुवम् ।।

—रागलक्षणे ।।

यह दाक्षिणात्य कान्हरा प्रकार है। काफी ठाठ से उत्पन्न हुआ है। जाति औडव, पंचम और निषाद वर्ज्य, गांधार कोमल है। इसके पूर्वाङ्ग में बागेश्री और उत्तरांग में दुर्गा का भास होता है। इसमें कोई म, ग, रे, सा ऐसा सरल अवरोह लेते हैं। कोई बागेश्री की छाया नष्ट करने के लिये ग, म रे सा ऐसा वक्रगांधार पसंद करते हैं। यह कानड़ा प्रकार होने से दूसरे प्रकार से भी रागहानि नहीं हो सकती। गांधार का आंदोलन तथा मध्यम का कण आवश्यक है। धग संगति अत्यंत रक्तिदायक है। मध्यम वादी, षड्ज सम्वादी, समय मध्यरात्रि।

मुख्याङ्गः—सागऽ, मधग, मरेऽसा। (अथवा मगरेसा)

म
आरोहावरोहः—सा, ग, म, ध, सां। सां, ध, म, ग, धग, मरे, सा।

म म
स्वरविस्तारः—सा, रे, सा, ध, ध, धधसा, रेसा, गऽमरे, सा।

म म म
धधसा, गऽ, म, रे, सा; सा, ध, रेसाध, रेध, धगऽमरे, सा। साधम,

म म म म म म
धम, गमधम, मधसा, गऽमरे, सा ।। सारेग, साग, धसाम, मग, मग,

म म म
धध, मग, धग, धगमग, मग, मगऽमरे, सा ।। धसाम, म, म, म,
मधसाम, धगम, गम, धम, धग, मरे, सा। सागमध, गमध, धगऽमध,
गमध, रेगमध, धग, गममग, मग, धगऽमरे, सा। सागमध, गमध,
धगऽमध, मगमध, मध, मधसां, रेंसां, मंगंमंऽरेंऽसां, रेंसांध, मग, मध-

म म म म
सांधम, धगम, मधग, धग, ग, ग, मरेऽ, सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१-आभोगी-झपताल (ख्याल पद्धति से)

कुंडल की झलकारी न्यारी।
निरख निरख सुध गई मोरी ॥धृ०॥
मध-मंडल में बिराजत चंपा।
जो देखे सो रीझ रहत री॥

०	३		×	
(म) ग-गम	रेसा	धसारेसाधसारेसा धसारेसारे-सारे	(म) ग-	म-
कुंऽऽऽ	डल	कीऽऽऽऽऽऽऽ ऽऽऽऽझऽलऽ	काऽ	ऽऽ

२			०		३			×	
म-	--	(सा) रे-	-सा	धध	-म	धध	सा-	(मम) गग	गम
रीऽ	ऽऽ	न्या	ऽरी	निर	ऽख	निर	खऽ	सुध	गई

२			०
--	रेग	रे-	-सा
ऽऽ	मोऽ	ऽऽ	ऽरी

३			×		२			०	
									मग मध
म-	ध-	मध	सां-	-सां	(मं) गंमं	रेंसां	ध-	सां-	गंमंगंमं
मंऽ	ऽऽ	डल	मेंऽ	ऽबि	राऽ	जत	चंऽ	पाऽ	जोऽऽऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें–	सां–	धम	ध–	(ध)ग–	गुम	गुम	रेरे	सा–
देऽ	खेऽ	सोऽ	री	ऽऽ	झऽ	रऽ	हत	रीऽ

२—आभोगी–एकताल

सुघर चतुर अलबेली, नवल नारि करे सिंगार।
रहस रहस डोले लाड़ली ॥ध्रु०॥
वदन कमल चंद्रज्योत, अलक जैसे भ्रमर छावत।
नासिका पर कीर सोहत, केहरि-कटि जंघ कदलि ॥

०		३		४		×		०		२	
ध	म	ध	सां	ध	म	(म)ग	म	रे	रे	सा	सा
सु	घ	र	च	तु	र	अ	ल	बे	ऽ	ली	ऽ
ग	ग	म	रे	–	सा	ध़	सा	ध़	रे	–	रे
न	व	ल	ना	ऽ	रि	क	रे	सिं	गा	ऽ	र
म	ध	सां	थ	म	म	(म)ग	–	म	ग	रे	सा
र	ह	स	र	ह	स	डो	ऽ	ले	ला	ड़	लि
मं	ग	म	ध	ध	म	ध	सां	ध	सां	–	सां
व	द	न	क	म	ल	चं	ऽ	द्र	ज्यो	ऽ	त
ध	म	म	ध	सां	सां	सांरें	गुरें	सां	ध	म	म
अ	ल	कँ	जै	ऽ	से	भ्रऽ	मऽ	र	छा	व	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	–	सां	सां	मं	मं	मं गं	–	मं	रें	सां	सां
ना	ऽ	सि	का	प	र	की	ऽ	र	सो	ह	त

धसां	रेंसां	ध	ध	म	म	म ग	–	म	रे	रे	सा
केऽ	ऽऽ	ह	रि	क	टि	जं	ऽ	घ	क	द	लि

रेवती–

(संस्कृत) काफी मेल समुत्पन्ना रेवतीतीरिता खलु।
गेया रात्रौ च संपूर्णा वक्रा पांशा च गायकैः॥

(हिन्दी) रि ध तीखे कोमल निगम चढत न नीग लगाइ।
प स वादी संवादि तें सुघर 'रेवती' भाइ॥

'रेवती' या 'रेवती कानडा' काफी ठाठ का एक प्रातर्गेय 'कान्हरा' प्रकार है। गांधार, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध, जाति सम्पूर्ण, गांधार आंदोलित है। इसके आरोह में गांधार, निषाद वर्ज्य तथा धैवत वक्र है। अवरोह में सां, नि़धनि़प, धनि़पमप, म/गऽऽमरेऽसा इस प्रकार कानडा अंग दिखाया जाता है। सा, रेमप, रेमपधमप, धधपमप तथा पधमपसां इस प्रकार के आरोह से देसी का भास होता है, किन्तु अवरोह में सांऽ, धनि़प, नि़धनि़प, मप, म/गऽऽ, म/गऽमरेऽऽसा इस प्रकार कानडा अंग देसी नष्ट करता है। शुद्ध धैवत का प्रयोग तथा देसी अंग का आरोह नायकी, सूहा से इसको

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बिल्कुल अलग रखता है। इसका चलन बहुत ही गमक-युक्त है। देसी की 'सांप' तथा कान्हरा की 'रेप' संगति, इसमें बिलकुल वर्जित है। वादी पञ्चम, सम्वादी षड्ज।

मुख्यांगः—रेमपधमप, सांऽधनिप, मपगुऽऽम, रेऽसा।

आरोहावरोहः—सा, रेमपधमपसां। सां, धनिप, मप, गु, गु, मरेऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, रेसा, रेनिसा, रेमप, गुऽऽऽ, गुऽ, मरेऽसा। सा, रेनिसा, रेमप, रेमप, रेमपधमप, धधपमप, गुऽऽ, मपगुऽरेमपगु, मरेऽसा। रेमप, रेमपधमप, निमप, धनिमप, सां, धनिप, मप, गुऽऽमरे, सा। सा, रेमपधमपसां, रेंसां, मपसांऽरेंसां, गुंऽऽमंरेंऽसां, रेंनिसां, रेंमंपंधंमंपं, गुंऽऽमंरेंऽऽसां, सां, रेंनिसां धनिप, मपसांऽधनिप, मप, धनिप, निप, मनिप, धधपमप, मपगुऽऽऽ, पगुऽऽऽ, पगु, मरेऽसा, रेनिसा, धनिप, मपसा, रेसा, गुऽऽऽमरेऽसा, रेमपऽऽऽ।

१—रेवती कानड़ा-त्रिताल

गाओ सजनवा, हरि के गाओ गुन।
जावत कछु न अंत में संग तोरे,
कौन सहारा तेरो हरि बिन ॥ध्रु०॥
धन जोवन कछु काम न आवत,
प्रभुपदचरण करत भवभञ्जन ॥

०				३				×				२			
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	ध	नि	प	गु	–	म	रे	सा
गा	ऽ	ओ	स	ज	न	वा	ऽ	ह	रि	के	गा	ऽ	ओ	गु	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे नि़ सा सा	रे म प ग॒	– म रे सा	ध़ नि़ प़ प़
जा ऽ व त	क छु न अं	ऽ त में ऽ	सं ग तो रे
म़ प़ सा –	रे – सा –	म ग॒ – ग॒ म	रे रे सा सा
कौ ऽ न स	हा ऽ रा ऽ	ते ऽ रो ऽ	ह रि बि न
म प सां –	सां सां सां सां	गं॒ – गं॒ मं	रें – सां सां
ध न जो ऽ	ब न क छु	का ऽ म न	आ ऽ व त
सां रें नि॒ सां	ध नि॒ म प	म ग॒ ग॒ ग॒ म	म रे रे सा सा
प्र भु प द	च र ण क	र त भ व	भ ऽ ञ्ज न

२-रेवती कानड़ा-एकताल (ख्याल)

वाजे झननन झनकार नेवर की,
डोले श्याम कन्हाई ॥ध्रु०॥
संग सखा सखी सोहत,
सुन्दर मधुर मुरत नैनन मों छाई ॥

४	×	०	२
* –रेमपधमप	सां –	–धनि॒ प	– धधपमप
* ऽबाऽजेऽऽऽ	झ ऽ	ऽनन न	ऽ झऽऽऽऽ

०	३	४	×
म ग॒– ग॒म	सा रे –सा	रेनि॒ सासा	मरे रेम प
नऽ ऽऽ	का ऽर	नेऽ वर	कीऽ ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०		२		०		३	
–	मपधपम	–	ग (म)	ग (म)	गुम	रे (सा)	–
ऽ	डोऽऽऽले	ऽ	श्या	ऽ	मक	न्हा	ऽ

४		×		०		२	
सा	मपंमप	सां	–	–रेंनि	सां	–सांरें	–
ई	संगसऽ	खा	ऽ	ऽसखि	सो	ऽहुत	ऽ

०		३		४		×	
गंगंमं	रेंसां	रेंनि	सां	–	धनि	प	मप
सुंऽऽ	दर	मधु	र	ऽ	मुर	त	नैऽ

०		२		०		३	
–	मपधप	म	–	ग	गुम	रे (सा)	–
ऽ	नऽऽऽ	न	ऽ	मों	ऽऽ	छा	ऽ

४	×
सा, –रेमपधमप	सां–
ई, ऽबाऽजेऽऽऽ	झऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३–रेवती–कानडा–त्रिताल (लक्षणगीत)

गाओ गाओ री रेवती ।
खर–हरप्रिय–मेलज मधुर राग,
संपूरण, मोहत गुनिजन–मति ॥
पञ्चम को नित रे वादी कर,
षड्ज सुवादन भावत सुन्दर ।
रेमपसांधनिपगऽ सुर सङ्गति ॥

०	३	×	२.
रेम पध पध मप	गुम रेगु सा रे	(म म म) गु – – म	रे रे सा –
गाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ओऽ गाऽ ऽ ओ	री ऽ ऽ रे	ऽ व ती ऽ
रे नि सा सा	रे प गु –	रे म प प	गु म रे सा
ख र ह र	प्रि य मे ऽ	ल ज म धु	र रा ऽ ग
म़ प़ सा –	रे रे सा रे	गु गु गु म	रे रे सा सा
सं ऽ पू ऽ	र न मो ऽ	ह त गु नि	ज न म ति
म प सां सां	सां रें सां सां	रें मं पं –	गुं मं रें सां
पं ऽ च म	को ऽ नि त	रे ऽ वा ऽ	दी ऽ क र
रें मं पं पं	गुं मं रें सां	सां रें नि सां	ध नि प प
ष ड् ज सु	वा ऽ द न	भा ऽ व त	सु ऽ द र
रे म प सां	ध नि प –	गु – गु म	रे – सा सा
रे म प सां	ध नि प ऽ	ग ऽ सु र	सं ऽ ग ति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिवरञ्जनी–

(संस्कृत) खरहर–प्रिय मेले तु निमाभ्यामपि वर्जिता ।
औडुवा पंचमांशा च निशिगेया शिवरञ्जनी ।।

(हिन्दी) काफी के जब मेल में लेत न मध्य निखाद ।
शिवरंजनि तब जानिये पञ्चम–षड्ज संवाद ।।

(मराठी) शिवरंजनींत माना कोमल गांधार, वर्ज्य मनि युगुल ।
मध्य निशासमयीं अति हर्षवीत नित्य वृद्ध आबाल ।।

शिवरञ्जनी उत्तर भारत का एक अत्यन्त मधुर काफी मेलोत्पन्न धुन स्वरूप है। इसमें निषाद, मध्यम वर्ज्य, गांधार कोमल अन्य स्वर शुद्ध हैं। अर्थात् जाति औडव। 'परे' और 'धग' स्वरसङ्गति अत्यन्त मधुर है। वादी पञ्चम, संवादी षड्ज। समय मध्यरात्रि।

सा
मुख्यांगः—गपधसां धपग, रे, सा ।

आरोहावरोहः—सारेगप, ध, सांऽऽ । सां, धप, गऽऽ;
सा
रे, सा ।

स्वरविस्तारः—सा, ध, धसा, रेसाध, धसारेसाधऽप, धसा, गपध, धधसा, रेसा। पधसा, गपधसा, साधप, सा, रेसा, गरेसा, रेगरेसाऽधप, पगरेसा। सा, सारेग, रेग, धसारेग, धप, रेग, रेपग, पग, रे, पगऽ, रे, सा, धप, धसा। सारेगप, रेगप, गप, धग, रेगपधग, पग, पधपग, पग, पग, पग, रेगपग, रे, सा। सारेगपऽध, गपध, रेपगध, गपध, गध, धसांऽ, रेंसांधऽ, पग, रेपग, पग, रेसा। सा, रेग, प, धसां, गपधसां, पधसांऽऽ, पधसांरेंगं, गं, गं, पंगं, रेंपंगं, पंगं, रें, सां। सां, धपग, पग, पधग, पग, प, ग, रे, सा, धसारे, गरेसा, धप, धगरेसा, रेधसा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१-शिवरञ्जनी-झपताल

बीन बजावत मोहन ।
सुरतिया अति सुन्दर ।
हर लीन्हो श्रवण मन ।।ध्रु०।।
नजरिया तिरछी नित ।
नित जिया में बसत
सखि री सुध जात मोरी।
चरण-रज धरत तन ।।

३			×		२			०	
ध	प	ध	सां	–	ध	ग	रेग	सा	सा
बी	न	ब	जा	ऽ	व	त	मोऽ	ह	न
ध़	सा	रे	ग	–	प	प	ग	रे	सा
सु	र	ति	या -	ऽ	अ	ति	सुं	द	र
प	ध	सां	–	सां	सांरें	सांरेंगंरें	सां	ध	प
ह	र	ली	ऽ	न्हो	श्रऽ	वऽऽऽ	ण	म	न
ग	प	ध	सां	–	सांरें	सांरेंगंरें	सां	ध	प
न	ज	रि	या	ऽ	तिऽ	रऽऽऽ	छि	नि	त
ध	सां	रें	पंगं	–	गं	पं	गं	रें	सां
नि	त	जि	याऽ	ऽ	में	ऽ	ब	स	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

		प	
ध ध सां	ध प	ग – रे	सा सा
स खि री	सु ध	जा ऽ त	मो रि
ध़ सा रे	ग प	सांरें सांरेंगंरें सां	ध प
च र न	र ज	धऽ रऽऽऽ त	त न

२–शिवरञ्जनी–अद्धा

कांकरिया जिन मारो कन्हैया ।
नाजुक मैं मोरी सीस गगरिया ॥ध्रु०॥
मैं तो चली जल भरन जमुना तीर ।
लचक जात मोरी पतरी कमरिया ॥

०	३	×	२
* सागु रे सा	रे ध़ सा ग	गुरे – गुरे ग	प ग रेग सा
* कांऽ क रि	या ऽ जि न	माऽ ऽ रोऽ क	न्है ऽ याऽ ऽ
– सारे रे ग	प – ध सां	रेंसां ध – प	ग रे गुरे सा
ऽ नाऽ जु क	मैं ऽ मो री	सीऽ स ऽ ग	ग रि याऽ ऽ
– ग प ध	ध सां सां सां	धं सां रें रें	सांरें गं रें रें
ऽ मैं तो च	ली ऽ ज ल	भ र न ज	मुऽ ना ति र
रें गं पं गं	रें रें सां सां	सांध प – ग	रे ग रेग सा
ल च क जा	ऽ त मो री	पत री ऽ क	म रि याऽ ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३–शिवरंजनी–त्रिताल

बोले अटरिया सखि कगवा । बोले मुरवा सगुन भंइलवा ।
फरकन लागी मोरी भुजवा ॥
बीत गये जुग उनके मिलनवा । कब आवेंगे प्राण पियरवा ॥

०				३				×				२			
-	सारे	गुरे	सा	रे	ग़	प	ध	धसां	धसां	ध	प	ग़	रे	ग़ (प)	-
*	बोऽ	ऽऽ	ले	अ	ट	रि	ऽ	याऽ	ऽऽ	स	खि	क	ग	वा	ऽ
सा	रे	-	ग़	सारे	गुरे	साध़	प़	-	ध़सा	रे	सा	सा	ध़	सा	-
ऽ	बो	ऽ	ले	मुऽ	रऽ	वाऽ	ऽ	ऽ	सगु	न	भ	इ	ल	वा	ऽ
-	रेग़	प	ध	प	ध	सां	-	सां	रें	सांरें	ग़रें	सां	ध	प	ग़
ऽ	फर	क	न	ला	ऽ	गी	ऽ	मो	ऽ	रीऽ	ऽऽ	भु	ज	वा	ऽ
सा	ग़	प	ध	सां	-	ध	सां	सां	रें	रें	गं	सांरें	ग़रें	सां	-
ऽ	बी	त	ग	ये	ऽ	जु	ग	उ	न	के	मि	लऽ	नऽ	वा	ऽ
सां	रें	ग़ं	-	रें	सां	सां	-	सां	-	ध	प	ग़	रे	ग़	सा
क	ब	आ	ऽ	वें	ऽ	गे	ऽ	प्रा	ऽ	ण	पि	य	र	वा	ऽ

४–शिवरंजनी–त्रिताल

आये नहीं सजनी मोरे बालम ।
हरत लाडिलो चितबरन श्याम ॥ध्रु०॥
आवन कहि गये अजहुँ न आये ।
सुझत नहीं कछु सखि काम धाम ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०	३	×	२
ग सां ध प	ग रेसा रे ग	प – ग रे	रेग मग रेसा साध
आ ऽ ये न	हीं ऽऽ स ज	नी ऽ मो रे	बाऽ ऽऽ लऽ मऽ
सा रे ग प	– ग प –	प ध सां रें	सांरें गंरें सां सां
हं र त ला	ऽ डि लो ऽ	चि त ब र	नऽ श्याऽ ऽ म
ग – प ध	सां सां ध सां	प ध सां रें	सांरें गं रें –
आ ऽ व न	क हि ग ये	अ ज हुं न	ऽआ ऽ ये ऽ
रें गं रें सां	सां ध ध प	धसां रेंसां ध प	ग सारे गरे साध
सु भ त न	हीं ऽ क छु	सऽ खीऽ का ऽ	म धाऽ ऽऽ मऽ

५—शिवरंजनी—एकताल

शिवरञ्जनी गाओ रागिनी। हर-प्रिय में बरजत म नि।
औडव मानत सब गुनि ॥धृ०॥
पंचम को वादि करत, समवादी रिषभ लसत।
भेद गुनी शास्त्र-सुमत धग संगत मनहरनी ॥

×		०		२		०		३		४	
ध	प	ध	सां	ध	प	ग	–	ग	ग	रे	सा
शि	व	र	ऽ	ञ्ज	नि	गा	ऽ	ओ	रा	गि	नि
रे	ध़	सा	सा	रे	सा	ग	प	ध	ग	प	प
ह	र	प्रि	य	में	ऽ	ब	र	ज	त	म	नि

ग प	ध सां	ध प	ग प	ग रे	सा सा
औ ऽ	ड व	मा ऽ	न त	स ब	गु नि
ध ग	प प	सां ध	सां ध	सां ध	सां सां
पं ऽ	च म	को ऽ	वा ऽ	दि क	र त
सां रें	सांरें गुंरें	सां सां	सांरें गुंरें	सां ध	प - प
स म	वाऽ ऽऽ	दी ऽ	रिऽ षऽ	भ ल	स त
सां -	सां गं	पं -	गं पं	गं रें	सां सां
भे ऽ	द गु	नी ऽ	शा ऽ	स्त्र सु	म त
ध सां	ध -	प प	गुप धुप	ग ग	रे सा
ध ग	सं ऽ	ग त	मऽ नऽ	ह र	नी ऽ

शोभावरी—

(संस्कृत) आसावरी समुत्पन्ना 'शोभावरी' निरूपिता ।
औडुवा गनिहीना स्यात् धैवतांशा प्रभातगा ॥

(हिन्दी) धैवत मृदु, मृदु मध्यम, औडव ग नि बिन गाय ।
रि ध सम्वादी वादि तें 'शोभावरी' कहाय ॥

(मराठी) शोभावरींत शोभति धैवत विन शुद्ध सर्वही सूर ।
निषाद गांधारतें वर्ज्य करुनि गाति सर्वही चतुर ॥

यह आसावरी मेल का एक अत्यन्त रञ्जक दाक्षिणात्य प्रकार है। इसमें आसावरी के ही सुर लगते हैं, किन्तु गांधार, निषाद बिल्कुल वर्ज्य हैं। म रे संगति से पूर्वाङ्ग में सारङ्ग का भास बहुत रक्तिदायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होता है। वादी धैवत, संवादी ऋषभ, समय प्रातःकाल। राग का मुख्यांगः—रेमपसां, धुऽप, मपधु, मप, रे, सा।

आरोहावरोहः—सा, रे, म, प, सांधुऽऽसां। सां, धु, प, मं, रेऽसाऽ।

स्वरविस्तारः—सा, रेसा, सांधु ऽऽ, धुसा, रेसा, मऽरेसा। साधुप, मपधुसाधुप, मपधुऽऽ, मपधुऽमपधुसा। रेसा, रेम, रेसा, सारेम, रेसा-धुम, रेसाम पम, रेमपम, रेपम, पम, रेमपम, रे, रेमपमरेऽ, म, रेसा, धुप, मपधुसा। सा, रेमप, रेमपरेमप, मपधुमप, मपधु, धुमप, रेमपधु, धुमप, साधुमप, मपधुम, परे, धुमरे, मधुमप, रे, मरे, पमरे, रेसा। सा, रेमपधु, मपधु, धुधु मपधु, मपधुसांऽऽऽ, रेंसां, मं, रेंसां, रेंमंपंधुमंपं, मरें, सां, रेंधुप, मपसांधुप, मपधुम, धुम, मपधुसांधुम, रेमपधु, सांधुम, मपधुम, रे, पमरे, मरेऽसा, मपधु, धु, धुसा॥

१–शोभावरी–ताल चन्द्रक्रीड़ा (ख्याल पद्धति से)

मन्दर बाजन लागे री डमरू, डफ, बीन, भेरी।
मृदङ्ग रङ्ग बढ़ावत री॥ध्रु०॥
नेवर की झनके झनकारी। बंसी बाजे झांझ किनरी॥

(चन्द्रक्रीड़ा ताल में मात्रा ९, भाग ५, सम १, काल १, ताली ३)

×		२		०	३		४	
धि	न्ना	तिट	कत	कत्	ति	न्ना	तिट	कत

४		×		२		०	३	
रेम	रेसारे	नि धु–	––	पप	धुम	पऽ	रेंम	रेसा
मंऽ	दरऽ	बाऽ	ऽऽ	जन	लाऽ	ऽऽ	गेऽ	रीऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रेरे	सा-	धृ-	पृ-	धृ-	--	-सा	रे- सा-
डम	रूऽ	डऽ	फऽ	बीऽ	ऽऽ	ऽन	भेऽ रीऽ
सारे	-म	प-	--	पप	धृ-	प-	रेम रेसा
मृदं	ऽग	रंऽ	ऽऽ	गब	ढ़ाऽ	ऽऽ	वत रीऽ
म-	पधृ	सां-	--	रेंसां	रें-	रेंमं	मंरें- सां-
नेऽ	वर	कीऽ	ऽऽ	झन	केऽ	झन	काऽ रीऽ
रेंमं	(मं) रेंसां	धृसां	धृप	धृम	प-	रेम	रे- सा-
बऽ	न्सीऽ	बाऽ	जेऽ	झांऽ	ऽऽ	झकि	नऽ रीऽ

२–शोभावरी–त्रिताल

अब ना जगावो प्रीतम प्यारे । रैन अँधेरी जगी जगाई ।
भई भोर मोहे सोवन दे रे ॥ध्रु०॥
अखियाँ न मोरी लागति पल छिन, अब न सतावो नन्द दुलारे ।

३	×	२	०
			सा
			अ
रे म प धृ	सां - धृ प	मप धृप म प	(म) रे - सा रे
ब ना ऽ ज	गा ऽ वो ऽ	प्रीऽ ऽऽ त म	प्या ऽ रे रै
(म) म रे - सा	रे - सा सा	धृ धृ पृ धृ	सा - सा सा
ऽ न ऽ अं	धे ऽ री ऽ	ज गी ऽ ज	गा ऽ ई भ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे म प धु	सां - सां -	सांरें मंरें सां रेंसां	धु - प म
ई भो ऽ र	मो ऽ हे ऽ	सोऽ ऽऽ व नऽ	दे ऽ रे अ
म प - धु	सां - सां -	रें मं रें सां	धु धु प प,
खि यां ऽ न	मो ऽ री ऽ	ला ऽ ग ति	प ल छि न,
रें मं रें सां	धु धु प प	म प मप धुप	(म) रे - - सा
अ ब न स	ता ऽ वो ऽ	नं ऽ दऽ दुऽ	ला ऽ ऽ रे

३–शोभावरी–एकताल

बन्दनवा बाँधो मालन, लाओ गूंद बरन बरन।
आज हमारे आये सजन ॥धृ०॥
मोतियन की बारि फूली, फूली केसर चमेली।
डोलत हरियाली बेलि, मधुर गन्ध हरत पवन ॥

३	४	×	०	२	०
प म	प सां	धु प	मप धुप	म पम	रे सा
ब ऽ	न्द न	वा ऽ	बांऽ ऽऽ	धो मांऽ	ल न
सा -	रे म	प म	प प	प धु	म प
ला ऽ	वो गूं	ऽ द	ब र	न ब	र न
प -	रें सां	रें रें	मप धुप	म पम	रे सा
आ ऽ	ज ह	मा रे	आऽ ऽऽ	ये सऽ	ज न
म म	प प	(सां) धु -	सां -	सां रें	सां सां
मो ति	य न	की ऽ	वा ऽ	रि फू	ऽ लि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध॒	–	सां	–	सां	सां	सांरें	मंरें	सां	ध॒	–	प
फू	ऽ	ली	ऽ	के	ऽ	सऽ	रऽ	च	मे	ऽ	ली
म	प	सां	सां	ध॒	प	मप	ध॒प	रे	रे	सा	सा
डो	ऽ	ल	त	ह	रि	याऽ	ऽऽ	ली	वे	ऽ	लि
सा	सा	सा रें	सां	–	सां	ध॒सां	रेंसां	ध॒सां	रेंसां	ध॒	प
म	धु	र	गं	ऽ	ध	हुऽ	रऽ	तऽ	पऽ	व	न

४ - शोभावरी–(लक्षण-गीत) झपताल

सरस 'शोभावरी', मधुर सुर सुरसरी।
रूप औडव अ-ग-ध, रसिक मन रसभरी॥ध्रु०॥
अङ्ग आसावरी, प्रात दे माधुरी।
वादि धैवत लसत, संबदत रिखब री॥

×		२			०		३		
म	प	ध॒	म	प	रे	म	रे	सा	ऽ
स	र	स	शो	ऽ	भा	ऽ	व	री	ऽ
ध॒	प	ध॒	सा	सा	रे	म	रे	सा	–
म	धु	र	सु	र	सु	र	स	री	ऽ
सा	रे	म	प	प	ध॒	ध॒	प	म	प
रू	ऽ	प	औ	ऽ	ड	व	अ	ग	ध
म	प	ध॒	सां	सां	रें	सां	ध॒	प	–
र	सि	क	म	न	र	स	भ	री	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	म	म	प	धॖ	सां		–	सां	सां	सां
अं	ऽ	ग	आ	ऽ	सा		ऽ	व	री	ऽ
प	–	धॖ	सां	रें	सां		रें	सां	धॖ	प
प्रा	ऽ	त	दे	ऽ	मा		ऽ	धु	री	ऽ
म	प	धॖ	सां	रें	मं		रें	सां	धॖ	प
वा	ऽ	दि	धै	ऽ	व		त	ल	स	त
म	प	धॖ	म	प	रे		म	रे	सा	–
सं	ऽ	ब	द	त	रि		ख	ब	री	ऽ

चन्द्रकौंस—

(संस्कृत) मृदू गधौ स्वरौ यत्र समौ संवादिवादिनी ।
रिपहीनश्चन्द्रकौशिर्निशीथात्परमौडुवः ॥

(हिन्दी) कोमल गध, पंचम-रिखब दोऊ बरजत कीन्ह ।
स म संवादी वादि हैं चन्द्रकौंस को चीन्ह ॥

(मराठी) चन्द्रकौंस घे कोमल ध नि स्वर, रि प वर्ज्य, इतर ही शुद्ध।
स म संवादन सुन्दर, समय सुशोभत सुरात्रिचा मध्य॥

प्रचलित राग मालकौंस का निषाद शुद्ध कर देने से चन्द्रकौंस की रचना होती है। अर्थात् इसमें गांधार धैवत कोमल, पंचम ऋषभ वर्ज्य, और अन्य स्वर शुद्ध हैं। शुद्ध निषाद पर बारबार न्यास करने से मालकौंस की छाया नष्ट होती है और मधुरता भी बढ़ती है। कोई बागेश्री का ऋषभ वर्ज्य करके ही चन्द्रकौंस गाते हैं; किन्तु यह प्रकार इतना रंजक नहीं हो सकता। वादी मध्यम, संवादी षड्ज। समय मध्यरात्रि। जाति औडव। मुख्यांगः—सांनिधॖऽम, गॖम गॖऽ ऽसा, मगॖसानिॖऽ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि
आरोहावरोहः—निसागम, धS, निसांSS । सांनि, धSम,
म
गSमगSमगSसा ।

सा सा
स्वरविस्तारः—सा, नि, निसा, ध,धनि,मधनि, मधमनि, मधनिसा । निसा, निसाग, धनिसाग, गनिसागमग, मगसानिSमग, निमग, मग, मगSसा । निसागम, सागम, गम, मगSसा, मग, निसाग, गम, निसाम, मगसानिSम, गधम, मधग, धग, मग, मगSसा । सा, गमध, सागमध, निसागमध, धनिसागमध, गमध, मध, मगसानि, निध, गमनिध, मनिध, निधSम, गम, गमगSSसा । निसागमधनि, सागमधनि, गमधनि, मधनि, धSमगसानि, निनि, मधमनि, गमधनि, मधनि, मधनिसांSS । गंसां, मंगंसां, गंमंगंसां, सांगं, मंगंसां, निमंगं, मंगं, मंनिमंगं, मंगंमंगंSसां । सांनि, धSम, गम, सागम, गमग, मग, सागमग, मगमग, मगSसा । मगसानि, निसा, मधनि, मधनिसा, गमगSसा ।

१—चन्द्रकौंस (ख्याल-एकताल)

छैल छबीला मोरा अलबेला सुंदर प्यारा ॥ध्रु०॥
झूमत आवत मन ललचावत होवत नेक न न्यारा ॥

४		×		०		२		०		३	
—सा	गमधनिसांधनि	सां	—	निध	—म	—	ग	म	—	गम	ग
Sछै	SलSSSSछS	बी	S	लाS	SS	S	मे	रा	S	अल	बे

				नि							
सा	—	गसानि	—	सा	—	साम	मग	—	मग	सा	निसा
ला	S	सुंSS	S	द	S	रS	प्याS	S	राS	S	SS

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गम	धनि	सां	–	गंसां	–	गंसांनि	–	धनि	सां	–	गंसं
झूऽ	मत	आ	ऽ	वत	ऽ	मऽन	ऽ	लल	चा	ऽ	वत

गंसां	–	गंसांनि	–	निध	म	ग	गम	ग	मग	सा	निसा
होऽ	ऽ	वऽऽ	ऽ	तऽ	ऽ	ने	कन	न्या	राऽ	ऽ	ऽऽ

२–चन्द्रकौंस–त्रिताल

मधुरात आई, आये सजन, ऋतु शरद डोले मधुबन ॥धु०॥
मन पुनम पूरन चांद सुहावे, बिरछन की छैयाँ करे मन मगन ॥

३				×				२				०			म म
ग	सा	नि	सा	नि	–	–	ध	नि	सां	धनि	सांनि	नि ध	ध म	म ग	ग
धु	रा	ऽ	त	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	आऽ	येऽ	स	ज	न	ऋ
म	ग	सा	सा	म	ग	सा	नि	नि	–	सां	गं	मं	गं	सां,	ग
तु	श	र	द	डो	ऽ	ले	ऽ	डो	ऽ	ले	म	धु	ब	न,	म
म	ध	नि	नि	सां	–	सां	सां	गं	–	गं	मं	गं	–	सां	गं
न	पु	न	म	पू	ऽ	र	न	चाँ	ऽ	द	सु	हा	ऽ	वे	बि
मं	गं	–	सां	नि	–	ध	म	ग	ध	म	ग	म	ग	सा	
र	छ	ऽ	न	की	ऽ	छै	याँ	क	रे	म	न	म	ग	न	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३–चन्द्रकौंस–त्रिताल

बनके बलैया हो लेऊँगी आज। मैं तो करूँ सब सिंगार साज ॥धृ०॥
बहुत दिन बीते पिया घर आये। सुझत नहीं कछू काम-काज आज ॥

															सां
३				×				२				०			ब
नि	ग	म	ग	सा	–	नि	–	सा	–	ग	म	ग	सा	नि	नि
न	के	ऽ	ब	लै	ऽ	या	ऽ	हो	ऽ	ले	ऊँ	गी	आ	ज	मैं
सा	म	–	म	म	–	ध	म	ध	नि	सां	गं	सां	नि	ध	ग
ऽ	तो	ऽ	क	रूँ	ऽ	स	ब	सिं	गा	र	सा	ज	आ	ज	ब
म	म	ध	नि	सां	–	सां	सां	सां	नि	सां	गं	सां	नि	सां	गं
हु	त	दि	न	बी	ऽ	ते	पि	या	ऽ	घ	र	आ	ऽ	ये	सु
मं	गं	–	सां	सां	–	नि	ध	ग	म	ध	म	ग	सा	नि	
झ	त	ऽ	न	हीं	ऽ	क	छु	का	ऽ	म	का	ज	आ	ज	

४–चन्द्रकौंस–झपताल

नवल बाजत राग चन्द्रकौंस सखि।
मोरे मध आत मन भावत ॥धृ०॥
गांधार कर कोमल; अरु धैवत सोहे मृदुल।
रि प वर्ज्य नित करत, सांनिधऽम सोहे लाग॥

×		२			०		३		
सां	नि	ध	म	–	ग	म	ग	सा	सा
न	व	ल	बा	ऽ	ज	त	रा	ऽ	ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि॒	–	सा म –	म	म	ध॒ ग॒ म
चं	ऽ	द्र कौं ऽ	स	स	खि मो रे
ग॒	म	ध॒ नि॒ सां	ग॒	म	ग॒ सा सा
ग	ध	रा ऽ त	म	न	भा व त
ग॒	म	नि ध॒ – नि	सां	सां	ध॒ नि सां
गां	ऽ	धा ऽ र	क	र	को म ल
नि	सां	गं॒ सां सां	नि	सां	नि ध॒ म
अ	रु	धै व त	सो	हे	मृ दु ल
नि	सां	गं॒ मं मं	गं॒	मं	गं॒ सां सां
रि	प	व ऽ र्ज्य	नि	त	क र त
सां	नि	ध॒ – म	ग॒	म	ग॒ – सा
सां	नि	ध ऽ म	सो	हे	ला ऽ ग

समाप्त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगीत-सम्बन्धी प्रकाशन

बालसंगीत शिक्षा तीन भागों में	३-००
संगीत किशोर	१-७५
हाईस्कूल संगीत शास्त्र	2-00
सङ्गीत शास्त्र	१-२५
'क्रमिक पुस्तक' भाग १	१-२५
" " भाग २	१०-००
" " भाग ३	१४-००
" " भाग ४	१४-००
" भाग ५ व ६ प्रत्येक	१०-००
सङ्गीत विशारद	६-००
सङ्गीत निबन्धावली	2-५०
सङ्गीत सीकर	६-००
सङ्गीत अर्चना	६-००
सङ्गीत कादम्बिनी	६-००
भातखंडे सङ्गीतशास्त्र १ भाग	६-००
" " २ भाग	७-००
" " ३ भाग	७-००
" " ४ भाग	१६-००
मारिफुन्नग़मात तीन भागों में	१५-५०
सङ्गीत सागर	७-००
दत्तिलम्	२-५०
वेला विज्ञान	५-००
सितार मालिका	६-००
सितार शिक्षा	४-००
कलावन्तों की गायिकी	३-५०
ठुमरी गायिकी	३-५०
हमारे सङ्गीतरत्न	१५-००
सहगल सङ्गीत	३-००
बैन्जो मास्टर	2-00
संगीत पद्धतियों का अध्ययन	३-००
स्वरमालिका	२-५०
रवीन्द्र सङ्गीत	३-५०
उ. भा. सङ्गीत का सं. इतिहास	२-५०
सूरसंगीत भाग १, २ प्रत्येक	२-००
मृदङ्ग-तबला प्रभाकर २भागोंमें	५-५०
तालप्रकाश	६-००
भारत के लोकनृत्य	५-००
सङ्गीत अष्टछाप	६-५०
पाश्चात्य सङ्गीत शिक्षा	७-००
राग कोष	१-२५
गांधर्व संगीत प्रवेशिका	३-५०
ताल अंक	५-००
ठुमरी अंक	३-००
सन्त सङ्गीत अंक	३-५०

राष्ट्रीय सङ्गीत अंक	३-५०
राग अङ्क	४-००
वाद्य सङ्गीत अंक	३-५०
बिलावल थाट अंक	३-००
कल्याण थाट अंक	३-००
भैरव थाट अंक	३-००
पूर्वी थाट अंक	३-००
खमाज थाट अंक	३-००
काफी थाट अंक	३-००
मारवा थाट अंक	३-००
तोड़ी थाट अंक	३-००
आसावरी थाट अंक	३-००
भैरवी थाट अंक	३-००
कर्नाटक संगीत अङ्क	४-००
ध्रुपद-धमार अङ्क	४-००
हरिदास अंक	१-२५
रजत जयन्ती अङ्क	५-००
भातखण्डे स्मृति अङ्क	१-००
नृत्य अंक	३-५०
कथकलि नृत्यकला	३-००
नृत्य भारती	४-००
कथक नृत्य	८-००
म्यूजिक मास्टर	२-५०
म्यूज़िक मास्टर (उर्दू)	२-५०
सङ्गीत पारिजात भाग १	५-००
स्वरमेल कलानिधि	१-२५
सङ्गीत दर्पण	२-५०
फ़िल्म सङ्गीत भाग २९ वाँ	४-००
फिल्मसङ्गीत १९६०के 12अंक	६-००
" १९६३ के " "	६-००
" १९६४ के ८ "	४-००
सिने संगीत भाग १	४-००
आवाज़ सुरीली कैसे करें ?	३-५०
अप्रकाशित राग तीन भागों में	६-००
भातखण्डे संगीत पाठमाला	१-५०
रविशंकर के आर्केस्ट्रा	६-००
म्यूजिक मिरर(इंगलिश)६अङ्क	७-५०
हिन्दी संगीतरत्नाकर(भाग १)	७-००
पिल्ला (हास्य कविताएँ)	2-५०
म्यार्ऊँ "	२-५०
दुलत्ती "	२-५०
काका के कारतूस "	2-५०
काका की कचहरी "	2-५०
काकदूत (खण्डकाव्य) "	2-५०
काका के प्रहसन	२-५०
काका की फुलझड़ियां	१-००

'संगीत' शास्त्रीय संगीत का एकमात्र मासिक पत्र; वार्षिक मू० ६)६०.शि० १२, डाक-व्यय पृथक्

'फिल्म-संगीत' सिने-संगीत का सचित्र मासिक पत्र; वार्षिक मू० ६)६०. शि० १२। डाक० पृथक्

प्रकाशक : संगीत-कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अप्रकाशित राग

(दूसरा भाग)

ज० दे० पत्की, बी. ए.

प्रकाशक

संगीत कार्यालय, हाथरस (उ. प्र.)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अप्रकाशित राग

(भाग दूसरा)

卐

लेखक

ज० दे० पत्की, बी० ए०

©

प्रकाशक

संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

द्वितीय संस्करण

अगस्त १९५९

मूल्य

१) ५०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकाशक—
श्री प्रभूलाल गर्ग के लिये
संगीत प्रेस, हाथरस में
चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा मुद्रित।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रथमं शारदां वन्दे चतुरं तदनन्तरम् ।
'दिगंबरसुतं' नित्यं स्वरशास्त्रकलाप्तये ॥

स्वर्गीय

परमपूज्य

पण्डित पलुस्करजी के

पावन

पदपंकज

पर

अप्रकाशित राग द्वितीय परिचय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग-परिचय

	राग	गीत संख्या	पृष्ठ
१	राग मालारानी	४	४
२	राग लक्ष्मीकल्याण	१	१०
३	राग मलुहा	५	१२
४	राग देवगिरी	२	१८
५	राग चक्रधर	१	२१
६	राग हंसध्वनी	३	२१
७	राग जयराज	२	२६
८	राग चम्पक	४	३०
९	राग खोकर	२	३६
१०	राग खंमाजी भटियार	३	३९
११	राग नाटकुरंजिका	१	४४
		28	
१२	राग हंसश्री	३	४६
१३	राग गोरख	५	५१
१४	राग सरस्वती	३	५८
१५	राग श्यामकेदार	२	६२
१६	राग नीलांबरी	३	६५
१७	राग मालगुञ्जी	२	७०
१८	राग हंस-कंकणी	१	७६
१९	राग पटमंजरी	१	७६
२०	राग हंसमञ्जरी	३	७७
२१	राग शिवराज	३	८२
२२	राग मधुवन्ती	४	८६
		30	

चिन्ह-परिचय

कुल गीत संख्या ५८.

१ प़=मंद्र पंचम । पं=तार पंचम । प=मध्य पंचम ।

२ म॑=तीव्र मध्यम, म=शुद्ध मध्यम, नि॒ध॒ग॒रे॒=कोमल स्वर, निधगरे=शुद्ध ।

३ धप, निधप, निधपम, धनिसांनिधपम एक मात्रा के स्वर

(विलंबित ख्याल में एक मात्रा अलग-अलग स्पष्ट दिखाई है ।)

ग म म
४ म = मध्यम को गांधार का कण, ग॒ ऽ ऽ = आन्दोलन,

(प)=कंप । सांऽऽप अथवा सांऽपं=सां से पंचम तक मींड ।

ग
प ऽ ऽ=प को ग की तरफ़ खींचना ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग्रंथ-परिचय

प्रथमं शारदां वन्दे चतुरं तदनन्तरम् ।
दिगंबरसुतं चैव स्वर-शास्त्रकलाप्तये ॥

"अप्रकाशित राग" के इन तीन भागों में ऐसे ६८ रागों का शास्त्राधार, तुलनात्मक परिचय, बढ़त पद्धति का स्वरविस्तार, राग-वाचक आरोहावरोह तथा सुगम स्वरलिपि सहित प्रचलित और अप्रचलित तालों में लगभग २०० नादमधुर, लालित्यपूर्ण गीत हैं, जो महफ़िल में हमेशा गाये जाते हैं किन्तु पुस्तक रूप में अभी तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुए ! उस्ताद फैयाज खां, गुरुवर्य विनायकबोवा पटवर्धन, पं० ओंकारनाथ, स्व० रामकृष्णबुआ वझे, श्री सवाई गन्धर्व, श्री नारायणराव व्यास, श्रीमती रोशनआरा बेगम, श्रीमती गांधारी हनूगल, उस्ताद निसार हुसेनखां साहब (लखनऊ), श्री रातंजनकर साहब, उ० विलायतखां सतारिये इत्यादि संगीतज्ञों ने नये-नये ढंग के राग प्रचार में लाये हैं। प्रस्तुत पुस्तक के भागों में इन जैसे रागों का ही संग्रह है।

प्रथम संस्कृत, हिन्दी श्लोकबद्ध लक्षण देकर बाद में उनका शास्त्रीय परिचय दिया है। शास्त्रीय परिचय देते समय समप्रकृतिक रागों की तुलनात्मक चर्चा भी अवश्य की है, इस उद्देश्य से कि पाठकों को इन रागों से अपना राग कहाँ और कैसे बचायें, यह ठीक प्रकार समझ में आ सके। राग का विवरण थाट पद्धत्यनुसार दिया है, किन्तु जहाँ अनिवार्य था, वहाँ रागांग पद्धति का भी उपयोग किया है। राग का आरोहावरोह भी इस प्रकार दिया है कि जिससे राग का सम्पूर्ण चलन, अंग, प्रत्यंग तथा राग का वैशिष्ट्य पाठकों को तुरन्त समझ में आ जाय। गीतों का चुनाव करते समय भी शब्दलालित्य, समयानुकूलता, रसपरिपोषण, तालदृष्टया विभिन्नता तथा गीत के कलात्मक उत्थान आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है।

हर एक राग में एक-एक लक्षणगीत देकर स्वर, शब्द और शास्त्र इनका मधुर मिश्रण करने का प्रयत्न किया है। अन्त में कुछ मिश्रराग भी दिये हैं, जैसे-सागर, पटबहार, आसाकली इत्यादि।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रिताल, झपताल, एकताल, आड़ाचौताल, चौताल, रूपक, तेव्रा, सुरफाक्ता आदि प्रचलित तथा मीनाक्षी, प्रभाकर, गजझंपा, झूमरा इत्यादि अप्रचलित तालों में भी छोटे-बड़े ख्यालों में गीत दिये हैं। अर्थात् विस्तार भय से अप्रचलित तालों की संख्या प्रचलित तालों से कम प्रमाण में ही है। प्रायः गंभीर तथा संधिप्रकाश रागों के ही विलंबित ख्याल भिन्न-भिन्न विलंबित तालों में दिये हैं, क्योंकि हमारे मत से हलके तथा चंचल शृङ्गारिक रागों में विलंबितों की रक्तिहानि होती है।

प्रस्तुत राग "अप्रकाशित" ही होने से उनमें मतान्तर होना असम्भव नहीं। आज भी पूर्ण परिचित अनेक रागों में काफी मतभेद है। अतः पाठक एक बात जरूर ध्यान में रखें कि सम्पादक को जिस स्वरूप में प्रस्तुत राग मिले उसी स्वरूप में वे पाठकों के सामने रखे गये हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मालारानी

(संस्कृत) सरी मपौ निसौ धपौ निसौ गरी सः स्वर-मण्डिता
मालाराणी सुसंपूर्णा पांशा सा तीव्रमध्यमा ॥

(हिंदी) गध बरजे आरोह में अवरोहि न मनि लाग
मध्यम तीवर धरत है मालारानी राग ॥

मालारानी राग कल्याण थाट से उत्पन्न हुआ है। इसमें मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में गांधार-धैवत तथा अवरोह में निषाद मध्यम वर्ज्य हैं। अर्थात जाति औडव है। सा, रेमंप, रेमंपध-मंप, रेमंपनिसां, धपमंप, इन स्वरों से श्यामकल्याण की छाया दिखाई देती है। किन्तु अवरोह में पऽगऽरेसा, इस प्रकार से स्वर आते ही श्यामकल्याण की छाया नष्ट हो जाती है। ऋषभ पर न्यास अत्याव-श्यक है। अन्तरे का उठाव पपसांऽ रेंसां, इस प्रकार से लिया जाता है। यहां केदार का कुछ भास हुआ करता है; किन्तु इस राग में शुद्ध मध्यम बिल्कुल नहीं है। कामोद का बहुत कुछ आभास इस राग में दिखाई देता है, किन्तु रेप अथवा गमपगमरेसा इस प्रकार का कामोद का अत्यावश्यक अंग इस राग में न होने से मालारानी कामोद से बिल्कुल अलग रहती है। प ग, रे सा, ध़, प़, इन स्वरों में शुद्ध-कल्याण की छाया दिखाई देती है, किन्तु शुद्धकल्याण का उठाव सा, रेमंप, इस प्रकार से कभी नहीं हो सकता। क्वचित् रंजकता के लिये रेमंपधगऽ, रेसा, अथवा निसांरेंधऽप इस प्रकार से 'धग' तथा 'रेंध' इन स्वरों की जो संगति दिखाई जाती है वह अत्यन्त वैचित्र्यपूर्ण है। वादी पंचम, संवादी ऋषभ। समय रात्रि का प्रथम प्रहर। मुख्यांग रेमंपऽगऽरेऽऽ, पऽगऽरेसा, ध़ऽप़ मंप़सा, रेसा, गरेऽऽ।

आरोहावरोहः—सा, रेमंप, निसां। निसांधप, रेमंप, रेमंपधमंप, रेमंपधमंपगऽरे, पऽगऽरेसा ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़सा; प़नि़, प़नि़सा, प़नि़सा रे, रे, रे, रेनि़, प़नि़सारे सानि़, रेनि़, प़नि़, प़नि़सा। नि़सा रे, गरे, नि़सागरे, पऽगऽरे, पऽगऽरेसा। नि़सा, नि़सारेम॑, नि़ऽसारेम॑, रेम॑, रेम॑पम॑, रेम॑प धम॑, धम॑, पधम॑, रेम॑पधम॑पगरे, रेम॑पऽग, रे, पऽगऽरेसा। सा, रेम॑प, रेम॑प—रेम॑प, नि़ऽसारेम॑प, प़नि़सारेम॑प, पगऽरेसा, गरेसाऽध़प़ प़पऽ, रेम॑पधम॑प, रेम॑पधम॑पगरे, रेम॑पधगरे, पऽगऽरे, रेम॑पऽगऽरेसा, रेसा, नि़साध़प़, प़ध़म़॑प़, सा, रेमा॥ नि़सारेम॑पनि. निनि, रेम॑पनि, धपऽ-गरेसानि, सारेम॑पनि, रेम॑पनि, म॑पनि, पनि, रेम॑पनि, सां। निसांगरें, पनिसांगरें, पंगरें, रेंम॑पंगंऽरेंसां पंऽगरेंसां। रेंसांधऽ प, रेम॑पसांधऽप, रेम॑पनि, सांरेंधऽपऽ, रेम॑पधम॑प, रेम॑पधम॑पऽगऽरे, पधम॑पऽगरे, पऽगऽरे, रेम॑पऽगऽरे, पऽगरेसा। रेसाध़ऽप़ऽ, प़ध़म़॑प़, रे़म़॑प़नि़ ध़ प़, म़॑प़सा, रेसा, म॑पगऽ, रेसा॥

तानपद्धतिः—नि़सारेसा, नि़सारेगरेसा, नि़सारेम॑पगरेमा नि़सारेम॑-पधम॑पगरेसा, नि़सारेम॑पनिनिधप, पधम॑प निनिधप, म॑प-निनिधपम॑प रेम॑पधम॑प, रेमपधम॑प-गरेसा। नि़सा, नि़सारेम॑पनिसां-प़नि़सा, पनिसां, पनिसांरेंसांरेंनिसां, निसांरेंमं पंगरेंसां, पनिसांरें निसांधप, म॑पनिसांधप पध म॑पनिसांधप नि़सारेम॑पनिसांरें, निसांधप, रेंरेंनिसांधप, पधम॑पसांसांधप, म॑पधधपप, रेम॑पध-पधम॑प, म॑पसां-म॑पध-रेम॑प-रेम॑पधम॑पग, पधम॑पग, रेम॑पधम॑पग, रेम॑पधग, रेम॑पग, म॑पग, पग, रेम॑पधम॑पग, रेसा। सारेनि़सा, ध़प़, म़॑प़सा, रेसा, गरे, म॑पग, रेसा॥

१ मालारानी—ख्याल—तिलवाड़ा

बालम हो रसिया, मोरे गोकुल के सरताज॥ धृ०॥
दरसन तिन अखियां तरसे नित हरषाओ रससाज।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३		रेग		×			
(प)	गरे	सा	ऽरेमं	प	–	रेमं	रेमंपध
बा	लम	हो	ऽरसि	या	ऽ	मोऽ	रेऽऽऽ

२				०			
–	रेमंपध	निधध–	मंध	प	पग	रे	ऽसा
ऽ	गोऽऽऽ	कुऽलऽ	केऽ	ऽ	सर	ता	ऽज

३		नि		×			
पप	सांसां	सांसां	सांरें	सां	–	निसां	ध
दर	सन	बिन	अंखि	यां	ऽ	तर	से

२				०			
प	मंप	धसां	ध	मंप	पग	रे	ऽसा
ऽ	नित	हर	खा	ओऽ	रस	रा	ऽज

मालारानी–झपताल

सजन तुम गाओ हरि। अनमोल नरजन्म विफल न गमाओ रि। साधो न अब मान, तनका दुरभिमान, रट नित ही शुभ नाम। ०ानवारि गिरिधारी॥

×		२			०		३		
					ध	प	ग	रे	सा
					स	ज	न	तु	म
रे	मं	मं	प	प	मं	प	ध	सां	ध
गा	ऽ	ओ	ह	रि	अ	न	मो	ऽ	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं	प	ध	मं	प	रे	मं	प	ध	प
न	र	ज	न	म	वि	फ	ल	न	ग
मं	प	ग	रे	सा	प	–	प सां	–	सां
मा	ऽ	वो	ऽ	रि	सा	ऽ	धो	ऽ	न
सां	सां	सां	रें	सां	ध	नि	सां	रें	सां
अ	ब	मा	ऽ	न	त	न	का	ऽ	दु
नि	सां	ध	मं	प	मं	प	नि	सां	ध
र	भि	मा	ऽ	न	र	ट	नि	त	हि
मं	प	ध	मं	प	रे	मं	प	ध	प
शु	भ	ना	ऽ	म	ब	न	धा	ऽ	रि
मं	प	ग	रे	सा					
गि	रि	धा	ऽ	रि					

३ राग मालरानी–त्रिताल

मधु बंसरी अधर धरे हरि ।
स्वर माधुरी अति ही सुखकारी ॥धृ०॥
भईं बावरी सब ब्रिज की नारी ।
फिरत बनबन सखी राधा प्यारी ॥

३				×				२				०			
															ग
															म
रे	सा	–	सा	ग रे	–	–	–	रे	मं	प	ध	प	मं	प	मं
धु	बं	ऽ	स	री	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ध	र	ध	रे	ह	रि	स्व

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	सां	ध	प	र्म	ध	र्म	प	रे	र्म	पध	र्मप	ग	रे	सा	प
र	मा	ऽ	धु	री	ऽ	अ	ति	ही	ऽ	सुऽ	खऽ	काऽ		रि	भ
प	सां	–	सां	सां	–	सां	सां	रें	र्मं	पं	गं	रें	रें	सां	रें
ई	बा	ऽ	व	री	ऽ	स	ब	त्रि	ज	की	ऽ	ना	ऽ	रि	फि
र्मं	पं	गं	रें	सां	ध	प	प	रेर्म	पध	र्मप	धप	ग	रे	सा	
र	त	ब	न	ब	न	स	खि	राऽ	ऽऽ	धाऽ	ऽऽ	प्या	ऽ	रि	

४ मालारानी-चौताल (लक्षण गीत)

मालारानी मधुर मान। प्रथम रजनि नित प्रमाण।
कल्याणी मेल मधुर। तीवर सुर संपूरन॥
पंचम को वादि करत। रिखब मधुर समवादत।
आरोहन अगध सोहत। मनि बरजत अवरोहण॥

×		०		२		०		३		४	
रे	र्म	प	ध	र्म	प	प (ध)	ग (प)	गरे	रेसा	–	सा
मा	ऽ	ला	रा	ऽ	नि	म	धु	र	मा	ऽ	न
रे	र्म	र्म	प	प	प	रे	र्म	प	ध	र्म	प
प्र	थ	म	र	ज	नि	नि	त	प्र	मा	ऽ	ण
र्म	प	नि	सां	ध	प	रे	र्म	प	ध	र्म	प
क	ऽ	ल्या	ऽ	णी	ऽ	मे	ऽ	ल	म	धु	र
नि	सां	ध	प	र्म	प	रे	र्म	प	ग	रे	सा
ती	ऽ	व	र	सु	र	सं	ऽ	पू	ऽ	र	न
प	–	सां	सां	सां	–	सां	–	सां	रें	सां	सां
पं	ऽ	च	म	को	ऽ	वा	ऽ	दि	क	र	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	नि	सां	रें	नि	सां	नि	सां	ध	-	मं	प
रि	ख	ब	म	धु	र	स	म	वा	ऽ	द	त
नि	सां	रें	मं	पं	गं	पं	गं	रें	सां	सां	सां
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न	अ	ग	ध	सो	ह	त
प	नि	सां	रें	ध	प	मं	प	ग	-	रे	सा
म	नि	ब	र	ज	त	अ	व	रो	ऽ	ह	ण

लक्ष्मीकल्याण

(संस्कृत) लक्ष्मीः कल्याणमेलाच्च जायते मधुरा द्विशा ।
वामनेन रचितार्यांशा सायंगेया च या शुभा ।।

(हिन्दी) दोही मध्यम धरत हैं तीवर रिगधनि मान ।
रिप वादी समवादि में लखि लक्ष्मीकल्याण ।।

यह कल्याण थाट का एक वक्र संपूर्ण राग है। इस राग में दो मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। रेगमरे, गमरे, मंमगमरे इस प्रकार से मध्यम विशिष्ट रूप से लेते हैं। तीव्र मध्यम आरोह में सरल रूप से रेमंप इस प्रकार गांधार वर्जित करके तथा अवरोह में पमंमगमरे इस प्रकार शुद्ध मध्यम के साथ लिया जाता है । निषाद अवरोह में दुर्बल है। ऋषभ तथा निषाद अत्यन्त मधुर विश्रांति स्थान हैं । धनि सानि, रेगमरेऽ यह स्वरमाला इस राग में वार-वार आती है। शुद्ध-सारंग तथा कामोद इन दो रागों की छाया इस राग में भासित होती है, किन्तु गांधार का अस्तित्व तथा कोमल निषाद का अभाव शुद्ध-सारंग से तथा रेंप, गमपगमरे इस प्रकार की स्वरमाला न होने से कामोद से यह राग अलग रहता है । ऋषभ वादी, संवादी पंचम।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समय शाम का। मुख्यांग रेगमरे, मंप, निऽऽधप, मंम, गमरे, सा, ध़प़, ऩिऩिध़-सानि़-रेसा, रेगमरे।

आरोहावरोह—सा, रेगमरे, मंप, ध, निसां। सांऽधप, मं, म, गमरे, सा, ध़प़, नि़,नि़ध़-सानि़-रेसा, रेगमरेऽ॥

स्वरविस्तारः—सा, साऽऽरेसा, नि़रेसा, रे, रे, रेसा रे, रेगमरे, सा। नि़रेसाध़प़, नि़, नि़ध़सानि़रेसा, रेगमरे। सा, रेगमरे, नि़सा, रेसा, रेगमरे, गमरे, रेगमरे, सा, रेसा, ध़प़ नि़ऽध़प़, नि़ध़, सानि़-रेसाध़प़, नि़ऽ ध़प़नि़, नि़ध़सानि़रेसा; रेगमरे॥ सा, रेगमरे, मं, मंप, गमरे, रेमंपमंमगमरे, मंपमंप, मंमगमरे, रेगमरे, मंपगमरे, पमंप, मंपगमरे, रेमंपधमंपगमरे रेगमरे, मंप, धप, मंप, गमरे, पमंमग मरे, गमरे, सा, ध़प़, नि़, नि़ध़सानि़ रेसा, रेगमरे। सा, रेमंपधनि निनि धपनि, निधपमंमगमरे, मंपनि, निधप, धनि, निसांऽऽऽ॥ रेंसां रेंगंमंरें, मंपं, गंमंरेंसां, रेंसांधप, मंपधनिऽधप, मंमंप, धनिधप, सांधप, मंपरेमंपधमंप, मंमगमरे, रेमंपधमंपमंमगमरे, मंपमंमगमरे, पमंमग,

मरे, रे रें, सांऽधप, मंम, ग, मरे, मंपनिऽधप, मं, मग, गमरे, सा, रेसा, ऽध़प़, नि़, नि़ध़सानि़, रेसा, रेगमरे॥

१. लक्ष्मीकल्याण–त्रिताल

सुन्दर मुरतिया श्यामसुन्दर की।
छबि मन मोहत मनमोहन की॥धृ०॥
निरखत द्युति मुखचन्द्र नैनकी॥
सुधि बिसराई सखि तन–मन की॥

०				३				×				२			
(सा) रेग	म	रे	सा	ध़	ध़	प़	प़	(प़) नि़	ऽ	नि़	ध़	सा	नि़	रे	सा
सुंऽ	ऽ	द	र	मु	र	ति	या	श्या	ऽ	म	सुं	द	र	की	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

								ध	ध						
रे	ग	म	रे	मं	–	प	प	नि	नि	ध	प	मं	म	गम	–
छ	वि	म	न	मो	ऽ	ह	त	म	न	मो	ऽ	ह	न	कीऽ	ऽ
प	प	सां	सां	सां	नि	रें	सां	नि	–	नि	ध	सां	नि	रें	सां
नि	र	ख	त	द्यु	ति	मु	ख	चं	ऽ	द्र	नै	ऽ	न	की	ऽ
रें	गं	मं	रें	सां	–	ध	प	ध	प	मं	प	ग	म	रे	–
सु	ध	बि	स	रा	ऽ	ई	ऽ	स	खि	त	न	म	नऽ	की	ऽ

मलुहा

(संस्कृत) रिसौ पमौ पनी सश्च गमौ पगौ मरी निसौ ।
मलुहा रात्रिगा यांशा प्रारोहे रिधदुर्बला ॥
(अभिनवरागमञ्जर्याम्)

(हिन्दी) केदारहि के मेल में श्यामकमोद संजोग ।
चढ़त रिखब धैवत नहीं कहि मलुहा गुनि लोग ॥
(रागचन्द्रिकासार)

'मल्लरुह', 'मालव' अथवा 'मलुहा केदार' बिलावल थाट का एक मिश्र तथा अत्यंत मधुर स्वरूप है। केदार में कामोद और श्याम-कल्याण का अंग दिखाने से मलुहाकेदार की रचना होती है। साम, मप, मगप, मंपधप, मंपधनिधप, पधमंपसां सांऽधप, पनिसांरें सांनिधप, इन स्वरसंगति से केदार; मंपधमंप-गमपगमरे, इन स्वर-संगति से कामोद तथा मंऽरे (रे) निऽसा इससे श्याम-कल्याण की छाया दिखाई देती है। इसी को साऽधपम, मपनिऽसा अथवा मपसा इस प्रकार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मन्द्र सप्तक के स्वर जोड़ देने से मलुहाकेदार की रचना पूर्ण होती है। तीव्र मध्यम पंचम के साथ पधर्मप, धर्मप इस प्रकार से क्वचित लिया जाता है। कोमल निषाद भी क्वचित् धन्नि़प इस प्रकार से वक्र रूप में ही लिया जाता है। कोई गुणीजन तीव्र मध्यम तथा कोमल निषाद का स्पष्ट रूप से किया हुआ प्रयोग मान्य नहीं करते। आरोह में ऋषभ तथा धैवत वर्ज्य हैं। अवरोह में निषाद दुर्बल है। गांधार गमरेसा इस प्रकार अवरोह में वक्र है। वादी पंचम, संवादी षड्ज। समय

रे

रात का दूसरा प्रहर। मुख्यांग मरेनि़, सा; धप़म़ मप़सा, रेसा,

रे

गमपं-गमरे-ऽनि़सा।

मालवकेदार अत्यन्त धीर-गंभीर प्रकार है। अतः इसमें तानबाजी बहुत ही कम की जाती है। आलाप के स्वर अत्यन्त गम्भीरता से ही लेने चाहिये।

आरोहावरोहः—सा, मग, प, धर्मप, सां। सांनिधप, र्मपधप,

गमपगमरे, मरे, नि़साऽधप़म़, मप़नि़ऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़सा; प़नि़, प़नि़सा, रेसा, मरे,

रें रे

मरेनि़ऽसा। मरेऽ, नि़, गमरेऽ, नि़, गमपगमरे, पगमरे, गमपगमरे,

रे

नि़सा। धप़म़, मप़, मप़नि़, मप़सा, प़नि़सा, साम़, म़, मप़नि़, प़नि़, साधप़म़, मप़नि़, प़नि़, मप़सा, प़ध़, मप़सा, रेसा, गमरे, गमप, गमरे,

ग ग ग रे

नि़सा। साम, म, म, मग, मगप, साऽमगप, सामगप, सांग,

रे

ग, गमरेऽगमप, मरे, नि़साधप़म़, मप़सा, गमरे, गमप, मप, मपधप, पधर्मप, पधमपम, पधम, धप, मप, गमरे, गमप, गमरे, पऽगमरे, पगमरे, गमपगमरेऽनि़सा, साधप़म़, मप़सा॥ सां. मगप, धमपसां, रेंसां, मरें, निसा। सांगं, गं, गंमंरें, गंमंपं, गंमंरें, पंगंमंरें, निसां, पनिसांरें, सांनिधप, म, निधपम, साम, मप, मपधपम, पधपम, र्मपम,

रे

प, गमरे, गमपगमरे, मरे, मरे, मरेऽनि़ऽसा, धप़म़, मप़सा, रेसा,

रे

ममप, गमरेऽनि़सा॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ मालव-केदार, झपताल

आये-आये घन घोर, गर गरजि चहुँ ओर।
सखि विविध वर बरन, जलधार करे जोर ॥धृ०॥
चम चमके सखि बिजरी, अरु रैन अँधेरी।
डर पावे मोरा जियरा, करे कूक बन मोर॥

×		२			०		३		
म	रे	(रे)नि़	-	सा	ध़	प	म	-	प
आ	ये	आ	ऽ	ये	घ	न	घो	ऽ	र
ध़	प	म	प	प	नि़	नि़	सा	-	सा़
ग	र	ग	र	जि	च	हुँ	ओ	ऽ	र
सा	सा	सा-	म	ग	प	प	ध	म॑	प
स	खि	वि	वि	ध	व	र	ब	र	न
नि	सां	ध	म॑	प	ग	म	(रे)नि़	-	सा
ज	ल	धा	ऽ	र	क	रे	जो	ऽ	र
म	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां
च	म	च	म	के	स	खि	बि	जु	री
ध	ध	सां	रें	सां	सां	सां	ध	नि	प
अ	रु	रै	ऽ	न	अँ	ऽ	धे	ऽ	री
सां	सां	गं	मं	रें	मं	रें	नि	सां	सां
ड	र	पा	ऽ	वे	मो	रा	जि	य	रा
नि	सां	(नि)ध	-	प	ग	म	रे	नि़	सा
क	रे	कू	ऽ	क	ब	न	मो	ऽ	र

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२ मालव–केदार, त्रिताल

जावो-जावो घर श्याम कन्हैया । अब हमसे न करो मीठी बतियाँ ।।धृ०॥
बाट घाट में रोकत टोकत । लूटत दधि मोरा छैल छबीला ॥

०	३	×	२
रे सा – ध़	प (ध)म – म	प – प प	नि़ – सा –
जा वो ऽ जा	वो घ ऽ र	श्या ऽ म क	न्है ऽ या ऽ
नि़ सा ग म	रे – ग म	प – ग म	रे रे नि़ सा
अ ब ह म	से ऽ न क	रो ऽ मी ठी	ब ति याँ ऽ
प – सां सां	– सां सां –	नि ध सां रें	सां नि ध प
बा ऽ ट घा	ऽ ट में ऽ	रो ऽ क त	टो क त ऽ
मं मं पं गं	मं रें नि सां	(नि)सां – ध प	ग म रे सा
लू ऽ ट त	द धि मो रा	छै ऽ ल छ	बी ऽ ला ऽ

---

३ मालव–केदार, त्रिताल

जमुना के तीर जावो सखी री । फागन की जहाँ रास रचावत,
खेलत हरि अरु ललित–किशोरी ॥धृ०॥
जाके कहो सखी श्याम बिहारी, दरसन बिन तोरी राधा बावरी ॥

०	३	×	२
ग म प ग	म रे सा रे	सा (ध़)प़ प प	नि़ सा ग –
ज मु ना ऽ	के ऽ ती र	जा ऽ वो ऽ	खी ऽ री ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग म रे रे	नि़ - सा सा	सा रे़ नि़ सा	ध प म म
फा ऽ ग न	की ऽ ज हाँ	रा ऽ स र	चा ऽ व त
म प नि़ नि़	सा रे सा सा	ग म प ग	म रे नि़ सा
खे ऽ ल त	ह रि अ रु	ल लि त कि	शो ऽ री ऽ
म प सां सां	सां - सां सां	गं मं पं गं	मं रें नि सां
जा ऽ के क	हो ऽ स खि	श्या ऽ म बि	हा ऽ री ऽ
सां रें नि सां	ध प म प	ग म प ग	म रे नि़ सा
द र स न	बि न तो री	रा ऽ धा बा	ऽ व री ऽ

---

४ मालव–केदार, त्रिताल

खेलूँ न मैं अब तोसे होरी। चुनरि हमरी आज कैसी बोरी ॥धृ०॥
करो ना मोसे रसिया बतियाँ। रहुंगे न मैं अब तोरी नगरी ॥

३	×	२	०
			ग
			खे
म रे - नि़	सा - ध़ प	ध म प सा	सा - सा सा
ऽ लूँ ऽ न	मैं ऽ अ ब	तो ऽ से ऽ	हो ऽ री चु
सा सा म मग	प - म प	(नि) सां - ध प	ग म रे म
न रि ह मऽ	री ऽ आ ज	कै ऽ सी ऽ	बो ऽ री क
प सां - सां	सां - नि सां	(रें) - नि सां	(रें) - - गं
रो ना ऽ मो	से ऽ र सि	या ऽ ब ति	याँ ऽ ऽ र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं	रें	–	नि	सां	–	ध	प	नि सां	–	ध	प	ग	म	रे
हुँ	गी	ऽ	न	मैं	ऽ	अ	व	तो	ऽ	री	ऽ	न	ग	री

५ मलुहा केदार–एकताल (लक्षण–गीत)

मालव रसिक सुहावत, निखद मध्य द्वय सोहत।
मध–रजनी समय शांत ॥ धृ० ॥
वादी कर मध्यम सुर, आरोहण करत अ-धर।
रूप सखी मन में भावत ॥

२		०		३		४		×		०	
न	रे	रे नि़	सा	ध़	प	नि़	प	नि़	–	सा	सा
मा	ऽ	ल	व	र	सि	क	सु	हा	ऽ	व	त
सा	सा	सा	म	–	म	प	प	प	ध	मं	प
नि	ख	द	म	ऽ	ध्य	द्व	य	सो	ऽ	ह	त
म	प	नि	सां	ध	प	ग	म	रे	रे	नि़	सा
म	ध	र	ज	नी	ऽ	स	म	य	शां	ऽ	त
म	प	सां	ऽ	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
वा	ऽ	दी	ऽ	क	र	मं	ऽ	च	म	सु	र
नि	सां	गं	मं	रें	रें	मं	मं	रें	नि	नि	सां
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	ण	क	र	त	अ	ध	र
म	प	सां	सां	सां ध	प	ग	म	रे	रे	नि़	सा
रू	ऽ	प	स	खी	ऽ	म	न	में	भा	व	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवगिरी

(संस्कृत) निसौ धनी धसौ रिगौ मगौ पमौ गमौ रिसौ ।
देवगिरी भवेत् प्रातः षड्जांशा मोदर्वधिनी ॥

'अभिनवरागमंजर्याम्'

(हिन्दी) जबहिं बिलावल मेल में उतरत धग नहिं लाग ।
सप वादी संवादितें कहत देवगिरी राग ॥

'रागचन्द्रिकासार'

देवगिरी बिलावल ठाठ का प्रकार है । इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं । बिलावल में कल्याण, शुद्धकल्याण का अङ्ग दिखाने से इसकी रचना होती है । किन्तु तीव्र मध्यम बिलकुल न होने से यह कल्याण से पृथक् रहता है । कोमल निषाद का प्रयोग प्रायः इसमें वर्जित है । नि़रेसा, नि़रेगमग, (प)मग, ध़नि़रेसा इन स्वरों से कल्याण, सानि़ध़प़

प़ऽगऽऽ तथा परेऽसा इन स्वर संगतियों से शुद्धकल्याण की छाया स्पष्ट दिखाई देती है । गांधार एक महत्व का विश्रांति स्थान है । ध़नि़ध़सा,

नि़ध़प़सा, साऽरेगऽऽ इन स्वरों की इस राग में बारबार 'आवृत्ति' होती है । वादी षड्ज संवादी पंचम, समय दिन का प्रथम प्रहर ।

मुख्यांग सा, रेग, (प) मग, परेऽसा, नि़ध़प़, साऽरेगऽ ।

आरोहावरोह :—सा, रे, ग, मग, (प) मग, गप, धऽ निसां । सांनिध, प, निप, मग, परेऽनि़ध़प़, सा रेगऽ ॥

स्वरविस्तार:—सा, नि़सा, ध़नि़, नि़ध़नि़, ध़नि़, ध़सा । रेसा, सारेसा, गरेसा, रेगरेसा, ध़नि़ध़सा, नि़ध़, सानि़ध़ रेसानि़ध़, नि़ध़प़,

ध़प़, सा, रेसा, ध़नि़ध़सा । ध़सारेग, ध़नि़ध़सा, रेग, नि़ध़, सारेग, नि़ध़प़, पग, मग, नि़रेगपमग, गमरेग, (प) मग, ध़नि़रेसा, रेग, (प)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मग, परेऽसाऽनिधऽप, साऽरेग। साऽरेग, निरेनि, रेग, (प) मग, निधप, पग, मग (प) मग, गपधनि, (प)मग, (प)मग, प, रें, साऽनि-
नि
धऽप, साऽरेग ॥ गपधऽनिसां, निधनिसां, रेंसां, धनिधसां, रेंगंरेंसां, सांरेंगंरेंसां, निरेंगंमंगंरें, पंरेंऽसां, रेंसां, निधऽप, गपधनिधप, धनिप, निप, मऽ (प)मग, परे, रेगपरे, गपरे, परेऽसा, निधप, साऽरेगऽऽ ॥

१ देवगिरी–ख्याल, झूमरा

भोर की चिरिया, करत चौंचुवानि भइलवा आज सगुन ॥ धृ० ॥
फरकत सखी भुजवा आवेंगे कब प्रियचरण ? ॥

३				×				२			
रे	नि			रे							
ग	रेसा	धप	-सारे	ग		-	गम	ग	-	मग	(प)
भो	ऽर	कीऽ	ऽचिरि	या		ऽ	कर	त	ऽ	चौऽ	चूं

०			३				×		
मग	रे	-	निरे	सा	-	(सा)	धध	प	-
बाऽ	ऽ	ऽ	नीऽ	ऽ	ऽ	भ	इल	वा	ऽ

२		रे		०			३ रे	
पसा	सा	रेग	-	(प)	रे	सा	-ग	रेसा
आऽ	जू	सऽ	ऽ	गु	ऽ	न	ऽभो	ऽर की चिरिया।

३				×			२			
पप	निनि	निध	-निधनि	सां	-	सांरें	गंरें	(सां)	धनि	(प)
फर	कत	सखि	ऽभुजऽ	वा	ऽ	कब	आऽ	वें	गेऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०			३	
मग	परे	-सा	-ग	रेसा
प्रिय	चर	ऽण	ऽभो	ऽर की चिरिया ।

२ देवगिरी-त्रिताल

लाड़ली प्यारी राधिका, चन्द्रचकोरी जैसी सारिका ॥ ध्रु० ॥
लटकत चाल चले लपटानी, उर सोहत बन बकुल मालिका ॥

३	×	२	०
			निरे ग रे
			लाऽ ऽ ड़
साध़ - प़ -	(प़)ग - - प	ग म ग रे	सा प प प
लीऽ ऽ प्या ऽ	री ऽ ऽ रा	ऽ धि का ऽ	ऽ च न्द्र च
ध नि (प)(म) -	रे ग प प	रे रे सा -	प प नि धनि
को ऽ री ऽ	जै ऽ सि सा	ऽ रि का ऽ	ल ट क तऽ
सां सां सां सां	सां रें गं रें	सां ध नि प,	प प धनि सां
चा ऽ ल च	ले ऽ ल प	टा ऽ नी ऽ,	उ र सोऽ ऽ
ध नि प प	रे ग प प	रे रे सा -	-
ह त ब न	ब कु ल मा	ऽ लि का ऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग चक्रधर

आरोहेऽवरोहेऽस्मिन् पञ्चमो न हि युज्यते ।
मसौ वादी च संवादी नाम्ना चक्रधरः स्मृतः ॥

'रागकल्पपुष्पम्'

आरोहण अवरोह में पञ्चम जो न दिखाय ।
मस वादी संवादितें, राग चक्रधर गाय ॥

'रागबोधिनी'

यह दाक्षिणात्य प्रकार है । पञ्चम वर्ज्य, अन्य स्वर शुद्ध । जाति षाडव, थाट बिलावल । इस राग में साऽरेगम; सारेगम, सारे-रेग-गम, मगरेसाऽ रेगमऽऽ इन स्वरों की बारबार आवृत्ति होने से इसके पूर्वाङ्ग में गौड़ की छाया दिखाई देती है । किन्तु उत्तराङ्ग में मधनिसां-निधऽम यह भिन्नषड्ज राग की स्वरमाला आते ही गौड़ से यह राग भिन्नता पाता है । धैवत पर निषाद का बहुत ही अल्प प्रमाण में कण लगाते हैं । वादी मध्यम, सम्वादी षड्ज । मुख्याङ्ग—सांऽनिध, मगरेसा, रेगमऽऽ । समय मध्यरात्रि का ।

नि
आरोहावरोहः—सा, रेगम, धऽनिसां । सांनिधऽम ग, रेसा, रेगमऽऽ ।

स्वरविस्तार—सा, रेसा, ध़नि़सा, रेसा, रेगम, गऽरेसा, म़ध़नि़सा, रेसा, रेगमऽऽ । साऽरेगम, सारे-रेग-गम, सारेगम, रेसा, गरेसा, रेगम, मगरेसाऽ, रेगम, सारे-रेग-गम, धम, मधऽम, मगरेसा, रेगमऽऽ । सारेगम, रेगम, मधऽम, गमधऽम, रेगम, धऽम, गधऽम, रेगमधऽम, गमध, मध, रेगमऽध, गमध, निध, मध, निधम, गमधऽ, निध, गमनिध, मनिधम, गमनिधऽम, निम, धम, रेगम, गऽरेसा, मगरेसाऽ ध़नि़सा, रेगमऽऽ । रेसा, नि़ऽध़म़, म़ध़नि़साऽ, नि़ध़ऽम़ म़नि़ध़म़, म़ध़नि़सा, रेसा, मगरेसा, रेगमऽऽ । रेसा, गरेसा, मगरेसा, गमधऽमगरेसा निधऽम मगरेसा, गमधनिसांनिधऽम, मेग-

नि
रेसा, रेगमऽऽ ॥ साऽरेगमऽऽ, धऽनिसां मधनिसां, गमधनिसां-सां,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सारे-रेग-गम, मधनिसां, रेंसां, गंरेंसां, मंगंरेंसां रेंगंमं, गंऽरेंसां, रेंसां

मधनिसांऽनिधम, मनिम, निम, सांऽऽमं, सामऽ, रेगम, मगरेसा,
मगरेसा, रेसा, रेगमऽऽ।

१ राग चक्रधर, त्रिताल

बैरिन सी रतिया पिया बिन। मग जोवत बिन रतिया नैन मोरे
सखि री जुगसी लागत पल छिन॥
रात न निंदिया चैन न दिन मोहे। सजनी मन की न उलझन सुलझत॥

०				३				×				२			
म ध	–	म	ग	रे	सा	रे	ग	म	–	–	म	ध	नि	सां	नि
बै	ऽ	रि	न	सी	ऽ	र	ति	या	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	बि	न
ध	नि	सां	नि	ध	ध	म	ग	ध	ध	म	ग	म	ग	रे	सा
म	ग	जो	ऽ	व	त	दि	न	र	ति	या	नै	ऽ	न	मो	रे
ध़	नि़	सा	–	रे	ग	म	–	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	म
स	खि	री	ऽ	जु	ग	सी	ऽ	ला	ऽ	ग	त	प	ल	छि	न
म	–	ध	नि	सां	सां	सां	–	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	ध
रा	ऽ	त	न	निं	दि	या	ऽ	चै	ऽ	न	न	दि	न	मो	हे
रें	गं	मं	–	गं	रें	सां	सां	सां	नि	नि	ध	म	ग	रे	सा
स	ज	नी	ऽ	म	न	की	न	उ	ल	झ	न	सु	ल	झ	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हंसध्वनि

(संस्कृत) हंसध्वन्याव्हयो रागः सांशः शुद्धश्रयो बुधैः
मधहीनश्चौडुवो गेयो रात्र्यां प्रथम-यामके ॥

(हिन्दी) जवहि बिलावल मेल में, मध सुर का नहिं लाग ।
सप संवादी वादि तें, हंसध्वनि शुभ राग ॥

हंसध्वनि कर्नाटकी पद्धति का राग है। यह बिलावल थाट से उत्पन्न हुआ है। मध्यम धैवत वर्ज्य अन्य स्वर शुद्ध हैं। शंकरा राग से यह मिलता-जुलता है। किन्तु शंकरा गंभीर तथा मींड़प्रधान राग है। हंसध्वनि की प्रकृति बहुत ही चञ्चल तथा सरल है। शंकरा में ऋषभ का प्राधान्य नहीं है। हंसध्वनि में ऋषभ अत्यन्त महत्व का तथा न्यास-स्वर है। हंसध्वनि का चलन उत्तराङ्ग प्रधान है। इसलिये वादी तार षड्ज, सम्वादी पञ्चम, समय रात का पहला प्रहर है। मुख्याङ्ग:—गपनिसां, गंरेंसांनिप, गरे, नि़रेसा ।

आरोहावरोह:—सा, ग, प, निसां, गंरेंसांनिप, गरे, नि़रेसा ।

स्वरविस्तार:—सा, नि़प़, नि़सा, गरेसा, गपगरेसा, नि़, प़नि़सा, गरेसा । रेसा, गरेसा, पगरेसा, गपनिपग, पग, रे, गपगरे, पगरेसा, गरेसानि़, प़नि़सा, गरेसा । सा, गप, गप, नि़रेसा, गरेसा, गप, गपनि, निपग, गपनिपग, सांनिपऽग, गपनिसांनिपग, पनिपग, निपग, गपनिग, पनिग, पग, गपगरे, पगरे, गपनिपगरे, सांप, गरे, निपगरे, गपगरे, पगरेसा, नि़रेसा गरेसा ॥ गपनिसां, पनिसां, गंरेंसां, गपनिसां, गंरेंसां, रेंगंरें, पंगंरेंसां, निरेंसां, निरेंगंरेंसां, निप, गपनि-सांनिप, गंरेंसांनिप, सां, निप, गपनिप, गनिप, पसांनिप, गपनिपगरे, गपगरे, निपगरे, गपगरे, गपरे, परे, गपगरे, नि़रेसा, नि़प़, नि़सा, गरेसा, गपगरेऽऽ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ हंसध्वनि, झपताल

आई-आई सखि साँझ। ऋतु शरद की आज। सखि पुरन पुनम शुभ अति सोहत शशिराज ।। धृ० ।।

चन्द्रकिरन की झरन। करे मात मन, मदन। सखि आवेंगे कब्र मोहन। ब्रिज-जन के सरताज ।।

×		२			०		३		
सां	नि	प	ग	प	ग	प	ग	रे	सा
आ	ई	आ	ऽ	ई	स	खि	साँ	ऽ	झ
प़	नि़	सा	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा
ऋ	तु	श	र	द	की	ऽ	आ	ऽ	ज
सा	सा	ग	प	ग	ग	प	नि	ग	प
म	खि	पु	र	न	पु	न	म	शु	भ
ग	प	नि	सां	रें	गं	रें	सां	नि	सां
अ	ति	सो	ह	त	श	शि	रा	ऽ	ज
ग	प	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां
च	न्द्र	कि	र	न	की	ऽ	झ	र	न
प	नि	सां	गं	रें	गं	रें	गं	रें	सां
क	रे	मा	ऽ	त	म	न	म	द	न
नि	सां	गं	पं	गं	गं	पं	गं	रें	सां
स	खि	आ	वें	गे	क	ब	मो	ह	न
प	नि	सां	गं	रें	गं	रें	सां	नि	सां
ब्रि	ज	ज	न	के	स	र	ता	ऽ	ज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२ हंसध्वनि–त्रिताल

करि हो सखी सुमिरन शुभ हरिको। धरियो सुभाव मंगल मनको ॥धृ०॥
हरिको सदा मुखसूं उच्चरियो। तरियो–तरियो भवसागर को ॥

३	×	२	०
			ग
			क
प निसां रेंगं रें	सां – सां नि	प प सां नि	प ग रे ग
री होऽ ऽऽ स	खी ऽ सु मि	र न शु भ	ह रि को ध
प ग – रे	सा – – सा	ग प नि सां	गं रें सां ग
रि यो ऽ सु	भा ऽ ऽ व	मं ऽ ग ल	म न को ह
×	२	०	३
प सां – सां	सां – सां सां	नि रें गं रें	सां नि प पं
रि को ऽ स	दा ऽ सु ख	सूं ऽ उ ऽ	च्च रि यो त
गं रें सां रें	सां – नि प	ग प सां नि	प ग रें
रि यो त रि	यो ऽ भ व	सा ऽ ग र	को ऽ ऽ

३ हंसध्वनि–चौताल (लक्षण–गीत)

मधुर राग हंसध्वनि। बरजत मध्यम धैवत।
सब ही सुर शुद्ध सजनि ॥ धृ० ॥
अन्श प्रथम सुर सोहत। न्यास मधुर रिखब धरत।
गप निसां गरे गप गरेसासा। समय सोहे मध रजनी ॥

×	०	२	०	३	४
सां नि	प ग	प प	ग प	ग रे	सा सा
म धु	र रा	ऽ ग	हं स	ऽ ध्व	नि ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि़	सा	ग	रे	सा	सा	ग	प	सां	नि	ग	प
व	र	ज	त	म	ऽ	ध्य	म	धै	ऽ	व	त
ग	प	नि	सां	गं	रें	सां	नि	प	ग	रे	सा
स	ब	ही	ऽ	सु	र	शु	ऽ	द्ध	स	ज	नि
ग	प	सां	सां	सां	सां	नि	रें	गं	रें	सां	सां
अं	ऽ	श	प्र	थ	म	सु	र	सो	ऽ	ह	त
प	नि	सां	गं	रें	रें	गं	पं	गं	रें	सां	सां
न्या	ऽ	स	म	धु	र	रि	ख	ब	ध	र	त
ग	प	नि	सां	गं	रें	गं	पं	गं	रें	सां	सां
ग	प	नि	सा	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
गं	रें	सां	नि	प	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
स	म	य	सो	ह	त	म	ध	र	ज	नी	ऽ

जयराज

(संस्कृत) मधौ निसौ रिसौ पमौ धपौ रिसौ तथैव च ।
गांधारेणोऽज्झितः शुद्धो जयराजो मध्यमे स्थितः ।।

(हिन्दी) केदारहि के मेल में रागेसरि भटियार ।
शुद्ध सरल जयराज है बरजत सुर गंधार ।।

राग जयराज बिलावल मेलोत्पन्न एक रंजक किन्तु अत्यन्त वक्र राग है। केदार, दुर्गा, रागेश्री, भटियार, नंद, इन रागों की छाया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस राग में दिखाई देती है। किंवदन्ती है कि जगन्नाथपुरी के गायक स्व० पं० जयराज द्वारा यह राग प्रचलित हुआ। इस राग में गांधार वर्जित तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ऋषभ, पंचम दुर्बल तथा अवरोह में निषाद वर्जित और धैवत, मध्यम लुप्त हैं। सा, म,
प   म रे
मऽरेसा, रेम, इन स्वरों में केदार, दुर्गा, मधऽऽप निधपम, इन स्वरों में भटियार, मधनिसांऽरेंसां इन स्वरों में रागेश्री दिखाई देती है।

ध   म
अवरोह में रेंसांऽ पऽ, यह मींड़ इस राग की स्वतंत्र है। धपरेऽसा अथवा
म
धपम, परेऽसा इन स्वरों में नंद की छाया भासित होती है। यह राग मींड़ प्रधान होने से तानबाजी इस राग में बहुत ही कम होती है। वादी मध्यम, संवादी षड्ज, समय मध्यरात्रि का। राग का मुख्यांग
ध   म
मधनिसां, रेंसांऽप, म, ध परेऽसा।

रे रे   ध
आरोहावरोहः—साम, म, मप, मधऽऽप, मधनिसां। रेंसां, प,
म म
म, धपरे, सा।

रे प रे रे
स्वरविस्तारः—सा, साम, मऽरेसा, म, ऩिसाम, ध़ऩिसाम,
प   रे   म
रेम, मऽरेसा, म़ध़ऩिसा, म। साम, रेम, ऩिसाम, ध़ऩिसाम,
प   रे
मऽरेसा, म़ध़ऩिसा, रेमऽरेसा, प़, म़ध़ऩिसा, ध़ऩिसाम। ऩिसाम,
मरे   मरे
रेम, पम, सामऽरेमपम, धपम, रेम, मधऽऽप, धपम, साम

मधऽऽप, धपऽधम, रेम, पधम, पधपऽधम, मधम, रेम, धपऽमऽ
म   रे
धपरेऽसा, सां, प, म़ध़ऩिसा, म। सा, साम, मध, रेम, मध, रेमध,
सासासा
साध, ध-ध-धपम, मधऽप मध-निनि-निधप, धम, साम, पनिधप,
सा सा
धम मनिधऽप, धम, मनिधपम, निधप, निधपम, मधनिधप, निम,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मधनिम, रेम, धऽम, धप, म, (म)परेऽऽसा साप़, म़ध़नि़सा, म ॥ सा,
मधनिसां, धनिसां, रेंसां, मंऽऽ(रें)रेंसा; मधनिसांमंऽ(रें)रेंसा रेंसां,
(ध)रेंसांऽप, मधनिसां-(ध)प, धप, मधप, म, धप(प)रेऽसा । साऽप़, म़ध़नि़सा,
(रे)रेसा, मऽऽ ॥

१ जयराज—त्रिताल

बाजे सखी झनन झांझरिया, और रुम-झुम-झुम बाजे पायलिया ॥ध्रु०॥
हरि नाम की लागे सखी लगन—गरज गूँजत बन अरु अमरैया ॥

३	×	२	०
			म
			बा
ध धनि सांरें सां	(ध)प — — म	प म ध प	(म)रे रे सा सा
ऽ जेऽ ऽऽ स	खी ऽ ऽ झ	न न झां ऽ	ज रि या औ
सा सा म म	ध ध प प	ध नि सां रें	सां ध प म
ऽ र रु म	झु म झु म	बा ऽ जे पा	य लि या ह
ध धनि सां धनि	सां — ध नि	सां — सां रें	सां ध प म
रि नाऽ ऽ मऽ	की ऽ ला ऽ	गे ऽ स खि	ल ग न ग
रें सां (ध)प —	म म ध पँ	प म ध प	(म)रे — सा
र ज गूँ ऽ	ज त ब न	अ रु अ म	रैं ऽ या

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२ जयराज–एकताल (लक्षण गीत)

मधुर राग सखि बाजे। सुध सुर मों सोहत सुन्दर।
सुर गंधार नित बरजे ॥
मध्य करत अंश चतुर। षड्ज सोहत नित अनुचर।
अवरोहण सप संगत–मध्य रजनी मों साजे ॥

×		०		२		०		३		४	
ध	प	(म)रे	रे	सा	सा	म	ध	निसां	रेंसां	(ध)प	–
म	धु	र	रा	ऽ	ग	स	खि	बाऽ	ऽऽ	जे	ऽ
म	ध	नि	सां	(ध)प	–	ध	प	(म)रे	रे	सा	सा
सु	ध	सु	र	मों	ऽ	सो	ह	त	सुं	द	र
सा	सा	सा	म	–	म	ध	नि	सां	रें	(ध)प	–
सु	र	ग	धां	ऽ	र	नि	त	ब	र	जे	ऽ
म	–	म	म	ध	ध	म	ध	नि	सां	सां	सां
म	ऽ	ध्य	क	र	त	अं	ऽ	श	च	तु	र
म	ध	नि	सां	रें	सां	सां	रें	सां	सां	(ध)प	प
ष	ऽ	ड्ज	सो	ह	त	नि	त	अ	नु	च	र
मं	मं	रें	रें	सां	सां	ध	प	(म)रे	–	सा	सा
अ	व	रो	ऽ	ह	ण	स	प	सं	ऽ	ग	त
सा	सा	सा	म	म	म	ध	नि	सां	रें	(ध)प	–
म	ऽ	ध्य	र	ज	नी	मों	ऽ	सा	ऽ	जे	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चम्पक

(संस्कृत) चम्पको निशिगेयस्तु रोहणे गनिर्वाजितो ।
निषादः कोमलश्चात्र वक्रश्चाप्यवरोहणे ॥

(हिन्दी) जब खंमाजी मेल में चढ़त न रिखब निखाद ।
अवरोहण अतिवक्र है चंपक में मस वाद ॥

स्वरसम्राट पं० ओंकारनाथजी ठाकुर द्वारा यह मधुर राग प्रचार में लाया गया है। इसकी उत्पत्ति खंमाज मेल से होने से इसमें निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में गांधार निषाद वर्ज्य हैं। अवरोह का चलन बहुत ही वक्र सांरेंनि़, (नि़) सांध, (ध) नि़प, (प) धऽम, (म रे) पऽग-ऽऽसा इस प्रकार लिया जाता है। अर्थात् अवरोह में ऋषभ वर्ज्य होने से (रे रे) गऽऽसा संगति दिखाई देती है। खम्भावती से यह राग बहुत ही मिलता-जुलता है। किन्तु शुद्ध निषाद का अभाव, (ध) नि़ऽऽप तथा (म रे) पऽगऽऽसा इन स्वरों की संगति खंभावती में न होने से चंपक खम्भावती से पृथक् रहता है। खम्भावती की गमऽऽसा इस प्रकार की जीवभूत मींड़ चंपक में नहीं है। वादी मध्यम, संवादी षड्ज। समय रात का दूसरा प्रहर। मुख्यांग,

सा, रेम, प, (प) धऽऽम, (म रे) पऽऽगऽऽसा।

आरोहावरोह—सा, (ग) रेम, प, गमपधनि़, (सां सां) नि़धसां। (सां) रेंनि़, (नि़) सांध, (ध) नि़प, (प) धऽम, (म रे) पऽगऽऽसा, (रे रे) सारेगऽऽसा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे रे सा सा सा
स्वरविस्तारः—सा, रेगऽऽसा, रेनि़, नि़ध़, नि़ध़सा ।

सा सा सा सा नि सा सा
रेनि़, नि़ध़, नि़ध़सा, रेनि़, साध़ नि़ध़ऽम़, प़, नि़ध़, नि़ध़सा,

सारे रे रे रे रे रे रे
रेगऽऽ-सा ॥ सारेगऽऽसा, प़ध़सारेगऽऽसा, रेगऽऽसा, रेम,

सा नि़ ध़ प़ सा
सारेम, रेम, गऽसा, रेनि़, साध़, नि़प़, ध़म़, प़, नि़ध़सा,

रे रे प रे म ग
रेगऽऽसा । सा, रेम, गऽऽसा, रेम, सारेम, गरेम, रेम, पम,

ग म म म रे
रेपम, पम, पऽग, रेमपऽऽग, मपग, पऽग, पगऽसा, सारेप-

रे रे रे
गऽऽसा, रेसा, नि़ध़सा, सारेपगऽऽसा । सा, रेप, म, पऽऽ,

म म रे रे
रेमप, पऽगऽसा, रेमप, प़, प़ध़सारेगऽऽसा, रेमप, रेप, मप, म,

ग म
सारेम, मपधऽऽम, रेमपध, पध, मपधऽऽम, रेमपधऽम, पऽग,

प म म म
धम, पग, रेमपधऽमपऽऽग, रेमपऽग, मपग, पऽग, पऽगऽसा,

सा नि़ ध़ प़ सा
रेनि़, साध़ नि़प़, ध़म़, प़, ध़, नि़ध़सा, रेगऽऽसा ॥ सा, रेम-

सां सां सां सां सां
प, ध, निध, निध, मपध, निध, गमपधनि, निध, निधसां, मपध,

सां सां सां नि
निध, निधसां, मपधसां, निधसां, मपधसांऽरेंऽऽ, रेंनि, सांध,

सां सां
सांधऽम, प, निध, निधसां, मपधसां, पधसांरेंगंऽऽसां, रेंगंऽऽसां,

सां नि रें
सांरेंगंऽऽसां, रेंनि, सांध, निप, धमऽपऽ, धसां, रेंगंऽऽसां, रेंमं,

रें सां नि ध
पंगंऽऽसां, रेंमंपंऽगंऽऽसां, रेंसां, निधसां, रेंनि, सांध, निप,

प म रे
धम, पग, मपऽऽगसा, रे, सा, नि़ध़सा, रेगऽऽसा ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ चंपक, एकताल (ख्याल)

राखो पत मोरी श्याम बन्सी के बजैया ॥धृ०॥
तुम ही जीवन के दीपक, दुख के हरैया, तुम ही भव के तरैया ॥

३		४		×		०	
सारेग-	-सा	गरेसारेम-	पधपध	सां-	--	ऩिध	सां-
राऽऽऽ	ऽऽ	खोऽऽऽऽऽ	ऽपतऽ	मोऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ
२		०		३		४	
	सां		नि			ध	
--	रें-	ऩि-	सां-	ध	--	ऩि	प
ऽऽ	श्याऽ	ऽऽ	मऽ	ऽ	ऽऽ	बं	ऽ
×		०		२		०	
प		म			म		
ध-	म-	प-	ग-	म-	प-	म-	-सा
सीऽ	ऽऽ	केऽ	ऽऽ	ऽऽ	ब	जै	याऽ
३		४		×		०	ध
गम	-पध	ऩिध	ऩिध	सां-	--	-सांरेंगंसां	सां
तुम	ऽहीऽ	जीऽ	वन	के	ऽऽ	ऽदीऽऽ	पक
२	सां	०		३		४	
निसांरें	ऩि-	ध	प	धपध	सां-	--	सांरेंऩि
दुऽऽ	खऽ	के	ऽ	हरैऽ	याऽ	ऽऽ	तुम
×		०		२		०	
	नि		ध	प		म	
--	सांध	--	ऩिप	धम	--	पग	-सा
ऽऽ	हींऽ	ऽऽ	भव	केऽ	ऽऽ	तरै	ऽया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२ चम्पक, त्रिताल

थारि हो अखडियाँ रतनारी, प्रेम छकी रसबस अलसानी
मानो कमल की पँखडिया री ॥ धृ० ॥
चन्द्र, चकोर मीन सम चञ्चल । चित चोरत नित रसिक बिहारी ॥

०				३				×				२			
												रे			
ध	म	प	ग	सा	ग	सा	रे	म	-	म	प	ग	-	सा	-
था	ऽ	रि	हो	ऽ	अ	ख	डि	याँ	ऽ	र	त	ना	ऽ	री	ऽ
				सां								सां			
ग	म	प	ध	नि	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	ध	सां	-
प्रे	ऽ	म	छ	की	ऽ	र	स	ब	स	अ	ल	सा	ऽ	नी	ऽ
		सां		नि		प								रे	
सां	रें	नि	सां	ध	ध	म	-	प	ध	म	प	ग	-	सा	-
मा	ऽ	नो	क	म	ल	की	ऽ	पं	ऽ	ख	डि	या	ऽ	री	ऽ
				रें								सां			
ग	म	प	ध	सां	-	नि	ध	सां	सां	सां	रें	नि	ध	सां	सां
च	ऽ	न्द्र	च	को	ऽ	र	मी	ऽ	न	स	म	चं	ऽ	च	ल
								नि						रे	
रें	मं	पं	गं	गं	सां	रें	सां	सां	ध	म	प	ग	-	सा	-
चि	त	चो	ऽ	र	त	नि	त	र	सि	क	बि	हा	ऽ	री	ऽ

---

३ चंपक, एकताल

ना बोलो श्याम मोहन । गिरधारी आज हमीसंग
कपटि कुटिल डगरि चलत । करत रार आवत लाज न ॥धृ०॥
हूँ तो चली जमुना तीर । गगरि भरन दे अधीर
छांड हाथ, पाँव परत । नन्द कुँवर विनती मान ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३		४		×		०		२		०	
रेम	पध	सां नि	पध	सां	ध	प ध	म	प	ग	ग	सा
नाऽ	ऽऽ	बो	ऽऽ	लो	ऽ	श्या	ऽ	म	मो	ह	न
सा	रे	रे ग	-	सा	सा	रे	प	म	प	ग	सा
गि	रि	धा	ऽ	री	ऽ	आ	ज	ह	मी	सं	ग
सा	सा	रे	म	प	ध	प	प	ध	म	म	म
क	प	टि	कु	टि	ल	ड	ग	रि	च	ल	त
प	ध	सां	रें	गं	सां	ध	म	प	ग	ग	सा
क	र	त	रा	ऽ	र	आ	व	त	ला	ज	न
ग	म	प	ध	सां नि	ध	सां नि	ध	सां नि	ध	सां	सां
हूँ	ऽ	तो	ऽ	च	ली	ज	सु	ना	ती	ऽ	र
प	ध	सां	रें	गं	रें	सां	रें	नि	ध	सां	सां
ग	ग	रि	भ	र	न	दे	ऽ	अ	धी	ऽ	र
सां	रें	पं	गं	-	सां	सां	रें	नि	ध	सां	सां
छां	ऽ	ड	हा	ऽ	थ	पाँ	ऽ	व	प	र	त
रें	नि	सां	ध	नि	प	ध	म	प	ग	-	सा
नं	ऽ	द	कुँ	व	र	वि	न	ति	मा	ऽ	न

४ चंपक—झपताल (लक्षण गीत)

सखी बजाओ सुर आज । चंपक के रसराज । मस जुगुल समवाद ; कर मेल कांभोज ॥धृ०॥ मधरात को सोहत । रसिक मन नित मोहत । आरोह गनि रहित । अति वक्र सुर समझ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		२			०		३		
(म) प	म	प	ग	सा	रे	ग	(रे) ग	-	सा
स	खि	ब	जा	ओ	सु	र	आ	ऽ	ज
(म) रे	म	म	प	प	प	प	प	ध	ऽम
चं	ऽ	प	क	के	र	स	रा	ऽ	ज
ग	म	प	ध	नि॒	(सां) नि॒	ध	(सां) नि॒	ध	सां
म	स	जु	गु	ल	स	म	वा	ऽ	द
सां	रें	सांनि॒	सां	ध	(प) म	प	ग	ऽ	सा
क	र	मे	ऽ	ल	क्रां	ऽ	भों	ऽ	ज
ग	म	प	ध	नि॒	(सां) नि॒	ध	नि॒	ध	सां
म	ध	रा	ऽ	त	को	ऽ	सो	ह	त
नि॒	ध	(सां) नि॒	ध	सां	सां	रें	रें	गं	सां
र	सि	क	म	न	नि	त	मो	ह	त
रें	मं	पं	गं	सां	रें	सां	नि॒	ध	सां
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	ग	नि	र	हि	त
रें	नि॒	(नि॒) सां	ध	प	ध	म	(म) प	ग	सा
अ	ति	व	ऽ	क्र	सु	र	स	म	क्र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खोकर

(संस्कृत) खोकरः कीर्तितो रात्रावृषभस्वर-वादिनः
कोमलोऽस्मिन्निषादोऽपि खद्वयं रक्तिदायकम् ॥

(हिन्दी) द्वय गंधार निखाद मृदु रिप सोहत संवाद ।
प्रात समय सोहत है खोकर गुनिजन गात ॥

स्व० पं० पूज्य वझे बोवा यह वैचित्र्यपूर्ण राग प्रचार में लाया है नाम के अनुसार इस राग का चलन भी अत्यंत वैचित्र्यपूर्ण है । इस में गांधार दो तथा निषाद केवल कोमल लगाया जाता है । शुद्ध गांधार सरल रूप में आरोहावरोह में लिया जाता है, निषाद आरोह में दुर्बल तथा अवरोह में सरल अथवा धनिप, निप इस प्रकार वक्र रूप से भी लिया जाता है । कोमल गंधार जैजैवन्ती की पद्धति से रेगरेसा इस प्रकार प्रायः दो ऋषभ के बीच में लिया

ग ग

जाता है । ऋषभ एक मधुर न्यास-स्वर है । धनिरे, परे; रेगरेसाऽ निधप, तथा पम, मग, गरे इन स्वरों में जयजयवंती की ही छाया दिखाई देती है । किन्तु आरोह में गंधार, मध्यम, निषाद दुर्बल होने से तथा अवरोह में गरेगसा इस प्रकार रिखब और धनिप इस प्रकार निषाद वक्र करने से जैजैवंती से यह राग अलग रहता है । अन्तरे का उठाव मपधसां, सांधसां, इस प्रकार निषाद दुर्बल रख कर किया जाता है । अवरोह में मध्यम एक अत्यंत मधुर विश्रांति-स्थान है ।

प

निप, म, मग, गरे, गसा, रेगरेसा, निधप, रे इस प्रकार की वैचित्र्यपूर्ण संगति इस राग में बार-बार आती है । वादी ऋषभ, संवादी पञ्चम । समय प्रातःकाल का दूसरा प्रहर ।

आरोहावरोहः—सा, रेप, म, निधप, मपधसां । सांधसां, रेंसां, निधप, धनिप, निप, मऽऽ, मग, गरे, गसा, रेगरेसा, निधप, धनिरे ऽ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग ग ग ग ग ग
स्वरविस्तारः—सा, रे, रे, रेसा, धनि़रे, रे, रेसा,
ग ग ग ग ग ग ग ग
नि़धसा, धनि़रे। सा, रे, रे, रेसा, धनि़रे, साऽधनि़रे, धरे,
ग ग
नि़ध, नि़धरे. साधनि़रे, गरे, रेगरे, गरे, गसा, रेगुरेसा, नि़धप, रे,
ग ग ग ग ग ग ग ग
रे, रेसा, धनि़रे। सा, धनि़रे, रे, रे रेसा, धनि़रे, नि़धप,
ग ग ग ग
धरे, धपधनि़रे, नि़धपऽरे, धनि़रे, रे, रे, रेगरेसा, रेगुरेसा, नि़धप,
ग ग ग ग ग
नि़प, धनि़प, मपधसा, धनि़रे॥ सा, रे, रे, रेसा, धनि़रे, गरे,
रेगरेसा, गरे, गरेगसा, रेगुरेसा, रेगसा, गसा, रेसा, नि़धप, धनि़रेऽ।
सा, रेप, प, म, म, मग, गरे, रेपऽमग, गरे, मगरे, पम-मग-गरे,
पमगरे, मगरे, गसा, रेगसा, रेगुरेसा, रेगुसा, रेगरेसा, नि़धप, रेसाऽ-
नि़धप, धनि़प, नि़प, म, मपधसा, धनि़रे। सा, रेप, म, पम, धप,
नि़धप, म, धप, नि़प, धनि़प, म, पम, मग, गरे, पम–मग–गरे,
रेपऽमगगरे, नि़धपमगरे, नि़प, म, पम, मग, गरे, रेगरे, पमगरे,
ग
गसा, रेपऽमगरेगसा, रेगुसा, रेगरेसा, नि़धप, सा, धनि़रेऽ। सा,
रेप, म, म, नि़धप, नि़प, म, मपधसां, नि़धसां, धसां, सांधसां, रेंसां,
रेंगंसां, रेंगंरेंसां. पंमंगंरें, गंसां, रेंगंसां, रेंगंरेंसां, गंरेंगंसां, सांरेंगुंरेंसां,
रेंसां, नि़धप, धनि़धप, धनि़प, नि़प, नि़पऽमऽऽ, मग, गरे, नि़प-मग-
गरे, पमगरे, मगरे, पम-मग-मरे, गसा, रेगुरेसा, नि़धप,
ग
सा, धनि़रेऽऽ॥

१ खोकैर-झपताल

जागो जागो नंदलाल, भई भोर गोपाल, ठाड़े अधीर बन जाने
गैया बछरूँ ग्वालबाल॥ धृ०॥
पंछी न बन बोले, ना कमल दल खोले, अलि भ्रमर ना डोले
बन भ्रमत बेहाल॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०		३			×		२		
मप	मग	ग	रे	सा	रे	सा	(ग)रे	-	(ग)रे
जाऽ	गोऽ	जा	ऽ	गो	नं	द	ला	ऽ	ल
सा	सा	सा	-	रे	रे	ग	रे	ग	सा
भ	ई	भो	ऽ	र	गो	ऽ	पा	ऽ	ल
सा	सा	सा	सा	रे	नि़	ध़	प़	ऽ	प़
ठा	डे	अ	धि	र	ब	न	जा	ऽ	ने
प़	प़	प़	ध़	सा	सा	रे	ग	ग	सा
गै	या	ब	छ	रू	ग्वा	ल	बा	ऽ	ल
म	म	म	प	ध	सां	ध	सां	ऽ	सां
पं	ऽ	छी	ऽ	न	ब	न	बो	ऽ	ले
सां	ध	सां	सां	सां	सांरें	गं	रें	सां	सां
ना	ऽ	क	म	ल	दऽ	ल	खो	ऽ	ले
रें	सां	नि॒	ध	प	ध	ध	ध	नि॒	प
अ	लि	भ्र	म	र	ना	ऽ	डो	ऽ	ले
नि॒	प	म	म	गरे	सा	रे	रे	ग	सा
ब	न	भ्र	म	तऽ	वे	ऽ	हा	ऽ	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२ खोकर–त्रिताल

आज सखी घर आये कन्हैया । सोहाग की रात नवल नव पाई ।
देऊँगी आज उन्हें बनके बलैया ॥धृ०॥
शरद इंदुसम कांति बदनकी । जादु भरेली उनकी नजरिया ॥

०				३				×				२			
प	म	ग	रे	ग़	रेसा	ध़	ऩि	(ग)रे	–	(ग)रे	सा	रे	ग	ऽ	सा
आ	ऽ	ज	स	खी	ऽऽ	घ	र	आ	ऽ	ये	क	न्है	ऽ	ऽ	या
रे	ग	ग	सा	रे	ग	रे	सा	रे	ऩि	ध़	प़	म़	प़	ध़	सा
सो	हा	ग	की	रा	ऽ	त	न	व	ल	न	व	पा	ऽ	ई	ऽ
रे	प	प	प	ध	प	म	प	म	ग	ग	रे	रे	ग	ऽ	सा
दे	ऊँ	गि	आ	ऽ	ज	उ	न्हें	ब	न	के	ब	लै	ऽ	ऽ	या
म	प	ध	सां	सां	ध	सां	सां	सांरें	गं	रें	सां	नि	ध	प	ऽ
श	र	द	इ	ऽ	न्दु	स	म	काऽ	ऽ	न्ति	ब	द	न	की	ऽ
रें	सां	नि	ध	प	–	ध	नि	प	म	म	ग	रे	ग	ग	सा
भा	ऽ	दु	भ	रे	ऽ	ली	ऽ	उ	न	की	न	ज	रि	या	ऽ

खंमाजी भटियार

(संस्कृत) निषादः कोमलश्चात्रारोहणे गनि–वर्जितः ।
कांभोज–मेलजः सरलो भट्टियारस्तु पांचकः ॥

(हिन्दी) आरोही में निखद नहीं, और नहीं गंधार ।
पंचम अंश धरत है खंमाजी भटियार ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खंमाजी भटियार यह खंमाज मेल का क्षुद्र किन्तु अत्यन्त मधुर राग है जो स्व० पूज्य पं० वझे बोवा द्वारा प्रचार में लाया गया, इसके आरोह में गंधार निषाद वर्ज्य होने से सिंधुरा का आभास होता है। किन्तु अवरोह में शुद्ध गंधार आते ही सिधुरा की छाया नष्ट होजाती है। पधसांरेंगंरेंसां, रेंसां, ऩिधप इन स्वरों से खंभावती की छाया दिखाई देती है। किन्तु आगे धपमगरेसा इस प्रकार का सरल अवरोह होने से खंभावती से यह राग अलग रहता है। मधऽऽप, धपमगरेसा, ऩिध़सा, ऩिरेऽऽसा इस प्रकार के स्वर इस राग में बार-बार आते हैं। इससे झिंझुटी का भास हुआ करता है। किन्तु ध़सारेमग, इस प्रकार का झिंझुटी के महत्व का अङ्ग इस राग में न होने से झिंझुटी से खंमाजी भटियार अलग रहता है। मारवा भटियार खंमाजी भटियार से बिलकुल भिन्न है। वादी पंचम, संवादी षड्ज। समय प्रातःकाल। कोई गुनीजन खंमाजी भटियार का समय मध्यरात्रि का समझते हैं। किन्तु मध्यरात्रि के राग में तार षड्ज तथा मध्यम अत्यन्त प्रबल रहते हैं। खंमाजी भटियार में इन स्वरों का महत्व नहीं है। यह अवरोही वर्ण का राग है। धरेंऽऽसां, ऩिरेऽऽसा, मधऽऽप इस प्रकार का ऋषभ धैवत का प्राधान्य होने से प्रातः समय में ही यह राग अधिक रक्ति-दायक होता है। मुख्यांग :—मधऽऽप, धपमगरेसा, ऩिध़सा, ऩिरेऽऽसा।

आरोहावरोह :—ऩिरेऽसा, रेमपधसां-रेंसां, ऩिधप, मधऽऽप, धपमगरेसा, रेपऽमगरेसा, रेमऽगऽरेसा, गरेसा, रेसा, ऩिध़सा ऩिरेऽऽसा।

स्वरविस्तार :—सा, ऩिध़, ऩिध़सा, ऩिरे, ऩिध़रे, ध़रे, रेऩिध़रे ऩिध़, ऩिध़सा, ऩिरे ऽ सा ॥ सा, रेसा, रेसाऩिध़, ऩिरेऽसा, सा/रे, ऩिध़ रे/गऽरेसाऽऩिध़, सा/रेऽऩिध़, ऩिध़, ऩिध़सा, ॥ सा, रेम, ऩिध़सा, रेम, ऩिरेऽसा, रेम, सारेम, रेमऽगऽरेसा, सारेमऽगऽरेसा, मगरेसा, गरेसा, रेसा, ऩिध़सा, ऩिरेऽसा। सा, रेम, प, मगरेसा, रेपऽमगरेसा, मगरेसा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गरेसा, रेसा, ऩ्रिधसा, । सा, रेम, प, मधऽऽप, रेमपधऽऽप, रेमधऽप,
मधऽऽप, धपमगरेसा, रेपऽमगरेसा, रेमऽगऽरेसा, मगरेसा, गरेसा,
रेसा, ऩ्रिधसा, ऩ्रिरेऽसा, । सा, रेमपध, सांनि, सांनिधप, रेमपधनिधप,
रेमपऽमधऽप, सांनिधपऽ, धपमगरेसा, रेमऽगऽरेसा, रेसा, ऩ्रिधसा ।
सा, रेमपध, रेमध, साध, धपमगरेसाध, मध, मधऽऽप, निधप,
मपधसांऽऽ, सा, रेमपधसां, निधसां, निरेंऽऽसां, मपधसां, रेंसां,
रेसा, रेमपधसां, रेंसां रेंमंगंऽरेंसां, मंगंरेंसां, गंरेंसां, रेंसांऽनिधप,
पधसांरेंगंऽरेंसां, रेंसां, निधप, धरेंऽऽसां, निधप, रेंसां, निधप, मधऽऽप,
धपमगरेसा, रेपऽमगरेसा, रेमऽगऽरेसा, मगरेसा, गरेसा, ऩ्रिऽरेसा,
ऩ्रिरेऽसा । ऩ्रिधसा ॥

१ खंमाजी भटियार—एकताल

मधुर बजावत बंसरी, जमुना तटपें मुरारी ।
मोर मुकुट के धारी ॥धृ०॥
तुलसी माल गले सोहत, कुंडल सोहे मकराकृत
धन जो ऐमो ध्यावत हरि ।

×		०		२		०		३		४	
म रे	प	प	धप	मग	रेसा	सा	रे	ऩ्रि	ध़	सा	सा
म	धु	र	बऽ	जाऽ	ऽऽ	व	त	बं	ऽ	स	री
रे	म	प	ध	सां	सां	सांरें	सां	निसां	नि	ध	प
ज	मु	ना	ऽ	त	ट	पेंऽ	ऽ	मुऽ	रा	ऽ	री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	रें	सां	नि॒	धप	मग	रे	सा	ऩि॒	ध़	सा	-
मो	ऽ	र	मु	कुऽ	टऽ	के	ऽ	धा	ऽ	री	ऽ
म	म	प	ध	सां	सां	सां	सां	(सा) नि॒	ध	सां	सां
तु	ल	सि	मा	ऽ	ल	ग	ले	सो	ऽ	ह	त
ध	सां	रें	गं	रें	सां	(ग) रें	रेंसां	(सां) नि॒	(नि॒) ध	(ध) प	प
कुं	ऽ	ड	ल	सो	हे	म	क	रा	ऽ	कृ	त
ध	रें	सां	नि॒	धप	मग	रे	सा	ऩि॒	ध़	सा	सा
ध	न	जो	ऽ	ऐऽ	सोऽ	ध्या	ऽ	व	त	ह	रि

२ खंमाजी भटियार—त्रिताल

सखी री गरज गरज घन आये। रिमक-झिमक झिम-झिम झरनियाँ
बूँदनियाँ बरखा बरसाये ॥ ध्रु० ॥
चातक मोर चकोर कोयलिया, पियु—पियु रटत जियरा तरसाये ॥

२				०				३				×			
															म
															सा
ध	-	प	-	ध	प	म	ग	रे	सा	ऩि॒	ध़	(ध़) सा	-	सा	-
खी	ऽ	री	ऽ	ग	र	ज	ग	र	ज	घ	न	आ	ऽ	ये	ऽ
ध	सां	रें	गं	रें	सां	नि॒	ध	सां	सां	सां	रेंसां	नि॒	ध	प	-
रि	म	क	झि	म	क	झि	म	झि	म	झ	रऽ	नी	ऽ	याँ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध रें सां त्रि	ध प ध प	म ग रे सा	त्रि ध सा म
बूँ ऽ द नि	यां ऽ ब र	खा ऽ ब र	सा ऽ ये स०
म - प ध	सां - त्रि ध	सां - सां रेंसां	त्रि ध सां -
चा ऽ त क	मो ऽ र च	को ऽ र कोऽ	य लि या ऽ
ध सां रें गं	रें सां त्रिध प	धप मग रे सा	त्रि ध सा म
पि यु पि यु	र ट तऽ जि	थऽ राऽ त र	सा ऽ ये स

३ खंमाजी भटियार–त्रिताल

कुँवर सखी आये अजहुँ न श्याम ।
रैन दिन न मोहे चैन जिया को ॥
सुभत नहीं कछु ही काज–काम ॥ धृ० ॥
छायी छवी छबीली नैनन मों ।
बीत गई रैना रटत ही नाम ॥

३	×	२	०
			प म
			कुँ
ग रे त्रि (सा) ध	सा - सी -	रे प प धप	म ग रेसा म
व र स खी	आ ऽ ये ऽ	अ ज हुँ नऽ	श्या ऽ मऽ रै
- प - ध	सां सां त्रि ध	सां - सां रें	नि ध सां -,
ऽ ना ऽ दि	न न मो हे	चै ऽ न जि	या ऽ कोऽ,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध रें सां नि॒	ध नि॒ध प प	ध प म ग	रे सा सा म
सु भ त न	हीं ऽऽ क छु	हीं ऽ का ऽ	ज का म छा

– प – ध	सां – नि॒ ध	सां – सां रें	नि॒ ध सां –
ऽ ई ऽ छ	बी ऽ छ बी	ली ऽ नै ऽ	न न मों ऽ

ध – सां रें	गं – रें सां	रेंसां सांनि॒ नि॒ध धप	धप मग रेसा
बी ऽ त ग	ई ऽ रै ना	रऽ टऽ तऽ हीऽ	नाऽ ऽऽ मऽ

नाटकुरंजिका

(संस्कृत) कांभोजमेलजा नित्यं पहीना मनि कोमला ।
वक्रावरोहणे गेया रात्रौ नाटकुरंजिका ॥

'नाटकुरंजिका' यह दाक्षिणात्य प्रकार है । प्रसिद्ध गायिका श्रीमती गांधारी हनगल ने इसका प्रचार हि० मा० व्हॉ० रेकार्ड द्वारा किया है । प्रचलित रागेश्री राग से यह बहुत ही मिलता-जुलता है । किन्तु इसमें शुद्ध निषाद बिलकुल न होने से तथा अवरोह गमरेसा इस प्रकार वक्र रखने से यह रागेश्री से अलग रहता है । अर्थात् निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध । अतएव थाट खमाज । आरोह में ऋषभ दुर्बल होने से नि॒साग स्वरसंगति दिखाई जाती है । उत्तरांग में बागेश्री का बहुत ही आभास हुआ करता है । किन्तु शुद्ध गांधार का अस्तित्व इस राग को बागेश्री से अलग रखता है । पंचम वर्जित होने से जाति षाडव । अवरोह में धग संगति आवश्यक है । समय रात का । वादी षड्ज, संवादी मध्यम । गांधार, निषाद मधुर विश्रांति-स्थान है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा
मुख्यांग:—मध, ऩिधऽम, गमरेसाऽरे, ऩिसाग, म।

आरोहावरोह:—ऩिसाग, म, ध ऩिसां । रेंऩि, सांधऽम, गमधऽम, गमरेसा, रेऩिसागऽऽ, मऽ।

स्वरविस्तार:—सा, ऩिसा, ऩिधऩिसा, मधऩिसा, धऩिसा, ऩिग, रेऩिसा, ऩिसाग, मधऩिसाम, धग, मग, ऩिसागऽमग, मग, गमरेसा, रेऩि, ऩिसाग । साग, रेसाग, मग, मधग, धग, मग, रेमऽरेसा, रेऩिसाग । ऩिसागऽम, सागऽम, सागमऽ, गम, मधऩिसाग,

सा
गम, ऩिसाम, ऩिम, साम, मध, ऩिध, गमधऽऩिध, गमऩिध, मनिध,
सा सा सा सा
ऩिध, ऩिधऽम, गमधऽ, ऩिधऽम, मऩिधऽम, गधऽ, ऩिधऽम, गधग,
सा सा सा सा
ऩिध, ऩिध, ऩिधऽम, गमधगऽम, ऩिधऽग, म, ऩिधऽगम, सागम, ऩिसागसा, रेऩिसाग, म, गम, गमरेसा, रेऩिसाग, मऽऽ। गमधऩिसां,
सा
सा, सागमधऩिसां, ऩिसागऽमऽध, ऩिध, ग, म, ऩिध, मधऩिसां, रेंसां, ऩिध, मधऩिसां, रेंसां । गंमंरेंसां, रेंसां, ऩिध, मधऩिसांऩिध, रेंनिसांध, मधऩिसांध, गंमंरेंसांऽरेंसां, ऩिधऽम, गमधऽम, गऽमध-गमग, मग, गम, गमरेसा, ऽरेऩिसागऽमऽऽ॥

१ नाटकुरंजिका - त्रिताल

दरसबिन हरी के मैं बावरी ।
बन ढूँढ़त हूँ तो श्याम मुरारी ॥ धृ० ॥
जाग जाग अखियाँ मोरी तरसे ।
जुग सम लागत पल पल छिन घरी ॥

०	३	×	२
(सा रे) ग म रे सा	- रे नि़॒ सा	ग - म ध	धनि॒ सांनि॒ ध म
द र स बी	ऽ न ह रि	के ऽ मैं ऽ	बाऽ ऽऽ व री
नि॒ सां गं मं	रें सां नि॒ ध	(ध) ग - म ध	(ध) ग म रे सा
ब न ढूँ ऽ	ढ त हूँ तो	श्याऽ म मु	रा ऽ री ऽ
ग म ध नि॒	सां सां नि॒ सां	(सां) गं रेंमं रें सां	नि॒ सां नि॒ ध
जा ऽ ग जा	ऽ ग अ खि	याँ ऽऽ मो री	त र से ऽ
गं मं रें सां	नि॒ सां नि॒ ध	(ध) ग ग म ध	(ध) ग म रे सा
जु ग स म	ला ऽ ग त	प ल प ल	छि न घ री

हंसश्री

(संस्कृत) औडुव रिध हीना च हंसश्री पंचमे स्थिता ।
उभावपि निषादौ स्तस्तीव्रकोमलसंज्ञकौ ॥

(हिन्दी) औडव कोमल मनि जहाँ धैवत रिखब न लाग ।
पस वादी संवादि में समझ हंससिरि राग ॥

यह खंमाज मेलोत्पन्न औडव जाति की वक्र रागिनी है। इसमें ऋषभ धैवत वर्ज्य, दो निषाद तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। शुद्ध निषाद आरोह में और कोमल निषाद अवरोह में लिया जाता है। तिलङ्ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग के यही स्वर हैं। किन्तु हंसश्री के पूर्वाङ्ग में बिहाग तथा उत्तरांग में सारङ्ग की छाया दिखाने से तिलङ्ग से यह रागिनी बिलकुल पृथक् रहती है। प्रायः मंद्र तथा मध्य सप्तक में ही इस रागिनी का प्रस्तार किया जाता है। अतः तिलङ्ग से हंसश्री बहुत ही गंभीर है। ऩिप़, म़प़ऩिऽसा। इस प्रकार की स्वर-संगति हंसश्री में पुनः पुनः दिखाई जाती है। इससे सारंगांग प्रतीत होता है। उत्तरांग में भी मऩिप; मपमऩिप; पमऩिप; निसांऩिऽमप; ऩिरमप, ऩिमप, सा, पनि, इस प्रकार के स्वरों से सारङ्ग राग का भास होता है। किन्तु पऩि, प़ऩिसा, गऽसा, गमगऽसा, पऽगमगऽऽ, सामऽगपऽ, मगमगऽऽ सा, गमपनिऽसां इन स्वरों से सारंगांग नष्ट होकर बिहाग का भास हुआ करता है। अवरोह में मध्यम पर न्यास बिलकुल न करने से तथा ऩिमप और ऩिप़, म़प़, म़प़, ऩि, सा इन स्वर संगतियों से तिलङ्ग से यह राग अलग रहता है। अवरोह में मध्यम दुर्बल होने से पग संगति दिखाई जाती है। वादी पंचम संवादी षड्ज। समय रात का दूसरा प्रहर। मुख्यांग प़ऩिसा, ग, मग, पऽगमगऽसा, ऩिप, म़प़ऩिऽसा।

आरोहावरोहः—ऩिप़, म़प़ऩिसा, गमपनि, सां। ऩिप, मप—मंऩिप, ऩिऽमप, गमग, पगमगऽऽसा, ऩिप़, म़प़ऩिऽसा॥

स्वरविस्तारः—सा, ऩि, ऩिसा, प़ऩि, प़ऩिसा, ऩिप़, म़प़ऩि, गम़प़ऩि, म़प़ऩि, ऩिप़, म़प़ऩि प़ऩिसा। प़ऩिसा, ऩिप़म़प़ऩि, प़ऩि, म़प़ऩि, म़प़ऩिसा, गम़प़ऩि, म़प़ऩि, ऩिम़प़ऩि, गम़प़ऩि, प़ऩि, प़ऩिप़ऩि-सा। प़ऩिसाग, ऩिसा, ऩिसाग, प़ऩिसाग, मग, ऩिप़म़प़ऩिसा, मग, प़ऩिसाग, ऽमग, पऽगमग, पगमग, सामगपऽ, गमग, गमपगमग,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पगमगऽसा, ऩ्रिप़, म़प़, ऩि, सा। ऩिसा, ऩिसागमप, सामगप, गमप–

म म
गमप, पगमग, सामगपऽगमग, सामगप, त्रिप, त्रित्रिप, मपत्रिप,

प म प
त्रिऽमप, गमग, सामगपऽगमग, त्रिगमग, गमपगमग, पगमग-

म़
ऽसा, ऩ्रिप़, म़प़, ऩिऽसा । गमपनि, ऩिसा, प़ऩिसा, गसा, ऩिसा,

गमपनि, ऩिनि, गमपनि, मपनि, पनिसां, त्रिपनिपमपनिऽसां,

गमपनि, त्रिऽमप, निऽसां, पनिसां, पनिसांगं, मंगं, पंगंमंगंऽसां,
त्रिपमप-निऽसां, गंसां, त्रिप, त्रित्रिप, मप़त्रिप, मत्रिप, मपमत्रिप,

म म सा
पमत्रिप, त्रिऽमप, गमग, सामगपऽ, गमग, पगमगऽसा, ऩ्रिप़,

म़प़ऩि, सा, गमगऽसा ॥

१ हंसश्री–एकताल

आये घर नंदलाल, धन धरि धन दिन मंगल ।
जनम जीवन आज सफल ॥ ध्रु० ॥
ठुमक–ठुमक चाल चलत । नील वसन नव सोहत ।
मुख पर केशर छिरकत । अतर अबिर अरु गुलाल ॥

०		३		४		×		०		२	
(सा)	–	त्रि	प	म	प	ऩि	–	ऩि	ऩि सा	–	सा
आ	ऽ	ये	ऽ	घ	र	नं	ऽ	द	ला	ऽ	ल
ऩिं	सा	ग	म	ग	ग	प	प	म ग	म	ग	ग
ध	न	ध	रि	ध	न	दि	न	मं	ऽ	ग	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	म	प	त्रि	म	प	ग	म	प	म	ग	सा
ज	न	म	जीं	व	न	आ	ऽ	ज	स	फ	ल
ग	म	प	नि	नि	नि	सां	–	नि	सा	सां	सां
ठु	म	क	ठु	म	क	चा	ऽ	ल	च	ल	त
प	नि	सां	गं	गं	सां	त्रि	प	म	प	नि	सां
नी	ऽ	ल	व	म	न	न	व	सो	ऽ	ह	त
नि	सां	गं	मं	पं	पं	गं	मं	गं	नि	नि	सां
मु	ख	प	र	कं	ऽ	श	र	छि	र	क	त
गं	सां	त्रि	त्रि	म	प	ग	म	प	म	ग	सा
अ	त	र	अ	बि	र	अ	रु	गु	ला	ऽ	ल

२ हंसश्री–त्रिताल

कलियन संग करत रंगरलियाँ ।
भँवरा गूँजत, कोयल कूकत ॥
लेहरावत बिरछन बेलरिया ॥ ध्रु० ॥
पियु–पियु टेरत चकोर चातक ।
पवन झकझोरे हरियाँ डरियाँ ॥

३				×				२				०			
प	प	ग	म	ग	–	सा	नि़	नि़	प	म	प	नि़	नि़	सा	ऽ
क	लि	य	न	सं	ऽ	ग	क	र	त	रं	ग	र	लि	याँ	ऽ
ग	म	प	म	ग	म	ग	सा	(म)प	–	(म)ग	म	ग	–	सा	सा
भँ	व	रा	ऽ	बो	ऽ	ल	त	को	ऽ	य	ल	कू	ऽ	क	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	म	प	नि	सां	सां	नि	प	नि	नि	म	प	ग	म	ग	सा
ले	ह	रा	ऽ	व	त	बि	र	छ	न	बे	ऽ	ल	रि	या	ऽ
ग	म	प	नि	सां	–	सां	सां	नि	प	म	प	नि	–	सां	सां
पि	यु	पि	यु	टे	ऽ	र	त	च	को	ऽ	र	चा	ऽ	त	क
गं	मं	पं	गं	मं	गं	–	सां	नि	नि	म	प	ग	म	ग	सा
प	व	न	झ	क	झो	ऽ	रे	ह	रि	याँ	ऽ	ड	रि	याँ	ऽ

३ हंसश्री–झपताल (लक्षणगीत)

सुन सजनी अब मुरत । हंससिरी गुनि सुमत । औडव सोहे रूप ।
अत मधुर सुर संगत ॥ धृ० ॥
कर अंश सुर पंचम । समवाद करे प्रथम । मधरातमों सोहत ।
नित 'अधर' द्वय निखद ॥

×		२			०		३		
प	प	(म) ग	म	ग	(सा) नि	मप	नि̣	नि̣	सा
सु	न	स	ज	नि	अ	बऽ	मु	र	त
नि̣	सा	ग	म	ग	प	प	(म) ग	म	ग
हं	ऽ	स	सि	रि	गु	नि	सु	म	त
ग	म	प	नि	नि	सां	सां	नि	म	प
औ	ऽ	ड	ऽ	व	सो	हे	रू	ऽ	प

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	नि	म	प	ग	म	ग	ग	सा
अ	ति	रू	ऽ	प	सु	र	सं	ग	त
ग	म	प	नि	नि	सां	सां	नि	सां	सां
क	र	अं	ऽ	श	सु	र	पं	च	म
प	नि	सां	गं	सां	नि	म	प	नि	सां
स	म	वा	ऽ	द	क	रे	प्र	थ	म
नि	सां	गं	गं	मं	पं	–	मंगं	मं	गं
म	ध	रा	ऽ	त	मों	ऽ	सो	ह	त
नि	सां	नि	म	प	ग	म	ग	ग	सा
नि	त	अ	ध	र	ह्र	य	नि	ख	द

गोरखकल्याण

(संस्कृत) रिमौ धपौ मरी सनी धसौ रिनी तथैव च।
मांशो गोरक्षकल्याणो गहीनो मनि-कोमलः ॥

(हिन्दी) गंधार नहीं मनि कोमल पञ्चम दुर्बल मान।
सम वादी समवादि में गोरख का कल्याण ॥

यह दाक्षिणात्य पद्धति का खंमाज मेलोत्पन्न राग है। इसमें गांधार वर्ज्य निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं अर्थात् जाति षाडव है। आरोह में पञ्चम तथा निषाद दुर्बल हैं। अतः इसके पूर्वाङ्ग में केदार, दुर्गा तथा उत्तरांग में बागेश्री का भास हुआ करता है। किन्तु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोमल गंधार न होने से बागेश्री तथा मंद्र निषाद एक आवश्यक और वैचित्र्यपूर्ण न्यास स्वर होने से केदार, दुर्गा, गोरखकलायण से अलग

रे म रे म रे
रहते हैं। सा. साम, इन स्वरों से केदार, रे म, पम; रे म, धपम; इन

सा
इन स्वरों से दुर्गा दिखाया जाता है। मधऩिधसां, रेंऩि, धपम, इन स्वरों

म रे
में बागेश्री की छाया दिखाई देती है। किन्तु रेम, रेसाऩि; मरेसाऩि, धपमऽरेसाऩि; रेंमरेंमरेंसांनि; निसांऩिसांऩिधऽपम, रेमरेमरेसाऩि;

रे
रेऩिधप़, म, रेमरेसाऩि; रेऩि; इस प्रकार मंद्र निषाद पर न्यास करने से बागेश्री, दुर्गा, और केदार नष्ट हो जाते हैं। यह राग अत्यंत धीर-गंभीर तथा गमक और मींड प्रधान है। वादी मध्यम, संवादी षड्ज। समय

म रे म रे
मध्यरात्रि का। मुख्यांग रेम, धपम, रे म, रेसाऩि, ऩिध़सा।

इस राग का 'कल्याण' से कुछ सम्बन्ध न होते हुए भी यह कल्याण प्रकार क्यों समझा जाता है इस कुछ पता नहीं चलता। कल्याण का इसमें कोई अंग नहीं है। इसलिये इसे 'गोरखकल्याण' के बजाय 'गोरख' ही कहना ठीक होगा।

म रे म
आरोहावरोहः—सा, रेम, ध, सांऩिधसां। रेंऩि, धऽम, धपम, रेमऽरेसाऩि, ऩिध़सा।

रे सा
स्वरविस्तारः—साऽ ऩिऽऽ, ऩिध़, ऩिध़सा। रेऩि, सारेऩि, साध़,

सा सा
रेऩिसाध़, ऩिध़, ऩिध़सा, रेऩि, ध़सा। सारेऩि, रेऩि, रेऩिसाध़ ध़रेसा

म म म
रेऩिसाध़, म़ऩिध़ऽम़, ध़प़म़, ऩिध़, ऩिध़सा। सा, रे रे, रेऩि, सारेऩि,

रे
सा मरे
मऽरेसाऩि, साध़ ऩिध़ऽम़, ध़प़म़ध़, ऩिध़सा। सा, रेम, सारेऩिऽ

मरें मरें मरे
रेम, ऩिरेम, रेम, रेसाऩि, सम, मऩि, म़ध़सा, ऩिध़सा, सा, रेम,

म   मरे
ऩिरेसा, ऩिरेऩिम, पम, रेमपम, मपम, धपम, मधपम, रेमऽरेसाऩि,
रे   सा सा   मरे म
मऽरेसाऩि, रेऩि, साध़, ऩिध़ ऩिध़सा । सा, रेम, ध, निध-रेमनिध,
सां   गरे मरे
मनिध, निध, निधपम, मनिधपम, धपम, रेम, रेमऽ, रेसाऩि, ऩिध़मा ।
सां   सां
सा, रेमध, मध, निध, रेमनिध, मनिध, निधसां, मनिधसां, मधसां,
मरें   मं
रेंनिधमऽरेसाऩि, मधसां, धरेंसां, रेंमंऽरेंसांनि, रेंमं, पंमं, रेंमंऽ, रेंसांनि,
सां नि सां   मरे नि   मरे   रे   रे
रेंनि, सांध, निधऽम, रेम, धपम, रेमऽरेसाऩि, मऽरेसाऩि, साम़ऽरे-
रे   सा
साऩि, सामऩि, मऩि, साध़, ऩिध़, म़ध़ऩिध़, ऩिध़, साऽऽ ।

१ गोरखकल्याण—झपताल (ख्याल पद्धति से)

शरद की मदमात रात सुहावत मन चकोर ॥ ध्रु० ॥
चन्द्र—चन्द्रिका की झरन सजनी करत मन बिरहाकुल ।

३			×		२			०	
									मरे रेम शऽ
रे रेसा	ऩिसा	–ऩिसारेसा	ऩि	–	ऩिध़	सा	सारे	म	म रेम
रद	कीऽ	ऽमऽदऽ	मा	ऽ	तऽ	ऽ	राऽ	त	सुऽ
ध	मध	धपम–	रेम	पम	धपम	रेम	ऩिध़	सा	म रेम
हा	वऽ	तऽऽऽ	मऽ	नऽ	चऽऽ	कोऽ	रऽ	ऽ	सुऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	ध	ममधनिध	सां	सां	सांरें	नि	–	निध	सां
न्द्र	ऽ	ऽचंऽऽन्द्रि	का	की	झर	न	ऽ	सज	नीऽ

रेंमंरेंमं	रेंसांनि	–	(सां) निध	म	धपम	रेंसानि	निध	सा
कऽरऽ	तऽऽ	ऽ	मन	ऽ	बिरहा	कुऽऽ	लऽ	ऽ

२ गोरखकल्याण—त्रिताल

जोगन बनी तुमरे दरस बिन।
कलना परत मोहे फिरत बन-बन ॥ ध्रु० ॥
कासे कहूं दुख तुम बिन मोहन।
तुमरे कारन तन-मन-धन-जोबन ॥

३				×				२				०			
															(म) रे
															जो
म	रे	सानि	सा	नि	–	सा	सा	(रे) म	–	ध	सां	रेंसां	निध	पम	(म) रें
ऽ	ग	नऽ	ब	नी	ऽ	तु	म	रे	ऽ	द	र	सऽ	बिन	नऽ	क
(रें) मं	रें	–	सां	(सां) नि	ध	प	म	(म) ध	प	म	रेम	रे	सा	नि	म
ल	ना	ऽ	प	र	त	मो	हे	फि	र	त	बऽ	न	ब	न	का
–	ध	नि	ध	सां	–	नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	ध	सां	–
ऽ	से	ऽ	क	हूं	ऽ	दु	ख	तु	म	बि	न	मो	ह	न	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(म) रें मं रें सां	ऩि ध प म	ध प म रेम	रे सा ऩि
तु म रे का	र न त न	म न ध नऽ	जो ब न

३ गोरखकल्याण-त्रिताल

सजनी जिया मोरा मानत नाहीं ।
श्याम सलोने नैना मारी कटारी ॥
सुध-बुध सखि सबही बिसराई ।
रैना दिन न मोरे चैन जिया को ।
नैनन मों छबीली छबि छाई ॥

३	×	२	०
			ध
			स
प म – रे	म – म म	रे म रे सा	ऩि सा सा सा
ज नी ऽ जि	या ऽ मो रा	मा ऽ न त	ना ऽ हीं श्या
म रे – सा	ऩि सा सा सा	(रे) म – ध ध	ऩि ध सां –
ऽ म ऽ स	लो ने नै न	मा ऽ रि क	टा ऽ री ऽ
रें मं रें सां	ऩि ध प म	रे म रे सा	ऩि सा सा म
सु ध बु ध	स खि स ब	ही ऽ बि स	रा ऽ ई रै
ध ध सां ध	सां सां ऩि सां	रें मं रें सां	सां ऩि ऩि –
ऽ ना ऽ दि	न न मो हे	चै ऽ न जि	या ऽ को ऽ
रें ऩि ध प	म – रे म	रे म रे सा	ऩि सा सा
नै ऽ न न	मों ऽ छ बि	ली ऽ छ बि	छा ऽ ई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४ गोरखकल्याण—त्रिताल—तराना

तनूं तन देरेना तदारे दानि तदानी ।
तुं दिर दिर दानी तदानी तर्दीं तननर्दीं ॥
तर्दीं तान्न देरे तदारे ताद्रेदानी ॥ ध्रु० ॥
तर्दीं तन देरेना तदारे दारे दारेर्दीं ।
धित्लां तनन देरे तदारे ताद्रेदानी ॥

×	२	०	३
			रे
			त
	रे रे	सां प	
ऩि - सा सा	म म ध सां	रें नि ध म	रे सा नि सां
नूं ऽ त न	दे रे ना त	दा रे दा नि	त दा नि तुं
रें रें - मं	रें सां नि ध	म रे - म	रे सा ऩि -,
द्रे द्रे ऽ दा	नि त दा नि	त दीं ऽ त	न न दीं ऽ
		सां प	
ऩि सा - सा	म म ध सां	रें नि ध म	रे सा ऩि म
त दीं ऽ ता	ऽ न्न दे रे	त दा रे ता	द्रे दा नि त
नि - नि नि	रें नि ध ऩि	सां सां नि ध	नि ध सां -
दीं ऽ त न	दे रे ना त	दा रे दा रे	दा रे दीं ऽ,
सां सां			
रें रें - मं	रें सां नि ध	म म रे म	रे सा ऩि
धि ल्लां ऽ ल	न न दे रे	त दा रे ता	द्रे दा नि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

५ गोरखकल्याण–एकताल (लक्षणगीत)

गोरखकल्याण मधुर। मृदु निखाद को मानत।
बरज करत सुर गंधार॥ ध्रु०॥
अंश सोहत मध्यम नित। आरोहण नी बरजत।
मध्य रजनी समय रुचिर॥

×		०		२		०		३		४	
रें	सां	नि॒	ध	प	म	(म)रे	म	रे	सा	ऩि॒	सा
गो	ऽ	र	ख	क	ऽ	ल्या	ऽ	ण	म	धु	र
रे	म	रे	सा	ऩि॒	सा	म	–	म	धप	म	म
मृ	दु	नि	खा	ऽ	द	को	ऽ	मा	ऽऽ	न	त
ध	सां	रें	मं	रें	सां	नि॒	ध	(प)म	रे	(सा)ऩि॒	सा
ब	र	ज	क	र	त	सु	र	गं	धा	ऽ	र
म	–	ध	ध	सां	सां	सां	–	नि॒	ध	सां	सां
अं	ऽ	श	सो	ह	त	म	ऽ	ध्य	म	नि	त
नि॒	सां	रें	मं	रें	सां	रें	मं	रें	सां	नि॒	नि॒
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न	नि	ऽ	ब	र	ज	त
रें	सां	नि॒	ध	प	म	रे	म	रे	सा	ऩि॒	सा
म	ध	र	ज	नी	ऽ	स	म	य	रु	चि	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सरस्वती

(संस्कृत) आरोहे गनिवर्ज्या चेदवरोहे ग वर्जिता ।
रिप संवादिवादिभ्यां कथ्यते सा सरस्वती ॥ (कल्पपुष्पम्)

सरस्वती, यह दाक्षिणात्य राग है । ग्वालियर के प्रख्यात दरबार-गायक श्री उमडेकर बोवा ने इस राग को प्रचलित किया । इस में मध्यम तीव्र, निषाद कोमल, गंधार वर्जित तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं । अर्थात् जाति षाडव । यह वाचस्पति मेल से उत्पन्न हुआ है ।

सां
आरोह में निषाद वक्र होने से मंपध निधसां इस प्रकार स्वर लिये

मं
जाते हैं । इस राग में परेंऽसा तथा रेंनिधप इस प्रकार प रे तथा रेंनि स्वर संगति बारबार दिखाई जाती है । राग का गायन समय

मं सां
मध्यरात्रि है । वादी पंचम, संवादी ऋषभ है । मुख्यांग रेमंप, निधप,

मं
मंप रेऽऽसा ॥ (न्यासस्वर मध्यम) ।

सा सा
आरोहावरोहः—सा, रेमंप, निधप, निधसां । रेंनि, धपमं,
मं मं
रेमंप, रेऽसा ।

सा सा
स्वरविस्तारः—सा, निध, निधसा, रेसा रेनिध, निधसा सा, रेमं, निधसा, रेमं, सारेमं, रेमं, धसारेमं, निधसा, रेनिधसारेमं, पमं, निधप, रेमंपमं, रेमंप रे, मंप रे, रेमंप रेसा, निधपसा, सा रेमंप, रेमंपरेमंप,

सा निनि
निधप, रेमंप, धसारेमंप, सारेमंप, रेमंपध ध-ध-प, रेमंपधमं, धऽमं, रेमंपधमं, धमं, रेम्रं, रेमंपमंरे, रेंमंपरे, रेमंपधमंपरे, धमंपरे, रेमंपरे,

मं सां सां सां
मंपरे, परेसा, ।ₒसा, रेमंपध, मंपध निध, निधप, रेमंप, निधप, रेमंप-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां   सां
त्रिधप, रेमंपधत्रिध, त्रिधप रेमंपसांत्रिधप, रेंत्रिधप, रेमंपरेंऽत्रिधप,

मं
धसांरेंत्रिधप, धरेंत्रिधप रेमंपमं, रेमंप रे, मंपरे, रेमंपरेंऽसा ॥ सा,

सां
रेमंप, ध, त्रिध, त्रिधसां, रेमंपधत्रिधप, त्रिधसां, धसांरेंत्रिध, त्रिधसां, धसांरेंत्रिध, त्रिधसां, रेंत्रिधसां, रेंसां, रेंमंपरेंसां, रेंसां, त्रिधसां, रेंत्रिधप,

सा
धसांरेंत्रिधप, धरेंत्रिधप, त्रिधपमं, रेमंपमं, रेमंपमंरे, मंप रे, प रे ऽसा ॥

मं
रेत्रि॒ध॒प॒, त्रि॒ध॒प॒, त्रि॒ध॒प॒म॒, प॒, ध॒, त्रि॒ध॒, त्रि॒ध॒सा। रेमं, परेऽसा, रेमंप।

१ सरस्वती–झपताल

सखि सपने में आज। मधुवन में थी फिरत। मोहि देख आये हँसत।
कटि निकट जदुराज ॥ धृ० ॥
मनहरनि चले चाल–संग सोहत ब्रिजबाल।
अधरों पैं धरे अधर –ना धीर ना लाज।

मं		सां					मं		
रे	मं	प	त्रि	ध	मं	प	रे	–	सा
स	खि	स	प	ने	में	ऽ	आ	ऽ	ज
रे	मं	मं	मं	प	मं	प	ध	मं	प
म	धु	व	न	में	थीं	ऽ	फि	र	त
		सां			सां				
मं	प	त्रि	–	ध	त्रि	ध	त्रि	ध	सां
मो	हि	दे	ऽ	ख	आ	ये	हँ	स	त
		सां					मं		
ध	रें	त्रि	ध	प	मं	प	रे	–	सा
क	टि	नि	क	ट	य	दु	रा	ऽ	ज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

		सां	ध
म॑ प	ध त्रि ध	त्रि ध	सां – सां
म न	ह र नि	च ले	चा ऽ ल
सां			सां
त्रि ध	सां सां सां	सां रें	त्रि ध प
सं ग	सो ह त	त्रि ज	बा ऽ ल
		मं	
ध सां	रें मं पं	रें सां	त्रि ध प
अ ध	रों ऽ पै	ध रे	अ ध र
	सां		म॑
ध रें	त्रि ध प	म॑ प	रे – सा
ना ऽ	धी ऽ र	ना ऽ	ला ऽ ज

२ सरस्वती–त्रिताल

पिया तोरी लागी तिरछि नजरिया। मैं तो हरी नाज़ुक फुलरानी।
भँवर भावत तुम रंग के रसिया॥ ध्रु० ॥
तुमही घन मैं मयूरी घनश्याम। तुम ऋतु बसंत मैं तो कोयलिया॥

३	×	२	०
			म॑
			पि
म॑	म॑		सां
प रे – सा	रे – म॑ –	प प ध ध	त्रि ध प ध
या तो ऽ रि	ला ऽ गी ऽ	ति र छि न	ज रि या मैं
रें			
सां त्रि ध प	प ध म॑ प	रे म॑ पध म॑प	रे – सा –
ऽ तो ऽ ह	री ऽ ना ऽ	ज़ु क फुऽ लऽ	रा ऽ नी ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

	सां	सां	
सा रे मं प	त्रि ध मं प	ध रें त्रि ध	प मं प मं
अँ व र भा	व त तु म	रं ग के ऽ	र सि या तु

सां			सां
प ध त्रि ध	सां - त्रि ध	सां सां सां रें	त्रि ध सां रें
म हि घ न	मैं ऽ म यू	ऽ रि घ न	श्या ऽ म तु

मं			
मं पं मं रें	रें सां त्रि ध	रें त्रि ध प	प मं प
म ऋ तु ब	सं ऽ त मैं	ऽ तो को ऽ	य लि या

३ सरस्वती–त्रिताल

हँसत हँसत आये श्याम–कन्हैया डोले अंगनवा राजदुलारा।
बाजे झननन पग पायलिया ॥ ध्रु० ॥
आज सखी धन भाग खुलत मोरे। चितवन से मोहे लागी कटरिया ॥

०	३	×	२
		मं	
ध सां त्रि ध	प मं ध मं	प - मं प	रे ऽ सा ऽ
हँ ऽ स त	हँ स त आ	ये ऽ श्या ऽ	म् क न्है या
मं			
रे - मं मं	प ध मं प	ध सां त्रि ध	प मं प ऽ
डो ऽ ले अं	ग न वा ऽ	रा ऽ ज दु	ला ऽ रा ऽ
	सां	मं	
ध सां धसां रेंसां	त्रि ध प मं	रे मं (प) -	रे रे सा -
बा ऽ जेऽ ऽऽ	झ न न न	प ग पा ऽ	य लि या ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

						सां						सां			
प	-	प	प	ध	प	नि॒	ध	सां	-	सां	रें	नि॒	ध	सां	सां
आ	ऽ	ज	स	खी	ऽ	ध	न	भा	ऽ	ग	खु	ल	त	मो	रे

			म॑ं	सां								प			
रें	म॑ं	पं	रें	नि॒	ध	प	म॑	रे	म॑	प	ध	म॑	रे	सा	-
चि	त	व	न	से	ऽ	मो	हे	ला	ऽ	गि	क	ट	रि	या	ऽ

श्याम-केदार

(संस्कृत) मध्यमौ द्वौ निषादौ च येन गांधारवर्जितः ।
षाढवः श्यामकेदारः मांशो भास्कर-निर्मितः ॥

(हिन्दी) दो मध्यम दो नी लगें बरजत नित गंधार ।
मस वादी संवादितें कहो श्यामकेदार ॥

ग्वालियर के प्रख्यात दरबार गायक श्री कृष्णराव पंडित के नासिक-नगरनिवासी शिष्य गायनाचार्य प्रो० भास्करराव घोडके 'संगीत रत्न' ने इस मधुर राग की रचना की है । इसमें गंधार वर्जित तथा दो निषाद और दो मध्यम लिये जाते हैं । आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम है । शुद्ध निषाद सरल आरोहा-वरोह में है । कोमल निषाद धनि॒धप इस प्रकार वक्र रूप से अथवा सांनि॒धप इस प्रकार क्वचित् सरल भी अवरोह में लिया जाता है । सां,
म नि
रेम॑प, धनिसां इस प्रकार के आरोह में श्याम की छाया स्पष्ट दिखाई देती है । सारेसाम, म॑पम, धपम॑पम, म॑पधप, मऽरेसा इन स्वरों से केदार का भास होता है । किन्तु अवरोह में सांनिधनि॒धप, सांनि॒धप, नि॒धप, रेम॑पनि॒धप, नि,नि॒धप, सांनिधप, धनि॒धप, म॑पनि॒धपऽ, म॑पधप,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मऽरेसा, इस प्रकार कोमल निषाद की संगति आते ही केदार व श्याम नष्ट हो जाते हैं। श्याम, केदार, खंमाज, सरस्वती तथा शुद्ध सारंग इन रागों की मधुर छाया इस राग में बारंबार दिखाई देती है। जाति षाडव। वादी मध्यम, संवादी षड्ज। मुख्यांगः— सांनिधप, धनिधप, मंपधप, मऽरेसा, रेमंपऽ ॥ समय रात का दूसरा प्रहर ॥

आरोहावरोहः—सारेसाम, रेमं, प, धनिसां। सांनिधप, धनिधप, मंप, मंपधप, मऽरेसा ॥

स्वरविस्तारः—सा, रेसानि़, नि़सा, ध़नि़सा, ध़नि़सारेनि़, रेनि़, नि़सा, ध़नि़सा। रेनि़ नि़ध़, नि़ध़प़, प़नि़ध़, नि़, नि़सा। ध़नि़सा, ध़नि़सारेनि़, नि़, नि़, सारेनि़, सारेनि़ध़प़, नि़ध़प़, ध़नि़, ध़नि़सा सा, रे, रेसा, सारेसाम, म, मरे, सारेसा मरे, नि़ध़प़, मरे म, सारे,सा। सारेसा, म, म, साम, रेम, रेमनि़, नि़साम, सारेसाम, रेमं, रेम, रेमंरेम, रेमंमरेसा, नि़सा, रेमं, रेम, रेमं, रेमंप, मऽरेसा, रेमं, रेप, रेमंप, मंप, रेमंपध-ध-ध-ध, सा-ध, धमंप, रेमंपध, रेमं-रेप-रेध, नि़सारेमंपध, ध़ध, निध, निध, प, रेमंपधनिधप, रेमंपधनि, नि, नि, निध, निधप, रेमंपनिधप, रेमंपधमंप, मंपधपम, पधम, रेमंप, निधपधम, मंपधप, मंपधपम, रेमंपम, मंपम, पंमंम, मरेसा ॥ सा, रेमंप, निधप, धनिसांऽऽ ॥ पधमंपसां, रेंसां, रेंमंपंऽ मंऽरेंसां, रेंसां, रेसा, रेंसांनिधप, रेमपधनिधप, धनिसांरेंधनिधप, मंप-पंध-धनिधप, नि, नि, धप, मंपधंपम, रेमंप, पधमंप, निधपम, रेमंपम, मऽरेसा, सानि़ध़नि़ध़प़, नि़ध़प़, प़नि़ध़, नि़, नि़ध़, निध़, नि़साऽ ध़नि़सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ श्यामकेदार–त्रिताल

उमंड घुमंड घन आये सावन के ।
चंचल चपल सखि दामिनि दमके ॥धृ०॥
रिमक झिमक झिम बरसे बुँदवा ।
करत कलोल कीर बन मुरवा ॥
जाऊँ कैसे सखि आज घर पियाके ॥

०				३				×				२			
सां	नि	ध	नि॒	ध	प	मंप	धप	म	–	धप	म	रे	रे	सा	–
उ	मं	ड	घु	मं	ड	घऽ	नऽ	आ	ऽ	येऽ	सा	व	न	के	ऽ
सा	म	रे	मं	प	ध	मं	प	ध	नि	सां	रें	सां नि॒	ध	प	–
चं	च	ल	च	प	ल	स	खि	दा	ऽ	मि	नि	द	म	के	ऽ
प	प	प	प	ध	नि॒	ध	प	सां	सां	सां	सां	ध	नि	रें	सां
रि	म	क	झि	म	क	झि	म	ब	र	से	बूँ	ऽ	द	वा	ऽ
नि॒	नि॒	ध	ध	नि॒	ध	नि	सां	–	रें	नि	सां	ध	नि॒	ध	प
क	र	त	क	लो	ऽ	ल	की	ऽ	र	ब	न	मु	र	वा	ऽ
मं	–	प	प	धनि॒	धनि॒	मं	प	मंप	धप	म	धप	म	रे	सा	नि सा
जा	ऽ	ऊं	कै	ऽऽ	ऽसे	स	खि	आऽ	ऽऽ	ज	घऽ	र	पि	या	के

२ श्यामकेदार–झूमरा (ख्याल)

रसियो न माने सखी गिरिधर गोपाल ॥धृ०॥
काहे बजावत बीन, सुझत न कछु, करत बेहाल ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×	२	०	३
ऽनि॒ धप मंप धप	म - रे	मं प - म	रे - नि॒
ऽर सिया ऽऽ नऽ	मा ऽ ने	ऽ ऽ ऽ स	ऽ ऽ खी
- सा - (म)रे	मं प ध	- ध रें सां	नि॒ ध प
ऽ ऽ ऽ गि	रि ध र	ऽ गो ऽ पा	ऽ ल ऽ
मंप -प -ध मंप	सां - नि॒ध	निसां रेंसां नि॒ध प	ऽमं पधप म
ऽऽ ऽका ऽहे ऽब	जा ऽ वऽ	तऽ बीऽ ऽऽ न	ऽसु ऽऽऽ म्ह
रे (नि)सा सा रे	मं प प	- ध रें सां	नि॒ ध प मंप
त न क छु	क र त	ऽ बे ऽ हा	ऽ ल ऽ ऽऽ

नीलांबरी

(संस्कृत) नीलांबरी तथा ज्ञेया खरहर-प्रिय-मेलजा,
संपूर्णा रात्रिगारोहे गनिभ्यामपि वर्जिता॥

(हिन्दी) काफी के जब मेल में गनि बिन नित आरोहि।
रिप वादी समवादि में नीलांबरि सखि सोहि॥

लीलांबरी अथवा नीलांबरी काफी थाट का एक दाक्षिणात्य राग है। स्वर-सम्राट पं० ओंकारनाथजी ने इसे प्रचलित किया है॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवरोह में लगातार दो गंधार ही इसकी विशेषता हैं। कोमल गंधार तथा कोमल निषाद आरोहावरोह में सरल रूप से लिये जाते हैं। शुद्ध निषाद क्वचित् षड्ज के साथ लिया जाता है। आरोह में गंधार, निषाद वर्ज्य हैं। सा, रेमपधसां, मपधसां, निधसां इस प्रकार के आरोह में सिंधुरा की छाया दिखाई देती है। किन्तु सांनिध,

मगगुरे, इस प्रकार का वैचित्र्यपूर्ण अवरोह सिंधुरा से इस राग को अलग कर देता है। ऋषभ एक मधुर न्यास स्वर है। धनिगुरे, निगुरे, निरेगुम,–गुरे–गुरे इस प्रकार की स्वरमाला जयजयवन्ती का आभास उत्पन्न करती है। किन्तु जयजयवन्ती में शुद्ध गंधार प्रमुख स्वर है और नीलांबरी में कोमल गंधार प्रमुख स्वर है। जयजयवन्ती के ऋषभ को शुद्ध गंधार का कण लगाया जाता है। नीलांबरी के ऋषभ पर कोमल गंधार का आघात होता है। अर्थात् इसमें दो गंधार तथा दो ही निषाद हैं। अवरोह में पञ्चम दुर्बल है। अर्थात् जाति औडव संपूर्ण है। वादी

पंचम, संवादी ऋषभ, मुख्यांग रेमपध-मगगुरे, गुरेसानि, निसा, धनिगुरेऽऽ।

आरोहावरोहः—सा, रेम, पध, सां। रेंनिधप, मगगुरे,
रे नि
निऽनिसा, धनिगुरेऽऽ॥

स्वरविस्तारः—सा, निध, निध, निधसा, निसा, निसारे, निध, निध, निगुरे, गुरे, गुरेसा, निधसा, धनिगुरे। धनिगुरे, निगुरे, गुरे,

नि
गुरेसानिऽ, निसा, रेनिधप, धनिगुरे। धनिगुरे, निगुरे, गुरे, गगुरे

निगुरे, गुरे, गगुरे, निरेगुम, गुरे, गुरे, मगगुरे, गगुरे, गुरेसा, गुरेसानि, निसा, निधगुरे। रेनिधप, निधप, मप, मपधसा, निधसा,

निगुरे, रेगुरे, गगुरे, मगगु, मगगुरे, रेमपधमगगु, मगगुरे धऽमगगुरे, निरेगुम, गुरे, गुरे, गुरेसा, धनिगुरे,। सा, रेमपधसां, मपध, मपधसां, निधसां, रेंनिधसां, रेंनिधपमगगुरे, मपधसां, मपधसांरें, रेंगुरें, पधसांरेंगुरें, गुरें, गंगुरें, मंगंगु, मंगंगुरें, गुरें, गुरें, गुरेंसां, रेंगुमंगुरेंगु–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मंगुंरें, ऩिधसां, धऩिगुंरें, रेंऩिधसां। रेंऩिधप, मगग, ऩिधपमगगुरे, मगगुरे, गगुगगु, मगगुरे गरेसा, ऩिधसा, धऩिगुरे। सारेगु–सारेम–रेमप–मपध–पधसां–धसांरें–सांरेंगुं ऽऽ, सांरेंगुंसांरेंपंऽऽ, पंमंगंगुं मंगंगुंरें, गुंरें, गुंरेंसां, ऩिधसां, रेंऩिधमगग धमगगुरे, मगगुरे, गुरेसा, ऩिधसा, धऩिगुरे।

नीलाम्बरी–एकताल–ख्याल

मधुरी तुमरी सुरत नंद के दुलारे ॥धृ०॥
जसुमति के नयन के चांद अरु ब्रज-जनके अँखियन के तारे ॥

							–धऩिग
							ऽमऽधु
×		०	ऩिध	२		०	
रे–	––	रेगमगरेगमग	रेसाऩि–	––	ऩिसा	––	–सारे–
रीऽ	ऽऽ	तुऽऽऽऽऽऽऽ	मऽऽऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽमुरऽऽ
३		४		×		०	
ऩिध	प	–धसा–	––	धसारे–	–	रेमपधप	म
तऽ	ऽ	ऽनंऽऽ	ऽऽ	दऽऽऽ	ऽ	केऽऽऽदु	ला
२		०		३	ध	४	
मग	गुरे	–	रेगमगरेगमग	रेसाऩि	ऩिसा	–	मपधपध
ऽऽ	ऽऽ	ऽ	रेऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	जसुमतिऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०	
सां	–	ऩिध	सां	–	पधसांरेंगुंरें	–	रेंगुंमंगुंरेंगुंसंगुं
के	ऽ	नय	न	ऽ	केऽऽऽऽऽ	ऽ	चांऽऽऽऽऽऽऽऽ

३		४		×		०	
रेंसांनि	–	निसां	–	सांरें	ऩिध	प–	–
दृऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	व्रज	जन	केऽ	ऽ

२		०		३		४
पधपम	मग	गुरे	–	रेगुमगुरेगुमगु	रेसाऩिध़	ऩिसा
अँऽखि	यन	केऽ	ऽ	ताऽऽऽऽऽऽऽऽ	रेऽऽ	ऽऽ

२ नीलांबरी–त्रिताल

कजरा सोहत नैन सलोने ।
चंचल चपल च्योरत चित चतुरके
रसिक रानी राधा रुठे मनमें ॥धृ०॥
खंजन मीन अरु मृगमाला ।
छिपत सखी जलमें अरु बन में ॥

२				०				३				×			
ध़	ऩि	गु	रे	रेगु	मगु	रे	(ऩि) साऽ	ऩि	सा	ध़	ऩि	धऩि	ग	रे	ऽ
क	ज	रा	ऽ	सोऽ	ऽऽ	ह	तऽ	नैं	ऽ	न	स	लोऽ	ऽ	ने	ऽ
रे	म	प	धप	म	ग	गु	रे	सा	रे	ऩि	ध़	रे	ऩि	ध़	प़
चं	च	ल	चऽ	प	ल	च्यो	ऽ	र	त	चि	त	च	तु	रं	के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध़ सा ध़ सा	रे सा ग़ रे	रेम पध मप धप	म ग ग़ रे
र सि क रा	ऽ नि रा ऽ	धाऽ ऽऽ रुऽ ठेऽ	म न में ऽ

म - प ध	सां - नि़ ध	सां - सां रें	नि़ ध सां -
खं ऽ ज न	मी ऽ न अ	रू ऽ मृ ग	मा ऽ ला ऽ

प ध सां रें	गं़ रें सां नि़	ध प म ग	म ग ग़ रे
छि प त स	खी ऽ ज ल	में ऽ अ रु	ब न में ऽ

३ नीलांबरी—झपताल [लक्षणगीत]

नीलांबरी मधुर करे मेल स्वर-हार ।
संपूरन रागिनी आधार 'ओंकार' ॥धृ०॥
रिखब सहचर सोहत । अंश पंचम लसत ।
मधरात मन मोहत । द्वय निखद गंधार ॥

×		२			०		३		
ध़नि़	सारे	मग	रेग	-रे	सा	-	नि़	ध़	सा
नीऽ	ऽऽ	लांऽ	ऽऽ	ऽब	री	ऽ	म	धु	र
रे	नि़	ध़	सा	सा	रे	नि़	ध़	प़	प़
क	र	मे	ऽ	ल	स्व	र	हा	ऽ	र
म़	प़	ध़	नि़	ध़	सा़	-	नि़ध़	सा	-
सं	ऽ	पू	र	न	रा	ऽ	गिऽ	नी	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रेमपध	-म	ग	ग॒	रे	ग	ग॒	(म) ग॒	रे	सा
आऽऽऽ	ऽधा	ऽ	ऽ	र	ओं	ऽ	का	ऽ	र
म	प	ध	सां	सां	नि॒	ध	सां	सां	सां
रि	ख	ब	स	ह	च	र	सो	ह	त
ध	सां	रें	(मं) गं॒	गं	(गं॒) रें	सां	नि॒	ध	सां
अं	ऽ	श	पं	ऽ	च	म	ल	स	त
रें	पं	मं	गं	गं॒	रें	रें	नि॒	ध	सां
स्र	ध	रा	ऽ	त	म	न	मो	ह	त
रें	नि॒	ध	प	म	ग	ग॒	(म) ग॒	रे	सा
द्व	य	नि	ख	द	गं	ऽ	धा	ऽ	र

मालगुंजी

(संस्कृत) गमौ गरी सनी सधौ निसौ गमौ तथैव च ।
गन्धौभौ शोभनौ यत्र मालगुंजी च कीर्तिता ॥

(हिन्दी) चढत रिखब पञ्चम नहीं दोउ निखाद गंधार ।
मालगुंजरी करत है श्रंगार की भरमार ॥

"'मालगुंज' 'मालगुंजी' अथवा 'मालगुंजरी' यह काफी मेलोत्पन्न राग है । पूज्य पं० नारायणराव जी व्यास ने यह मधुर राग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रचलित किया। यह बागेश्री अंग से गाया जाता है। बागेश्री के आरोह में शुद्ध गंधार, शुद्ध निषाद लेने से इसकी रचना होती है। आरोह में ऋषभ दुर्बल और पञ्चम वर्जित है। अवरोह में निषाद कोमल तथा पमगमग॒रेसा अथवा पमगग॒रेसा इस प्रकार वक्र या लगातार पद्धति से दोनों ही गंधार लिये जाते हैं। अर्थात् अवरोह बागेश्री से कुछ वक्र है। क्वचित् अपवाद रूप से ध़नि॒सागऽम, इस प्रकार आरोह में कोमल गंधार तथा धनि॒सांरेंगंसां, इस प्रकार अवरोह में शुद्ध गंधार का भी प्रयोग किया जाता है। क्वचित् अपवाद रूप में ही रेमपधऽम इस प्रकार आरोह में गंधार वर्जित कर के पञ्चम भी लिया जाता है। इसका उठाव प्रायः नि॒सा, धनि॒सागऽमऽ इस प्रकार मंद्र धैवत से शुरू किया जाता है। अन्तरे का उठाव गमधनिसां, निसां, गंमंगं॒रें, निसां, नि॒धऽ, इस प्रकार बागेश्री अंग से लिया जाता है। वादी मध्यम, संवादी षड्ज, गायन समय रात्रि। मुख्यांग:—गमग॒ऽरेसा, नि॒सा ध़नि॒सागऽमऽ।

हंसकंकणी और पटमंजरी के यही स्वर हैं। किन्तु ये दोनों ही राग धनाश्री अंग के हैं। मालगुंजरी बागेश्री अंग की है। हंसकंकणी के आरोह में, ऋषभ, धैवत वर्जित हैं, पंचम प्रधान स्वर है। परन्तु मालगुंजरी में पंचम दुर्बल और धैवत तथा मध्यम प्रबल हैं। हंसकंकणी के अवरोह में सांनि॒धप मपमगमऽऽपग॒रेसा इस प्रकार मध्यम पर विशिष्ट प्रकार का न्यास तथा पग संगति बारबार दिखाई जाती है। अर्थात् हंसकंकणी का अवरोह बहुत ही वक्र है।

पटमंजरी में पंचम का स्थान आरोह तथा अवरोह में वक्र है। शुद्ध निषाद और मंद्र पंचम मधुर न्यास स्वर हैं, बाकी चलन हंसकंकणी के अनुसार ही है। अतः इन दोनों ही रागों से मालगुंजी अलग है।

मालगुंजी का आरोहावरोह:—नि॒सा, ध़नि॒साग, नि म, ध, निसां, धनि॒सांरेंगंसां, गंमंगं, रेंसां, निसांनि॒धपम, गमग॒ऽरेसा, ध़नि॒सागऽम।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मालगुंजी का स्वरविस्तारः—सा, ऩिसा, धऩिसा, ऩिसा, धऩिसागऽऽ, गम, रेगम, गम, गमगऽरेसा, ऩिसा, धऩिसागऽमऽऽ। गम, सागऽम, रेगम, गम, धऽम, गमधऽम, मधऽम, रेमपधऽऽम पम, गम, गमगऽऽरेसा, ऩिसा, धऩिसागऽमऽऽ। गम, गमध, सागमध, ऩिसा, धऩिसागमध, ऩिध, गमऩिध, मऩिध, ऩिध, ऩिधपम, रेमपधऽम, ऩिधपम, गम, रेगम; ग,गुरेसा, ऩिसा, धऩिसागऽऽम। गमधनिसां, निसां, धनिसां, मधनिसांधनिसां, गंमंगुंरेंसां, धनिसांरेंगंसां, गंमंगुंऽरेंसां, निसांऩिध, ऩिधपम, गम, गमगुऽरेसा, ऩिसा, धऩिसागमऽऽ।

हंसकंकणी का आरोहावरोहः—ऩिसागऽसा, गमप, मपनि, सां, पनिसांगुं, रेंसां, ऩिधप, मपगऽमऽऽ पगुरेसा, ऩिसागऽऽ।

स्वरविस्तारः—सा, ऩिसाग, गऽसा, ऩिसाग, साग, मग, ऩिसागऽमग, मपगुऽरेसा, ऩिसाग। रेऩिसाग, साग, मग, मपग, पग, मपगऽमऽ, पगऽऽम, पगुऽऽरेसा। ऩिसाग, साग, मऽऽ, मप, गमप, सागमप, ऩिसागमप, प, पप, गमपगमप, सागमप, गमऽऽगऽ, गऽ, गम, पग, मपग पगुऽरेसा, ऩिसाग, मप, ऩिधप, मपनिऽऽसां, पनिऽसां, रेंसां, गुंऽरेंसां, गंऽमंपं गुंऽरेंसां, रेंसां, ऩिधप, सांऩिधप, सांध, मपगमऽऽ, ऩिधप, मपगम, ऩिसागमप, गऽमऽऽ पऽगुरेसा; ऩिसागऽऽ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पटमंजरी का आरोहावरोहः— सापृ, निृसा, गमधऽम, पनिऽऽसां; निधपम, निऽऽसां। सां, निधऽम, पऽगुरेसानिृ, पृ, निृसा।

पटमंजरी का स्वरविस्तारः— सा, निृसा पृ, पृनिृसा, गुरेसा, निृऽपृ, पृनिृसा । पृनिृसा, निृ, निृसा, निृधृमृपृ, निृसा । पृनिृसा, गुरेसा, पृनिृसागुरेसा, गऽमप, गुरेसानिृ, पृ, पृनिृसा। निृसा, निृसाग, पृ, पृनिृसाग, मग, म, मगुरे, गम, रेगम, सगमपऽ गुरे गम, सा पृऽनिृ-ऽसा, गुरेसा, गुरेगम, धऽम गमधऽम निधऽम, पऽगुरेसानिृ, पृ, पृनिृसा। निृसा, गमध, मपगुरेगम, पृनिृसा, गुरेसा, गमध, निध, मधनिध, निधऽम, मपनिऽऽसां, पनिसां, निधमपनिऽसां गंऽमंपं गुंरेंसांनि, पनिसां, रेंसां, रेंनिसां, निधऽऽम, पऽगुरेसानिृ, पृ, पृनिृसा, निृधृऽमृपृ, निृसा, गऽमपऽगुरेसानिृ, पृ, पृ, पृनिृ, सा।

१ मालगुञ्जी—झपताल

चांदनी आई रात, मधुवन की सखि सैर, मोरे मन में आज भावत ॥धृ०॥
सोहे सुरस सौगंध, मोतियन की गूँद गूँद, चले पवन मंद मंद
न्यारी बहार सखि सोहत ॥

×		२			०		३		
सा ग	–	रेगम	गु	रे	निृ	सा	धृ	निृ	सा
चां	ऽ	दृऽऽ	नी	ऽ	आ	ई	रा	ऽ	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे	म	प	ध	म	नि॒	ध	प	ग	म
म	धु	ब	न	कि	स	खि	सै	ऽ	र
ग	म	ग॒	रे	सा	नि़॒	सा	ध़	नि़॒	सा
मो	रे	म	न	में	आ	ज	भा	व	त
ग	म	म	नि॒	ध	नि॒	ध	नि	सां	सां
सो	हे	सु	र	स	सौ	ऽ	गं	ऽ	ध
नि॒	ध	नि	सां	सां	गं	मं	ग॒ं	रें	सां
मो	ति	य	न	की	गूं	[illegible]	गूं	ऽ	द
ध	नि॒	सां	गं	मं	गं	मं	ग॒ं	रें	सां
च	ले	प	व	न	मं	द	मं	ऽ	द
नि	सां	नि॒	ध	पम	ग	म	ग॒	रे	सा
न्या	रि	ब	ह	रऽ	स	खि	सो	ह	त

२ मालगुंजी—त्रिताल

खेलो श्यामसुन्दर तुम होरी,
कंचन की पिचकारी रंगभरी।
और रंगभरीली मेरी भारी ॥ध्रु०॥
खेलत खेलत सुध गई मोरी सारी।
भीग गई मोरी चुनरी मुरारी।
डारुंगी केसर, रंग,
काहेकी लाज च्योरी बनवारी ? ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×	२	०	३
			नि़ सा ध़ ऩि़
			खे ऽ लो
सा ग – ग	म ध धऩि सांऩि	ध प म ग॒	रेसा ध ध ध
श्या ऽ म सुं	द र तुऽ मऽ	हो ऽ री ऽ	ऽऽ कं च न
धऩि सांऩि ध प	म ग ग रेग	म पध ग म	– सा ध़ ऩि़
कीऽ ऽऽ पि च	का ऽ रि रंऽ	ऽ गऽ भ री	ऽ औ र रं
सा ग म ध	धऩि सांऩि ध प	गम पम ग॒ रे	सा
ग भ रि ली	मेऽ ऽऽ री ऽ	झाऽ ऽऽ री ऽ	ऽ
		ग॒ म ध ऩि	सां ऽ सां सां
		खे ऽ ल त	खे ऽ ल त
गं मं ग़ुं रें	नि सां ऩि ध	ध – प ध	धऩि सांऩि ध प
सु धं ग ई	मो री सा री	भी ऽ ग ग	ईऽ ऽऽ मो री
म ग ग रे	गम पध ग म	ऩि़ सा ध़ ऩि़	सा ग म ध
चु न रि मु	राऽ ऽऽ री –	डा रु गी के	स र रं ग
धनि सांऩि ध पध	ऩिध पम ग म	गम गम ग॒ रे	सा
काऽ हेऽ कि लाऽ	ऽऽ जऽ च्यो री	बऽ नऽ वा ऽ	री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ हंसकंकणी–त्रिताल

कुहू कुहू बोले बन की कोयलिया। ऋतु बसंत मधुबन में झुलना झूले।
और झुलत मोरा मनही रसिया ॥धृ०॥
फूले चंपा फूले मालती। और फुलत मोरा रसीला जोबनवा॥

३				×				२				०			
सा	रे	ऩि	सा	ग	–	ग	सा	सा	ग	म	प	(म)ग	रे	सा	–
कु	हू	कु	हू	बो	ऽ	ले	ऽ	ब	न	कि	को	य	लि	या	ऽ
म	ग	म	ऩि	ध	प	म	प	ग	ग	ग	सा	साग	मप	ग	म
ऋ	तु	ब	सं	ऽ	त	म	धु	ब	न	में	झु	लऽ	नाऽ	झु	ले
(म)सा	रे	ऩि	सा	ग	ग	म	म	सा	ग	म	प	(म)ग	रे	सा	–
औ	ऽ	र	झु	ल	त	मो	रा	म	न	ही	ऽ	र	सि	या	ऽ
म	प	नि	–	सां	–	सां	सां	नि	सां	(म)गं	रें	रें	सां	ऩिध	प
फू	ऽ	ले	ऽ	चं	ऽ	पा	ऽ	फू	ऽ	ले	मा	ऽ	ल	तीऽ	ऽ
म	ग	म	ऩि	ध	प	ग	म	सा	ग	म	प	(म)ग	रे	सा	ऽ
औ	ऽ	र	फु	ल	त	मो	रा	र	सि	ला	जो	ब	न	वा	ऽ

१ पटमंजरी–त्रिताल

धीट लंगरवा रोकत टोकत, आड़ोही डोलत छेड़त नटखट ॥धृ०॥
पनिया भरन मैं तो आज न जाऊँ, तिरछी नजरिया नजर लुभावत ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×	२	०	३
[सा] प़ – नि़॒ नि़	सा सा [नि़] सा –	सा ग म पम	ग॒ रे सा – नि़ –
धी ऽ ट लं	ग र वा ऽ	रो ऽ क तऽ	टो ऽ कऽ तऽ
ग म ध ध	नि॒ ध म प	ग – म पम	ग॒ रे – सा – नि़ –
आ ऽ ड़ो हि	डो ऽ ल त	छे ऽ ड़ ऽत	न टऽ खऽ टऽ
ग म ध ध	म प ग॒ रे	म प नि नि	सां – सां –
प नि या भ	र न मैं तो	आ ऽ ज न	जा ऽ ऊँ ऽ
सां गं मं पंमं	गं॒ रें सां नि	नि॒ ध म पम	ग॒ रे सा नि़
ति र छि नऽ	ज रि या ऽ	न ज र लुऽ	भा ऽ व त

——

हंसमंजरी

(संस्कृत) गांधारेणोज्झिता पांशा खरहरप्रियमेलजा ।
निशादान्दौलनैर्गेया निशायाम् हंसमञ्जरी ॥

(हिन्दी) कोमल निखाद स्रुयम, सुर गंधार नहीं लाग ।
प रि वादी संवादितें हंसमञ्जरी राग ॥

हंसमञ्जरी एक अत्यन्त मधुर काफी मेलोत्पन्न राग है। इसमें गांधार वर्जित, निषाद केवल कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। निषाद पर, षड्ज का आन्दोलन अत्यन्त रक्तिदायक है। अवरोह में निषाद वक्र होने से सिंधुरा की झलक इस राग में बारम्बार दिखाई देती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

झिंझोटी

सां सां म
रेमपधनि ऽ धप, धऽमप, मपधसां ये सिंधुरा के ही टुकड़े हैं। किन्तु
म म
अवरोह में निसांधप, धऽमप, मपधप, मरेनि़ऽ, नि़सा इस प्रकार का निषाद, गांधार वर्जित अवरोह हंसमञ्जरी को सिंधुरा से बिल्कुल अलग कर देता है। मंद्र निषाद एक महत्व का न्यास स्वर है। गोरख के भी यही स्वर हैं। किन्तु वादी भेद से हंसमञ्जरी गोरख से बिलकुल भिन्न रहती है। गोरख में पञ्चम दुर्बल है, यही पञ्चम हंसमञ्जरी में वादी स्वर है। काफी अंग इस राग में स्पष्टतया दिखाई देता है। संवादी
सां सां
ऋषभ, गायन समय दिन का तृतीय प्रहर है। मुख्यांग:—रेमपधनि ऽ ऽधप
म
धऽमप मपधप मरे नि़ऽसा।

सां सां
आरोहावरोह:—सा, रेमपधनि ऽ ऽधप, धऽमप, मपधसां। रेंनि,
सा
सांधऽप, मपधपमरे, नि़ऽसा॥

सा सा नि
स्वरविस्तार:—सा, नि़, नि़, नि़सा। रेनि़, सारेनि़, रेनि़, साध़ऽप़,
सा सा सा
म़प़ध़प़, म़प़ध़नि़ ऽ ऽध़, प़, प़म़प़ध़, म़प़ध़सा। नि़ध़, सा, रेसा नि़ध़सा,
सा सा सा नि
रेनि़ध़सा, म़प़ध़सा, नि़ध़सा, रेनि़, नि़ध़ प़, म़प़ध़नि़, नि़ध़सा। रेसा, रेम, नि़, रेमनि़, नि़ध़, नि़ध़सा, रेम, सारेम, रेम, रेमप, नि़प़सा,
म
रेमपरेमप, रेपऽमप, मरे, नि़साध़ऽप़, प़ प मप, धप, मधप, धऽमप,
म रे
सा, रेमप, रेमप, रेमपधमप, धऽमपऽ, मरे, रेमपधमप, मरे, धऽमपऽ-
म
मरे, मरे, नि़, नि़, नि़सा, सा, रेमपध, ध, धऽमप, रेमपधऽमप,
नि नि नि सां सां सां सां सां सां
रेमपध ध-ध-धऽमप, साध-ध-मप-नि ऽ ऽधप, रेमपधनि ऽ ऽ, नि ऽ ऽ,
सां सां म रे सा सा
नि ऽ ऽधप, धऽमप, मपधपमरे, धऽमपरे, परे, मरेनि़, नि़, नि़सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां सां
सा, रेमपधत्रि ऽ ऽ धप, मपधसां, त्रिधसां, पधमपसां, रेंसां, रेंमंरेंसां,
सां सां सां सां सां म
रेंत्रिसां, त्रि, त्रि, त्रि, सांधप, रेमपधत्रि ऽ धप, धऽमप, मपधत्रिसांऽप,
म रे सा
त्रिसांऽप, धऽमप, मपधपमरेत्रि, रेमत्रि, मत्रि, त्रि, त्रि ऽत्रिसा ॥

१. हंसमञ्जरी–त्रिताल

गगरी भरन नहीं देत श्याम मोरी ।
मधुरस की मोसे बतियाँ करत सखी,
और करत मग में बरजोरी ॥ ध्रु० ॥
ब्रिज युवती जन आवत जावत,
और देत हँस हँस कर तारी ॥

०	३	×	२
रेम रेम रेम मप	मप पध त्रि सां	सां – प मप	धप म रे त्रिसा
गऽ गऽ रीऽ भऽ	रऽ नऽ न हीं	दे ऽ त श्याऽ	ऽऽ म मो रीऽ
	सां सां	सां सां सां	
सां रें रें मं	रें सां त्रि त्रि	त्रि त्रि त्रि सांत्रि	ध ध प प
म धु र स	की ऽ स खि	ब ति यां कऽ	र त मो से
रे म रे मे	प ध त्रि सां	प ऽ मप धप	म रे त्रि सा
औ ऽ र क	र त म ग	में ऽ बऽ रऽ	जो ऽ री ऽ
म म प ध	सां – सां सां	रें मं रें सां	त्रि ध त्रि सां
ब्रि ज यु व	ती ऽ ज न	आ ऽ व त	जा ऽ व त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	-	ध	ध	ऩि	सां	ध	प	म	प	म	प	म	रे	ऩि	सा
औ	ऽ	र	दे	ऽ	त	हँ	स	हँ	स	क	र	ता	ऽ	री	ऽ

२ हंसमंजरी–एकताल

आज आये नन्द के लाल।
सखि गई मोरी सबही भूल॥
निरख निरख मुखमंडल। धृ०।
लोचन सोहत विशाल॥
सोहत अरु बनकी माल।
हँसत डारत सखी गुलाल॥

×		०		२		०		३		४	
रे	म	प	धनि	सांनि	धप	मप	धप	म	रे	ऩि	सा
आ	ऽ	ज	आऽ	ऽऽ	येऽ	नंऽ	दऽ	कं	ला	ऽ	ल
ध	ध	ऩि	सां	ध	प	ऩि	सां	ध	प	-	म
स	खि	ग	ई	मैं	तो	स	ब	हि	भू	ऽ	ल
रे	म	प	धऩि	सांऩि	धप	मप	धप	म	रे	ऩि	सा
नि	र	ख	निऽ	रऽ	खऽ	मुऽ	खऽ	मं	ऽ	ड	ल
म	प	सां	सां	सां	-	म्रां	सां	रें	ऩि	सां	सां
लो	ऽ	च	न	सो	ऽ	ह	त	वि	शा	ल	ऽ
रें	मं	रें	सां	ऩि	ऩि	ऩि	ऩि	सांऩि	ध	प	प
सो	ऽ	ह	त	अ	रु	ब	न	कीऽ	मा	ऽ	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध ध	ऩि ऩिसां	ध प	मप धप	म रे	ऩि सां
हँ ऽस	त डाऽ	र त	सऽ खीऽ	गु ला	ऽ ल

३ हंसमञ्जरी–ताल भानुमती [लक्षण-गीत]

हंसमञ्जरी राग। मधुर धरत मृदु निखद सुर गांधार नहीं लाग॥
करत सुर अंश पंचम। समवादत सुर प्रथम।
रजनी समय सोहे शांत। चित चयोरत धन भाग॥

[भानुमती यह अप्रचलित ताल है। मात्रा ११, भाग ४, सम १, काल १, ताली २।]

×	२	३	४	५	६	०	८	९	१०	११
धीं	तिरकिट	धीं	धागे	तिरकिट	तूना	क	त्ता	नाधीं	तिरकिट	धीना

ऩि – ऩि	सां सां सां		
ध – ध	ऩि – – ध	प –	ध म प
हं ऽ स	म ऽ ऽ ञ्ज	री ऽ	रा ऽ ग

म ध प	ध म प	ध प	म रे ऩिसा
म धु र	ध र त	मृ दु	नि ख दऽ

म		सां – ऩि	
रे म प	ध ध ध	ऩि सां	ध म प
सु र गं	धा ऽ र	न हीं	ला ऽ ग

ध	सां सां		ध
म प ध	ऩि ऩि ऩि	सां सां	ऩि सां सां
क र त	सु र अं	ऽ श	पं च म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

									सा		
त्रि	सां	ध	म	प	प	म		रे	त्रि	सा	सा
र	ज	नि	स	म	य	सो		हे	शां	ऽ	त
			नि	नि	नि	सां					
रे	म	म	ध	ध	ध	त्रि		सां	ध	म	प
चि	त	च्यो	ऽ	र	त	ध		न	शा	ऽ	ग

शिवराज

(संस्कृत) रागे तु शिवराजे च तीव्रास्तु रिमनि स्वराः ।
गधौ मृद्व पसौ नित्यं वादिनौ चापराण्हगः ॥

करुण रस प्रधान राग 'शिवराज' में मध्यम–तीव्र, गांधार–धैवत कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसके आरोह में ऋषभ-धैवत वर्ज्य हैं, इसलिए जाति औडवसम्पूर्ण है । निसागम॑ प, गम॑पनि, आदि स्वरसङ्गति से मुलतानी का भास होता है। तथापि मुलतानी का ऋषभ कोमल है और शिवराज का है शुद्ध । सागरेसा निधप इन स्वरों से पीलू का भास होता है । सिंहेन्द्रमध्यमा राग के भी यही स्वर हैं। किन्तु सिंहेन्द्रमध्यमा उत्तरांग प्रधान होने से सोहनी राग का समप्रकृतिक प्रकार है। शिवराज पीलू प्रधान राग है, अवरोह में ऋषभ पर न्यास अत्यंत रक्तिदायक है। वादी पंचम, सम्वादी षड्ज है। समय शाम के पहिले। मुख्यांगः—गम॑पनिधप, म॑गरेऽसा ।

आरोहावरोहः—निसागम॑प, निसां, सां, नि, ध, प, म॑गरे, म॑ग, म॑गरे, सा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरविस्तारः—सा, (सा) रेसा नि़, नि़सा । नि़सा, ग॒, रे, सा, नि़, साग॒, रे सा, नि़ग॒रेसा, रेसा, रेनि़सा, नि़, रेसा, रेसारे, नि़, रेसा-नि़धु॒प़, धु॒ प़, मंप़नि़, ग॒मंप़नि़, नि़, नि़सा । नि़साग॒ऽरेसा, रेग॒रे, ग॒रे, ग॒रेग॒ सा, रेग॒रेसा, मंग॒रे, मंग॒रेसा, सामंग॒रे, सानि़धु॒प़ प़ग॒रे ग॒रेमंग॒-रेसा । नि़साग॒मंप, ग॒मंप-ग॒मंप, मंपग॒मंप, साग॒मंप ग॒मंप, मंग॒-पमं-धु॒प, निधु॒प, ग॒मंपनिधु॒प, मंग॒, मंग॒, मंग॒रेसा, नि़साग॒मंप ऽ ऽ । ग॒-मंपनि, नि़–ग॒मंपनि, मंपनि, नि़साग॒मंपमंग॒, मंपनि, ग॒मंपनि, नि़–, निधु॒–, निसां, गमंपनिसां, निसांग॒ंरेंसां, मंग॒ं, मंग॒ं, मंग॒ं, रें, सां । निसांग॒ंमंपं,-मंग॒ं; मंग॒ंरेंसां, रेंसांनिधु॒, प, ग॒मंपनिधु॒प, मंग॒, मंग॒, मंग॒रे, रेमंग॒रे, मंग॒, रे, सा । नि़, धु॒प़, मंप़नि़ ग॒मंप़नि़, सा ।

१ शिवराज–एकताल (ख्याल)

शिवराज आये नरमुंड की माल गले सोहत ।
सखी गौर गौरी पलख निहारत मनमों हरखत ॥

४		×		०		२	
––ग॒मं	धु॒पमंपरेऽसा	रे	–	सा–नि़	साग॒–मं	प	–
ऽऽशिऽ	वऽऽराऽज	आ	ऽ	येऽऽन	रमुंऽड	की	ऽ

०		३		४	
ग॒मंपनि–	धु॒–प–	ग॒मंप–	ग॒–सारे	सा–ग॒मं	
माऽऽऽ	ऽऽलऽ	गलेऽऽ	सोऽहऽ	तऽशिऽ	वराज ··

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४		×		०नि			२ सां	
---ग	मंपनिनि	सां	-	सां		पनिसांगं	रेंसां	सां
SSSस	खीगौSर	गौ	S	री		पलखनि	हाS	S

०		३	मं	४	
निसांरेंसांनिध	प	गमं(प)-	-गगरे-	सा-गमं	
रSSSSSS	त	मनमोंS	SहरखS	तSशिS	वराज

२ शिवराज (त्रिताल)

बिनति मानो तुम पिया मोरी, मग में रोकत नित लाज न आई,

सांझ भई देखत ब्रिज-नारी ॥ध्रु०॥

अब छाँड़ दे रे मोहे कान्ह, दरस देऊँ तुम्हें बार-बार नित,

सुन्दरश्याम आई शरण तिहारी ॥

३				×				२				०			ग
															बि
मं	प	नि	धु	प	मं	मं	गु	गुम	पधु	पमं	गुमं	पमं	गुरे	सानि़	ग
न	ति	मा	S	नो	S	तु	म	पिS	SS	याS	SS	मोS	SS	रीS	म
रे	सा	रे	नि़	सा	सा	नि़	ध़	नि़ध़	नि़सा	रेसा		नि़	ध़	प़	ग़
ग	में	रो	S	क	त	नि	त	लाS	जS	नS		आ	S	ई	सां
मं़	प़	नि़	रे़	सा	-	सां	नि़	ग	मं	प	नि	धु	प	मं	ग
S	झ	S	भ	ई	S	दे	S	ख	त	ब्रि	ज	ना	S	रि	अ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म॑	प	नि	नि	सां	–	नि	नि	सां	–	नि	सां	गं॒	रें	सां	ध
ब	छां	ऽ	ड़	दे	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	हे	ऽ	का	ऽ	न्ह	द
नि	सां	गं॒	रें	सां	–	नि	ध॒	ध॒नि	सांनि	ध॒	ध॒नि	सांनि	ध॒	निध॒	प
र्	स	दे	ऽ	ऊं	ऽ	तु	म्हें	बाऽ	ऽऽ	र	बाऽ	ऽऽ	र	निऽ	त
ग॒	म॑	प	नि	ध॒	प	म॑	ग॒	ग॒म॑	पध	पम॑	ग॒रे	म॑	ग॒रे	सानि़	
सु	न्द	र	श्या	ऽ	म	आ	ई	शऽ	रऽ	णऽ	तिऽ	हाऽ	ऽऽ	रीऽ	

३ शिवराज—झपताल (लक्षणगीत)

'शिवराज' बुध लिखत, सम्पूरन मेल मधु समझ मध्यम तीवर,
धग मृदुल स्वर सोहत ॥धृ०॥
अंश पंचम लसत, षड्ज सुर समबादत,
भेद गुनी शास्त्र-मत, रसिकवर नित गात ॥

×		२			०		३		
ग॒	म॑	प	निध॒	प	म॑	ग॒	ग॒	रे	सा
शि	व	रा	ऽऽ	ज	बु	ध	लि	ख	त
नि़	ध़	नि़	सा	रे	नि़	सा	नि़	ध़	प़
सं	ऽ	पू	र	न	मे	ऽ	ल	म	धु
प़	म़॑	प़	ध़	ध़	नि़	नि़	सा	रे	सा
स	म	झ	म	ऽ	ध्य	म	ती	व	र
ग॒	म॑	प	निध॒	प	म॑	ग॒	ग॒	रे	सा
ध	ग	मृ	दुऽ	ल	स्व	र	सो	ह	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		२			०		३		
प	-	मं	ग	मं	प	नि	नि	सां	सां
अं	ऽ	श	पं	ऽ	च	म	ल	स	त
ध	नि	सांरें	गुंरें	सां	धनि	सांनि	ध	प	म
ष	ऽ	ड्ज	सुऽ	र	सऽ	मऽ	वा	द	त
ध	नि	सां	गं	रें	धनि	सांनि	नि	ध	प
भे	ऽ	द	गु	नि	शाऽ	ऽऽ	स्व	म	त
ग	म	प	निधु	प	मं	ग	ग	रे	सा
र	सि	क	वऽ	र	नि	त	गा	ऽ	त

मधुवन्ती अर्थात् अम्बिका

(संस्कृत) गांधारः कोमलोऽप्यत्र पञ्चमांशाऽपराण्हगा ।
तीव्रा च मध्यमे, पूर्णाऽम्बिका वा मधुमालती ॥

(हिन्दी) चढत न रिघ कोमल गा मध्यम तीवर जानि ।
सप संवादी वादितें मधुवन्ती मधुरानि ॥

"मधुवन्ती", "मधुमंती" अथवा "मधुमालती" यह एक मुलतानी ढंग का मधुर राग है। गौरीपुर के प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायतखां ने इसको अपनी जन्मदात्री के शुभनाम पर 'अम्बिका' नाम दिया, जिसे कोल्हापुर के प्रसिद्ध गायनाचार्य श्रीयुत पाध्येबोवा ने प्रचलित किया। इसमें गांधार कोमल, मध्यम तीव्र तथा निषाद शुद्ध है। आरोह में ऋषभ, धैवत वर्जित हैं। अवरोह सरल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं   मं
तथा संपूर्ण है। नि़सा, ग़, मं, प अथवा नि़सामंग़प, तथा ग़मं, पनि, सां इस प्रकार का आरोह, तीव्र मध्यम का गांधार पर आघात तथा
मं
अवरोह में पऽ ग़ संगति बहुत कुछ मुलतानी का ही आभास उत्पन्न करती है। किन्तु आरोह में धैवत तथा ऋषभ शुद्ध आते ही मुलतानी से यह राग पृथकता पाता है। उत्तरांग में शुद्ध निषाद एक महत्वपूर्ण विश्रांति स्थान होने से पटदीप का भास हुआ करता है। किन्तु तीव्र मध्यम आते ही पटदीप नष्ट होता है। तीव्र मध्यम और शुद्ध निषाद महत्व के न्यास स्वर हैं। रेंनिधप इस प्रकार के अवरोह से कल्याण
सा
की छाया दिखाई देती है, किन्तु आगे मं, ग़, रेसा इस प्रकार कोमल गांधार आते ही कल्याण लुप्त होता है। संक्षिप्त में यही कहना उचित होगा कि कल्याण, पीलू, मुल्तानी, पटदीप आदि विविध रागों का मधुर तिरोभाव इस राग में बारंबार दिखाई देने से यह राग अपने नाम के अनुसार ही बहुत चित्ताकर्षक बन पड़ा है। वादी पञ्चम, संवादी
मं
षड्ज, समय दिन का तीसरा प्रहर। मुख्यांगः—ग़मं, पनिऽधप, मं, ग़, रे, सा।

मं   सा
आरोहावरोहः-नि़सा, ग़मंप, नि, सां। सांनिध, प, मं, ग़, रे, सा।

सा
स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़सा, नि़, प़नि़, प़नि़, प़नि़सा। प़नि़सा-
ग़ ग़
नि़ध़प़, नि़, प़नि़ मं़प़नि़, प़नि़सा। प़नि़सा, रे, रे नि़, प़नि़, प़नि़सारे-
मं   मं   मं
सानि़, प़नि़, मं़प़नि़, प़नि़सा। प़नि़सा ग़, प़नि़सानि़ ग़, नि़ग़, नि़ध़प़,
मं   मं ग़   मं
प़ ग़, मंग़, मंग़रेसानि़, प़नि़, प़नि़सा। नि़सा ग़, मं, प़नि़सा ग़रेसानि़,
सा   सा मं   मं ग़   मं ग़
मं, प़नि़सा मं, मंग़रेसानि़, मं, ग़मं, निंमं, ग़ मं, मंप, ग़मं प, नि़सा
मं सा   मं   मं   प
ग़ मं, मंप, ग़मंप गमंप, धप, निधप, धमं, ग़प, मंग़रेसानि़, निधप, प़,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पनिसा ॥ निसा गुमंपनि, गुमंपनि, मंपनि, निधपऽ, मं, गुमंपनि, निधप गुरेसानि, निनि, पनि, पनिसांऽऽ। पनिसां गुंरेंसां, मंगुंरेंसां, निमंगुंरेंसां, मनिमंगुंरेंसां, रेंसां, रेंसांनि, रेंनिधप, नि, नि, नि, नि, पनिसां, पनिसांनिध, रें, नि, धप, मं, मंप, मंगुरेसानि, पनि, पनिसा। सानिधप, नि, सा, गुमंप-गु, रे, सा।

१ मधुवन्ती–झपताल

आज नवनागरी, बनमाँही देखी री। नव नवल करे सिंगार।
रूपगुण–सागरी ॥
मुख चन्द्रकी ज्योत, करे चकोर मदमात। गौर तनु चली चपल।
लखि लजत बिजरी ॥

×		२			०		३			
सा मं	–	प	ध	प	मं	प	मं गु	सा रे	सा	
आ	ऽ	ज	न	व	ना	ऽ	ग	री	ऽ	
मं	मं	प	–	प	ध	–	मं	–	प	
ब	न	माँ	ऽ	हि	दे	ऽ	खी	ऽ	री	
गु	मं	प	नि	नि	नि	सां	नि	ध	प	
न	व	न	व	ल	क	रे	सिं	गा	र	
मं गु	मं	प	नि	ध	मं	प	मं गु	रे	सा	
रू	ऽ	प	गु	न	सा	ऽ	ग	री	ऽ	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(मं)ग मं	प नि नि	सां –	नि सां सां
मु ख	चं ऽ द्र	की ऽ	ज्यो ऽ त
प नि	सां (मं)गं रें	नि सां	नि ध प
क रे	च को र	म द	मा ऽ त
(मं)ग मं	प नि सां	रें नि	ध मं प
गौ ऽ	र त न	च लि	च प ल
(मं)ग मं	प नि ध	मं प	(मं)ग रे सा
ल खि	ल ज त	बि ज	री ऽ ऽ

२ मधुवन्ती–त्रिताल

माने सखी मोरा कान्हा न ।
पनिया न मोहे देत री भरन ॥ध्रु०॥
अबीर गुलाल के बादर छावत ।
औरनसों ही मिलावत नैन ॥

३	×	२	०
			मं
			मा
ग रे नि़ सा	(मं)ग – मं –	प – निसां रेंसां	नि ध प ग
ऽ ने ऽ स	खी ऽ मो ऽ	रा ऽ काऽ ऽऽ	न्हा ऽ न प

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं प नि सां	नि - ध प	(मं) ग मं मंध पमं	ग रे सा (मं) ग
नि या ऽ न	मो ऽ हे ऽ	दे ऽ तऽ रीऽ	भ र न अ
म प नि नि	सां - सां सां	प नि सांरें सांनि	सां नि ध प,
बि र ऽ गु	ला ऽ ल के	बा ऽ दऽ लऽ	छा ऽ व त,
(मं) ग मं प नि	सां नि ध प	(मं) ग मं मंध पमं	ग रे सा
औ ऽ र न	सों ऽ हि मि	ला ऽ वऽ तऽ	नै ऽ न

३ अम्बिका–त्रिताल.

श्री अम्बिका जगदंब भवानी।
दुख हरनी प्रणत-जन-शरन-तरनी।
निखिल जगजननी सकल-बुध-ज्ञानी ॥धृ०॥
सुर-नर-मुनी-जन मानी दयानी।
पत राख मोरी अमर पद-दानी ॥

३	×	२	०
			(मं) ग
			सि
मं प नि सां	नि - ध प	ग मं पध पमं	ग रे सा नि
रि अ ऽ म्बि	का ऽ ज ग	द ऽ ऽम्ब भऽ	वा ऽ नी दु
सा सा मं ग	प ध मं प	नि सां नि ध	प मं प प
ख ह र नि	प्र ण त ज	न श र न	त र नि नि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	ध	प	प	ध	मं	प	ग॒	मं	पध	पमं	ग॒	रे	सा	ग॒
खि	ल	ज	ग	ज	न	नि	स	क	ल	बुऽ	धऽ	ज्ञा	ऽ	नि	सु
											मं				
मं	प	नि	नि	सां	-	सां	सां	प	नि	सां	ग॒ं	रें	-	सां	प
र	न	र	सु	नीं	ऽ	ज	न	मा	ऽ	नि	द	या	ऽ	नी	प
नि	सां	ग॒ं	रें	सां	नि	ध	प	ग॒	मं	पध	पमं	ग॒	रे	सा	
त	रा	ऽ	ख	मो	ऽ	रि	श्र	म	र	पऽ	दऽ	दा	ऽ	नि	

मधुवन्ती–चौताल (लक्षणगीत)

बाजत मधुवन्ती राग। चढत अधर रूप धरत,
उतरत सुर सबहि लाग ॥धृ०॥
मध्यम कर तीवर सुर । कोमल सोहत गंधार ॥
गमपनि सांनि धप मगरेसा । पंचम करे मधुर वाद ॥

०		३		४		×		०		२	
						मं					
मंप	मंग॒	रे॒	सा	नि॒	सा	ग॒	-	मं	प	-	प
बाऽ	ऽऽ	ज	त	म	धु	व	ऽ	न्ति	रा	ऽ	ग
ग॒	मं	प	नि	ध	प	मं	प	मं	ग॒	रे	सा
च	ढ	त	अ	ध	र	रू	ऽ	प	ध	र	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि़	सा	|	मं	ग॒	|	प	प	|	रें	नि	|	ध	प	|	मं	प
उ	त	|	र	त	|	सु	र	|	स	ब	|	हि	ला	|	ऽ	ग
मं ग॒	मं	|	प	प	|	नि	नि	|	सां	–	|	नि	सां	|	सां	सां
म	ऽ	|	ध्य	म	|	क	र	|	ती	ऽ	|	व	र	|	सु	र
प	नि	|	सां	गं॒	|	रें	सां	|	नि	सां	|	ध	प	|	मं	प
को	ऽ	|	म	ल	|	सो	ऽ	|	ह	त	|	गं	धा	|	ऽ	र
ग॒	मं	|	प	नि	|	सां	नि	|	ध	प	|	मं	ग॒	|	रे	सा
ग	म	|	प	नि	|	सा	नि	|	ध	प	|	म	ग	|	रे	सा
नि़	सा	|	मं	ग॒	|	प	प	|	रें	नि	|	ध	प	|	मं	प
पं	ऽ	|	च	म	|	क	रे	|	म	धु	|	र	वा	|	ऽ	द

१ बराटी–त्रिताल

पिया बिन मोहे कछु न सुहावे।
जुग–जुग बीते उनके दरस को,
मिलन कैसे सजनी अब होवे ?॥
दरसन को मोरी अंखियाँ प्यासी।
तरफ–तरफ मैंका नींद न आवे॥

३				|	×				|	२				|	०		ध
				|					|					|			पि
रें,	–	ध	मं	|	ध	–	मं	ग	|	मं	ध	ग	मं	|	रे॒	रे॒	सा, –
या	ऽ	बि	न	|	मो	ऽ	हे	ऽ	|	क	छु	न	सु	|	हा	ऽ	वे, ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा रे॒ ग मं	रे॒ रे॒ सा -	ध॒ सा रे॒ सा	ध॒ ध॒ मं॒ -
जु ग जु ग	बी ऽ तें ऽ	उ न के द	र स को ऽ
मं ध म सा	- रे॒ सा सा	रे॒ रे॒ ग मं	रे॒ रे॒ सा, मं
मि ल न कै	ऽ से स ज	नी ऽ अ ब	हो ऽ वे, द
ग ग - ग	मं म ध मं	ध सां सां सां	ध रें॒ सां -
र स ऽ न	को ऽ मो री	अ खि ऽ यां	प्या ऽ सी ऽ
रें॒ गं मं गं	मं रें॒ सां सां	ध मं ग मं	रे॒ रे॒ सा, ध
त र फ त	र फ मैं का	नीं ऽ द न	आ ऽ वे, पि

या बिन मोहे………।

*** समाप्त ***

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगीत कार्यालय के प्रकाशन

बालसंगीत शिक्षा भाग १ व २	१–२५	सूरसंगीत भाग १ व २ प्रत्येक	१–५०
" " " ३	१–००	ताल अंक	४–००
संगीत किशोर	१–५०	ठुमरी अंक	२–५०
संगीत शास्त्र	१–००	सन्त संगीत अंक	२–५०
'क्रमिक पुस्तक' भाग १	१–००	राष्ट्रीय संगीत अंक	२–५०
" भाग ३ व ४ प्रत्येक	१०–००	राग अंक	२–५०
" भाग २, ५ व ६ प्रत्येक	८–००	वाद्य संगीत अंक	३–००
संगीत सोपान	३–००	बिलावल थाट अंक	२–५०
संगीत विशारद	५–००	कल्याण थाट अंक	२–५०
संगीत सीकर	५–००	भैरव थाट अंक	२–५०
संगीत अर्चना	५–००	पूर्वी थाट अंक	२–५०
संगीत कादम्बिनी	५–००	खमाज थाट अंक	२–५०
भातखंडे संगीतशास्त्र भाग १	५–००	काफी थाट अंक	२–५०
" " भाग २	६–००	मारवा थाट अंक	२–५०
" " भाग ३	६–००	नृत्य अंक	३–००
" " भाग ४	१५–००	हरिदास अंक	१–००
मारिफुन्नग़मात भाग १	६–००	कथकलि नृत्यकला	२–५०
" भाग २	६–००	नृत्य भारती	३–००
" भाग ३	१–२५	म्यूज़िक मास्टर	२–००
संगीत सागर	६–००	महिला हारमोनियम गाइड	१–००
वेला विज्ञान	४–००	संगीत पारिजात भाग–१	४–००
सितार मालिका	५–००	स्वरमेल कलानिधि	१–००
कलावन्तों की गायकी	३–००	संगीतदर्पण	२–००
हमारे संगीत रत्न	१५–००	फ़िल्म संगीत भाग २९ वाँ	४–००
सहगल संगीत	२–५०	आवाज़ सुरीली कैसे करें ?	२–००
बैंजो मास्टर	२–००	अप्रकाशित राग भाग १,२,३	४–५०
संगीत पद्धतियों का तु० अध्ययन	२–००	मृदङ्ग तबला प्रभाकर	२–००
स्वरमालिका	२–००	संगीत निबंधावली भाग १	२–००
रवीन्द्र संगीत	२–००	ताल प्रकाश	छप रही हैं।
उ० भा० संगीत का सं० इति०	२–००	रविशंकर के आर्केस्ट्रा	छप रही हैं।

'संगीत' शास्त्रीय संगीत का २५ वर्ष से प्रकाशित मासिक पत्र, वार्षिक मूल्य ६)५६

'फ़िल्म-संगीत' सरल संगीत का सचित्र नवीन मासिक पत्र, वार्षिक मूल्य ६)

प्रकाशक—सङ्गीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगीत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अ प्र का शि त रा ग

(तीसरा भाग)

★

ज० दे० पत्की, बी. ए.

प्रकाशक—

सङ्गीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अप्रकाशित राग

(भाग तीसरा)

卐

लेखक—

ज० दे० पत्की, वी० ए०

©

प्रकाशक—

सङ्गीत कार्यालय, हाथरस ।

द्वितीय संस्करण
अगस्त १९५८

मूल्य
रु० १)५०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकाशक—
श्री प्रभूलाल गर्ग के लिये
संगीत प्रेस, हाथरस में
चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा मुद्रित ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रथमं शारदां वन्दे 'चतुरं' तदनन्तरम् ।
'दिगंबरसुतं' चापि स्वरशास्त्रकलामयं ॥

श्री

ॐकारस्वरूप

ओम्कारनाथ जी को

अत्यादरेण

अर्पणं !

★

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग-परिचय

राग	गीत संख्या	पृष्ठ
१ राग श्रीकल्याण	४	६
२ " सांझ का हिंडोल	३	१४
३ " हेम कल्याण	४	१८
४ " भिन्न षड्ज	३	२३
५ " कमल रंजनी	४	२७
६ " कलावती	४	३२
७ " नारायणी	३	३८
८ " साजन	२	४१
९ " पद्मावती	५	४४
१० " चम्पाकली	३	५०
११ " शहाना (कानड़ा)	४	५५
१२ राग जयन्तमल्हार	४	६०
१३ " मधुरंजनी	३	६५
१४ " राजेश्वरी	३	६९
१५ " मालीगौरा	३	७४
१६ " गुणकली	३	८१
१७ " अहीरभैरव	४	८५
१८ " अरज	३	९१
१९ " गोपीवसंत	३	९६
२० " विलासखानी	३	१००
२१ " कोकिलपंचम	२	१०५
२२ " सागर	६	१०८

कुल गीत संख्या ७६

चिन्ह-परिचय

(१) सा़ = मंद्र षड्ज । सां = तार षड्ज । सा = मध्य षड्ज ।

(२) मं = तीव्र मध्यम । म = शुद्ध मध्यम । निधगरे = शुद्ध स्वर । नि॒ध॒ग॒ = कोमल स्वर ।

(३) धप, निधप, निधपम, धनिसांनिधपम एक मात्रा के स्वर ।

(४) $\overset{\text{ग}}{\text{म}}$ = मध्यम को गांधार का कण । (प) = कंप (निधपध) ।

सांSSप अथवा सांSप = सां से पंचम तक मींड । $\overset{\text{ग}}{\text{प}}$ SS = पंचम को ग की ओर खींचना ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग्रंथ परिचय—

प्रथमं शारदां वन्दे चतुरं तदनन्तरम् ।
दिगंबरसुतं चापि स्वर–शास्त्रकलाप्तये ।।

'अप्रकाशित' राग के इस तृतीय अर्थात् अन्तिम परिचय में ऐसे रंजक तथा अभिनव २२ रागों का शास्त्रीय परिचय दिया है जो कि प्रचार में हैं, किन्तु ग्रंथरूप में अभी तक प्रकाशित नहीं हुए। प्रथम संस्कृत–हिन्दी–मराठी श्लोकबद्ध लक्षण देकर बाद में उनकी शास्त्रीय विवेचना की है। शास्त्रीय विवेचन देते समय समप्राकृतिक रागों की तुलनात्मक चर्चा भी इस उद्देश्य से की गई है कि पाठक यह जान सकें कि इन रागों से अपना राग कहाँ और कैसे बचायें। राग का विवरण ठाठ पद्धत्यनुसार किया है, किन्तु जहाँ अनिवार्य समझा गया है वहाँ रागांग पद्धति का भी उपयोग किया है। राग का आरोहावरोह भी इस प्रकार दिया है कि जिससे राग का सम्पूर्ण चलन, अंग, प्रत्यंग तथा राग का वैशिष्ट्य पाठकों के ध्यान में आजाय। गीतों का चुनाव करते समय भी शब्द चयन, समयानुकूलता, रसपरिपोषण, ताल दृष्ट्या, विभिन्नता तथा गीत का कलात्मक उत्थान इन पर विशेष ध्यान दिया गया है। त्रिताल, झपताल, एकताल, आडाचौताल, चौताल, रूपक, अध्धा, तेव्रा, सुरफाक्ता आदि प्रचलित तथा मीनाक्षी, प्रभाकर, गजझंपा, झूमरा इत्यादि अप्रचलित तालों में भी छोटे बड़े ख्यालों में गीत दिये हैं। किन्तु विस्तार भय से अप्रचलित तालों की संख्या प्रचलित तालों से कम प्रमाण में ही है। प्रायः गम्भीर तथा संधिप्रकाश रागों के ही विलम्बित ख्याल भिन्न-भिन्न विलम्बित तालों में दिये हैं क्योंकि हमारे मत से हलके तथा चंचल शृङ्गारिक रागों में विलम्बित ख्यालों की रक्तिहानि होती है। हर एक राग में एक–एक लक्षणगीत देकर स्वर, शब्द और शास्त्र इनका

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मधुर मिलाप करने का प्रयत्न किया है। अन्त में कुछ मिश्र राग भी दिये हैं, जैसे—सागर, आसाकली, चांदनीमल्हार इत्यादि।

संक्षेप में यही कहना ठीक होगा कि प्रस्तुत ग्रंथ अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का लेखक ने भरसक प्रयत्न किया है। आशा है मेरी यह तीसरी कलाकृति भी रसिकवृन्द को यथापूर्व पसन्द होगी।

'रागसौगन्ध', 'स्वरों का शास्त्र' नामक ग्रन्थ में प्रचलित रागों की पूर्ण शास्त्रीय चर्चा करने का मेरा संकल्प है। शारदा माई की कृपा से और रसिकों की सहानुभूति से जनता जनार्दन की अखण्ड सेवा करने की मेरी मनोकामना पूरी हो, और मेरे प्रयत्न से सङ्गीत प्रेमियों को अधिक से अधिक लाभ हो, यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

—लेखक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग श्रीकल्याण

(संस्कृत) श्रीकल्याण-रागे च गांधारोर्नास्तिनी-स्वरः
सायंगेयश्च पांशश्च तीव्राश्च अपराः स्वराः ।।

(हिन्दी) कल्याणी के ठाठ में नहिं गंधार निषाद ।
राग श्रीकल्याण में सोहत पस संवाद ।।

(मराठी) श्री कल्याण करितसे गनि स्वर नित वर्ज्यं तीव्र स्वर सारे ।
सायंसमयीं शोभत पसवादन औडव स्वरीं गा रे ।।

राग श्री कल्याण-कल्याण ठाठ का एक अप्रचलित अत्यन्त मधुर राग स्वरूप है। इसमें गांधार निषाद पूर्णतया वर्जित हैं। अर्थात् जाति औडव ! साध़सा, रेसा, रेध़, साध़प़, प़ध़प़सा, परेऽसा इन स्वरों से भूप, शुद्ध कल्याण का आभास हुआ करता है, तथापि गांधार का पूर्ण अभाव और रेमंप, रेमंपधमंप, मं रे ऽसा, इस प्रकार तीव्र मध्यम का आरोहावरोह में सरल तथा स्पष्ट अस्तित्व उपर्युक्त दोनों रागों से इसे अलग रखता है। अवरोह में प़रे संगति बहुत ही रक्तिदायक होती है। इसके अन्तरे का उठाव पधमंपसां, अथवा पध़प़सां इस विशिष्ट प्रकार से ही किया जाता है। भूप, शुद्ध कल्याण, कामोद, वैजयंती, इत्यादि रागों की मधुर छाया इसमें बार बार दिखाई देती है। श्री राग से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। वादी पंचम, सम्वादी षड्ज, समय रात का प्रथम प्रहर है। मुख्यांग साध़स, रेमंप, रेऽऽसा ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अरोहावरोह:—सा, रे, मं, प, धप, सां। सां, धप, मंप, रे ऽसा।

स्वरविस्तार:—सा, साध़, ध़, ध़, ध़सा। साध़सा, साध़सा, मंध़, मंध़सा। साध़, मंध़, मंध़मंसा, ध़प़, साध़प़, ध़मंप़, प़ध़ मंप़सा, रे, रेसा। सारे, रे, रेसा, साध़, रे, रेसाध़, ध़रे, रेसाध़प़, साध़प़, रे, रेध़सारे, रे, रेसा। सा, रेमं रेसा, रेमं, सारेमं, रेसाध़प़, ध़सारेमं, मंरेरेसा, रेमं, प़ध़सारेमं, रेमं, पमंरेऽसा। सारेमंप, रेमंप, रेमंरेप, रेऽसाऽध़प़, ध़सारेमं, मं, मंप, रेप, मंप, रेसा, मंरे, प, रेमं, मंप, मंप, पमंरेऽसा, पप (सा), मंप, रेमंप, मंप, मंपरे, रेमंपरे, परेऽसा। सारेमंपध, रेमंपध, ध़सारेमंप, रेमंध, रेसा, मंरे पमं, ध; रेमंपध, रेमं, रेप, रेध, मंपध, सारे, सामं, रेप, मंध, साध, धप, रेमंपधमंप, रेमंप, पधमंप, रेमंपमंरे, रेमंपरे, पमंरे, परेरेसा। सा, रेमंपधपसां, पधमंपसां, सा, सारेमंपधपसां, सांरेंसां, रेंसां, रेंमंपरेंऽसां, सांरेंसां, मंप, रेमंपधमंप, सांधपमंप, पधमंप, रेमंपधमंपरे, रेमंपरे, रे रें सांधमंपरे, रेमंपरे, परेऽसा,। रेसाध़ऽप़, प़ध़मंप़सा।

१—श्रीकल्याण–त्रिताल

ओंकार की माया मधुर, चरण रज करूँ नित सुमिरन मनमें
स्वर शक्ति का एकहि आधार॥ ध्रु०॥
'सुरत' की सुरत में मन हो सुरत,
प्रणव–नव–रंग रहो अजर अमर॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मंध

ओंऽ

३				×				२				०			
मंप	रे	सा	रे	मं	–	–	–	प	–	ध	–	सां	ध	प	मं
ऽऽ	का	ऽ	र	की	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	या	ऽ	म	धु	र	च
प	ध	सां	ध	प	ध	मं	प	रे	मं	पध	मंप	रे	रे	सा	ध़
र	ण	र	ज	क	रूँ	नि	त	सु	मि	रऽ	नऽ	म	न	में	स्व
सा	रे	मं	मं	प	–	ध	प	ध	सां	ध	प	ध	मं	प	प
र	श	ऽ	क्ति	का	ऽ	ए	ऽ	क	ही	आ	ऽ	धा	ऽ	र	सु
प	प	ध	प	सां	सां	सां	सां	सां	ध	सां	रें	सां	ध	प	मं
र	त	की	ऽ	सु	र	त	में	म	न	हो	ऽ	सु	र	त	प्र
प	ध	सां	रें	सां	ध	मं	प	रे	मं	पध	मंप	रे	रे	सा	
ण	व	न	व	रं	ऽ	ग	र	हो	अ	जऽ	रऽ	अ	म	र	

२—श्रीकल्याण–त्रिताल

नैया मोरी लेजा किनारे । गहरी नदिया पड़ी मँझधारे ॥ ध्रु० ॥
नाव पुरानी खेवट मूरख । जो डूबे फिर नाहीं उभरे ॥

३				×				२				०			
–	रेमं	पध	प	सां	–	ध	प	मं	प	मंध	मंप	रे	–	सा	–
ऽ	नैऽ	ऽऽ	या	मो	ऽ	री	ऽ	ले	ऽ	जाऽ	किऽ	ना	ऽ	रे	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

–	धसा	रे	मं	प	ध	मं	प	ध	सां	रें	सां	ध	मं	प	–
ऽ	गह	री	ऽ	न	दि	या	ऽ	प	ड़ी	मँ	झ	धा	ऽ	रे	ऽ
–	प	ध	प	सां	–	सां	–	सां	ध	सां	रें	सांध		प	प
ऽ	ना	व	पु	रा	ऽ	नी	ऽ	खे	ऽ	व	ट	मू	ऽ	र	ख
ध	सां	रें	मं	पं	रें	सां	ध	मं	प	मंध	मंप	रे	रे	सा	–
जो	ऽ	डू	ऽ	बे	ऽ	फि	र	ना	ऽ	हींऽ	ऽऽ	उ	भ	रे	ऽ

३—श्रीकल्याण—एकताल (ख्याल)

आये साजन मोरे घरवा रसिक राज मोहन नटवर अलबेला ॥ ध्रु० ॥
गावो नाचो आनन्द भइलवा जियरवा रोम रोम हुलसीला ॥

४		×		०	
–	– – रेंमंपधप –	सां	–	धरें	सां
ऽ	– – आऽऽऽयेऽ	सा	ऽ	जन	मो
२		०		३	
ध	प	मंमं	प	–	मंध
रे	ऽ	घर	वा	ऽ	रसि
४		×		०	
प	मप	ध	ध	मंप	–
क	राऽ	ज	मो	हन	ऽ
२		०		३	
सांध	मंप	धप	मंप	–	रे
नट	वर	अल	बेऽ	ऽ	ला

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४		×
सा	--रेमंपधप-	
ऽ	ऽऽआऽऽऽयेऽ	साजन..............।

४		×		०	
-	-पधप	सां	-	सांधसां-	-
ऽ	ऽगाऽवो	ना	ऽ	चोऽऽऽ	ऽ

२		०		३	
सांरें	सां	(सां)	धध	प	-
आनं	द	(भ)	इल	वा	ऽ

४		×		०	
धसां	रेंमं	पंमं	रें	सां	सांध
जिय	रऽ	वाऽ	ऽ	ऽ	रोम

२		०		३	
प	मं	धप	मंप	-	रे
रो	म	हुल	सीऽ	ऽ	ला

४		×
सा	--रेमंपधप-	
	ऽऽआऽऽऽयेऽ	साजन..............।

४ श्रीकल्याण–चौताल (लक्षणगीत)

मान सखी सिरिकल्याण, बैजयंति अरु मोहन के
सुर अति मधुर मान ॥ ध्रु० ॥
औडव गनि बिन स्वरूप, तीवर मध्यम अनूप
सोहत शाम समय गान ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०		३		४	
रे	मं	प	ध	मं	प	रे	मं	प	रे	–	सा
मा	ऽ	न	स	खी	ऽ	सि	रि	क	ल्या	ऽ	ण
रे	मं	मं	प	–	प	ध	सां	ध	प	मं	प
वै	ऽ	ज	यं	ऽ	ति	अ	रु	मो	ऽ	ह	न
ध	सां	ध	प	मं	प	रे	मं	प	रे	–	सा
के	ऽ	सु	र	अ	ति	म	धु	र	मा	ऽ	न
प	ध	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
औ	ऽ	ड	व	ग	नि	बि	न	स्व	रू	ऽ	प
सां	ध	सां	ध	सां	रें	सां	सां	ध	ध	प	प
ती	ऽ	व	र	म	ऽ	ध्य	म	अ	नू	ऽ	प
ध	सां	ध	प	मं	प	रे	मं	प	रे	–	सा
सो	ह	त	शा	ऽ	म	स	म	य	गा	ऽ	न

राग साँझ–

(संस्कृत) सायंगेया च शोभते न हि यत्रर्षभपञ्चमी ।
तीव्रा च मध्यमे गांशा ज्ञेया सा 'साँझ' रागिणी ।।

(हिन्दी) मध्यम तीवर धरत है, पञ्चम रिखब न लाग ।
गनि वादी सम्वादितें, 'साँझ' सुहावन राग ।।

"साँझ" एक अप्रचलित मधुर राग है। यह हिंडोल का सायंगेय 'जवाब' है, इसलिये इसे कोई-कोई साँझ का हिंडोल कहते हैं। 'देसकार' में गांधार को वादित्व देने से 'भूप' तथा 'विभास' के गांधार को प्राधान्य देने से जिस प्रकार 'रेवा' या 'सुघराई' की 'नायकी' बन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाती है, उसी प्रकार हिण्डोल में निषाद का प्राबल्य बढ़ाकर धैवत का वादित्व नष्ट कर देने से साँझ राग की रचना होती है। इस राग में ऋषभ-पंचम वर्जित तथा मध्यम तीव्र है। अर्थात् जाति औडव है। हिंडोल में सा, साध़, ध़, ध़सा। सागमंध, निध, मंगऽसा, ध़सा, ग, मंग, मंगसा। साध, निमंध, गमंधनिमंध, सांध, सागमंधसां, गंसां, निमं, धसांधमंगऽसा, मंधसां। इस प्रकार वारम्वार धैवत को दिखाकर निषाद का प्रमाण कम रखा जाता है। हिंडोल में तार षड्ज एक महत्व का राग-वाचक न्यास-स्थान है। अर्थात् हिंडोल आरोही वर्ण का राग है। 'साँझ' सम्पूर्ण अवरोही वर्ण का राग है। साँझ में तार षड्ज पर न्यास बिलकुल नहीं किया जाता। मन्द्र सप्तक में साँझ का संचार बहुत ही सुन्दर होता है। सा, नि़ध़नि़, मं़ध़नि़, मं़ध़मं़नि़, ग़मं़नि़, मं़नि़, मं़ध़मं़सा, नि़ध़नि़, मं़ध़नि़, गसा, नि़ध़नि़, नि़गसा, गनि़, ध़नि़, मं़ध़नि़सा, गनि़, ध़नि़, मंगऽसा, नि़ध़नि़, मं़ध़मं़सा। सागमंधनि, गमंधनि, मंधनि, मंनि, मंधसां, गंसां, मंगंसां, गंसां, मंनि मगंसां, निधनि, धनि, ध, मंग, मंगऽसा नि़ध़नि़ मं़ध़नि़सा इस प्रकार निषाद दिखाने से हिंडोल नष्ट होकर पूरिया राग की छाया स्पष्ट दिखाई देती है। किन्तु साँझ में कोमल ऋषभ न होने से पूरिया से साँझ बिलकुल अलग रहता है। मंद्र सप्तक का विस्तार हिंडोल से साँझ को अधिक गम्भीर कर देता है। हिंडोल वीर रस का राग है, और साँझ है शान्त-रस-प्रधान। कोई इसे पूरिया ठाठ समझते हैं, क्योंकि इसमें पूरिया अङ्ग स्पष्ट दिखाई देता है, तथापि इसे कल्याण ठाठ की रागिनी समझना मेरे ख्याल से ठीक होगा, क्योंकि मंगऽसा यह मींड हिंडोलाङ्ग से ली जाती है। कोमल ऋषभ का आभास भी इसमें नहीं होता। वादी गांधार, सम्वादी निषाद, समय शाम के रागों के बाद तथा कल्याण मेल के रागों के पहिले।

मुख्यांग:—मंगऽसा, नि़ध़नि़ऽऽ मं़ध़सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आरोहावरोह:—नि़ध़नि़, म़ध़सा, गसा, मगऽसा, सागमधमनि, मधसां, गंसां, मंगंसां, निधनि, धऽमग, मगऽसा, नि़ध़नि़, म़ध़म़सा।

स्वर विस्तारः—सा, 'नि़ध़नि़, म़ध़नि़, म़ध़म़नि़, ग़म़नि़, म़नि़, नि़ग़, म़ध़नि़, म़नि़, मध़म़सा। म़ध़सा, गसा, नि़ध़नि़, नि़गसा, गनि़, नि़सा, मग, मगऽसा, सागमगऽसा, नि़ध़नि़, म़ध़सा। साग, नि़साग, म़ध़नि़साग, ग़म़ध़नि़, साग, गग, मग, मगऽसा, साग, मगसा, मनि़मग, मगऽसा, नि़ध़नि़, म़ध़नि़सा। साग, म, मग, मधमग, मधऽमग, मग, मनि़मग, मगऽसा, गमधमगमगऽसा, नि़ध़नि़, म़ध़नि़सा, नि़सागमधनि, मधनि, मनि, गमधनि, नि़नि, निधमगऽसानि़, नि़सागमधनि, मधनि, मधमनिगमधनि, धसां, मधसां, गंसां, मंगंसां, मंनि, मंगं, निमंगं, मंगंऽऽसां, निधनि, धऽमग, मनिधऽमग, मधग, धग, मग, मगऽसा, गसा, नि़ध़नि़, ग़नि़, म़ध़सा।

१ साँझ, एकताल (ख्याल)

भई साँझ, मेरे प्रीतम घर न आये,
जियरा हुलसे ना उन बिन ॥ ध्रु० ॥
नवल जोबन करत जोर तोर,
न सहे विरह-जनित-दृग-तपन ॥

४	×	०	२	०	३
- -सानि़ध़	नि़- -नि़	म़ध़नि़ध़ सा	-नि़साग -	मग मध	मग निध
ऽ ऽभईऽ	साँऽ ऽझ	मेऽरेऽ ऽ	ऽप्रीऽऽ ऽ	तम घर	नआ येऽ
मग मग	-सा -	निंध़ नि़	- नि़ सा	- सा निध	म ग
ऽऽ जिय	ऽरा ऽ	हुल से	ऽ ना	ऽ उन	बि न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

-सा -सानि़ध़	
ऽऽ ऽभईऽ	साँझ............॥

--गमंध	सां -	-निधनि -	मंधनिसां -	गंसां -निधनि	निसां -
ऽ ऽनवल	जोऽ	ऽबऽन ऽ	करतऽ ऽ	जोर ऽतोऽऽ	रऽ ऽ
मंगं सां	-धसां	नि निधमं-	ग मंग	मंग -	मं ग
नस हे	ऽ विर	ह जऽनिऽ	त दृग	तऽ ऽ	प न

-सा सा-नि़ग	
ऽऽ ऽभईऽ	साँझ।

२-साँझ का हिंडोल-त्रिताल

रसिक जन के रघुनाथ रसाल, छिन छवि छकी सखी नैना विशाल।ध्रु०।
मधुर धुन किंकिनी चरण विराजे, कण्ठ बनी मोतियन माल॥

३	×	२	० मं र
ग सा नि़ ध़	नि़ - ध़ नि़	मं ध़ नि़ सा	ग - सा नि़
सि क ज न	के ऽ र घु	ना ऽ थ र	सा ऽ ल छि
सा सा ग ग	मं ध मं ग	मं नि ध मंग	मं ग सा मं
न छ वि छ	की ऽ स खि	नै ऽ ना विऽ	शा ऽ ल म
ग ग मं ध	सां - सां सां	सां गं गं मं	गं - सां नि
धु र धु न	किं ऽ कि नि	च र ण वि	रा ऽ जे कं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

-	नि	-	ध	मं	-	ग	-	मं	ध	ग (मं)	मं	ग	-	सा	
ऽ	ठ	ऽ	व	नी	ऽ	मो	ऽ	ती	ऽ	थ	न	मा	ऽ	ल	

३–साँझ–त्रिताल (लक्षणगीत)

सुरस सजनी सुर सोहत 'साँझ' करत तीवर सब सुरसों राज ॥ ध्रु० ॥
रिखब अरु पंचम को नित तजत। गनि सुसंवादन मोहत आज ॥

३				×				२				०			(निध) सुऽ
धमं	मंग	गसा	सा	नि़	-	ध़	नि़	मं	ध़	नि़	सा	ग	मं	ध	मं
रऽ	सऽ	सऽ	ज	नी	ऽ	सु	र	सो	ऽ	ह	त	साँ	ऽ	झ	क
ध	सां	सां	नि	ध	ध	मं	ग	मं	नि	ध	म	ग	-	सा	मं
र	त	ती	ऽ	व	र	स	ब	सु	र	सों	ऽ	रा	ऽ	ज	रि
ग	ग	मं	ध	सां	-	सां	सां	सां	गं	गं	मं	मं	गं	सां	गं
ख	ब	अ	रु	पं	ऽ	च	म	को	ऽ	नि	त	त	ज	त	ग
नि	सां	नि	नि	नि	ध	मं	ग	मं	नि	ध	मं	ग	-	सा	
नि	सु	सं	ऽ	वा	ऽ	द	न	मो	ऽ	ह	त	आ	ऽ	ज	

राग हेमकल्याण

(संस्कृत) पधौ पसौ रिसौ मश्च गपौ धपौ गमौ रिसौ।
हेमकल्याणकः पांशो रोहे रीनिध-दुर्बलः ॥
(हिन्दी) मृदु मध्यम तीवर सवै चढ़त न रिधनी नेम।
पस वादी संवादितें राग कहावत हेम ॥

'हेम' अथवा 'हेमकल्याण' बिलावल ठाठ का पुरातन राग है। इसमें निषाद अत्यल्प है तथा ऋषभ, धैवत, निषाद आरोह में दुर्बल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं। शुद्ध कल्याण, कामोद, मलुहा इत्यादि रागों से यह बहुत ही मिलता जुलता है, तथापि कामोद का उठाव म रे प इन स्वरों से होता है, हेमकल्याण में सा, मग प, अथवा सा, गमप, इस प्रकार से उठाव किया जाता है। कामोद का तीव्र मध्यम हेमकल्याण में बिलकुल नहीं है। मंद्र सप्तक में इस राग का विशेष संचार होने से इसकी रचना बहुत ही गम्भीर होती है। पधप, सा, गमप, गमरेसा आदि स्वरों से मलुहा की छाया इसमें दृष्टिगोचर होती है, किन्तु इसमें मध्यम पर न्यास न होने से तथा मरे निसा इस प्रकार श्याम का अङ्ग भी न होने से मलुहा से यह राग बिलकुल अलग रहता है। मलुहा में शुद्ध निषाद का प्रमाण भी कुछ ज्यादा है परन्तु हेमकल्याण में निषाद असत्प्राय (जैसा कि कामोद में) रहेगा। पधपऽसा इन स्वरों में शुद्ध कल्याण का स्वरूप प्रतीत होता है किन्तु 'हेम' में शुद्ध कल्याण की परे संगति, पग मींड तथा सारेगप इस प्रकार का उठाव नहीं है। 'सामगप' गमपगमरेसा' यह स्वरमाला हेम को शुद्ध कल्याण से अलग रखती है। राग का चलन विलम्बित लय में विशेष सुन्दर दिखाई देता है। वादी पञ्चम सम्वादी षड्ज है। कोई इसका वादी षड्ज मानते हैं, किन्तु हमें यह मत अमान्य है। समय रात का दूसरा प्रहर है। मुख्यांग:—पधप, सा, रेसा, मगप, धप, मगरेसा।

आरोहावरोह:—सा, मगप, धप, सां। सां, धप, गमधप, गमप, गमरे, सा, पधपऽसा ।

स्वरविस्तार:—सा, पधप, धप, पधप, सा । सा, रेसाधप, सारेसाधप, पपधप, धधपप, पधपसा। सा, सारेसा, गमरेऽसा, गमपगमरेऽसा, धधप, गमधप, गमपगमरे, सा, पधप, साप, धप, सा। सा, मग, प; सा, सारेसा, गरेसा, मगप; सामगप; गमरेसाधप, पप; मगप, धप, गमधप, धधप, साऽमगपऽधप, पधप, पपसा, रेसा, रेरेसा, गमधप, गमपगमरेऽसा। सा, मगप, धप, गमप, धधप, धधप, पधप, गमधप गमप,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गमरे, पगंमरे, गमधप, गमरे, सासामगप, धप, गमधप, पगमरे, गमप, गमरेऽसा, । सा, मगप, धप, सां, पधप, सां, सांरेंसां, गंमंरेंसां, पंगंमंरेंऽसां, सांरेंसां, धधप, धप, सांऽधप, गमप, गमधप, गमपगमरेऽसा, ध़ध़प़, प़ध़प़, सा ।

१—हेमकल्याण—ताल—गजझंपा (ख्याल)

रे करतार करीम आन परी मँझधार, कैसे करूँ ॥ ध्रु० ॥
मिलत न संगत साथी, कैसे धीर मैं धरूँ ॥
(गजझंपा १५ मात्रा का ताल है। ताल के बोल—)

×				२				०				३		
धा	धिन	नक	तक	धा	धिन	नक	तक	धिन	नक	तक	किट	तक	गदि	गन

०				३			
			सारे	सासा	साप़		ध़प़
			रेऽ	कर	ताऽ		रक
×				२			
सा	—सा	सा	मग	प	धप	सां	—सां
री	ऽम	आ	नप	री	मझ	धा	ऽर
०				३			
धप	गम	रेसा,	सारे				
कैऽ	सेऽ	करूँ,	रेऽ	करतार............			
०				३			
			पप	धध	पप		धप
			मिल	तन	संऽ		गत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×				२			
सां	–	सांरें	सां	गंमं	रेंसां	–रें	सांसां
सा	ऽ	थीऽ	ऽ	कैंऽ	सेऽ	ऽश्री	ऽर

०				३
धप	गम	रेसा,	सारे	
मैंऽ	ऽऽ	धरूँ,	रेऽ	करतार करीम

२–हेमकल्याण–त्रिताल

झूलना झूलत श्याम लला मोरा। दिल का दिलारा चांद चकोरा ॥ध्रु०॥
मोहत मुनिजन-मानस मोहन। गोकुल के नयनों का तारा ॥

३				×				२				०			
सा प़	ध़	प़	–	प़ सा	–	सा	सा	ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा
झू	ल	ना	ऽ	झू	ऽ	ल	त	श्या	ऽ	म	ल	ला	ऽ	मो	रा
सा	सा	म	ग	प	–	ध	प	सां	–	ध	प	ग	म	रे	सा
दि	ल	का	दि	ला	ऽ	रा	ऽ	चां	ऽ	द	च	को	ऽ	रा	ऽ
सां प	–	सां	सां	सां	रें	सां	सां	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	सां
मो	ऽ	ह	त	मु	नि	ज	न	मा	ऽ	न	स	मो	ऽ	ह	न
सां	रें	सां	सां	ध	ऽ	प	प०	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ
गो	ऽ	कु	ल	के	ऽ	न	य	नों	ऽ	का	ऽ	ता	ऽ	रा	ऽ
नि़	सा	प़	–												
झु	ल	ना	ऽ	झूलत............॥											

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३–हेमकल्याण–त्रिताल

अजहूँ नहीं आये सखि घनश्याम। जियरा तरसे मोरा रटत ही नाम॥
विरह निसि वासर मोहे सतावे, सूझत नहीं उनबिन काजरि काम॥

															ग
२				०				३				×			अ
म	प	ग	म	रे	–	सा	–	प़	ध़	प़	प़	सा	–	सा	सा
ज	हुँ	न	हीं	आ	ऽ	ये	ऽ	स	खि	घ	न	श्या	ऽ	म	जि
सा	सा	म	ग	प	–	ध	प	सां	सां	ध	प	ग	म	रे	प
य	रा	त	र	से	ऽ	मो	रा	र	ट	त	हि	ना	ऽ	म	वि
प	प	ध	प	सां	ऽ	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	गं
र	ह	नि	सि	वा	ऽ	स	र	मो	ऽ	हे	स	ता	ऽ	वे	सु
मं	पं	गं	मं	रें	रें	सां	रें	सां	–	ध	प	ग		म	रे
झ	त	न	हीं	उ	न	बि	न	का	ऽ	ज	रि	का		ऽ	म

४–हेमकल्याण–एकताल

जा रे जा जा कगवा, कहियो इतना मोरे पियुको मोरा संदेसवा।
विरहन तरफत बावरी, सुध न लीन्हि, पलछिन घरि, बेर भई बालमवा॥

०		३		४		×		०		२	
सा	रे	सा	–	सा	–	सा	–	सा	सा	सा	प़
जा	ऽ	रे	ऽ	जा	ऽ	जा	ऽ	क	ग	वा	ऽ
प़	ध़	प़	–	सा	सा	सा	–	म	ग	प	–
क	हि	यो	ऽ	इ	त	ना	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ
सां	सां	ध	प	ग	म	रे	सा	सा	सा	सा	प़
पि	यु	को	ऽ	मो	रा	सं	ऽ	दे	स	वा	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	प	ध	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
बि	र	ह	न	त	र	फ	त	बा	ऽ	व	री
सां	सां	ध	ध	सां	सां	गं	मं	रें	सां	ध	प
सु	ध	न	लो	ऽ	न्हीं	प	ल	छि	न	व	रि
सां	सां	ध	प	ग	म	रे	सा	सा	सा	सा	प़
बे	ऽ	र	भ	ई	ऽ	वा	ऽ	ल	म	वा	ऽ

——.——

राग–भिन्नषड्ज

(संस्कृत) अपरः शुद्धजः प्रोक्तः सौडुवो भिन्नषड्जकः ।
मध्यरात्रौ सुशांते च मध्यमे गीयते बुधैः ॥

(हिन्दी) वेलावलि के मेल में पंचम रिखब न लाग ।
म स वादी संवादितें भिन्नखरज यह राग ॥

राग भिन्न-षड्ज विलावल मेल का एक औडव राग है। अर्थात् इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। रिषभ और पंचम बिलकुल वर्जित स्वर हैं। रागेश्री से यह कुछ मिलता जुलता है। साग, मध, निसां, इस प्रकार के आरोह में रागेश्री की ही छाया प्रतीत होती है। किन्तु रागेश्री के अवरोह में पञ्चम और रिषभ आवश्यक स्वर होते हैं। भिन्नषड्ज में सांनिध म ग सा, इस प्रकार पञ्चम रिषभ वर्जित अवरोह होने से बिलकुल अलग रहता है। कोई रागेश्री के अवरोह में कोमल निषाद भी लेते हैं, अतः रागेश्री खमाज अङ्ग का राग होगा। किन्तु भिन्नषड्ज के आरोह अवरोह में शुद्ध निषाद है, कोमल निषाद कणमात्र भी नहीं। साग, मग सा, गमग, साधग, सागमग, सागसामग, मगमग, सामगमग, धग, निमग, निंग, मगऽसा, इन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकार की कलात्मक रचना से विहाग की झलक दिखाई देगी, किन्तु विहाग में पञ्चम का स्थान अवरोह में आवश्यक है। भिन्नषड्ज में पञ्चम बिलकुल नहीं चलेगा। सोहनी राग का कुछ आभास इस राग में हुआ करता है किन्तु सोहनी में मध्यम तीव्र है। गांधार, धैवत महत्व के विश्राम स्थान हैं। समय मध्यरात्रि के बाद। वादी मध्यम संवादी षड्ज। मुख्यांग—सां, निधऽमग, मगऽसा।

आरोहावरोहः—साग, मध, निसां। सां, नध, मग, सा, धनि़साग, मग।

स्वरविस्तारः—सा, नि़सा, नि़ध़, म़ध़नि़सा। नि़सा, ध़नि़सा म़ध़नि़सा, नि़ध़, म़नि़ध़, नि़ध़म़नि़ध़, म़नि़, नि़म़, नि़, म़ध़म़नि़,

म़ध़नि़सा। सा, गसा, म़ध़नि़सा, गऽसा, नि़गऽसा, नि़ध़, म़ध़नि़सा गऽसा। साग, नि़साग, म़ध़नि़साग, नि़ग, गनि़, नि़साग, मग, सामग,

मगऽसा,। नि़साग, मग, सामग, मनि़, नि़मग, मग, धग, मग, मगध, मग, सा, ध़नि़सागमग। ध़नि़साग, म, गम, मग, सागऽम, साम, गम, धग, मग, धऽमग, सा,। सा, सागमध, गमध, गध, मध, निध, मनिध, निधऽम, निधमग, धग, मग, मगऽसा, ध़नि़, सागमग। गमधनिसां, निसां, मधनिसां, सा, सागमधनिसां, गंसां, मंगंऽसां, सांगंमंगं, सां, निध, मधनिसांनिध, मनिध, गमनिध, सा, सागमनिध, निधऽम, गमनिधऽम धगऽमग, निम, सागमग, मगऽसा, नि़सा, ध़नि़सागमगऽऽ।

१—भिन्नषड्ज—झपताल

श्री राधिका' रमण, ब्रजराज मनमोहन।
तट जमुना खेले फाग, सङ्ग राधा वृषभानु॥ ध्रु०॥

सिर मुकुट मन मोहन, कानन कुण्डल सोहत।
सखि उन से दिन रात, मोरे मन की लागी लगन॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०	३	×	२
नि़ नि	ध ग म	ग -	म ग सा
शि री	रा ऽ धि	का ऽ	र म ण
नि़ ध़	म़ ध़ नि़	म़ ध़	नि़ सा सा
ब्र ज	रा ऽ ज	म न	मो ह न
नि़ सा	ग म ग	म ध	नि ध ग
त ट	ज मु ना	खे ले	फा ऽ ग
नि सां	ध ग म	ग ग	म ग सा
सं ग	रा ऽ धा	वृ ष	भा ऽ नु
ग म	म नि ध	म ध	नि सां सां
सि र	मु कु ट	म न	मो ह न
ध नि	सां गं मं	गं गं	मं गं सां
का न	न कुं ऽ	ड ल	सो ह त
ध नि	सां गं मं	गं गं	मं गं सां
स खि	उ न से	दि न	रा ऽ त
म नि	नि ध ध ग म	ग ग	म ग सा
मो रे	म न की	ला गि	ल ग न

२-भिन्नषड्ज-त्रिताल

बरसन लागी बादरिया, उमड़-घुमड़ घटा घन गरजत ॥
दमके चमके सखि दामिनिया ॥ ध्रु० ॥
कोयलिया बोले मोरी अंबुवा, पियु-पियु टेरत मोर पपैया ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

															सां
३				×				२				०			व
नि	ध	ग	म	ग	-	ग	सा	नि़	सा	ध़	नि़	साग	मध	निसां	नि
र	स	ऽ	न	ला	ऽ	गी	ऽ	बा	ऽ	द	रि	याऽ	ऽऽ	ऽऽ	उ
सां	गं	-	सां	नि	-	ध	ध	म	-	ग	म	ग	ग	सा	सा
म	ड़	ऽ	घु	म	ऽ	ड़	घ	टा	ऽ	घ	न	ग	र	ज	त
नि़	सा	ध़	नि़	सा	ग	म	ध	ग	म	ध	नि	साग	मध	निसां	ग
द	म	के	च	म	के	स	खि	दा	ऽ	मि	नि	याऽ	ऽऽ	ऽऽ	को
म	ध	-	नि	सां	-	नि	-	सां	-	नि	सां	मं	गं	सां	गं
ऽ	य	ऽ	लि	या	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	मो	री	अं	बु	वा	पि
मं	गं	-	सां	नि	-	ध	ध	म	-	ग	म	गम		धनि	सां
यु	पी	ऽ	यु	टे	ऽ	र	त	मो	ऽ	र	प	पैऽ		ऽऽ	या

३—भिन्नषड्ज—एकताल (लक्षणगीत)

सखि बखानूं भिन्नषरज, बरजत रि प स्वरद्वय नित ॥
औडव यह रूप समझ ॥ ध्रु० ॥
सोहत नित समय रात, शुद्ध स्वर सुशास्त्रसुमत ।
गसा गम गसा साऽनिधऽम, मध्यम सुर करत राज ॥

०		३		४		×		०		२	
सां	सां	नि	ध	-	म	ग	-	म	ग	ग	सा
स	खि	ब	खा	ऽ	नूं	भि	ऽ	न्न	ष	र	ज
ध़	नि़	सा	म	ग	ग	ग	म	ध	नि	सां	सां
ब	र	ज	त	रि	प	स्व	र	द्व	य	नि	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	नि	सां	गं	सां	सां	नि	ध	म	ग	ग	सा
औ	ऽ	ड	व	य	ह	रू	ऽ	प	स	म	झ
ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	-	सां
सो	ऽ	ह	त	नि	त	स	म	य	रा	ऽ	त
ध	नि	सां	मं	गं	सां	मं	गं	मं	गं	सां	सां
शु	ऽ	द्ध	स्व	र	सु	शा	ऽ	स्त्र	सु	म	त
गं	सां	गं	मं	गं	सां	सां	-	नि	ध	-	म
ग	सा	ग	म	ग	सा	ग	ऽ	नि	ध	ऽ	म
ग	म	ध	नि	सां	नि	ध	ग	म	ग	-	सा
म	ऽ	ध्य	म	सु	र	क	र	त	रा	ऽ	ज

राग—कमलरञ्जनी

(संस्कृत) सगौ पधौ निसौ सधौ निपौ मगौ च सः पुनः ।
धैवतांशा रिहीना च शुद्धजा कमल–रञ्जनी ॥

(हिन्दी) जबहि बिलावल ठाठ में रिखब न लेत सुजान ।
धग वादी संवादितें, कमल–रञ्जनी मान ॥

(मराठी) 'कमल–रञ्जनी शोभते' ऋषभाविन शुद्ध सप्तकीं नित्य ।
धैवत संवादेत, शुभ समय सकल बुधहि मानती प्रातः ॥

यह विलावल अंग की एक मधुर रागिनी है। इसमें ऋषभ बिलकुल वर्जित तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में मध्यम वर्जित है। क्वचित् कोमल निषाद अल्हैया विलावल पद्धति से लिया जाता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि
बिलावल पद्धति से ही इसका उठाव किया जाता है। गप धऽन्निसां,
नि
मन्निधप, धनिप, सांनिधऽ प इस प्रकार की स्वरमाला स्पष्ट रूप से अल्हैया की झलक दिखाती है। तथापि बिलावल में रिषभ अत्यावश्यक स्वर है, जो कमलरञ्जनी में बिलकुल वर्जित है। क्वचित् धैवत को दुर्बल करके बिहाग की छाया इस राग में पैदा की जाती है और यही कमलरञ्जनी की विशेषता है। आरोह में मध्यम वर्जित होने के कारण तथा धैवत का आरोहावरोह में स्पष्ट प्रयोग कमलरञ्जनी को बिहाग से अलग रखता है। वादी धैवत, संवादी गांधार, समय प्रातःकाल है। मुख्यांगः—सागप, धन्निधप, मग, पमगऽऽसा।

नि न्नि
आरोहावरोहः—साग, प, धऽनिसां। सांनिधऽपमग, पमगऽऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, गऽसा, पमगऽसा, गपमग, पमगऽसा। सा, मग, सामग, सागऽमग, पमग, सामगपऽमग, पमग, मग,
नि सां
पगमगऽसा। सा, ग, प, गप, गसापे, गप, धऽ, प, न्निधप, मग, गपमग,
नि सां
पमगऽसा,। सागप, गंप, गप, धऽनिसां, सांनिधऽऽ प, मगमन्निधप,
नि
धन्निप, धनिसांधन्निप, निप, गमप, गमगऽऽसा। गप, धऽऽ निसां,
धनिसां, निसां, गंसां, पंमंगंऽऽसां, गंमंपं, गंमंगंऽऽसां. सां, धन्निप, मगमन्निधप, मग, सां, निप, मग; पमग, पगमग, न्निमग, पमगऽसा,
नि
निपऽनिऽऽसा, गसा, साग, प, धऽऽनिसां ॥

१–कमलरञ्जनी–तिलवाड़ा (ख्याल)

सुमिरो वर नटनागर, सुन्दर गोपाल लाल ॥ ध्रु० ॥
झलकनि अलकनि की लखि पलकनि गति जात भूल ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३				×			
मत्रि	धप	प	–गमपम	ग	–	गसा	–सा
सुमि	रोऽ	ऽ	ऽवरनट	ना	ऽ	गऽ	ऽर
२		सा		०			
प़	निसा	ग	गसा	गम	पम	ग	गसा
सुं	दर	गो	पाऽ	लऽ	ऽऽ	ला	ऽल
३				×			
पप	निनि	निध	निनि	सां	–	सांगं	गं
झल	कन	झल	कन	की	ऽ	लखि	प
२		सां		०			
गंसां	गंमं	गंसां	धत्रि	धप	गमपग	ग	गसा
ऽल	कनि	गति	जाऽ	ऽत	भऽऽऽऽ	ऽ	ऽल

२—कमलरञ्जनी–झपताल

जयति नव नागरी, सकल शुभ आगरी।
पल चपल चित नयन, राधा किशोरी ॥ ध्रु० ॥
कृष्ण–नव–नील–घन की चातकी मान,
कृष्ण–मुख–हिमकिरण चंदा–चकोरी ॥

×	२		०	३	×	२	०	३
ग म	त्रि ध प	प म	म ग सा	नि़ प़	नि़ सा सा	ग –	म ग सा
ज य	ति न व	ना ऽ	ग री ऽ	स क	ल शु भ	आ ऽ	ग री ऽ
ग प	नि ध नि	सांसां	सां सां सां	सां –	ध त्रि ध	प म	ग – सा
प ल	च प ल	चित	न य न	रा ऽ	धा ऽ कि	शो ऽ	री ऽ ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग प	नि ध नि	सां –	सां सां सां	सां गं	गं – गं	गं मं	गं – सां
कृ ऽ	ष्ण न व	नी ऽ	ल घ न	की ऽ	चा ऽ त	की ऽ	मा ऽ न

गं मं	पं मं गं	गं मं	गं सां सां	सां –	ध नि ध	प म	ग – सा
कृ ऽ	ष्ण मु ख	हि म	कि र ण	चं ऽ	दा ऽ च	को ऽ	री ऽ ऽ

३—कमलरञ्जनी–त्रिताल

जावो सखि जावो री जमुना तीर । इतनि बिनति मोरी हरि सौं कहियो
तुमरे दरस बिन सब छिन भंगुर ॥ ध्रु० ॥
तुमरे ही नित नाम जपत हूं । वेगि पधारो अब नंद–कुंवर ॥

०	३	×	२
गऽ ऽसा ऽऽ ग	प नि ध नि	सां ऽ ध नि	प म ग सा
जाऽ ऽवो ऽऽ स	खि जा ऽ वो	रीऽ ऽ ज मु	ना ऽ ति र
म ग म नि	ध प म ग	ग म प ऽ	ग म ग ऽ
इ त नि वि	न ति मो री	ह रि सौं ऽ	क हि यो ऽ
ग प ध (नि) नि	निध निध नि सां	गं सां ध नि	ध प मग सा
तु म रे द	रऽ सऽ बि न	स ब छि न	भं ऽ गुऽ र
प प सां ऽ	सां ऽ सां सां	गं सां गं मं	गं गं सां ऽ
तु म रे ऽ	ही ऽ नि त	ना ऽ म ज	प त हूँ ऽ
गं – सां नि	ध नि ध प	ग म प म	ग म ग सा
बे ऽ ग प	धा ऽ रो ऽ	अ ब नं ऽ	द कुँ व र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४—कमलरञ्जनी–आड़ा चौताल (लक्षणगीत)

कमलरञ्जनी मनमोहत, समय रुचिर सखि शुभ प्रभात
वेलावली नित करत ठाठ ॥ ध्रु० ॥ धैवत सुर वादी सोहत,
सुर गंधार संवादत नित, सा–धनि धप गपधनि धप मग,
ऋषभहीन, द्वय धर निषाद ॥

×	२	०	३	०	४	०
म ग	म त्रि	ध प	ग म	प म	ग म	ग सा
क म	ल र	ऽ ञ्ज	नी ऽ	म न	मो ऽ	ह त
ग प	ध नि	सां सां	सां सां	ध त्रि	ध प	ऽ प
स म	य रु	चि र	स खि	शु भ	प्र भा	ऽ त
सां ऽ	ध त्रि	ध प	ग म	प म	ग म	ग सा
वे ऽ	ला ऽ	व ली	नि त	क र	त ठा	ऽ ठ
प प	ध नि	सां सां	सां –	सां –	सां –	सां सां
धै ऽ	व त	सु र	वा ऽ	दी ऽ	सो ऽ	ह त
सां सां	सां गं	सां सां	सां गं	पं मं	गं मं	गं सां
सु र	गं धा	ऽ र	सं ऽ	वा ऽ	द त	नि त
सां –	ध त्रि	ध प	ग प	ध त्रि	ध प	म ग
सा ऽ	ध नि	ध प	ग प	ध नि	ध प	म ग
म ग	म त्रि	ध प	ग म	प म	ग म	ग सा
ऋ ष	भ ही	ऽ न	द्व य	ध र	नि षा	ऽ द

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग—कलावती

(संस्कृत) कोमला या निषादेन हरिकांभोज—मेलजा ।
रिमाभ्यां वर्जिता पांशा रात्रौ गेया 'कलावती' ।।

(हिन्दी) बरजत मध्यम रिखबको नी कोमल कर मान ।
पस वादी संवादितें 'कलावती-कल्याण ।।

(मराठी) मध्यरात्रिच्या समयीं 'कलावती' मोहवी मधुर नादें ।
निषाद कोमल, वर्ज्यंत रिम, अंशत्वा प, स स्वरांना दे ।।

कलावती खमाज मेल की एक मधुर रागिनी है। महाराष्ट्र के कंठ-कोकिल पंडितराव नागरकर, गायन साम्राज्ञी रोशन-आरा बेगम, तथा श्रीमती गंगुबाई हंगल ने इसका विशेष प्रचार किया है ! इसे 'कलावती-कल्याण' भी कहते हैं। इसमें ऋषभ, मध्यम पूर्णतः वर्जित हैं। निपाद कोमल तथा आंदोलित है। वादी पंचम, सम्वादी षड्ज है। समय मध्यरात्रि के पहिले का प्रयुक्त होगा। जाति अर्थात्

सां सां सां
औडव। मुख्यांगः—ग प ध नि ऽ ऽ धप, गपधप,

ग ऽ सा। आरोह में निपाद दुर्बल रखने से धैवत—षड्ज की सङ्गति सुन्दर दिखाई देती है।

सां सां सां सां
आरोहावरोहः—सागपध निऽ ऽ धप, धसां। सांनिऽ

सां सां सां
ऽधप, गपधनिऽ ऽ धप, गपधप, गऽऽसा।

सा सा सा सा सा सा
स्वरविस्तारः—सा, ऩि, ऽ, ऽ, ध़सा। सा, ऩि ऽ ऽ

सा सा सा
ऩिध़प़, प़ध़ ऩिऽ ऽ, ध़सा। ऩिध़सा, ग ऽ सा, ऩिध़प़गऽसा ऩि, ध़ऩि, सा। साग, ऩिऩिध़साऽग, ऩिऩिग, गऩिऩिग, गसा,ऩिऩिऩि,साग, ऩिध़ग,

ऽसा, ऩिध़सा। साग, पगसागप, पगऽसा, ऩि, ऩि सागप, पसागप,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गसाप, गप, धप, गधपग, धगपगऽसा, ऩ़िऩ़िध़सा । सा, गपध, ऩि, ऽ ऽ ऩ़ि ऽऽ ऩि ऽ ऽ ऩिधप, गपध, ऩिधप, धऩिधप, गपधपगं, पग, पधग, धग, ऩिधपग, गनिधुपग, ऩिग, ऩिधपग, गपगऩिपग पगऽसा, ऩ़िध़सा । सा, गपध ऩि, ऩिधसां, पधऩिसां, सा, गपध, ऩिऽऽ धसां, गंसां, गंसा, गंसां, ऩिधसां, ऩिधप, गपधऩिधप, गंसांऩि, गंऩि, ऩिधप, गपध, ऩिधप, ऩिधप, ग, ग, पऽसा, सागप-ऩ़िऩ़िध़प़, ग़प़ध़ऩ़ि, ध़प़, ऩ़िध़सा ।

(ऊपर लिखे स्वर: सां सां; सां सा, सां सा सां सां; सां; प; सां; सां; सां)

१—कलावती—झपताल

सखी माने ना मोहन, हम सङ्ग करे रार।
मोहे देख आये निकट—अरु गगरी लीन्ही छीन ॥ ध्रु० ॥
मन मधुर बोले वानी—सङ्ग सोहत बृजरानी।
गोरी नार मग रोकत—नेंक लाज आई न ॥

×		२			०		३		
			सां						
ग	प	ध	ऩि	धप	गप	धप	प	ग	सा
स	खि	मा	ऽ	नेऽ	नाऽ	ऽऽ	मो	ह	न
		ग					ध		
सा	ग	प	—	म	प	ध	ग़	—	प
है	म	सं	ऽ,	ग	क	रे	रा	ऽ	र
			सां				सां		
ग	प	ध	ऩि	ध	सां	सां	ऩि	ध	सां
मों	हे	दे	ऽ	ख	आ	ये	नि	क	ट

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध सां	गं गं सां	त्रि ध	प ग सा
अ रु	ग ग री	ली न्ही	छी ऽ न
ग प	ध त्रि ध	सां सां	सां त्रि ध सां
म न	म धु र	बो ले	बा ऽ नी
सां त्रि ध	सां त्रि ध सां	सां सां त्रि त्रि	सां त्रि ध प
सं ग	सो ह त	बृ ज	रा ऽ नी
ध सां	गं पं गं	गं पं	गं गं सां
गो री	ना ऽ र	म ग	रो क त
गं सां	त्रि ध प	ग प	ग ऽ सा
नैं क	ला ऽ ज	आ ऽ	ई ऽ न

२—कलावती—त्रिताल

बोलन लागी कोयलिया, भ्रमर बन भ्रमत मधुमास आयो ॥ ध्रु० ॥
बांसुरी की गूँजत गुँजार, अतिही सुहावत बिरछन छैयाँ ॥

			ग
३	×	२	० बो
प ध त्रि सांत्रि	ध - प -	ग प गप धप	ग - सा सा
ऽ ल ऽ नऽ	ला ऽ गी ऽ	को ऽ यऽ लीऽ	या ऽ ऽ भ्र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

											सां				
सा	सा	प	ग	प	प	प	ग	प	ध	त्रि	सांत्रि	त्रि	ध	प	ग
म	र	व	न	अ	म	त	म	घु	मा	ऽ	सऽ	आ	ऽ	यो	वां
		सां								सां					
प	ध	त्रि	ध	सां	-	सां	-	सां	सां	त्रि	ध	सां	-	सां	ध
ऽ	सु	री	ऽ	की	ऽ	गूँ	ऽ	ज	त	गुँ	ऽ	जा	ऽ	र	अ
सां	गं	सां	सां	त्रि	त्रि	ध	प	त्रि	सांत्रि	ध	प	ग		-	सा
ति	ही	ऽ	सु	हा	ऽ	व	त	वि	रऽ	छ	न	छै		ऽ	याँ

३—कलावती—एकताल

सुघर श्याम बनवारी, अरुण वरन चन्द्रवदन।
तनु गोरस लिपटानी ॥ ध्रु० ॥
मकर कुंडल, तिलक भाल, वंशी बाजत रसाल,
वसन सोहे नील नवल, कोटि काम लजवेरी ॥

०		३		४		×		०		२	
			सां								
ग	प	ध	त्रि	ध	प	गप	धप	ग	सा	सा	-
सु	घ	र	श्या	ऽ	म	बऽ	नऽ	वा	ऽ	री	ऽ
सा	सा	ग	ग	प	प	प	ग	ग	प	ग	प
अ	रु	ण	ब	र	न	चं	ऽ	द्र	व	द	न
		सां	सां								
प	ध	त्रि	त्रि	ध	प	गप	धप	ग	सा	सा	-
त	नु	गो	ऽ	र	स	लिंऽ	पऽ	टा	ऽ	नी	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

			सां	सां		सां					
ग	प	ध	त्रि	त्रि	ध	त्रि	ध	ध	सां	–	सां
म	क	र	कुं	ड	ल	ति	ल	क	श्रा	ऽ	ल
				सां	सां	सां	सां	मं			
ध	सां	गं	सां	त्रि	त्रि	त्रि	त्रि	त्रि	ध	–	प
वं	ऽ	शी	ऽ	वा	ऽ	ज	त	र	सा	ऽ	ल
						सां					
ध	सां	गं	पं	गं	सां	त्रि	–	त्रि	ध	ध	प
व	स	न	सो	ह	त	नी	ऽ	ल	न	व	ल
			सां								
ग	प	ध	त्रि	ध	प	गप	धप	प	ग	–	सा
को	ऽ	टि	का	ऽ	म	लऽ	जऽ	बे	ऽ	ऽ	री

४–कलावती–ताल प्रभाकर (लक्षणगीत)

सखी कलावती के मधुर सुर, नितही मध्यम रिखब बरजत, मध्य यामिनि समय सुरुचिर ॥ ध्रु० ॥ सूर्य पंचम स्थान विरहत, प्रथम स्थानमों चंद्र सोहत, निखद कोमल कंपयुत कर ॥

(ताल प्रभाकर–मात्रा १४। सम १, ताली २, काल १। ताल के बोल)

×				२			०				३		
धीं	धीं	धागे	त्रक	धा	धा	त्रक	तीं	तीं	तागे	त्रक	धा	धा	त्रिक

३			×				२			०			
ग	प	ध	त्रिसां	त्रिसां	ध	प	ग	प	ध	ग	प	ग	सा
स	खि	क	लाऽ	ऽऽ	व	ती	के	ऽ	म	धु	र	सु	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

		सां सां	
सा ग ग	प – प प	त्रि त्रि सां	त्रि ध प प
नि त ही	म ऽ ध्य म	रि ख ब	ब र ज त
ग प ध	त्रिसां त्रिसां ध प	ग प ध	ग प ग सा
म ऽ ध्य	याऽ ऽऽ मि नि	स म य	सु रु चि र
		सां सां	
ग प ध	सां – सां सां	त्रि त्रि ध	सां सां सां सां
सू ऽ र्य	पं ऽ च म	चं ऽ द्र	बि र ह न
		सां सां	सां
सां सां सां	गं सां सां सां	त्रि त्रि ध	त्रि ध प प
प्र थ म	स्था ऽ न मों	चं ऽ द्र	सो ऽ ह त
ग प ध	त्रिसां त्रिसां ध प	ग प ध	ग प ग सा
नि ष द	कोऽ ऽऽ म ल	कं ऽ प	यु त क र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग—नारायणी

(संस्कृत) हरिकांबोज मेलाच्च गांधारेणापि चोज्झिता।
नारायणीति षड्जांशा चाधा त्वधिरोहणे ॥

(हिन्दी) खंमाजी के मेल में जब न लगत गंधार।
मनमोहत नारायणी षड्ज-प्रमुख संचार ॥

(मराठी) नारायणीति शोभे निषाद कोमल, न घेत गांधार।
सप संवादन मोहत रजनी समयांत रसिक नर-नार ॥

नारायणी एक सुमधुर दाक्षिणात्य राग है। इसकी उत्पत्ति खम्माज मेल से होती है। इसमें निषाद कोमल, गांधार वर्जित तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसके आरोह में निषाद दुर्बल है। सा, रेमपनि़, धप; नि़ध, मपनि़धप, इत्यादि स्वरमाला इस राग में बारम्बार दिखाई जाती है। इससे सूरदासी मल्हार का आभास इस राग में होना सम्भव है। तथापि शुद्ध निषाद नारायणी में क्वचित् ही लिया जाता है, अतः मल्हार अंग नारायणी में बिल्कुल नहीं। सूरदासी तो मल्हार अंग की है और नारायणी दुर्गा अंग की रागिनी। सूरदासी में धैवत का प्रमाण अत्यल्प है, नारायणी में धैवत आरोहावरोह में आवश्यक स्वर है। वादी तार षड्ज, सम्वादी पञ्चम, समय मध्यरात्रि का। मुख्यांग:—रेमपनि़, धप, मपम, रेसा, नि़ध़सा।

आरोहावरोह:—सारेमप, ध, सां, रेंसां, नि़धप, रेंमपनि़धप, मपम, रेसा।

स्वरविस्तार:—सा, ध़, ध़, ध़सा। साध़, ध़, ध़प़, म़प़, म़प़ध़सा। ध़सा, ध़सारे, रेसा, रेध़सा, ध़रे, रे, रेसा; ध़रेसा, रेध़, ध़रेध़, नि़ध़प़, सानि़ध़प़, म़प़, म़प़ध़सा। सा, रेम, ध़सारेम, रेसा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रेसा, साधसा, रेम, मरे, रेसा, रेम, सारेम, मप, मपम, रेसा। सा, रेमप, मप, मपम, मप, मपधप, धपम, रेमपधप, धम, रेमपधम, पम, धधप, मप, धप, धपम, रेमपधपम, रेम, मरे, मरेसा। सा, रेमपध, ञिधप, रेमपञिधप, मञिधप, ञिधप, सांऽञिधप, रेमपञिधप, ञिधमप, ञिधप, रेमपञिधप, मपम, रेसा। सा, रेमपधञिधप, मपधसां, सांध, धसां, धरेंसां, ञिध, ञिधसां, रेंसां, रेंमंरेंसां, रेमरेसा, रेंमंरेंसां, ञिधप, रेमपञिधप, सांऽञिधप, मञिधप, मपम, रेमपञिधप, मपम, रेसा।

१—नारायणी—त्रिताल

धन्य हो प्यारा भारत देश,
हुये जहाँ श्रीराम, श्याम अरु विक्रम,
भोज, अशोक और हर्ष॥ ध्रु०॥
शिव, प्रताप, तिलक, मोहन जहाँ,
हुये शहीद वीर धीर सुभाष॥

३				×				२				०			
ध	म	प		सां	–	ञि	ध	प	म	रे	म	प	ञि	ध	प
ध	ऽ	न्य		हो	ऽ	प्या	ऽ	रा	ऽ	भा	ऽ	र	त	दे	ऽ
प	सां	सां	रें	सां	ञि	सां	ञि	ध	प	म	प	म	रे	सा	सा,
श	हु	ये	ज	हाँ	ऽ	सि	रि	रा	ऽ	म	श्या	ऽ	म	अ	रु,
ध	सा	रे	म	प	ञि	म	प	ध	सां	सां	रें	सां	ञि	ध	प
वि	ऽ	क्र	म	भो	ऽ	ज	अ	शो	ऽ	क	औ	ऽ	र	ह	ऽ
प	म	प	ध	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	सां	रें	सां
र्ष	शि	व	प्र	ता	ऽ	प	ति	ल	क	मो	ऽ	ह	न	ज	हाँ
–	रें	रें	मं	रें	सां	ञि	ध	प	म	रे	म	प	ञि	ध	प
ऽ	हु	ये	श	ही	द	वी	ऽ	ऽ	र	धी	ऽ	र	सु	ऽ	भा
प															
ष															

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२–नारायणी–त्रिताल

आये सखी ना घर साजन, उनबिन लागत घरहि छिन छिन ॥ ध्रु० ॥
जबसे गये सौतन के सङ्ग, छिन छिन हि बीते रस की रैन ॥

															सां
३				×				२				०			आ
नि॒	ध	म	प	नि॒	ध	प	–	नि॒	प	रे	म	रे	सा	सा	रे
ऽ	ये	ऽ	स	खी	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	घ	र	स	ज	न	उ
म	रे	म	प	नि॒	ध	म	प	नि॒	प	रे	म	रे	सा	सा	म
न	बी	ऽ	न	ला	ऽ	ग	त	घ	र	हि	छि	न	छि	न	ज
प	ध	सां	ध	सां	–	सां	सां	नि॒	ध	नि॒	ध	सां	–	सां	रें
ब	से	ऽ	ग	ये	ऽ	सौ	ऽ	त	न	के	ऽ	स	ऽ	ङ्ग	छि
मं	रें	सां	नि॒	ध	प	म	प	नि	ध	म	प	म	रे	सा	
न	छि	न	हि	बी	ऽ	ते	ऽ	र	स	की	ऽ	रै	ऽ	न	

३–नारायणी–एकताल

रंगीली राम की अखियां–श्यामबरन ।
चन्द्रवदन अति मंजुल सखि रसना ॥
सिर सोहत मुकुट मोर ।
कटि सोहत पीताम्बर ॥
उर सोहत वैजयंति ।
निरखि निरखि हुलसत हिय ॥

×		०		२		०		३		४	
ध	प	म	म	रे	सां	रे	म	प	नि॒	ध	प
रं	गि	लि	रा	ऽ	म	की	ऽ	अ	खि	यां	ऽ
रे	म	प	नि॒	ध	प	रे	म	रे	सा	सा	सा
श्या	म	म	ब	र	न	चं	ऽ	द्र	व	द	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	रें	सां	नि॒	ध	प	रे	म	प	नि॒	ध	प
अ	ति	मं	ऽ	जु	ल	स	खि	र	स	ना	ऽ
म	प	ध	सां	सां	सां	सां	ध	सां	ध	सां	सां
सि	र	सो	ऽ	ह	त	मु	कु	ट	मो	ऽ	र
सां	सां	सां	ध	सां	सां	सां	रें	सां	नि॒	ध	प
क	टि	सो	ऽ	ह	त	पी	ऽ	तां	ऽ	ब	र
ध	सां	रें	मं	रें	सां	नि॒	ध	प	म	रे	सा
उ	र	सो	ऽ	ह	त	बै	ऽ	ज	यं	ऽ	ति
सां	रें	सां	नि॒	ध	प	रे	म	प	नि॒	ध	प
नि	र	खि	नि	र	खि	हु	ल	स	त	हि	य

राग—साजन

(संस्कृत) रागश्च साजनो गेयो रात्रो काम्भोजमेलजः ।
आरोहे च रिपौ नस्तश्चधगौ नावरोहणे ॥

(हिन्दी) सजनी साजन में करे रिप-वर्जित आरोह ।
मस वादी सम्वादि अरु, धगबिन कर अवरोह ॥

राग साजन एक यावुनिक स्वरूप है । खमाज मेल से इसकी उत्पत्ति होती है । इसके आरोह में ऋषभ पञ्चम वर्जित हैं । आरोह में निषाद शुद्ध तथा अवरोह में निषाद कोमल है । अवरोह में धनि॒प तथा गमरेसा इस प्रकार निषाद तथा गांधार वक्र हैं । मगमऽऽ इस प्रकार का मुक्त मध्यम अत्यन्त वैचित्र्य-पूर्ण है । वादी मध्यम, संवादी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

षड्ज, मुख्यांग:—ऩि़सागमध, धऩिप, मगम, गमरेऽसा । समय रात का दूसरा प्रहर।

आरोहावरोह:—ऩि़सागम, ध, ऩिसां, । सां, धऩिप, मगम, गमरे, सा ।

स्वरविस्तार:—सा, ऩि़सा, ध़ऩि़सा, म़ध़ऩि़सा, ध़ऩि़प़, म़ध़, ऩि़ध़ऩि़सा । साग, ऩि़सा, रेसा, ध़ऩि़प़, ध़ऩि़सग, मग, गमरेसा । ध़ऩि़साग, । मग, सागमग, गमग, मरेसा, गमग, मग, म, सागम, मग, मरेऽसा । ध़ऩि़सागम, गम, मगम, गमध, गमग, मध, सागमध, ऩिप, धऩिप, गमरेसा, गमधऽ, ऩिप, धऩिप, मगम, गमरेसा । गमध, निसां, साग, गम, मध, सामध, मध, गमध, ऩिध, धगऽम, धऩिप, म, गमध, ऩिध, मधनिसां, सा, सागमधनिसां, रेंसां, गंमंरेंसां, गमरेसा, रेंसां गंमंरेंसां, ऩिध, धऩिप, मगम, धगम, गमरेसा, ऩि़ध़ऩि़सा ध़ऩि़प़, म़ध़, ऩि़ध़ऩि़सा ।

१–राग साजन–त्रिताल

करत मोसे रार नटखट मुरारी ।
सिगरे दिन तो सखियन को निरखत ॥
और करत मग में बरजोरी ॥ ध्रु० ॥
कुबरी, कुबजा सङ्ग नेह लगाई ।
अब न खेलूंगी तोसे होरी ॥

															ध़
३				×				२				०			क
नि	सां	ध	ऩि	प	–	म	ग	म	म	ग	म	रे	ऽ	सा	ध़
र	त	मो	से	रा	ऽ	र	न	ट	ख	ट	मु	रा	ऽ	री	सि
ऩि़	सा	ग	म	ध	–	ऩि	प	ध	ऩि	सां	–	ध	ऩि	प	प,
ग	रे	दि	न	तो	ऽ	स	खि	य	न	को	ऽ	नि	र	ख	त,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध नि सां ध	त्रि प म ग	(म) ऽ ग म	रे ऽ सा म
औ ऽ र क	र त म ग	में ऽ ब र	जो ऽ री कु
ग म ध नि	सां – ध नि	सां – गं मं	रें – सां गं
व रि कु ब	जा ऽ स ङ्ग	ने ऽ ह ल	गा ऽ ई अ
मं मं रें –	सां – ध त्रि	प – ग म	रे – सा
ब न खे ऽ	लूं ऽ गी ऽ	तो ऽ से ऽ	हो ऽ री

२–राग साजन–झपताल (लक्षणगीत)

सुन सजनी साजन, कर मेल कांभोज, मस मधुर संवदन ॥ ध्रु० ॥
करे वरज रिप रोह, अति वक्र अवरोह।
सारेसा निसा धनिपमऽ, रजनी समय मान ॥

०	३	×	२
सा सां सां	ध त्रि प	म –	गम रे सा
सु न	स ज नि	सा ऽ	जऽ ऽ न
ध़ त़्रि	सा ग म	ध –	त्रि प म
क र	मे ऽ ल	कां ऽ	भो ऽ ज
ध नि	सां रें सां	धत्रि प	गम रे सा
म स	म धु र	संऽ ऽ	वऽ द न
ग म	ध त्रि प	ध नि	सां – सां
क रे	व र ज	रि प	रो ऽ ह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	नि	सां	गं	गं	गं	मं	रें	–	सां
अ	ति	व	ऽ	क्र	अ	व	रो	ऽ	ह
सा	रे	सा	नि	सा	ध	ऩि	प	म	–
सां	रें	सां	नि	सां	ध	ऩि	प	म	ऽ
नि	सां	ध	ऩि	प	म ग	म	रे	ऽ	सा
र	ज	नी	ऽ	स	म	य	मा	ऽ	न

——————

राग–पद्मावती

(संस्कृत) निशिगेया च शोभेते नास्याम् गांधार–धैवतौ ।
पद्मावती निशादेन कोमला मध्यमांशिका ॥

(हिन्दी) नहिं गंधार न धैवतहि कोमल करत निषाद ।
प्रिय लगती पद्मावती मध्यम–षड्ज सँवाद ॥

(मराठी) नाहींच शोभले धग, निषाद मृदु शुद्ध सर्व स्वर जेथ ।
पद्मावती करितसे मध्यरात्रि मध्यषड्ज संवाद ॥

पद्मावती एक वक्र किन्तु अत्यन्त मधुर राग स्वरूप है। इसमें गांधार, धैवत, वर्जित, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। अर्थात् जाति औडव है। मधुमाद सारङ्ग के भी यही स्वर हैं, परन्तु पद्मावती का आरोहावरोह तथा वादी–संवादी–भेद मधुमाद से इस राग को बिलकुल अलग रखता है। मधुमाद में सारङ्ग का प्राबल्य है। पद्मावती में केदार की झलक है। पद्मावती का उठाव सारे साम, मर्प, मपम, सारेऽसा–इस प्रकार किया जाता है। इसमें केदार अंग स्पष्ट प्रतीत होता है। किन्तु केदार में कोमल निषाद प्रमुख स्वर नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है। धैवत भी एक आवश्यक स्वर है। पद्मावती में धैवत को बिलकुल स्थान नहीं, तथा शुद्ध निषाद भी वर्जित है। अतः पद्मावती केदार से पृथक है। (प) नि़ऽप (प) नि मपसां ऽपनिप इन स्वरों से नायकी कानडा की छाया इस राग में दिखाई देती है; किन्तु कोमल गांधार इस राग में कणमात्र भी न होने से नायकी से पद्मावती भिन्न है। सारङ्ग के स्वर होते हुए भी इसमें सारङ्ग का आभास नहीं होता, क्योंकि रेमप, मपनिसां, मपनिप, पमरेऽसा इस प्रकार की सारङ्ग वाचक सरल स्वरमाला पद्मावती में नहीं आती। संक्षेप में यही कहना ठीक होगा कि, सारङ्ग के स्वरों के पूर्वांग में कुशलता से केदार तथा उत्तरांग में नायकी दिखाने से पद्मावती की रचना होती है। वादी मध्यम, सम्वादी तार षड्ज। समय रात का दूसरा प्रहर। मुख्यांग नि मप सां, पनिऽप, मपम, सारेऽसा।

आरोहावरोहः—सारेसाम, मप, पनिऽप, (प) नि़मपसां। सांऽपनिऽप, मपम, सारेऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़सा। सा, प़नि़प़, नि़प़, म़प़नि़प़, नि़म़प़सा। सा, सारेऽरेसा, रेनि़सा, प़नि़ऽप़, प़रे, रेसा, नि़रेसा, रेसारेनि़सा, (प) नि़प़, प़नि़म़प़सा। सारेसा, रेसा, सारेसाम, मसारेसा, साम, मपम, सारेसाम, मप, ममप, पम, प़नि़प़, पम, मपम, सारेऽसा। सारेसाम, मप, साममप, सामप, मऽसारेसा, सामऽ, मप, पम, सारेसाम, मप, (प) निप, मनिप, निपऽम, मऽसारेसा। साम, मप, मनिप, निमपसां, पनिप, निप, मनिप, मपसां, पनिप, मपमऽरेसा। मपनिप, सां, सां, सांरेंसां, मंऽरेंसां, सांरेंसांमंऽरेंसां, मंमंरेंसां, सांमंऽरेंसां, सांमंऽसांरेंसां, रेंसां, पनिप, मपसां, पनिप, निनिप, मपनिनिप,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मनिप, निपम, पम, म, सारेसा। सा, पनिप मपनिप, मपमनिप, निमपसा ।

१–पद्मावती–झूमरा (ख्याल)

आई री हो बहार सखी फुलवन के नये नये गेंद, नई नई कलियाँ। ध्रु०।
सब वन फूले अंबुवा डोले, डोले डार, डोले पात, बोले कोयलिया ॥

३	×	२	०
(प) नि पम –रे सासा	म – –म	प –प (प) निप सांसां	पनि प –
आ ईरी ऽहो ऽब	हा ऽ ऽर	स ऽखी फुल वन	केऽ ऽ ऽ
निपम– – मप –	मप मप म–मप	– निप – पम	सारे सा –
नऽयेऽ ऽ नये ऽ	गेंऽ ऽद नऽईऽ	ऽ नई ऽ कलि	यांऽ ऽ ऽ
म प नि –प	सां – (सां) रें	सां सांमं सांरें सां	(सां)पनि प
स ब व ऽन	फू ऽ ले	ऽ अंबु वाऽ ऽ	डो लेऽ ऽ
(प) सां निप निप मम	पप (प) नि –प	– मप – पम	सारे सा –
डो लेऽ डाऽ रपा	ऽत बो ऽले	ऽ कोऽ ऽ यलि	याऽ ऽ ऽ

२–पद्मावती–त्रिताल

नवल छैल छबीला मन मोहत,
हरि खेलत होरी जमुना तट। ध्रु०।
केसर की पिचकारी रंगभरी,
मुकुट लटक मन माँही अटकत ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०	३	×	२
सा रे सा म	– म प त्रि	प – म प	म – रे सा
न व ल छै	ऽ ल छ बि	ला ऽ म न	मो ऽ ह त
म प सां –	प त्रि म –	त्रि त्रि म प	म – रे सा
ह रिं खे ऽ	ल त हो ऽ	री ऽ ज मु	ना ऽ त ट
म प त्रि प	सां – सां सां	सां – सां सां	प त्रि प प
के ऽ स र	की ऽ पि च	का ऽ रि रं	ऽ ग भ री
सां रें सां मं	मं मं रें सां	प त्रि म प	म म रे सा
मु कु ट ल	ट क म न	माँ ऽ ही ऽ	अ ट क त

३–पद्मावती–त्रिताल

झनन बाजे मोरी पायलिया, जाऊं कैसे पियाघर, आई रतिया। ध्रु०।
सास ननदिया जागे दौरनिया, और जागे सब लोग–लुगैया॥

३	×	२	०
त्रि म प	सां – प त्रि	प – म प	म – सा रे
झ न न	बा ऽ जे ऽ	मो ऽ री ऽ	पा ऽ य लि
(म)सा सा – सा	म – म, –	प प त्रि प	म म सा रे
या जा ऽ ऊं	कै ऽ से ऽ	पि या घ र	आ ई र ति
सा मप त्रि प	सां सां सां सां	– सां सां सां	प त्रि प –
या साऽ स न	न दि या ऽ	ऽ जा गे दौ	र नि या ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

–	सां	रें	सां	मं	–	सां	रें	सां	सां	त्रि	प	म	म	सा	रे
ऽ	औ	ऽ	र	जा	ऽ	गे	ऽ	स	ब	लो	ऽ	ग	लु	गै	ऽ
सा															
या															

४–पद्मावती–एकताल

आये घर नंनलाल, धन घरि धन दिन
मंगल जनम जीवन आज सफल । ध्रु० ।
ठुमक ठुमक चाल चलत, नील वसन नव सोहत
मुख पर केशर छिरकत अतर अबीर अरु गुलाल ॥

×		०		२		०		३		४	
सां	–	प	त्रि	प	प	म	–	सा	रे	सा	सा
आ	ऽ	ये	ऽ	घ	र	नं	ऽ	द	ला	ऽ	ल
सा	रे	सा	म	म	म	प	प	म	त्रि	प	प
ध	न	घ	रि	ध	न	दि	न	मं	ऽ	ग	ल
सां	सां	प	त्रि	प	प	म	–	सा	रे	सा	सा
ज	न	म	जी	व	न	आ	ऽ	ज़	स	फ	ल
म	प	त्रि	प	सां	सां	सां	–	सां	सां	सां	सां
ठु	म	क	ठु	म	क	चा	ऽ	ल	च	ल	त
सां	–	सां	रें	सां	सां	सां	सां	प	त्रि	प	प
नी	ऽ	ल	व	स	न	न	व	सो	ऽ	ह	त
सां	रें	सां	मं	मं	मं	मं	सां	सां	रें	सां	सां
मु	ख	प	र	के	ऽ	श	र	छि	र	क	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	सां	सां	प	ऩि	प	म	म	सा	रे	सा	सा
अ	ंत	र	अ	बी	र	अ	रु	गु	ला	ऽ	ल

५—पद्मावती—झपताल (लक्षणगीत)

नवल बाजत सखी, रागिनी रात की।
केदार सों मिलत मधुर मधु नायकी ॥ ध्रु० ॥
मस सुवादन करत, अगध, नि मृदु सोहत।
पद्मावती धरत सुरस सरी सुरन की ॥

३			×		२			०	
ऩि	म	प	सां	-	प	ऩि	प	म	-
न	व	ल	बा	ऽ	ज	त	स	खी	ऽ
ऩि	म	प	म	-	म	सा	रे	सा	-
रा	ऽ	गि	नी	ऽ	रा	ऽ	त	की	ऽ
सा	-	म	-	म	प	-	ऩि	म	प
के	ऽ	दा	ऽ	र	सों	ऽ	मि	ल	त
सां	सां	प	ऩि	प	प	ऩि	प	म	-
म	धु	र	म	धु	ना	ऽ	य	की	ऽ
म	म	प	सां	-	सां	सां	सां	(सां)	सां
म	स	सु	वा	ऽ	द	न	क	र	त
प	ऩि	प	सां	-	सां	सां	प	ऩि	प
अ	ग	ध	नी	ऽ	मृ	दु	सो	ह	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	सां	प	त्रि		प	म	–	सा	रे		सा
प	द्	मा	ऽ		व	ती	ऽ	ध	र		त
सा	रे	सा	म		म	प	त्रि	प	म		–
सु	र	स	स		री	सु	र	न	की		ऽ

राग-चम्पाकली

(संस्कृत) निषादः कोमलस्तीव्राश्च सकलाः स्वराः ।
चम्पाकली सदा ज्ञेयाऽरिधाऽरोहे च वर्जिका ॥

(हिन्दी) मृदु निषाद तीव्रहि सबहि चढ़त न रिध सुर मान ।
सप वादी सम्वादितें, चम्पाकली बखान ॥

चम्पाकली एक नया प्रचार में आया हुआ अत्यन्त मधुर स्वरूप है। आजकल इसका प्रचार विशेष हो रहा है। नागपुर के एक नवोदित गायक श्री श्रीधरराव ढगे से यह स्वरूप मुझे प्राप्त हुआ है। यह वाचस्पति ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इसमें मध्यम तीव्र तथा निषाद कोमल है, अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में रिषभ, धैवत बिलकुल वर्जित हैं। अवरोह सरल तथा सम्पूर्ण है। निषाद एक आंदोलन युक्त मधुर स्वर तथा महत्व का न्यास स्थान है। भीमपलासी, मारुविहाग, सरस्वती आदि भिन्न-भिन्न रागों की मधुर छाया इस राग में होने से अपने नाम के अनुसार ही यह स्वरूप अत्याकर्षक हुआ है। वादी षड्ज, सम्वादी पंचम, समय मध्यरात्रि

सां
का है। मुख्यांग मंपऽत्रिधपऽमंप, मंग, मंगरेसा, रेनि़सागऽऽ।

कहा जाता है कि हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति में तीव्र मध्यम और कोमल निषाद दोनों ही एक राग में नहीं आ सकते ! किन्तु ग्वालियर दरबार-गायक पं० उमडेकर शास्त्री जी ने 'सरस्वती' राग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

का प्रचार करके यह सिद्ध कर दिया है कि इन दोनों स्वरों का राग भी उतना ही मधुर हो सकता है, जितने अन्य राग हो सकते हैं। पंचम से षड्ज का प्रमाण अधिक रखने से इस ढङ्ग के राग में रक्तिहानि बिलकुल नहीं हो सकती।

आरोहावरोह—नि़सागऽमं, पऽनि़, सां। सांनि़धप, मंप, मंगरेसा, रेनि़, नि़, नि़सा।

स्वरविस्तार— सा, नि़, नि़, नि़सा। प़नि़सा, नि़, नि़ध़ऽप़, प़नि़ध़, प़, नि़, नि़ध़प़, नि़, नि़सा। प़नि़सा, नि़ध़प़, नि़सा, प़नि़सा, नि़सा, नि़साग, मंगरेसा। नि़साग, प़नि़साग, रेसानि़, नि़ग, गनि़नि़साग, नि़ध़प़, प़ग, मंग, मंगरेसा। नि़साग, मंग, प़नि़सामंग, मंनि़ऽनि़मंग, मंगरे, मंगरेसा, नि़सागमंप, सागमंप, मंनि़ऽनि़सा, गमंप, मंगरेसाऽनि़ध़प़, प़प, धप, निऽनिधप, मंऽनिधप, मंनिधप, मंप, मंगरेसानि़, रेनि़, सारेनि़, रेनि़ऽनि़ऽनि़सा। नि़सागमंपनि, नि़, नि, निधपऽमंपनि, पनि, सागमंपनि, गमंप नि, निधप, निनि, निधप, मंप, मंगरे, मंगरेसा। नि़सागमंप, नि, निसां, पनिसां, रेंनिऽनिसां, पनिरेंसां, गंरेंसां, नि, निगंरेंसां, मंगंरेंसां, गंरेंसां रेंसांरेंनि, निऽनिऽधऽप, मंप, निधप, धरें, निधप, सांनिधप, मंग, मंगरे, मंगरेसा, मंगरेसानि़, गरेसानि़, नि़, नि़सा॥

१ चम्पाकली–एकताल (ख्याल)

माने नाहीं सैंया मोरा, ब्रज में धूम मचावत॥ ध्रु०॥
अबीर गुलाल केसर की पिचकारी मारत।
देखत सब जन, लाज नहीं आवत॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

			नि़	४ नि़सा	-सागमंपगमं
			मा	नेऽ	ऽनाऽऽऽहिं

× प	–	०सां निध	प	२ मंप	रेसा
सैं	ऽ	याऽ	ऽ	मोऽ	राऽ

० नि़-सानि़	ध़	३ प़	–	४ मं़प़	नि़
ब्रऽजऽ	में	ऽ	ऽ	धूऽ	ऽ

× नि़सा	–	० नि़सा	ग	२ –	गमं(प)-
मऽ	ऽ	मऽ	चा	ऽ	वऽऽऽ

० मंग	रे	३ सा
ऽऽ	त	ऽ माने नाहीं

			पप	सां४ नि	-नि-ध
			अबि	र	ऽऽऽगु

× सां	–	० निसां	निसां	२ निसां	गं
ला	ऽ	लऽ	ऽ	केऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०		३		४	
रेंसां	ऩिसां	–	ऩिसांरेंसांऩि–	ऩिसां	–
सर	कीऽ	ऽ	पिऽऽऽऽऽ	चऽ	ऽ
×		०		२	
सां ऩि	ऩिध	प	–	मंग	रेसा
का	ऽऽ	री	ऽ	माऽ	रत
०		३		४	
ऩि	धऩिसाऩिध–	प	मंमं	मंप	ऩिध
दे	खऽऽऽऽऽ	त	सब	जन	लाऽ
×		०		२	
ऩिसा	–	ऩिसा	ग	–	गमंप–
जऽ	ऽ	नऽ	नी	ऽ	आऽऽऽ
०		३			
मंग	रे	सा			
वऽ	त	ऽ	माने नाहीं		

२–चम्पाकली–त्रिताल

नेह लगी प्रीतम के सङ्ग ।
कल ना परे मोहे सजनी उन विन ॥ ध्रु० ॥
कैसे करूं सखि कित वन जाऊं ?
नैन सजनी लागत दूखन ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

			मंध
			नेऽ
×	२	०	३
पर्म ग रे सा	सा ऩि – सा –	सा रे ऩि सा	गर्म प प सा
ऽऽ ह ऽ ल	गी ऽ प्री ऽ	त म के ऽ	संऽ ऽ ग क
ग गर्म प गर्म	प – र्म प	सांत्रित्रिधधपपम	र्मग रेसा ऩि प
ल नाऽ ऽ पऽ	रे ऽ मो हे	सऽ जऽ नीऽ उऽ	नऽ बिऽ न कै
– त्रि – ध	सां – त्रि सां	त्रि सां गं रें	सां त्रि ध ध
ऽ से ऽ क	रू ऽ स खी	कि त ब न	जा ऽ ऊं नै
रें त्रि ध प	र्म – प –	सांत्रित्रिध धपपर्म	र्मग रेसा ऩि
ऽ न स ज	नी ऽ ला ऽ	गऽ तऽ दूऽ ऽऽ	खऽ ऽऽ न

३–चम्पाकली–त्रिताल (लक्षणगीत)

चम्पाकली सुन रागिनी। मधुर मधु सोहत मृदुल निषाद
अधर कर आरोहण सजनी ॥ ध्रु० ॥
करत नित पञ्चम-प्रथम सुवाद, समय सोहत नित मध रजनी ॥

			सा
२	०	३	× च
ग़ सांग र्मप गर्म	प – – प	र्म ग रे सा	सा ऩि – सा
ऽ म्पाऽ ऽऽ कऽ	ली ऽ ऽ सु	न रा ऽ गि	नी ऽ ऽ म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	मं	प	मं	ग	रे	सा	ग	मं	प	त्रि	ध	प	मं	प	त्रि
धु	र	म	धु	सो	ऽ	ह	त	मृ	दु	ल	नि	षा	ऽ	द	अ
सां	रें	त्रि	ध	प	मं	प	-	प	मं	ग	रे	सा	त्रि	-	प
ध	रु	क	र	आ	ऽ	रो	ऽ	ह	ण	स	ज	नी	ऽ	ऽ	क
प	प	त्रि	ध	सां	-	सां	सां	त्रि	सां	रें	सां	त्रि	ध	प	त्रि
र	त	नि	त	पं	ऽ	च	म	प्र	थ	म	सु	वा	ऽ	द	स
सां	रें	त्रि	ध	प	मं	प	प	प	मं	ग	रे	सा	त्रि	-	
म	य	सो	ऽ	ह	त	नि	त	म	ध	र	ज	नी	ऽ	ऽ	

राग–शहाना

(संस्कृत) निधौ निपौ मपौ सनी पमौ पगौ मपौ गमौ।
रिसौ रात्र्यां शहाना स्यात् पंचमांश परिष्कृता ॥

(हिन्दी) रिध तीखे कोमल निगम चढत नहीं ध लगाइ।
पस वादी संवादितें राग शहाना भाइ ॥

'सहाना' अथवा 'शहाना' यह शब्द 'शोभना' इस संस्कृत शब्द का अपभ्रंश है। काफी मेलोत्पन्न होने से इसमें गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। यह कानडा प्रकार है, अतः कोमल गांधार का गमकयुक्त आंदोलन तथा मपगुऽमरेऽसा (म) स्वरसङ्गति इस राग में आवश्यक है। इसके आरोह में ऋषभ दुर्बल तथा पञ्चम धैवत भी वक्र हैं। इसमें मध्यम-धैवत सङ्गति तथा कानडा अंग होने से बहार से यह बहुत ही मिलता जुलता है। तथापि शहाना की षड्ज-धैवत सङ्गति, त्रिधत्रिप और मपनिसां अथवा मपसां इस प्रकार का उठाव बहार में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं, और बहार की षड्ज-मध्यम सङ्गति मनिधनिसां, धनिसांरेंनिसां, इस प्रकार का उठाव शहाना में नहीं ! शहाना के आरोह में धैवत पर तथा अवरोह में मध्यम पर न्यास रक्तिदायक होता है एवं बहार के आरोह में मध्यम को और अवरोह में धैवत को महत्व है। परेंसांरें, रेगरेसा, और मपनिसां इन स्वरों से सारङ्ग का आभास इस राग में होता है। किन्तु आरोह का मुक्त धैवत सारङ्ग को हटा देता है। वादी पञ्चम, सम्वादी षड्ज, समय मध्यरात्रि का है। मुख्यांग:—सा, गुगुमध, नि़प, मपसां, नि़धनि़प, गुगुमप, गुमरेऽसा।

आरोहावरोह:—सा, गुगुमध, नि़प, मपनि़पसां। सां, नि़ध, नि़प, मपगुऽमरेऽसा।

स्वरविस्तार:—सा, नि़सा, रेसा, नि़प़, सा। नि़प़, प़नि़प़, म़प़नि़प़, नि़प़सा। नि़सारे, नि़प़ऽ, म़प़नि़प़ऽ, साऽ नि़साऽ नि़सारे, प़रे, रेसा, प़रेसा, गु गुमरेऽसा, नि़प़म़प़सा। साऽ, गु, गुमरेसाऽ, गु, मगु, मगुमरेसा गु, प़नि़ऽप़, प़गु, गुमप, गुमरेऽसा। सा, गुगु, गुम, सागुम, साम, पगुगुम, सागुम, नि़सारेनि़ऽप़ प़नि़प़सागुऽगुम, सागुम, पगुगुम, पगुम, पगुऽमरेऽसा, प़नि़प़, सा। सागुगुगुगुम, मप, गुगुगुम, गुगुमप, गुमप, गुम, गुमधप, गुम, गुमधगुम, सागुमधगुम, पगुगुगुगुम, गुमरेसा। सा, गुगुमध, गुमध, धगुऽगुमऽगुध, धगु, धगुमध, साध,

ध, नि़प, नि़धनि़ध, गुमध, नि़प, प़नि़प़, प़ध, नि़प, गुमनि़धनि़ध, नि़पगुम, गुगुम, नि़पगु, गुम, पगुऽगुम, गुमपगमरेऽसा। सागु, मध, सागु, मध, नि़प, मपसां, नि़मपसा, मपनि़सां, सा, रेमरेसा, मपसां, रेंसां, परेंसां, गुंमंरेंसां, गुंगुंमंपं, गुंमंरेंसां, नि़धनि़प, मपसां, नि़धनि़प,

नि़मपनि़प, मनि़प, नि़धनि़प, साध, ध, ध, धनि़ग, नि़पम, पगुऽगुम, गुगुम, पगुऽमरेऽसा। प़नि़प़, नि़प़ म़नि़प़, नि़म़प़सा, नि़सारे, गु, गुमरेऽसा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ शहाना–झपताल

कर न गोरी मान ।
घिर–घिर आये बादर, रितु आई सावन ॥ ध्रु० ॥
नारि नई–नयो नेहा, ऋतु नई री नयो मेहा ।
नई उमंग, नयो जोबन ॥

३			×		२			०	
ग॒	ग॒	म	ध	–	नि	प	ग॒	म	रेसा
क	र	न	गो	ऽ	री	ऽ	मा	ऽ	नऽ
नि॒	प़	म़	प़	सा	ग॒	ग॒	म	रे	सा
घि	र	घि	ऽ	र	आ	ये	बा	द	र
सा	सा	सा	ध	ध	नि॒	प	ग॒	म	रेसा
ऋ	तु	आ	ऽ	ई	सा	ऽ	व	ऽ	नऽ
म	प	प	नि॒	प	नि॒	प	सां	–	सां
ना	ऽ	रि	न	ई	न	यो	ने	ऽ	हा
सां	सां	गं॒	मं	रें	सां	सां	नि॒ध	नि॒	प
ऋ	तु	न	ई	री	न	यो	मेऽ	ऽ	हा
प	रें	सां	नि॒	प	ग॒	म	रे	सा	सा
न	ई	उ	मं	ग	न	यो	जो	ब	न

२ शहाना–त्रिताल

सखी आज सुर मङ्गल गाओ ।
निकि–निकि तान की बहर सुनाओ ॥ ध्रु० ॥
बहुत दिन बीते पिया घर आये ।
फागन को अब रास रचाओ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३				३				×				२			
ध	प	–	ध	प	म	रे	सा	सा	म	म	म	म	प	प	–
स	खी	ऽ	आ	ऽ	ज	सु	र	सं	ऽ	ग	ल	गा	ऽ	वो	ऽ
प	रें	सां	रें	नि॒	ध	नि॒	प	ग॒	ग॒	म	प	ग॒	म	रे	सा
नि	कि	नि	कि	ता	ऽ	न	की	ब	ह	र	सु	ना	ऽ	ओ	ऽ
म	प	नि॒	प	नि	सां	–	सां	नि	सां	रें	सां	नि॒	ध	नि॒	प
ब	हु	त	दि	न	बी	ऽ	ते	पि	या	घ	र	आ	ऽ	ये	ऽ
प	रें	सां	रें	नि॒	ध	नि॒	प	नि॒	प	म	प	ग॒	म	रे	सा
फा	ऽ	ग	न	को	ऽ	अ	ब	रा	ऽ	स	र	चा	ऽ	ओ	ऽ

३ शहाना–त्रिताल (अध्धा)

विजुरी चमके बरसे मेहरवा।
छायी घटा घन घोर शोर करे,
बरसन लागी नन्हीं–नन्हीं बुंदवा ॥ ध्रु० ॥
गरज–गरज मोहे अति ही डरावे,
जाऊँ कैसे अलि पिया के घरवा ॥

३				×				२				०			सा बि
ध	ध	ध	नि॒	प	–	म	प	ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा	–
जु	री	च	म	के	ऽ	ब	र	से	ऽ	ऽ	मे	ह	र	वा	ऽ
नि॒	प़	म़	प़	सा	–	सा	सा	ग॒	–	ग॒	म	ध	ध	प	प
छा	ऽ	यी	घ	टा	ऽ	घ	न	घो	ऽ	र	शो	ऽ	र	क	रे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	रें	सां	रें	ज़ि	ध	ज़ि	प	ग़	ग़	ग़	म	रे	रे	सा	–
ब	र	स	न	ला	ऽ	गी	ऽ	न	न्ही	न	न्ही	बुं	द	वा	ऽ
म	प	ज़ि	प	नि	सां	सां	सां	ग़ं	ग़ं	ग़ं	मं	रें	–	सां	–
ग	र	ज	ग	र	ज	मो	हे	अ	ति	हि	ड	रा	ऽ	वे	ऽ
प	रें	सां	रें	ज़ि	ध	ज़ि	प	ग़	ग़	ग़	म	रे	सा		सा
जा	ऽ	ऊँ	कै	ऽ	से	अ	लि	पि	या	के	ऽ	घ	र		वा

४ शहाना–एकताल

गुन निधानी पावनी, महामोह हरनी ।
सकल सुख दानी भवानी ॥ ध्रु० ॥
बिरद बेदन पालिनी, मधुर बानी,
तारिणी, कर कृपा नित—लालिनी ॥

											सा
४		×		०		२		०		३	गु
सा	सा	ध	–	ज़ि	प	ग़	म	रे	सा	–	प़
न	नि	धा	ऽ	नी	ऽ	पा	ऽ	व	नी	ऽ	म
ज़ि़	प़	सा	–	सा	ज़ि़	सा	रे	–	ग़	ग़	म
हा	ऽ	मो	ऽ	ह	ह	र	नी	ऽ	स	क	ल
ध़	ध	ज़ि	प	ग़	ग़	म	ग़	म	रे	सा	प
सु	ख	दा	ऽ	नी	ऽ	भ	वा	ऽ	नी	ऽ	बि
ज़ि	प	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	सां	–	नि
र	द	बे	ऽ	द	न	पा	ऽ	लि	नी	ऽ	म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	रें	गुं	मं	रें	सां	नि	ध	नि	प	- नि
धु	र	बा	ऽ	नी	ऽ	ता	ऽ	रि	णी	ऽ क
ध	नि	प	-	म	प	ग	म	रे	सा	-
र	कृ	पा	ऽ	नि	त	ला	ऽ	लि	नी	ऽ

राग जयन्त-मल्हार

(संस्कृत) रागे जयन्तमल्हारे निषादौ गीयते उभौ।
उभावपि च गान्धारौ मध्यरात्रौ रिवादिनी ॥
(गीत-जयराजे)

(हिन्दी) सम्पूरन सुर धरत है, दो निषाद गन्धार।
मध्यरात्रि वादी रिषभ सुन जयन्त मल्हार ॥

(मराठी) जयन्त मल्हारीं नित शोभत द्वय ही निषाद गन्धार।
मध्यरात्रि समयातें रिपसंवादन सुशोभलें फार ॥

राग जयन्त-मल्हार एक मधुर मिश्रित प्रकार है। जयजयवन्ती तथा मल्हार साथ-साथ गाना यही इसकी विशेषता है। जयजयवन्ती के राग निदर्शक टुकड़े सा, धनिरे, (ग)परे, रेगुरे, तथा मल्हार के मरेप, गुमरेसा, निधनिसा, धनिप, इत्यादि भाग इस राग में अवश्य दिखाये जाते हैं। वादी ऋषभ, सम्वादी पञ्चम, समय मध्य रात्रि का है।

मुख्यांग—निधनिऽसा, धनिरे, रेप(ग)गुऽमरेऽसा।

आरोहावरोह—सा, निधनिसा, धनि(ग)रे, रेगमगरे, रेगमप, मरेप, मपनिधनिसां। सांनिपमप, मगरे, रेगमगरे, रेगुरे, रेपगुऽऽम रे-सा, निसा, धनि(ग)रेऽऽ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरविस्तारः—सा, ऩिधऩि, ऩिधऩिसा। सा, ऩिसा, ऩिसा,

ग ग
धऩिरे, ऩिध, ऩि, ऩिधरे, ऩिध, मपऩिधऩिसा। ऩिसा, ऩिधऩिप, मपऩिधऩिसा, धऩिप, मपऩिधऩि, ऩि, ऩिसा। ऩिसाधऩिरे, ऩिधऩिप, परे, ऩिपरे, गरे, रेगुरे, रेगमगरेगुरे, गुमरेसा, ऩिसाधऩिरे। सा, रेग, मगरे, रेगमगरे, रेग, गम, म, म, मगरे, रेगमगरे, गुरे, रेगुरे, मगरे, गुमरेसा, ऩिसाधऩिरेऽ। सा, रेगमप, गमप, मप, मगरे, रेगमपमगरे, रेगमगरे, रेपऽमगरे, पमगरे, रेगमगरे, रेगमपम, पऽमगरे, रेगमगरे, रेपगु, गु, मरेऽसा, ऩिसाधऩिरे। सा, रेगमप,

प
गमप, रेप, मरेप, सा, मरेप, ऩिसाधऩिरे, रेप, मगरे, रेप, मप,

मगरे, मपगु, पगु, रेपगु, गुगुमरेपगु, मपगुऽमरेऽसा, ऩिसाधऩिरे। सा, मरेप, ऩिधनि, मपऩिधनि, पगुऽमरेसा, ऩिधनि, मपऩिधनि, नि, ऩि, नि, मपऩिधनिसां, रेंसां, निसां, निसांधऩिरें, गंरें, रेंगंमंगंरें,

ग गं
रेंगुरें, रे, रें, पंगुंऽमंरेंऽसां, सांरेंसां, ऩिसांऩि, धऩिध, पधप,

मपम, गमग, रेगुरे, सांऩिऽऩिधऽ, धपऽ, पमऽ, मगऽगरे, रेगरे, रेप,

० ग
गुऽमरेसा, ऩिसा, ऩिसा, ऩिसाधऩिरे।

१–जयन्त-मल्हार-एकताल (ख्याल)

फूली फूलन की फुलवारी,
चम्पा–चमेली की बहार। ध्रु०।
न्यारी सखी बसन्त की
उमङ्ग फूली बनराई डोले भ्रमर॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३	४	×	०
म		ग	नि
रेप गम	रेसा -ऩिधऩि	रे- -	सा-ऩिसारेसा
फूऽ लीऽ	ऽऽ ऽफूलन	कीऽ ऽ	फु ऽलऽऽऽ

२	०	३	४
	नि		म
ऩि--ध़ ऩि	सा -	ऩिसारे-- --सारे	ग-मग गम--
वाऽऽऽ ऽ	री ऽ	चंऽऽऽ ऽऽऽऽ	पाऽऽऽ ऽऽऽऽ

×	०	२	०
म		सा रे	
रेप --मप	ग-मग गम	रे सा	ऩिध़ ऩिसा
चमे ऽऽऽऽ	लीऽऽऽ कीऽ	ब हा	ऽऽ रऽ

३	४	×	०
म पप	ऩिध निनि	सां --ऩिध	निसां -सां
न्या रीस	खीऽ ऽब	सं ऽऽतऽ	कीऽ ऽउ

२	०	३	४
रेंगंमंगं रें-गंरें	(सां) ऩिधनिसां	ऩिप मपधनिसां-	धनि प
मंऽऽऽ गऽऽऽ	फू लीऽऽऽ	वन राऽऽऽऽऽ	ईऽ ऽ

×	०	२	०
ऩिपम -	ग-मम रे	सा ऩिध़	ऩि सा
ऽऽऽ ऽ	डोऽऽऽ ऽ	ले भ्रऽ	म र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२–जयन्त-मल्हार–त्रिताल

तोरे बदन पर चन्द्र किशोरी।
श्याम मिलन की भासत चोरी ॥ ध्रु० ॥
भाल कपोल गुलाब अधर पै ।
चमकि रही सखी तम्बूल की बीरी ॥

०				३				×				२			
रेप	गुम	–	रे	सा	सा	धृ	नि़	(ग) रे	–	ग	रे	रेग	मप	ग	म
तोऽ	रेऽ	ऽ	ब	द	न	प	र	चं	ऽ	द्र	कि	शोऽ	ऽऽ	री	ऽ
म	रे	प	प	नि	ध	नि	सां	नि	प	म	प	ग	म	रे	सा
श्या	ऽ	म	मि	ल	न	की	ऽ	भा	ऽ	स	त	चो	ऽ	री	ऽ
म	रे	प	प	नि	ध	नि	सां	सां	–	नि	सां	ध	नि	रें	–
भा	ऽ	ल	क	पो	ऽ	ल	गु	ला	ऽ	ब	अ	ध	र	पै	ऽ
रें	गं	मं	गं	रें	गुं	रें	सां	नि	प	म	प	ग	म	रे	सा
च	म	कि	र	ही	ऽ	स	खी	तं	ऽ	बू	ऽ	ल	की	बी	री

३–जयन्त-मल्हार–एकताल (द्रुत)

कहूं कासन अब सजनी,
बिरह विथा मोरे मन की।
सहि न जात, सुध न लीनी ॥ ध्रु० ॥
पिया तो गये परदेसवा,
उमंगे मोरा जोबनवा ।
छिन-छिन छिन जात, हो रजनी ॥

०		२		०		३		४		×	
रे	प	ग	म	रे	सा	नि़	सा	धृ	नि़	(ग) रे	–
क	हुँ	का	ऽ	स	न	अ	ब	स	ज	नी	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ऩि	ध़	नि़	नि़	सा	–	नि़	सा	ध़	ऩि	प़	–
बि	र	ह	वि	था	ऽ	मो	रे	म	न	की	ऽ
म़	प़	ऩि	ध़	नि़	सा	नि़	सा	ध़	ऩि	ग रे	–
स	हि	न	जा	ऽ	त	सु	ध	न	लि	न्ही	ऽ
(अन्तरा समसे)										म	म
										पि	या
प	प	ऩि	ध	नि	नि	सां	–	नि	सां,	नि	सां
तो	ग	ये	ऽ	प	र	दे	ऽ	स	वा,	उ	मं
रें	गं	मं	गं	रें	गुं	रें	सां	नि	सां,	सांऩि	ऩिध
गे	मो	ऽ	रा	जो	ऽ	व	न	वा	ऽ,	छिऽ	नऽ
धप	पम	मग	गरे	रे	ग॒	रे	सा	ध़	ऩि	ग रे	–
छिऽ	नऽ	छिऽ	नऽ	जा	ऽ	त	हो	र	ज	नी	ऽ

४–जयन्त–मल्हार, झपताल (लक्षणगीत)

जयवन्त मलहार, राग अति मधु मधुर।
खरहर प्रिय मेल, द्वय निषद् गांधार॥ ध्रु० ॥
रिप रुचिर सम्वाद, ऩिधनिऽसां स्वर साध।
नि सां रें गं मं रें गुं रें सां रस स्रवत श्रृङ्गार॥

०		३			×		२		
ध़	ऩि	ग रे	–	रे	ऩि	ध़	नि़	सा	सा
ज	य	वं	ऽ	त	म	ल	हा	ऽ	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि़	सा	रे	ग	रे	रे	ग	म	ग	रे
रा	ऽ	ग	अ	ति	म	धु	म	धु	र
म	प	नि॒	ध	नि	सां	नि	रें	सां	सां
ख	र	हा	ऽ	र	प्रि	य	मे	ऽ	ल
नि॒	प	ग॒	म	प	ग॒	म	रे	सा	सा
द्व	य	नि	ष	द	गां	ऽ	धा	ऽ	र
म	प	नि॒	ध	नि	सां	–	सां	–	सां
रिं	प	रु	चि	र	सं	ऽ	वा	ऽ	द
नि॒	ध	नि	–	सां	नि	सां	ध	नि॒	प
त्रि	ध	नि	ऽ	सं	स्व	र	सा	ऽ	ध
नि	सां	रें	गं	मं	गं	रें	गं॒	रें	सां
नि	स	रे	ग	म	ग	रे	ग	रे	सा
नि॒	प	ग॒	म	प	ग॒	म	रे	सा	सा
र	स	स्र	व	त	श्रं	ऽ	गा	ऽ	र

राग-मधुरंजनी

(संस्कृत) निसौ निपौ गमौ पश्च गमौ गसौ निसौ मसौ ।
मृदुगा चारिधा नित्यं पंचमे मधुरंजनी ॥

(हिन्दी) मृदु गंधार विराजते स्वर तीवरहि निखाद ।
रिध बरजत मधुरंजनी पस वादी संवाद ॥

(मराठी) मधुरंजनींत शोभति कोमल गांधार, इतर स्वर शुद्ध ।
ग्र-ध-र रूप मनिं जाणा, पंचम प्रथमांशि करित संवाद ॥

मधुरंजनी राग गौरी मेल का एक मधुर अभिनव स्वरूप है। इसमें ऋषभ, धैवत वर्जित, गंधार कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। ग॒म ग॒ऽसा इत्यादि स्वर समूह मालकौंस का आभास उत्पन्न करता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तथापि पञ्चम का स्पष्ट अस्तित्व, धैवत का वर्ज्यत्व तथा शुद्ध निषाद पर बारंबार न्यास मालकौंस से इसे अलग रखता है। उत्तरांग में धैवत वर्जित होने से बिहाग का अङ्ग प्रतीत होता है, किन्तु गंधार कोमल होने से बिहाग इस राग से अलग रहता है। पटदीप का विशेष आभास इस राग में हुआ करता है, लेकिन पटदीप के अवरोह में धैवत, रिषभ आवश्यक स्वर हैं। मंद्र निषाद पर न्यास अत्यंत रक्तिदायक है। जाति औडव। वादी पञ्चम, संवादी षड्ज, समय शाम के पहले। मुख्यांगः—निसांनिऽप, गुमप गुमगुसानि़ऽऽऽ।

आरोहावरोहः--सा, गुमपनि, सां। सां, निप, गुमप, गुमगु सानि़ऽ नि़सा।

स्वरविस्तारः—सा, नि़, नि़सा। प़नि़ प़नि़, प़नि़ऽसा। प़नि़ सागु, गुनि़, नि़सागु, प़नि़सागु, मगु, मगुसा, मगुसानि़, प़नि़ऽप़नि़सा। प़नि़सागु, गुम, मगुसानि़, नि़गुऽगुम, सागुम, पगुगुम, गुमप, गुमगुसानि़, प़नि़ऽप़नि़सा। नि़सागुम, सागुम, गुम, मनि़ऽनि़म, सागुम, साम, गुमपगुम, पगु, मपगु, मगु, गुमपगुमगु, मगु, मगुसा। सागुमप, गुमऽमप, सागुऽममऽमप, मनि़ऽनि़सा, गुमप, पप़ऽनि़सा, गुमप, निपऽगुम, गुमपनिपऽगुम, प़नि़सागुमपऽनि पऽगुम, मनिप, गुम, निपम, निगुमगु, मगुऽसा, मगुसानि़, नि़, नि़सा। नि़सागुमपनि, प़नि़, पनि, गुमपनि, मपनि, निगुऽमपनि, गुमगुसानि़ऽनि़नि, गुमपनि, पनि, पनिसांऽऽ॥ निसां, गुंसां, पनिसांगुं सां, मंगुंऽमंगुंसां, सांगुंमंगुंसां, मंगुंमंसां, गुंमंपंगुंमंगुंसां, सांनि, निप, गुमपनिसांनिऽप, निपम, गुमपनिम, पनिसांम, निम, गुमप, गुमगुऽसा, मगसानि़, नि़सा, प़नि़सागुमग, मगुसा॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ मधुरंजनी–एकताल

झंझनन बाजे पायल–अँगवा डोले कान्ह,
नैनन की छवि सुन्दर, ब्रज की नारी मोहत चंचल ॥ ध्रु० ॥
सखियां जल भरन जात, देख रूप चकित होत,
मन में तब सकुच रहत, सीस गगरी छलकल जल ॥

×		०		२		०		३		४	
सां	–	नि	प	म	प	ग॒	म	ग॒	सा	नि़	सा
झं	ऽ	झ	न	न	न	बा	ऽ	जे	पा	य	ल
नि़	सा	ग॒	म	प	–	ग॒	म	प	नि	सां	सां
अं	ऽ	ग	न	वा	ऽ	डो	ऽ	ले	का	ऽ	न्ह
नि	सां	ग॒ं	सां	नि	सां	ग॒	म	प	नि	सां	सां
नै	ऽ	न	न	की	ऽ	छ	वि	सु	ऽ	द	र
नि	सां	नि	प	म	म	ग॒	म	ग॒	सा	नि़	सा
ब्र	ज	कि	ना	ऽ	री	मो	ह	त	चं	च	ल
ग॒	म	प	नि	नि	नि	सां	नि	सां	नि	सां	सां
स	खि	याँ	ऽ	ज	ल	भ	र	न	जा	ऽ	त
नि	नि	सां	नि	सां	मं	ग॒ं	सां	नि	सां	–	सां
दे	ऽ	ख	रू	ऽ	प	च	कि	त	हो	ऽ	त
नि	सां	ग॒ं	मं	पं	मं	ग॒ं	मं	ग॒ं	सां	नि	सां
म	न	में	ऽ	त	ब	स	कु	च	र	ह	त
निसां	ग॒ंसां	निसां	पनि	सांनि	मप	ग॒म	पम	ग॒म	ग॒सा	नि़	सा
सीऽ	ऽऽ	सऽ	गऽ	गऽ	रीऽ	छऽ	लऽ	कऽ	तऽ	ज	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२ मधुरंजनी–त्रिताल

धीट लँगरवा कैसे घर जाऊँ री ।
सुन पावे मोरी सास ननदिया ॥
छाँड़ दे रे मोरी छलके–छलके गगरी ॥ध्रु०॥
मैं जमुना तट नीर भरन चली ।
छेड़ो न मोहन अब दूंगी-दूंगी गारी ॥

२	०	३	×
नि़ सा ग॒ म	प म ग॒ प	मग॒ सा – नि़	सा – ग॒सा नि़
धी ऽ ट लँ	ग र वा कै	सेऽ घ ऽ र	जा ऽ ऊँऽ री
नि़ सा ग॒ म	प – ग॒ म	प नि नि नि	सां नि सां –
सु न पा ऽ	वे ऽ मो री	सा ऽ स न	न दि या ऽ
गं॒ मं गं॒ सां	नि नि सां सां	प ग॒ – प	ग॒ मग॒ सा नि़
छाँ ऽ ड़ दे	ऽ रे मो री	छ ल्के ऽ छ	ल्के गऽ ग री
ग॒ म प नि	सां – सां सां	प नि सां मं	गं॒ सां नि सां,
मैं ऽ ज मु	ना ऽ त ट	नी ऽ र भ	र न च ली,
प नि सां मं	गं॒ सां नि सां	नि प प प	ग॒ मग॒ सा नि़
छे ड़ो ना मो	ह न अ ब	दूं ऽ गी दूं	ऽ गीऽ गा री

३ मधुरंजनी–ताल मीनाक्षी

मधुररंजनी सुनरी सुन सजनी,
रागिनी सरल पस सुवादिनी ॥ ध्रु० ॥
बरज रिध करत, समय सोहे रात,
रुचिर सुर संगत सानीप गम गसानी ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताल मीनाक्षी की मात्रा ८। सम १, ताली १, काल १। चलन झपताल पद्धति का। ताल के बोलः—

×			२		०		
धीं	त्रक	धीं	धागे	त्रक	तीं	तागे	त्रक

×		०	×	२	०
सा प प प	ग म	ग सा नि	सा ग म	ग म	ग सा सा
म धु र	रं ऽ	ज नी ऽ	सु न री	सु न	स ज नी
सा ग म	प –	नि सां सां	सां नि प	ग म	ग सा नि
रा ऽ गि	नी ऽ	स र ल	प स सु	वा ऽ	दि नी ऽ
ग म प	नि नि	नि सां सां	नि सां सां	गं सां	सां नि प
व र ज	रि ध	क र त	स म य	सो हे	रा ऽ त
गं मं पं	गं मं	गं सां सां	सां नि प	ग म	ग सा नि
रु चि र	सु र	सं ग त	सा नि प	ग म	ग सा नी

———

राग राजेश्वरी

(संस्कृत) मध्यमांशा सदा रिप हीना च राजेश्वरी स्थिता ।
गमाभ्याम् कोमला या सा निशायामपि गीयते ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(हिन्दी) औडव कोमल गम जहाँ, पंचम रिषभ न भाय।
मस वादी संवादितें, राजेश्वरी सुहाय ॥

(मराठी) रि प हीना नित शोभत कोमल जी घेत नित्य गांधार।
राजेश्वरी सुशोभत, मध्य-रात्रि वाढावीत रसरङ्ग ॥

राजेश्वरी एक गौरी मनहर ठाठ का अत्यन्त मनोहर राग है। इसमें गांधार कोमल, रिषभ पञ्चम, वर्जित तथा बाकी स्वर शुद्ध हैं। सागमऽगसा इन स्वरों से मालकौंस की छाया उत्पन्न होती है, किन्तु शुद्ध धैवत, निषाद से यह राग मालकौंस से अलग रहता है। मधनिसांनिधऽम, मनिधऽम इन स्वरों से 'भिन्न षड्ज' राग की झलक दिखाई जाती है तथापि पूर्वाङ्ग में मालकौंस अङ्ग होने से यह राग भिन्न षड्ज से बिलकुल अलग रहता है। धैवत तथा शुद्ध निषाद महत्व के विश्रान्ति स्थान हैं। मन्द्र निषाद पर प्रायः मुकाम किया जाता है। धैवत गांधार की स्वर-सङ्गति अत्यन्त वैचित्र्य-दायक है। वादी मध्यम संवादी षड्ज, समय मध्यरात्रि। मुख्यांगः—मध निसांनिधऽमऽग, मगऽसा।

आरोहावरोहः—निसागम, ध, निसां, सांनिध, मग, म गऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, निसा, धनिसा, निसानि, मधनिसा, गमगऽ सागु, गुनि, निसागु, मगसा, निऽग, मग, मग, मगसा। निसागम, मनिम, सागऽगम, मगसानिऽम, गम, धग, गम, गमगऽसा। निसागमध, सागमध, गमध, धग, गगमध, मगसा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा
निऽधृ, ग॒मध, धग॒मध, गमनिग॒मध, निध, मनिध, मग॒,

मग॒सा। निसाग॒मध, मध, मधनि, नि, निसाग॒मधनि, निनि,

ग॒मधनि, निग॒ऽमधनि, निमऽनि, ग॒मधमनि, मधनि, मधनिसां,

गं॒मंगं॒सां, सांगं॒, मंगं॒सां, मंगं॒सांनिऽऽ, सांनिधऽमग॒, मग॒मग॒ऽसा,

मग॒सानि, निसानिधऽम, मधनिसा।

१–राजेश्वरी–त्रिताल

भोर भई घर आये न कन्हैया,
जाग जाग मोरी अखियाँ तरसें।
बैरिन हो गईं हो गईं रतियाँ ॥ ध्रु० ॥
मैं तो नवेली नारि निराली नाजुक सी,
मानों कदम की छैयाँ ॥

२				०				३				×			
म	ध	नि	सांनि	ध	ऽ	म	म	(म)ग॒	(म)ग॒	(म)ग॒	म	ग॒	म	ऽ	(नि)सा
भो	ऽ	र	भऽ	ई	ऽ	घ	र	आ	ये	न	क	न्है	ऽ	ऽ	या
नि	ऽ	सा	सा	ग॒	म	ग॒	(नि)सा	नि	सा	सा	म	म	ग॒	ग॒	म
जा	ऽ	ग	जा	ऽ	ग	मो	री	अ	खि	याँ	ऽ	त	र	सें	ऽ
ग॒	म	ध	नि	सां	ऽ	ध	म	(म)ग॒	–	ग॒	म	ग॒	म	ऽ	(नि)सा
बै	ऽ	रि	न	हो	ऽ	ग	ईं	हो	ऽ	ग	ईं	र	ति	ऽ	याँ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म म म म ग॒ ग॒ ग॒ ग॒	म म ध म	ग॒ म ध नि	सां ऽ मध निसां
मैं ऽ तो न	वे ऽ ली ऽ	ना ऽ रि नि	रा ऽ लीऽ ऽऽ
ध नि सां मं	गं॒ मं ऽगं॒ सां	धनि सांनि ध म	ग॒ म ऽ सा (नि़)
ना ऽ जु क	सी ऽ ऽमा नों	कऽ दृऽ म की	छै ऽ ऽ याँ

२–राजेश्वरी–एकताल

आज जागे मेरे भाग,
घर आये सुन्दर श्याम।
देखत–देखत सखी लग गईं,
उन्हीं से मेरी लगन लाग ॥ध्रु०॥
प्रेम पिया के गाऊं सङ्ग,
गगरी भरूँरी केसर रङ्ग।
उनसे ही अब खेलूंगी फाग ॥

×		०		२		०		३		४	
धनि	सांनि	ध	ध	म	म	ग॒	म	ग॒	सा	नि़	सा
आऽ	ऽऽ	ज	ज़ा	ऽ	गे	मे	ऽ	रे	भा	ऽ	ग
सा	सा	सा म	–	म	–	म	म	म	ध	ग॒	म
घ	र	आ	ऽ	ये	ऽ	सुं	द	र	श्या	ऽ	म
ग॒	म	ध	ध	म	ध	म	ध	नि	सां	सां	सां
दे	ख	त	दे	ख	त	स	खी	ल	ग	ग	ई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	नि	ध	म	म	ग॒	म	ग॒	सा	नि़	सा
उ	न्हीं	से	मे	ऽ	री	ल	ग	न	ला	ऽ	ग
म	–	म	म	ध	नि	सां	–	नि	सां	–	सां
प्रे	ऽ	म	पि	या	के	गा	ऽ	ऊँ	सं	ऽ	ग
नि	सां	नि	ध	म	ध	नि	सां	नि	ध	–	ध
ग	ग	री	भ	रूँ	री	के	स	र	रं	ऽ	ग
सां	गं॒	मं	गं॒	सां	निध	ग॒	म	ग॒	सा	नि़	सा
उ	न	से	ही	अ	वऽ	खे	लुं	गी	फा	ऽ	ग

३ राजेश्वरी–झपताल (लक्षणगीत)

राजेश्वरी मधुर, मध रात संचार करत मृदु गंधार,
रूप सोहत अपर ॥ ध्रु० ॥
अंश मध्यम करत, प्रथम सम्वाद–रत ।
नि सां गं मं गं सां ऽ नि ध ध, सुर सङ्गत अति रुचिर ॥

×		२			०		३		
धनि	सांनि	ध	–	म	ग॒	म	ग॒	सा	सा
राऽ	ऽऽ	जे	ऽ	श्व	री	ऽ	म	धु	र
नि़	सा	म	–	म	म	–	ध	ग॒	म
मं	ध	रा	ऽ	त	सं	ऽ	चा	ऽ	र
ग॒	म	ध	नि	सां	सां	–	सां	–	सां
क	र	त	मृ	दु	गं	ऽ	धा	ऽ	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	–	नि	ध	–	म	ग॒	म	ग॒	सा
रू	ऽ	प	सो	ऽ	ह	त	अ	पं	र
म	ग॒	म	ध	–	नि	सां	सां	सां	सां
अं	ऽ	श	म	ऽ	ध्य	म	कृ	र्	त
सां	सां	सां	सां	–	सां	–	नि	ध	ध
प्र	थ	म	सं	ऽ	वा	ऽ	द	र	त
नि	सां	गं॒	म	गं॒	सां	सां	नि	ध	ध
नि	सां	गं	मं	गं	सां	सां	नि	ध	ध
सां	सां	नि	ध	म	ग॒	म	ग॒	सा	सा
सु	र	सं	ग	त	अ	ति	रु	चि	र

——

राग-मालीगौरा

(संस्कृत) मालीगौरः परमरुचिरः मारुसंस्थान जन्यः ।
संपूर्णोऽसाविह किल रिधौ वादिसंवादिनौ स्तः ॥
श्री संमिश्रः विलसति सदा पूरिया मिश्रितिश्च ।
सायंगीतो मधुर निनदैर्मंद्र–मध्य–प्रचारः ॥

"रागकल्पद्रुमांकुरे"

(हिन्दी) धैवत दो, कोमल रिषभ, तीखे गमनि लगाय ।
गनि वादी संवादितें, मालीगौरा गाय ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'मालीगौरा' 'गौरा' अथवा 'मारूगौरा' पूरिया अङ्ग का एक मिश्र राग है। पूरिया में श्री अङ्ग से पंचम तथा कोमल धैवत दिखाने से मालीगौरा की रचना होती है। अर्थात् पूरिया षाड्व राग है, मालीगौरा सम्पूर्ण है। पूरिया में शुद्ध धैवत है, कोमल धैवत बिलकुल नहीं। मालीगौरा में दोनों धैवत लिये जाते हैं। आरोह में शुद्ध धैवत और अवरोह में कोमल धैवत। निधनि, मधनि, मनि, गमंनि, गनि, मधसा, निरेसा, निरेग, मरेग, मधमग, धऽमग, मधग, निमग, मधरेंसां, निरेंगं, मंगंरेंसां। इन स्वरों में पूरिया का ही भास हुआ करता है। किन्तु सा, गसा रेरेसा, ग रे, रेप, प रे ग रेसा, सापे, मधुप, पमधुप, निधुप, मपधुप, रेंनिधुप, इस प्रकार का श्री अङ्ग निर्देशक पंचम तथा कोमल धैवत से पूरिया नष्ट होता है। इसी को ही मधग, धऽमग, निधऽमग, मरेग, मग, मगरेसा, इस प्रकार के स्वर जोड़ कर फिर से पूरिया दिखाया जाता है। क्वचित् गपधग, पधग, पगधग, इस प्रकार के स्वरों से जैतकल्याण की भी छाया दिखाई जाती है, किन्तु बाद में मरेग, धऽमग, मगरेसा, इन स्वरों से जैतकल्याण अलग किया जाता है। प्रायः मन्द्र तथा मध्य सप्तक में ही इस राग का प्रस्तार किया जाता है। मींड—प्रधान स्वर, दो धैवत का वैचित्र्य, रे प की स्वर सङ्गति शाम के समय मन पर कुछ अजीब ही असर करती है। वादी गांधार, सम्वादी निषाद। मुख्यांगः—निरे, निधऽप, मधसा, रेप, मगरेसा।

मालीगौरा के धैवत के बारे में गुणजनों में कई मतभेद हैं। कोई इसमें केवल शुद्ध धैवत लेना पसन्द करते हैं। किन्तु हमारे मत से केवल शुद्ध धैवत का मालीगौरा 'पूर्वीकल्याण' से अलग रखना कुछ कठिन ही होगा। कोई-कोई इसमें केवल कोमल धैवत ही पसन्द करते हैं। किन्तु केवल कोमल धैवत का मालीगौरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूर्या-धनाश्री से अलग रखना कठिन होता है। अन्य कोई मंद्र सप्तक में दो धैवत और मध्य सप्तक में निप सङ्गति दिखाते हैं, किन्तु मध्य सप्तक का एक नियम और मंद्र सप्तक का दूसरा हिन्दुस्थानी सङ्गीत-शास्त्र-दृष्टि से सदोष होगा। मंद्र और मध्य सप्तक का संयोग ही हमारे सङ्गीत की विशेषता है। शाम के गंभीर समय में धैवत एक रक्तिरंजक वैचित्र्य दायक स्वर है, अतः निप सङ्गति इस समय शोभा नहीं देती, यह सन्धि प्रकाश के बाद यानी कल्याण ठाठ में शोभा देगी, अतः उपर्युक्त सभी प्रकार हमें मान्य नहीं हो सकते।

वास्तव में, मालीगौरा का धैवत न तो शुद्ध है न कोमल। चतुर गायक मींड में इसे लपेट-लपेटकर इस प्रकार लेते है कि श्रोताओं को पता ही न चले कि यह कोमल है या शुद्ध, और मालीगौरा की विशेषता भी इसी में है।

आरोहावरोहः— सा, नि़रेग, मंगरेसा, रेप, मंधप, मंग, मंधमंसां। निरेंसां, निरेंनिधऽप, मंधप, मंग, मंधग, धऽमंग, मंग, मंगरेसा। नि़रेनि़ध़ऽप़, म़ग़म़ध़सा।

साम
स्वरविस्तारः—सा, नि़रेसा, रेरेध़सा, म़ध़सा, म़ध़म़सा

सा ग सा ग
रे, रेध़सा। रेऽरे सा, नि़ध़नि़, म़ध़नि़, ध़नि़, म़ध़म़नि़, गम़ध़नि़,

साग साग
म़ध़नि़, म़ध़म़सा, रेऽरेसा। नि़साग, रेरेसा, रेग, नि़रेग,

सा ग
रेग, मंग, मंरेग, मंगरे, मंरे, रेऽरेसा। नि़साग, साग,

सा ग
नि़सानि़ग, गनि़ऽनि़साग, रेऽरेसा, सारेग, मंग, मंरेग, नि़ऽ

नि़मंग, मंनि़ऽमंग, नि़ध़प, मंग, मंगरेसा। नि़सागमंऽमंऽमंग, सामंग,

सा ग
नि़सामंग, मंनि़ऽनि़मंग, मंगरे, रेऽरेसा, मंध़नि़, गमंध़नि़,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मधनि, निधप, गमंधनि, मंनिमंधमंसा। सा, साग रेरेसा, रेप,
मंगरेसा, प, मंधप, धप, मंग, मंरेग, मंधऽमग, मंगरेसा।
निरेगमंधऽमंग, मंधऽमंग, मंधपऽमंग, रेप, मंधप, साधधप,
मंधप, मंधमंग, मंधग, साधऽमंग, मंरेग, मंग, मरे, साग रेरेसा।
निसागमंधनि, नि, मंधनि, गमंधनि, मंधमंनि, रेरेसारेपऽमं
धपऽमगऽमंधनि, मंधनि, मंधनि, गमंधनि, मंधमसांऽ, । निरेंसां,
गंरेंसां, मंरेंगं, मंगंरेंसां, सांगं रेंरेंसां, रेंपं, मंगंरेंसां, निरेंनिधऽप,
मंधप, मंग, मंधग, धप, धऽमंग, पधग, गपधग, मंरेग,
मंग, मंगरेसा, रेनिधऽप, मंधमंसा।

१–मालीगौरा–एकताल (ख्याल)

नैनन में छवि छाई रसीली,
तुमरी राम रमैया ॥ ध्रु० ॥
सुर—नर—मुनि—जन—जीवन—
खंजन मनरंजन—पखियां ॥

३		४		×		०	
						नि	नि
निमं	गरे	सा	–निध	नि	–	मंध	सा
नैऽ	नन	में	ऽछवि	छा	ऽ	ईऽ	ऽ

२		०		३			४	
				रे	रे	रे		
–	निरे	सा	–	सा	सा	प	–	मंध
ऽ	रसी	ली	ऽ	तुम		री	ऽ	राऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०	
					सा	नि़	
प	–	मंध	मंग	मंग	रे़	सा	–
म	ऽ	रऽ	ऽऽ	मैंऽ	ऽ	या	ऽ

३		४		×		०	
		नि		नि			
मंमं	मंग	मंमं	ध–मंध	सां	–	निरें	सां
सुर	नर	मुनि	जऽनऽ	जी	ऽ	वन	खं

२		०		३		४	
			नि				
–	निसांगं	रें	सां	–	निरें	निध	प
ऽ	जऽऽ	ऽ	न	ऽ	मन	रंऽ	ऽ

×		०		२		०	
					सा	नि़	
मंध	मं	ग	–	मंग	रे़	सा	–
जऽ	ऽ	न	ऽ	पखि	ऽ	यां	ऽ

२–मालीगौरा–त्रिताल

सुमरिन अब करिये सब गुनिवर ।
'भरत', 'अहोबल', 'लोचन', श्रुतिधर ॥ध्रु०॥
'सदारङ्ग', 'हररङ्ग' पियारा ।
'तानसेन' दीपक उजियारा ।
'चतुर', 'दिगम्बर–सुत' पद पर सिर ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०				३				×				२			
मं	रे̱	ग	ग	मं	ग	रे̱	सा	प	–	प	प	मं	ध	ग	ग
सु	मि	र	न	अ	व	क	रि	ये	ऽ	स	ब	गु	नि	व	र
मं	ध̱	प	प	नि	ध	प	प	मं	ध	ग	ग	प	ग	रे̱	सा
भ	र	त	अ	हो	ऽ	व	ल	लो	ऽ	च	न	श्रु	ति	ध	र
ध	मं	ग	ग	मं	ग	मं	ध	मं	सां	सां	सां	नि	रें̱	सां	–
स	दा	ऽ	रं	ऽ	ग	ह	र	रं	ऽ	ग	पि	या	ऽ	रा	ऽ
नि	रें̱	गं	गं	मं	रें̱	गं	–	रें̱	पं	मं	गं	पं	गं	रें̱	सां
ता	ऽ	न	से	ऽ	न	दी	ऽ	प	क	उ	जि	या	ऽ	रा	ऽ
नि	रें	नि	ध̱	प	–	मं	ग	मं	ध	ग	ग	प	ग	रे̱	सा
च	तु	र	दि	गं	ऽ	ब	र	सु	त	प	द	प	र	सि	र

३–मालीगौरा–सुरफाग (लक्षणगीत)

सजनी सुन सुमधुर, मङ्गल मालीगौर ।
हरषावत सखि नित, गुनिजन मन–चकोर ॥ध्रु०॥
अंश करत गांधार, निषद सोहे अनुचर ।
धैवत द्वय सोहत, अरु मध्यम तीवर ॥

×		०		२		३		०	
मं	रे̱	ग	–	मं	ग	रे̱	रे̱	सा	सा
स	ज	नी	ऽ	सु	न	सु	म	धु	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि़	रे़	नि़	ध़	प़	-	म़	ध़	सा	सा
मं	ऽ	ग	ल	मा	ऽ	ली	गौ	ऽ	र
रे	रे	प	प	मं	ध	प	ध	मं	ग
ह	र	पा	ऽ	व	त	स	खि	नि	त
मं	ध	मं	ग	प	ग	रे	रे	सा	सा
गु	नि	ज	न	म	न	च	को	ऽ	र
मं	ग	मं	ध	मं	ध	मं	सां	-	सां
अं	ऽ	श	क	र	त	गं	धा	ऽ	र
नि	सां	गं	गं	मं	गं	मं	गं	रें	सां
नि	ख	द	सो	ऽ	हे	अ	नु	च	र
रें	सां	पं	पं	मं	गं	मं	गं	रें	सां
धै	ऽ	व	त	हृ	य	ला	ऽ	ग	त
नि	रें	नि	ध	प	ध	मं	ग	रे	सा
अ	रु	म	ऽ	ध्य	म	ती	ऽ	व	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग–गुणकली

(संस्कृत) रिसौ धसौ मरी मश्च धपौ मरी पमौ रिसौ ।
गुणक्री गीयते प्रातर्भैरवांगी ध वादिनी ॥

—"अभिनवरागमंजर्याम्"

(हिन्दी) गनि सुर बरजे गुणकली रिमधाकोमल मान ।
वादी धैवत है रिषभ संवादी सुर जान ॥

—"रागचन्द्रिकासार"

(मराठी) राग गुणक्री जाणा भैरव मेलजिं सुशोभली नित्य ।
वादी धैवत सुन्दर गनिहीना प्रातसमयिं बुध गात ॥

'गुणकली', 'गुणकरी' अथवा 'गुणक्री' भैरव मेल का एक मधुर औड़व जाति का राग है, अतः इसमें ऋषभ, धैवत कोमल, और गंधार, निषाद वर्जित हैं अन्य स्वर शुद्ध हैं। वादी धैवत तथा सम्वादी ऋषभ होने से इन दोनों स्वरों पर अल्पांदोलन आवश्यक है। गांधार वर्जित होने के कारण इसमें 'जोगिया' का बहुत कुछ भास हुआ करता है, तथापि वादी भेद, निषाद का अस्तित्व, तथा आंदोलित ऋषभ, धैवत होने से 'गुणकली' जोगिया से बिलकुल अलग रहती है। मध्यम से ऋषभ तक की मींड़ अत्यन्त वैचित्र्यदायक है। मध्यम एक महत्वपूर्ण न्यासस्वर है। इस राग का गायन-समय प्रातःकाल है। मुख्यांगः—साध़ऽपम, मपम, रे़ऽरे़सा।

कोई गुणीजन 'गुणकली' और 'गुणकरी' दो भिन्न राग समझते हैं। उनके मत से 'गुणकली' विलावल ठाठ का राग है। परन्तु आजकल विलावल ठाठ का रूप विशेष प्रचार में नहीं। प्रचार में तो भैरव ठाठ की गुणक्री ही 'गुणकली' नाम से दिखाई देती है।

आरोहावरोहः—सा, रे़मप, ध़, ध़सां। सां, ध़प, मपम, रे़, रे़सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरविस्तारः—सा, धृ, धृ, धृ, सा । साधृधृप, धृ, मधृ, धृप, मपधृ, धृसा, रेरेसा । सारे, रेसा, धृसारेरेधृधृरे, साधृप, परे, रेसा, धृधृसा ।। सा, सा, रेम, धृप, मपधृसा, रेम, रे, रेसा, रेम, मरेऽसा, रेरेम, मरम, पम, रे, रेसा । सा, रेमप, मप, मपम, रेरेसा, रेप, धृसारेमप, मपधृसारेमप, मप, मप, धमप, मधपम, पम, मपम, पमरेरेसा । सारेमपध, धृधृऽध, मपध, धमध, साध, धप, मपधप, धपम, धमपम, पम, पमरे, रेमधपमरे, पमरेरेसा । सा, रेमपध, रेध, पमरेरेसा, साध, ध, मप, मध, पध, धरे, रेमपध, मपध-साऽऽ, मधसां, रेंरेंरेंसां, मंरें, मंरेंसां, सांऽधपम, मपधसां-धपम, धरेंरेंसां, रेंसांधपम, धमपम, पधपम, पम, पमऽरेरे, सा, साधधपमऽरेसा । धृ, धृप, मपधृसा ।।

१ गुणकली—झपताल

मैं तो जागी सारी रैन, घर न आये साजन ।
जिया तरसे पिया बिन ।। ध्रु० ।।
जब से गये बालम, सौतन के सङ्ग ।
घबराये सखी जियरा, सहो जात छिन पल न ।।

×		२			०		३		
म	प	ध	ध	प	म	प	म	रे	सा
मैं	तो	जा	ऽ	गी	सा	री	रै	ऽ	न
ध	धृ	रे सा	सा	सा	म	प	म	रे	सा
घ	र	न	आ	ये	सा	ऽ	ज	ऽ	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे	म	म	प	धु	सांधु	धुप	म	रे	रेसा
जि	या	त	र	से	पीऽ	याऽ	बि	ऽ	ऽन
म	प	धु	धु	धु	धु	सां	सां	सां	सां
ज	ब	से	ऽ	ग	ये	ऽ	बा	ल	म
धु	धु	धु	सां	सां	रें	सां	सां	धु	प
सौ	ऽ	त	ऽ	न	के	ऽ	सं	ऽ	ग
धु	सां	रें	मं	मं	पं	मं	रें	रें	सां
घ	ब	रा	ऽ	ये	स	खी	जि	य	रा
रें	धु	धु	प	म	प	म	रे	रे	सा
स	हो	जा	ऽ	त	छि	न	प	ल	न

२ गुणकली–त्रिताल

रे मन पी हरि नाम–सुधा–रस,
जग जीवन बिन जगत सब निरस ॥ ध्रु० ॥
संसार एक घरी का सपना,
धर न मोह, धर 'मोहन' अहनिस ॥

×				२				०				३			
सां धु	–	प	म	प	–	धु	म	प	–	म	प	रे	–	सा	सा
रे	ऽ	म	न	पी	ऽ	ह	रि	ना	ऽ	म	सु	धा	ऽ	र	स
सा	रे	म	–	म	म	प	धु	सां	सां	सां	रेंसां	सां	धु	प	म
ज	ग	जी	ऽ	व	न	बि	न	ज	ग	त	सऽ	ब	नि	र	स
धु	म	म	प	–	प	प	धु	सां	सां	सां	रें	सां	रें	सां	–
सं	ऽ	ऽ	सा	ऽ	र	ए	क	घ	ड़ी	का	ऽ	स	प	ना	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां रें मं रें	सां ध प म	सां ध प म	म रे रे सा
ध र न मो	ऽ ह ध र	मो ह न अ	ह ऽ नि स

३ गुणकली–त्रिताल (लक्षणगीत)

गुणकली सखि मोरे मन भावत।
मालव गौड सुमेल विराजत ॥ ध्रु० ॥
रिखब सम्वदत धैवत वादत।
तार, मध्य स्वरमाला सोहत,
नित गंधार निषाद को बरजत,
प्रात समय गुनि-मन हरषावत ॥

३	×	२	०	
रे म प	ध – प प	म प म म	रे – सा सा	
गु ण क	ली ऽ स खि	मो रे म न	भा ऽ व त	
– सा सा रे	म – म म	प – प ध	सां ध प प	
ऽ मा ल व	गौ ऽ ड सु	मे ऽ ल बि	रा ऽ ज त	
– म म प	ध प प म	पध सां सां सां	रें रें सां सां	
ऽ रि ख व	सं ऽ व द	तधै ऽ व त	वा ऽ द त	
ध – ध सां	– सां सां सां	सां रें सां रें	सां ध प प	
ता ऽ र म	ऽ ध्य स्व र	मा ऽ ला ऽ	सो ऽ ह त	
सां रें मं –	मं – मं मं	मं पं मं पं	मं रें रें सां	
नि त गं ऽ	धा ऽ र नि	षा द को ऽ	ब र ज त	
रें रें सां सां	सां ध प म	म प म प	म रे रे सां	–
प्रा ऽ त स	म य गु नि	म न ह र	षा ऽ व त	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग अहीर-भैरव

(संस्कृत) अहीरो मध्यमांशश्च प्रातर्गः रिनिकोमलः।
संपूर्णत्वं हि नी रोहे मध्यमश्चावरोहणे ॥

(हिन्दी) भैरव पूरव अङ्ग में, काफी उत्तर भाग।
अति विचित्र द्वै रूप से, होत अहीरी राग ॥

[रागचन्द्रिकासार]

अहीर-भैरव, भैरव का एक अत्यन्त मधुर तथा वैचित्र्य पूर्ण प्रकार है। इस राग में ऋषभ, निषाद कोमल और अन्य स्वर शुद्ध हैं। जाति सम्पूर्ण है। इसके पूर्वांग में ऋषभ कोमल और अन्य स्वर शुद्ध हैं। अतः यहां भैरव की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई जाती है। उत्तरांग में काफी की छाया राग को बहुत ही रक्तिदायक बनाती है। आरोह में निषाद वर्जित और अवरोह में पगरे॒सा की स्वर सङ्गति अत्यावश्यक है। मध्यम वादी तथा एक मधुर न्यास स्वर है। संवादी षड्ज। समय मध्य रात का अन्तिम प्रहर! मुख्यांगः—सांनि॒धप, म, पगरे॒सा।

आरोहावरोहः—सा, रे॒ग, मप, नि॒धप, मपधसां। रें॒रें॒सां, नि॒, नि॒धऽप, मऽपग, म, पग, रे॒ऽसा।

स्वरविस्तारः—सा, रे॒रे॒सा, गमरे॒रे॒सा। सा, ग, रे॒साग, साग, मग, रे॒ग, रे॒मग, मग, रे॒गमग, रे॒मग, मग, पगरे॒सा।
सारे॒ग, ऽ, गऽ, गम, सागम, सारे॒गम, रे॒गम, रे॒रे॒सा, गम, गमरे॒साऽम, साम, मग, सागमग, म, गमरे॒सा। सा, गम, रे॒गमप, सा, रे॒ग, म, मप, रे॒प, गमप, सागमप, गमप, गमरे॒, गमपरे॒, रे॒प, मगरे॒, पग, मरे॒रे॒सा। सारे॒गमप, मपधप,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मधप, ऩिधप, धऩिधप, सांऩिधप, मपधऩिसांऩिधप, ऩिधप, मऩिधप, ऩिधप, ऩिधपम, पग, पगऽरेसा। सा, रेगमप, मप, मपधसां, ऩिधसां, रेंरेंसा, गमपधसां, रेंरेंसां, गंमंरेंसां, गंमंपंगंमंरेंऽसां, गंमंपंरेंऽसां, रेंसांऩि, ऩिध, धप, सांऩिधप, म, पग, मपग, पगरेरेसा। सानि़, ऩि़ध़प़, म़प़ध़सा, गमरेऽसा, रेगऽमऽऽऽ, पऽगऽरेसा।

१—अहीर-भैरव—तिलवाडा (ख्याल)

अँखियां न लागी मोरी।
कर सिंगार बैठत हूं,
रैन की जागी सिगरी ॥ध्रु०॥
जब से गये मेरो मन बांध लीन्हों।
दे गये अँसुवन की झारी ॥

३				×			
	---प		गरेसारे	ग	-	म	-
	ऽऽऽअँ		खियांऽन	ला	ऽ	गी	ऽ
२				०			
मग	प	-	-पधप	म	गम	-म	प
मोऽ	री	ऽ	ऽकरसिं	गा	ऽऽ	ऽर	बै
३				×			
-	धऩि	धप	म	-	पग	रे	सा
ऽ	ठत	हूँऽ	ऽ	ऽ	रैऽ	न	की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२				०			
-	सारे	ग	म	प	-	पग	रे
ऽ	जाऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	सिग	री
३							
-	सा	---प	गरेसारे				
ऽ	ऽ	ऽऽऽआँ	खियांऽन				
३				×			
	---म		पसां-सां	सां	-	-	रें
	ऽऽऽज		बसेऽग	ये	ऽ	ऽ	मे
२				०			
रें	सां	-	सांरें	गं	-	गंमं	-
ऽ	रो	ऽ	मन	बां	ऽ	घली	ऽ
३				×			
पंगं	रें	ध सां	-	गं- रेंरें	सां	त्रि	-
ऽऽ	ऽ	न्हीं	ऽ	देऽ	ग	ये	ऽ
२				०			
सांत्रि	धप	-	म	-	मप	पग	रे
अँसु	वन	ऽ	की	ऽ	ऽऽ	झाऽ	ऽ
३							
-	सा	---प	गरेसारे				
ऽ	री	ऽऽऽआँ	खियांऽन				

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२–अहीर–भैरव–त्रिताल

बान परी सखी आज मोरे नैन,
जबहुँ न देखे सखी मन मोहन। ध्रु०।
तन से जोगिन, मन से वियोगिन,
कटत रतियां सखि तारे गिनगिन॥

०				३				×				२			
सां	ऩि	ध	प	ग	रे॒	सा	रे॒	ग	–	ग	म	–	म	प	ध
बा	ऽ	न	प	री	ऽ	स	खी	आ	ऽ	ज	मो	ऽ	रे	नै	न
म	प	ध	सां	रें॒	रें॒	सां	–	सां	ऩि	ध	प	म	ग	रे॒	सा
ज	ब	हुँ	न	दे	ऽ	खे	ऽ	स	खी	म	न	मो	ऽ	ह	न
म	प	ध	सां	रें॒	रें॒	सां	सां	सां	गं	मं	पं	रें॒	रें॒	सां	सां
त	न	से	ऽ	जो	ऽ	गि	न	म	न	से	वि	यो	ऽ	गि	न
गं	गं	मं	पं	गं	रें॒	सां	सां	सां	ऩि	ध	प	म	ग	रे॒	सा
क	ट	त	र	ति	यां	स	खि	ता	ऽ	रे	ऽ	गि	न	गि	न

३ अहीर–भैरव–एकताल

अहीर राज खेले होरी,
सङ्ग सोहत गोरी नारी,
जोवन की मतवारी॥ ध्रु०॥
मोर मुकुट कटि काछन,
सरस सुर अधर धरत,
निरखत राधा दुलारी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०		३		४		×		०		२	
सां	ऩि	ध	प	ग	ॾे	ग	म	प	ॾे	-	सा
अ	हि	र	रा	ऽ	ज	खे	ऽ	ले	हो	ऽ	री
सा	ॾे	ग	-	म	म	प	प	ध	ऩि	ध	प
सं	ग	सो	ऽ	ह	त	गो	ऽ	री	ना	ऽ	री
सां	ऩि	ध	प	म	प	ग	म	प	ॾे	-	सा
जो	ऽ	व	न	की	ऽ	म	त	वा	ऽ	ऽ	री
म	-	प	ध	सां	सां	सां	सां	ॾें	ॾें	सां	सां
मो	ऽ	र	मु	कु	ट	क	टि	का	ऽ	छ	न
सां	सां	सां	ॾें	ॾें	सां	गं	मं	पं	गं	ॾें	सां
स	र	स	सु	ऽ	र	अ	ध	र	ध	र	त
ॾें	ॾें	सां	सां	ऩि	ऩि	ध	म	प	ग	ॾे	सा
नि	र	ख	त	रा	ऽ	धा	ऽ	दु	ला	ऽ	री

४ अहीर–भैरव–तीव्रा (लक्षणगीत)

राग सुमधुर अहीर–भैरव ।
सम्पूरन, कर रिमनि कोमल,
प्रात समय सखि करत मधुरव ॥ ध्रु० ॥
करत मध्यम वाद मधुतर,
प्रथम सम्वादत अति रुचिर,
गमपरेऽसाऽसाऽनिधपम स्वर बढ़ावत नित ही गौरव ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×			२		३		×			२		३	
सां	नि	ध	प	म	म	ग	ग	म	प	रे	–	रे	सा
रा	ऽ	ग	सु	म	धु	र	अ	हि	र	भै	ऽ	र	व
सा	रे	ग	म	म	प	प	म	प	ध	सां	–	रें	सां
सं	ऽ	पू	र	न	क	र	रि	म	नि	को	ऽ	म	ल
रें	रें	सां	नि	ध	प	म	ग	म	प	रे	रे	रे	सा
प्रा	ऽ	त	स	मै	स	खि	क	र	त	म	धु	र	व
म	प	ध	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	रें	रें	सां	सां
क	र	त	म	ऽ	ध्य	म	वा	ऽ	द	म	धु	त	र
सां	सां	सां	रें	–	सां	सां	रें	गं	मं	रें	रें	सां	सां
प्र	थ	म	सं	ऽ	वा	ऽ	द	त	अ	ति	रु	चि	र
गं	मं	पं	रें	–	सां	–	सां	–	नि	ध	प	म	–
ग	म	प	रे	ऽ	सा	ऽ	सा	ऽ	नि	ध	प	म	ऽ
म	प	ध	सां	नि	ध	प	ग	म	प	रे	रे	रे	सा
स्व	र	ब	ढा	ऽ	व	त	नि	त	हि	गौ	ऽ	र	व

———

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग–अरज

(संस्कृत) अरजे तु मध्यमौ द्वौ न्यौ संपूर्णः कोमलर्षभः ।
शृण्वतामुषसि चेतांसि मांशश्च हरति यत्र वै ॥

(हिन्दी) कोमल रिखब, निखाद दो, मध्यम दोनों लाग ।
मस वादी सम्वादि कर, होत अरज तब राग ॥

(मराठी) सूर्यकान्त मेलान्तरी निषाद मध्यम सुशोभती दोन्ही ।
प्रातःसमयीं रंजवि अरज मना मध्य षड्ज संवदुनो ॥

अरज भैरव अंग का एक अत्यन्त मधुर राग है। इसमें ऋषभ कोमल, दो मध्यम, दो निषाद और अन्य स्वर शुद्ध हैं। जाति सम्पूर्ण है। शुद्ध मध्यम और शुद्ध निषाद आरोहावरोह में सरल रूप से लिये जाते हैं। तीव्र मध्यम तथा कोमल निषाद मंपधनि़धप इस प्रकार से केदारांग पद्धति से ही लिये जाते हैं।

प

साम, मप, मंपम, मंपधपम, नि़धप, मंपधनि़धप, निधपम, सांनिधप, धनि़धप, निधपम, सांनिधपम, पधऽम, निधपम, मंपधनि़ध पऽम इस प्रकार की स्वर-सङ्गति से केदार का अङ्ग दिखाया जाता है।

ग ग

किन्तु पगरे़रे़सा, मगमरे़, सा, रे़नि़सागऽगऽमपऽरे़रे़, सा, मपसां, गं गं रें़ऽरें़ऽसां; गं गं गंमरें़ऽरें़सां, गंमंपंगंमरें़ऽरें़सां, इन स्वरों से केदार लुप्त हो जाता है। इसी को ही बाद में सांनिधपऽम, म नि़धप, मंपधनि़धपऽम जोड़ने से केदार और पगरे़सा जोड़ने से

पुनः भैरवांग दिखाया जाता है। क्वचित् मपधनि़सांऽम इस प्रकार आरोह में भी कोमल निषाद लिया जाता है। भैरव, केदार, नन्द, अहीर इनकी छाया इस राग में बारबार दिखाई देने से प्रातः समय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में इस राग का कुछ अजीब ही असर होता है। वादी मध्यम, सम्वादी षड्ज; मुख्यांग:— साम, मप, मंपधपम, ऩिधपम, पऽगऽरे़सा ।

आरोहावरोह:— सा, रे़ग, म, प, मंप, मंपधपऽम, मंपधऩिधप, निधपम, पधमंपसां, गंगं रे़रे़सां, गंमंरे़ऽसां; निधपम, मपधऩिसांम, पऽगऽरे़सा ॥

स्वरविस्तार:— सा, गग रे़रे़सा, गमगग रे़रे़सा । साग, ऩिसाग, गग रे़रे़सा, रे़ग, मग, सारे़ग, रे़ग, रे़गमग, रे़मग, मग, मगमरे़, गमरे़, मगमरे़सा। ऩिसारे़ग, रे़ग, रे़गमग, ऩि सारे़ग, रे़ग, रे़गमग, गम, साग़म, साम, प म, प म, प मग, रे़गमपम, पऽमग, रे़गमपग, मपमग, रे़पग, मग, पग, पगरे़सा। सा, रे़गऽम, गमरे़ऽसागम, प म, प म, मप, रे़गमप, गमपरे़रे़सारे़गमप, गमप, मंप, मग, मंपम, मंपधपम, पधमंप, मंपधम, मंपधप, धऽम, सामऽमप ऽमंपध पम, पग, रे़गमपग, पग पऽगऽरे़सा। सागमप, गमप, गमपरे़रे़सा, रे़गमप, गमप, मंप, मंपधप, प धऽम, ऩिधप, धम, मंपधऩिधप, निम, मंपधनिसांम, निधपम, प ऩिधप; धनिम, सामऽमपऽमंपधपम, सांप, मंप, मंपधऩिम, निधपम, मंपम, पम, पग, रे़गमपम, पग रे़पग, पग, पगरे़सा । सामं, मप, धमंपसां, गंगं रे़रे़सां, गं गंमंरे़ऽसां,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गंमंपं, गंमंरें, पंगंमंरेंसां, रेंरेंसांरेंसां, निधपम, सांनिधपम, सांम, सांम, मप, मंपधपम, मंपधनिसांम, पग, मपग, पग, परेरेसा, गमपरेसा, सागऽमऽऽ ॥

१ अरज–झपताल

आये उदय रविराज। भुवन के सरताज।
नव नवल धरे धरनी नव रूप नव साज॥ ध्रु० ॥
सङ्ग सोहे उषा अरुण। अरु सोहे सङ्ग वरुण।
केसर की सखी मान लूटे लूट हरि आज॥

०		३			×		२		
प	ग	रे	सा	रे	ग	ग	म	–	म
आ	ये	उ	द	य	र	वि	रा	ऽ	ज
म	ग	म	प	प	मं	प	ध	प	म
भु	व	न	के	ऽ	स	र	ता	ऽ	ज
प	मं	प	नि	ध	मं	प	ध	प	म
न	व	न	व	ल	ध	रे	ध	र	नी
मं	प	ध	प	म	प	ग	गरे	गरे	सा
न	व	रू	ऽ	प	न	वं	सा	ऽ	ज
प	प	सां	सां	सां	गंरें	गंरें	गंरें	सां	सां
सं	ग	सो	हे	उ	षा	ऽ	अ	रु	ण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	सां	गं रें	गं रें	सां	गं		मं	गं रें	गं रें	सां
अ	रु	सो	ऽ	हे	सं		ग	ब	रु	ए
नि	सां	गं	मं	पं	गं		मं	गं रें	गं रें	सां
के	ऽ	स	र	की	स		खि	मा	ऽ	न
सां	नि	ध	प	म	प		ग	ग रे	ग रे	सा
लु	टे	लू	ऽ	ट	ह		रि	आ	ऽ	ज

२ अरज–त्रिताल

सगरी रैन मैं तो जागी मोहन।
भोर भई बस कर मन मोहन ॥ ध्रु० ॥
रंग भरी हरि तुमरी नजरिया।
बोलत मन की बतियाँ बोलन बिन ॥

०				३				×				२			
मं	नि	ध	प	मं	प	मंप	धप	म	–	धप	म	प	ग	रे	सा
स	ग	रि	रै	ऽ	न	मैंऽ	तोऽ	जा	ऽ	गीऽ	ऽ	मो	ऽ	ह	न
सा	रे	ग	ग	म	–	म	म	मं	मं	प	प	मंप	धप	म	म
भो	ऽ	र	भ	ई	ऽ	ब	स	क	र	म	न	मोऽ	ऽऽ	ह	न
मं प	–	प	प	सां	–	सां	सां	गं रें	गं रें	गं	मं	गं रें	गं रें	सां	–
रं	ऽ	ग	भ	री	ऽ	ह	रि	तु	म	रि	न	ज	रि	या	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गं - मं पं	गं मं रें सां	नि ध प म	प ग रे सा
बो ऽ ल त	म न की ऽ	ब ति याँ बो	ल न बि न

३ अरज-त्रिताल (लक्षणगीत)

मधुर सखी बाजत सुन्दर राग ।
नहीं री भटियार, अहिर, भखार ॥
अति ही सुहावत भैरव अंग ॥ ध्रु० ॥
कर अंश मध्यम अनुचर प्रथम ।
अरज शुभ प्रात बढ़ावत रंग ॥

३	×	२	०
			प म
ग रे सा रेसा	म - म म	प - मंप पध	(प)ध प म प
धु र स खीऽ	बा ऽ ज त	सुं ऽ दुऽ रऽ	रा ऽ ग न
मं प - नि	ध प मं प	(प)म (प)म (प)म प	ग रे सा सा
हिं री ऽ भ	टि या ऽ र	अ हि र भ	खा ऽ र अ
सां म - म	प - मं प	धनि सां ध प	मंप धप म म
ति ही ऽ सु	हा ऽ व त	भैऽ ऽ र व	अंऽ ऽऽ ग क
प सां - सां	(गं)रें (गं)रें सां सां	सां गं मं पं	(गं)रें रें सां सां
र अं ऽ शं	म ऽ ध्य म	अ नु च र	प्र थ म अ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	ध	मध	धप	म	–	म	म	प	ध	नि	सां	ध	प	म
र	ज	शुऽ	भऽ	प्रा	ऽ	त	ब	ढा	ऽ	व	त	रं	ऽ	ग

राग-गोपीवसन्त

(संस्कृत) आशावर्यां तु संजातः प्रातर्गेयश्च सांशकः ।
गोपीवसंत-रागश्चारिः वक्रस्त्ववरोहणे ॥
(हिन्दी) गधनी कोमल लगि रहे, दीनों रिषभ हटाय ।
सप वादी सम्वादि तें, गोपिवसंत कहाय ॥

'गोपीवसन्त' अथवा 'गोपिका वसन्त' एक मधुर दाक्षिणात्य स्वरूप है । आसावरी ठाठ से इसकी उत्पत्ति होती है । इसमें गांधार, धैवत, निषाद कोमल तथा रिषभ वर्जित हैं । धनिसागमगऽसा तथा सांऽधनिधऽम, इन स्वरों से मालकौंस की छाया इस राग में दिखाई देती है । किन्तु मपधनिसां, तथा पऽगऽमगऽसा इस प्रकार का पंचम मालकौंस को हटा देता है । आरोह में पंचम सरल होने से 'अडाणा' की छाया इस राग में स्पष्ट दिखाई देती है । तथापि अडाणा की धनिप सङ्गति गोपीवसन्त में नहीं । अवरोह में निषाद और पंचम वक्र हैं । जैसे सांऽधनिधऽम, प, गऽमगऽसा । वादी षड्ज सम्वादी पञ्चम । गायन समय रातका अन्तिम प्रहर । मुख्यांग—मप धऽनिसां, धनिधऽम, पऽगऽमगऽसा ।

आरोहावरोहः—निसा, गमप, धऽनिसां । सां, धनिधऽम पऽगऽमगऽसा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि नि नि
स्वरविस्तार:—सा, ध, ध, धनिसा, निध,

नि म
निधम, पम, प, धनिसा । सागु, मगु, सामगु, मगुमगु,
मगुसाध, निधऽममगु, मगु, मगुसा । धनिसामगु, मगु,
सामगु, मगुमसामगु, गुमगु, मगु, धनिमगु, निमगु, मगु,

म
मनिमगु, पमगु, मगु, पऽगुऽमगुऽऽसा । सागुमप, सा, निसागुमप,
गुमपगुमप, मगुसाप, मपगुमप, पगुऽमप, गुमगुसागुमप, पम,
पगुऽम, गुमपऽगुम, सागुम, पगुम, पगुऽम, पगु, मगु,

नि नि नि
मपगुमगु, मगु, मगुसा । सागुमप, ध, मपध, साध,
मपधमपगु, मगसाध, धध, निध, मनिध, निधऽम, पधनिम,

म नि नि
पगु, मगु, मगुसा । सागुऽमपधऽनिसां, मपधनिसां, धनिसां,
धनिसां, सासां, गुंसां, मंगुंसां, गुंमंगुंसां, सांगुंमं, गुंसां,
गंमंपंगंमंगुंसां, धगुंसां, गुंमंगुंसां, मंगुंसां, मंगुंसांनि, निसां, निसांध,
निध, निधऽम, धनिधऽम, निम, सांऽधनिम, प, गुमपगु,
मगुऽऽसा, साध, ध, धधनिसा ।

१-गोपीवसंत-सुरफाक्ता

जय दुर्गा भवानी, जय जय जगत-जननी महिषा सुर मर्दिनी ।ध्रु०।
हिम-राज-नन्दिनी, भवदुरित-कंदिनी, भक्त गण तारिणी ॥

×		०		२		३		०	
प	प	गु	म	प	—	गु	म	गु	सा
ज	य	दु	र	गा	ऽ	भ	वा	ऽ	नी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	प	त्रि धु	त्रि	सां	सां	धु	त्रि	धु	म
ज	य	ज	य	ज	ग	त	ज	न	नी
धु	त्रि	धु	म	प	प	ग	म	ग	सा
म	हि	षा	ऽ	सु	र	म	ऽ	र्दि	नी
म	प	नि धु	–	त्रि	सां	–	धु	त्रि	सां
हि	म	रा	ऽ	ज	नं	ऽ	दि	नी	ऽ
गं	मं	गं	सां	सां	धु	त्रि	धु	म	–
भ	व	दु	रि	त	कं	ऽ	दि	नी	ऽ
धु	त्रि	धु	म	ग	प	–	गम	ग	सा
भ	ऽ	क्त	ग	ण	ता	ऽ	ऽरि	णी	ऽ

२–गोपीवसंत–एकताल

शंकर शिव हर हर हर ।
कर त्रिशूल, गंगा सिर
गले भुजंग अति भयकर ॥ ध्रु० ॥
धवलांगी कटि गौरी,
चर्मासित छवि न्यारी ।
नन्दी नित जोड़त कर ॥

×		०		२		०		३		४	
सां	–	धु	त्रि	धु	म	प	प	ग	म	ग	सा
शं	ऽ	कृ	र	शि	व	ह	र	ह	र	ह	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध़	नि़	सा	ग (म)	-	म	प	-	ध	नि	सां	सां
क	र	त्रि	शू	ऽ	ल	गं	ऽ	गा	ऽ	सि	र
सां	ध	नि	ध	म	म	प	प	ग	म	ग	सा
ग	ले	भु	जं	ऽ	ग	अ	ति	भ	य	क	र
म	प	ध	-	नि	सां	सां	सां	ध	नि	सां	सां
ध	व	लां	ऽ	गी	ऽ	क	टि	गौ	ऽ	री	ऽ
गं	मं	गं	ऽ	सां	सां	ध	नि	ध	-	म	-
च	ऽ	मीं	ऽ	सि	त	छ	बि	न्या	ऽ	री	ऽ
प	ध	नि	ध	म	म	प	प	ग	म	ग	सा
नं	ऽ	दी	ऽ	नि	त	जो	ऽ	इ	त	क	र

३–गोपीवसंत–त्रिताल

आई छबीली सखि राधिका,
माधव–मुकुंद–सुख–साधिका ॥ध्रु०॥
चम्पाकली मोतीयन माला ।
अरु सोहे बकुल–बन–मालिका ॥

															सा प
३				×				२				०			आ
-	ग	-	म	ग	-	सा	-	ध़	नि़	सा	ग	म	प	-	म
ऽ	ई	ऽ	छ	बी	ऽ	ली	ऽ	स	खि	रा	ऽ	धि	का	ऽ	मा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि नि			
प ध ध नि	सां – सां सां	सां ध नि ध	म ग सा म
ऽ ध व मु	कुं ऽ द मु	ख सा ऽ धि	का ऽ ऽ च
नि			
प ध – नि	सां – सां –	सां – ध नि	सां – सां गं
ऽ म्पा ऽ क	ली ऽ मो ऽ	ती ऽ य न	मा ऽ ला अ
मं गं – सां	ध नि ध म	म प – म	म ग सा
रु सो ऽ हे	व कु ल ब	न मा ऽ लि	का ऽ ऽ

राग–बिलासखानी

(संस्कृत) रागिण्यां तु विलाससिन्यां रिगमाधनिकोमलः ।
निमो नारोहणे चापम् वर्तते त्ववरोहणम् ॥

(हिन्दी) रिगमधनी कोमल लगत, धग सम्वाद बखान ।
तोड़ी का गंधार लखि, बिलासिनी पहचान ॥

संगीत सम्राट तानसेन के सुविख्यात पुत्र श्री बिलासखां द्वारा प्रचार में लाया हुआ यह एक आधुनिक अप्रचलित किन्तु मधुर स्वरूप है। भैरवी के स्वरों में तोड़ी का आभास उत्पन्न करना, यही इसकी विशेषता है। इसमें ऋषभ, गांधार, धैवत, निषाद कोमल अन्य सभी स्वर शुद्ध हैं। जाति इसकी सम्पूर्ण है। इसके आरोह में मध्यम तथा निषाद और अवरोह में पञ्चम वर्जित किया जाता

रे

है। सारेगऽऽ इस प्रकार स्वर तथा अति कोमल गांधार तोड़ी की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छाया स्पष्ट दिखाता है, तथापि शुद्ध मध्यम तथा कोमल निषाद का अस्तित्व इसको शुद्ध तोड़ी से अलग रखता है। उत्तराङ्ग में आरोह में निषाद दुर्बल होने के कारण आसावरी का आभास हुआ करता है। तथापि अवरोह में पंचम का महत्व उड़ा देने से आसावरी तथा भैरवी की छाया नष्ट हो जाती है। रेनि, सारेग, धमगरे, गपधसांनिध, मगऽरे, रेनिधसा, इस प्रकार ऋषभ पर अवरोही न्यास अत्यन्त वैचित्र्य दायक है। वादी धैवत, सम्वादी गांधार। समय दिन का दूसरा प्रहर। मुख्यांगः—गपधसांऽनिधमगरे, गरेसा, रेनिसारेगऽऽ।

आरोहावरोहः—सा, रेग, प, धसां। रेंनिधसां, निधऽम गरे, गरेसा, रेनिऽसारेगऽऽ।

स्वरविस्तारः—सा, धधधसा, रेनिध, धसा। रेनिसा, रेगरेऽसाऽनिधधधसा। निधसा, धसा, धसारेगरेसा, रेगरे, सारेनि, निगऽरेसा, गनिनिधसा। धसारेनिऽसारेग, रेग, सारेग, सारेग, गरे, गसा, रेनिसारेग, रेग, मगरे, गरे, गसा, रेनिसारेगऽऽ। सारेग, म, मग, पमग, मग, मगरे, गपमगरे, सारेगसारेपमगरे, गपमगरे, रेगरे, रेगरेसा, रेनिऽसारेगऽऽ। सारेगपऽमगरे, गप, रेगरेसाप, मप, मगरेगसा, रेनिधप, पप, गपधम, पग, पधमपग, धमगरे, गरेसा, रेनिऽसारेगऽऽ। सारेगप, धऽऽमगरेगरेसारेधऽऽगपध, रेगरेसारेगप, ध, धगऽपध, धऽध, मग, रे, रेगरेसा। सा, रेगप, धसांऽऽसां, रेंनिसां, रेंगंरेंसां, रेंगंऽपंऽमंगंरें, रेंगंरेंसां, रेंनिसां,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निधसमगरे, रेंरेंसनिधसमग, मगरे, रेंगंरेंसां, रेंगंरेंसा, रेनि, सारेगSS।

१–विलासखानी–एकताल (ख्याल)

फूली रही वन बेलरिया, लरिया–लरिया,
लावो मालिन आई बसन्त की बहार ॥ ध्रु० ॥
कूकत कोयलिया गूँजत भ्रमर,
उमगे जोबन का उभार ॥

४		×		०	
गपधनिधमगरेरेनिसारे		ग	–,ग	प	पधमग
फूSSSSSSSS	SSलर	ही	S,ब	न	बेSलरि
२		०		३	
रे	रेगसा–	रेनिसारे	ग	–	गप
या	लरियाS	लरियाS	ला	S	वोS
४		×		०	
गपधसां	धसां	रेंनिसां–	रेंनिध–	प	धमगरे
माSSS	लिन	आSSS	ईSSS	S	बसंSS
२		०		३	
–	रेग––	रे	गसा	रेनि	सा
S	तकीSS	S	बहा	SS	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४		×		०	
ग॒ग॒पध॒	म-पध॒	सां	-	रें॒गं॒रें॒गं॒	रें॒सां
कूऽकत	कोऽयलि	या	ऽ	गूँऽऽऽ	जत
२		०		३	
रें॒नि॒	ध॒सां	रें॒नि॒ध॒-	मग॒रे॒	रे॒ग॒रे॒सा	रे॒नि॒सासा
भ्रम	रऽ	उमगेऽ	जोबनऽ	काऽउभा	ऽऽऽर

२-विलासखानी-त्रिताल

हरि सों नेह लगावो सखी ।
जोई-जोई ध्यावत सोइ फल पावत,
पुरबी आस सबही मन की ॥ ध्रु० ॥
औघट घाट पुरानी नैया ।
पार करे मेहर हरि की ॥

														प	ध॒
२				०				३				×		ह	रि
नि॒	ध॒	म	ग॒	रे॒	सा	रे॒	नि॒	रे॒	नि॒	सा	रे॒	ग॒	-	-	-
सों	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ह	ऽ	ल	गा	ऽ	वो	स	खी	ऽ	ऽ	ऽ,
प	ध॒	सां	नि॒	ध॒	-	म	ग॒	रे॒	रे॒	रे॒	ग॒	रे॒	-	सा	सा
जो	ई	जो	ई	ध्या	ऽ	व	त	सो	इ	फ	ल	पा	ऽ	व	त
नि॒	-	सा	रे॒	ग॒	-	प	प	प	प	ध॒	सां	सांनि॒	ध॒प	पध॒	
पू	ऽ	र	बी	आ	ऽ	स	स	ब	ही	म	न	कीऽ	ऽऽ	स	खि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	–	प	प	ध़	–	ध़	ध़	सां	–	सां	सां	रें	गं	रें	सां,
औ	ऽ	घ	ट	घा	ऽ	ट	पु	रा	ऽ	नी	ऽ	नै	ऽ	याँ	ऽ,
–	सांरें	गं	रें	सां	–	नि	–	ध़	म	ग़	ग़	रेग़	रेसा		
ऽ	पाऽ	र	क	रे	ऽ	मे	ऽ	ह	र	ह	रि	कीऽ	ऽऽ		

३–बिलासखानी–एकताल (द्रुत)

मधुर–मधुर मूरत तुमरी,
सुघहुं गमावत सारी ।
मोर मुकुट बैजयन्ति,
कुण्डल छबि न्यारी–न्यारी ॥ध्रु०॥
मुरली धुन गाज रहत,
काम काज सब विसरत ।
प्रेम–मगन सबही बनत,
डोलत राधा प्यारी ॥

×		०		२		०		३		४	
ध़	नि	ध़	म	ग़	रेसा	रे	नि़	सा	रे	ग़	ग़
म	धु	र	म	धु	रऽ	मु	र	त	तु	म	री
रे	ग़	प	प	प	–	प	ध़	म	ग़	रे	–
सु	घ	हुँ	ग	मा	ऽ	व	त	सा	ऽ	री	ऽ
सा	रे	ग़	प	प	पं	धं	नि	ध़	म	ग़	प
मो	ऽ	र	मु	कु	ट	बै	ऽ	ज	यं	ऽ	ति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धु	नि	धु	म	गु	रेसा	रे	नि	सा	रे	गु	गु
कु	ऽ	ड	ल	छ	विऽ	न्या	ऽ	री	न्या	ऽ	री
गु	गु	प	धु	सां	सां	सां	–	सां	सां	सां	सां
मु	र	ली	ऽ	धु	न	गा	ऽ	ज	र	ह	त
सां	सां	रें	गुं	रें	सां	रें	नि	धु	धु	सां	सां
का	ऽ	ज	का	ऽ	म	स	ब	वि	स	र	त
रें	सां	रें	नि	धु	सां	रें	नि	धु	नि	धु	प
प्रे	ऽ	म	म	ग	न	स	ब	ही	ब	न	त
धुनि	नि	धु	म	गु	रेसा	रे	नि	सा	रे	गु	गु
डो	ऽ	ल	त	।	ऽऽ	धा	ऽ	प्या	ऽ	री	ऽ

राग-कोकिल पंचम

(संस्कृत) भैरवी मेलजः प्रातश्चौडुवो रिनि वर्जितः ।
धैवतांदोलने वांशर्ज्ञेयः कोकिलपंचमः ॥

(हिन्दी) रे नी सुर लागत नहीं, मृदु धैवत गंधार ।
कोकिल पंचम करत हैं प्रात–समय संचार ॥

कोकिल पंचम आसावरी मेल का औडव जाति का एक मधुर धुन स्वरूप है। इसमें निषाद, रिषभ वर्जित और गांधार कोमल है। धैवत का आंदोलन और निषाद का अभाव होने से उत्तरांग में आसावरी की छाया दिखाई देती है; किन्तु रिषभ न होने से आसावरी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से यह अलग रहता है। सागमग-सा इन स्वरों में मालकौंस की झलक पाई जाती है। किन्तु गमपध--प इस प्रकार आरोहावरोह में सरल पंचम और आंदोलित धैवत मालकौंस को हटा देते हैं। वादी धैवत सम्वादी गंधार है। कोई पंचम वादी और षड्ज सम्वादी मानते हैं। समय प्रातःकाल। मुख्यांग—सागमप, धऽऽप, मपधसां, त्रि धऽप, मपधमप, ग, मगऽऽसा।

आरोहावरोहः—सा, ग, म, प, धऽऽसां। सां, त्रि धप, मपध, मप, ग, मगऽऽसा, ध, ध, ध, सा।

स्वरविस्तारः—सा, ध, ध, ध, धसा, मपध, ध, धसा, मग, मगसा, धध, प, मपध, ध, धप, मपध, ध, मपधसा। सागं, मग, धधप, धसाग, मग, सागमग, धधमग, मग, मगऽसा। सागम, गम, मगसाम, धधप, पधसागम, गम, मग, गमग, मग, धऽमग, मग, मगसा। सागमप, गमप, मप, मग, मगऽसा, गमपमप, मगसाधधप, पप, मप, मपधसांधऽऽ, धप, मप धमप, मपध, ध, धमप, मपग, मग, पग, मगऽसा। सागमप, मपधधप, मपधसां, ध, ध, धसां, गंसां, मंगंसां, सांगंमंगंसां, पंमंगंसां, मंगंसां, गंसां, सां, धधप, मपधसां, धधप, मपधप, धमपग, मग, गपम, पग, मग, मगऽसा, साधधप, मपधसा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१ कोकिल पंचम–त्रिताल

धीरे झुलाओ श्याम हिंडोले,
धीरे बहत हरि पवन सुगंधित।
मधुवन डोले हौले-हौले ॥ ध्रु० ॥
छिप-छिप ना मोहे श्याम निहारो।
नैन तोरे मोहन मतवाले ॥

३	×	२	० धु धी
प ग म ग	प – म –	ग – म प	म ग सा प
ऽ रे ऽ झु	ला ऽ वो ऽ	श्या ऽ म हिं	डो ऽ ले धी
म ग म ग	सा सा धु़ प़	धु़ म़ प़ धु़	सा – सा सा
ऽ रे ऽ ब	ह त ह रि	प व न सु	गं ऽ धि त
सा ग म प	धु सां धु प	मप धुप म ग	पम ग सा धु
म धु व न	डो ऽ ले ऽ	हौऽ ऽऽ ले ऽ	हौऽ ऽ ले छि
मं प धु धु	सां – सां –	गं मं गं मं	गं – सां गं
प छि प ना	मो ऽ हे ऽ	श्या ऽ म नि	हा ऽ रो नै
मं गं सां धु	सां धु प म	ग म गम पम	पम ग सा
ऽ न तो ऽ	रे ऽ मो ऽ	ह न मऽ तऽ	वाऽ ऽ ले

२ कोकिल पंचम–एकताल (तराना)

दीं तन देरेना तदारे दानी।
ओदानि तदानि दीं तदिआरे दिर्दानितदानी देरेना तदानी ॥ध्रु०॥
ना द्रि द्रि तुं द्रिद्रि दीं तनदेरे तन देरे ना दीं तदियारे तन
द्रेद्रे नाद्रे तुं दिर दिर् तदानी ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		०		२		०		३		४	
सां	ध	ध	ध	प	प	म	प	ग	म	ग	सा
द्रीं	ऽ	त	न	दे	रे	ना	त	दा	रे	दा	नी
सा	ग	म	प	ग	म	प	–	ध	ध	प	प
ओ	दा	नी	त	दा	नी	द्रीं	ऽ	त	दि	या	रे
म	प	ध	सां	ध	प	म	प	ग	म	ग	सा
दि	द्रीं	नि	त	दा	नि	दे	रे	ना	त	दा	नी
म	म	म	प	प	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां
ना	द्रि	द्रि	तु	द्रि	द्रि	द्रीं	ऽ	त	न	दे	रे
ध	ध	ध	ध	सां	–	गं	सां	गं	सां	ध	प
त	न	दे	रे	ना	ऽ	द्रीं	ऽ	त	दि	या	रे
म	प	ध	सां	ध	प	म	प	ग	म	ग	सा
त	न	द्रे	द्रे	ना	द्रे	तु	दिर्	दिर्	त	दा	नी

राग-सागर

१ सागर–एकताल

'जय जय' हे 'दुर्गा' पति ।
'शंकर' 'केदार'–नाथ ॥
तुम 'हमीर' मैं तो 'नन्द' ॥ ध्रु० ॥
कर 'कल्याण' की 'बहार' ।
'सरस्वती' का हो विहार ॥
'पत' राखो 'अम्बिका'–नाथ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३		४		×		०		२		०	
नि़	सा	ध़	ऩि	(ग)रे	–	मप	धप	म	रे	सा	सा
ज	य	ज	य	हे	ऽ	दुऽ	ऽऽ	र्गा	ऽ	प	त
नि	ध	सां	नि	(ध)प	–	मंप	धप	प	धप	म	म
शं	ऽ	क	र	के	ऽ	दाऽ	ऽऽ	र	नाऽ	ऽ	थ
मं	प	गम	(नि)ध	–	(मं)प	ग	म	(प)	(म)रे	–	सा
तु	म	हुऽ	मी	ऽ	र	मैं	ऽ	तो	नं	ऽ	द
नि़	रे	ग	मं	प	प	ऩि	ध	नि	सां	–	सां
क	र	क	ल्या	ऽ	ण	की	ऽ	व	हा	ऽ	र
प	ध	सां	रें	(सां)ऩि	–	(सां)ऩि	ध	(सां)ऩि	ध	–	प
स	र	स्व	ती	का	ऽ	हो	ऽ	बि	हा	ऽ	र
ग॒	मं	प	ऩि	ध	प	मं	ग॒	रे	सा	–	सा
प	त	रा	ऽ	खो	ऽ	अं	बि	का	ना	ऽ	थ

२ चांदनी मल्हार–झपताल

धन–धन्न मोहन, धन हिन्द की शान।
अरु धीर अभिमान ॥ ध्रु० ॥
मधु हास्य घन प्रीत, सत नीत की मूर्ति !
जन–हिन्द सेवार्थ की जान कुर्बान ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×		२			०		३		
सा	रे	सा	म	म	त्रि	ध़	नि़	सा	सा
ध	न	ध	ऽ	न	मो	ऽ	इ	ऽ	न
म	रे	प	–	प	मं	प	ध	प़	म
ध	न	हिं	ऽ	द	की	ऽ	शा	ऽ	न
त्रि	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा
अ	रु	धी	ऽ	र	अ	भि	मा	ऽ	न
म	प	त्रि	ध	नि	सां	सां	नि	सां	सां
म	धु	हा	ऽ	स्य	ध	न	प्री	ऽ	त
सां	रें	सां	मं	मं	त्रि	ध	नि	सां	सां
स	त	नी	ऽ	त	की	ऽ	मू	ऽ	र्ति
सां	सां	ध	त्रि	प	मं	प	ध	प	म
ज	न	हिं	ऽ	द	से	ऽ	वा	ऽ	र्थ
त्रि	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा
की	ऽ	जा	ऽ	न	कु	र	बा	ऽ	न

३ पटबहार–त्रिताल

चलोरी सखी आज चलो ब्रिज में।
जमुना तट हरि खेलत होरी ॥
ग्वाल बाल सब अपने रंग में ॥ ध्रु० ॥
फागुन की सखी उमङ्ग निराली, भरी गोपी के रगरग में ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

०	३	×	२ नि च
धनि सांनि ध प	मप धप ग म	नि ध नि सां	रेंसां निसां - -
लोऽ रीऽ स खी	आऽ ऽऽ ज च	लो ऽ ब्रि ज	मेंऽ ऽऽ ऽ ऽ
सां सां सां -	नि प म प	म ग - ग म	रे - सा -
ज मु ना ऽ	त ट ह रि	खे ऽ ल त	हो ऽ री ऽ
सा म म म	- प ग म	नि नि ध नि	पनि सांरें सां -
ग्वा ऽ ल बा	ऽ ल स ब	अ प ने ऽ	रंऽ गऽ में ऽ
ग म प नि	सां सां सां सां	गं मं रें नि	धनि सांनि ध प
फा ऽ गु न	की ऽ स खि	उ मं ग नि	राऽ ऽऽ ली ऽ
नि सां सां नि	- प म प	म नि ध सां	पनि सांरें सां नि
भ री ऽ गो	ऽ पि के ऽ	र ग र ग	मेंऽ ऽऽ ऽ च

४—वसन्ती-हिंडोल—त्रिताल

बोले पपीहा पियु का बोला।
बन में झुलावे वसन्त हिंडोला ।। ध्रु० ।।
भ्रमर-कुल चम्पा कलियन चूमत।
झूमत लहराये बन माला ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

			सां
३	×	२	० बो
नि धु प प	प – मं ग	मं ध मं ग	मं ग सा सा
ऽ ले ऽ प	पी ऽ हा ऽ	पि यु का ऽ	बो ऽ ला ब
सा म – म	म – म ग	मं ध मं ध	सां – सां मं
न में ऽ झु	ला ऽ वे व	सं ऽ त हिं	डो ऽ ला अ
मं ग मं ध	सां – सां –	सां गं गं मं	गं – सां सां,
म र कु ल	च ऽ म्पा ऽ	क लि य न	चू ऽ म त,
गं मं गं सां	नि धु प –	मं ध मं ग	मं ग सा
झू ऽ म त	ल ह रा ऽ	ये ऽ अ लि	मा ऽ ला

५—आसाकली—त्रिताल

सांवरी सुरत मन में सखी भावे,
निंदिया न आवे जिया तरसावे,
कारी करूं कछु बन नहीं आवे ॥ ध्रु० ॥
अधर अधर मधु बन्सी बजावे।
बीन बजावे जियरा लुभावे ॥
डोलत, खेलत, झूलत सङ्ग राधा,
लचक लचक मोरा मन ललचावे ॥ ध्रु० ॥

०	३	×	२
	म म	सा	
मंप धु म प	गु गु रे सा	मं – प धु	नि धु प –
साँऽ व रि सु	र त म न	में ऽ स खीं	भा ऽ वे ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प म॑ प नि॒	ध॒ – प –	मप ध॒ म प	ग॒ ग॒ रे सा
निं दि या न	आ ऽ वे ऽ	पिऽ या त र	सा ऽ वे ऽ
– सा रे म	प म॑ प प	म॑ म॑ प ध॒	नि॒ ध॒ प –
ऽ का री क	रूं ऽ क छु	व न न हीं	आ ऽ वे ऽ
म म म म	प प, ध॒ पध॒	सां – सां सां	रें नि॒ सां –
अ ध र अ	ध र म धुऽ	व ऽ न्सी व	जा ऽ वे ऽ
ध॒ सां सां रें	सांरें गं॒ रें सां	नि॒ नि॒ सा सां	नि॒सां रेंसां नि॒ध॒ प
वी ऽ न व	जाऽ ऽ वे ऽ	जि य रा लु	भाऽ ऽऽ वेऽ ऽ
प म॑ प ध॒	नि॒ ध॒ प प	मप ध॒ म प	म म ग॒ ग॒ रे सा
डो ऽ ल त	खे ऽ ल त	भूऽ ऽ ल त	सं ग रा धा
सा सा रे म	प म॑ प प	म॑ म॑ प ध॒	नि॒ ध॒ प –
ल च क ल	च क मो रा	म न ल ल	चा ऽ वे ऽ

* समाप्त *

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगीत कार्यालय के प्रकाशन

बालसंगीत शिक्षा भाग १	०–५०
" " " २	०–७५
" " " ३	१–००
संगीत किशोर	१–५०
संगीत शास्त्र	१–००
'क्रमिक पुस्तक' भाग १	१–००
" भाग ३ व ४ प्रत्येक	१०–००
" भाग २, ५ व ६ प्रत्येक	८–००
संगीत सोपान	३–००
संगीत विशारद	५–००
संगीत सीकर	५–००
संगीत अर्चना	५–००
संगीत कादम्बिनी	५–००
भातखंडे संगीतशास्त्र भाग १	५–००
" " भाग २	६–००
" " भाग ३	६–००
" " भाग ४	१५–००
मारिफुन्नग़मात भाग १	६–००
" भाग २	६–००
संगीत सागर	६–००
बेला विज्ञान	४–००
सितार शिक्षा	२–५०
कलावन्तों की गायकी	३–००
हमारे संगीत रत्न	१५–००
सहगल संगीत	२–५०
बेंजो मास्टर	२–००
संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन	२·५०

सूरसंगीत भाग १	१–५०
" भाग २	१–५०
ताल अंक ...	४–०५
ठुमरी अंक ...	२–५०
सन्त संगीत अंक	२–५०
राष्ट्रीय संगीत अंक	२–५०
राग अंक ...	२–५०
वाद्य संगीत अंक	३–००
बिलावल थाट अंक	२–५०
कल्याण थाट अंक	२–५०
भैरव थाट अंक	२–५०
पूर्वी थाट अंक	२–५०
खमाज थाट अंक	२–५०
काफी थाट अंक	२–५०
नृत्य अंक ...	३–००
नृत्यशाला ...	२–००
कथकलि नृत्यकला	२–५०
नृत्य भारती	३–००
म्यूज़िक मास्टर	२–००
महिला हारमोनियम गाइड	१–५०
संगीत पारिजात	४–००
स्वरमेल कलानिधि	२–००
संगीतदर्पण ...	२–००
फ़िल्म संगीत भाग २८ वाँ	२–५०
आवाज़ सुरीली कैसे करें ?	२–००
अप्रकाशित राग भाग १–२–३	४–५०

'संगीत' मासिक पत्र सन् १९३५ से बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ६)५६

[डाक खर्च अलग]

प्रकाशक—सङ्गीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगीत कार्यालय
हाथरस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai